Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राष्ट्रगान अथवा उसकी धुन का उपयोग विशेष अवसरों पर ही किया जाय। ऐसे समय उपस्थित सभी सज्जन सम्मानार्थ खड़े हो जायँ और राष्ट्रगान पूरा होने तक न तो हिलें-डुलें और न किसी तरह की बातचीत ही करें। राष्ट्रगान की धुन एक मिनट से अधिक कदापि न चले। झण्डाभिवादन के समय, राष्ट्रगान की धुन झण्डा फहराने के साथ-साथ बजायी जाय, न उसके पहले और न बाद में। राष्ट्रगान गाते समय उसके शब्दों को न तो बदला जाय और न बिगाड़ा ही जाय।

राष्ट्र चिह्न

हमारा राष्ट्र चिह्न सारनाथ के अशोक स्तम्भ के शीर्ष का प्रतिरूप है। सम्राट अशोक ने यह स्तम्भ उस स्थान पर बनवाया था जहाँ भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था। राष्ट्र चिह्न में एक चौरस गोल पत्थर पर तीन सिंह पीठ जोड़े खड़े दिखाई देते हैं। पत्थर के किनारे में बीचों बीच ऊपर को उभरा हुआ धर्मचक्र है, दाईं ओर एक बैल और बाईं ओर एक घोड़ा तथा दाएँ और बाएँ छोर पर धर्मचक्र की रूपरेखा अंकित है। चिह्न के नीचे 'सत्यमेव जयते' (सत्य ही की विजय होती है) शब्द देवनागरी में अंकित हैं।

लोक-कल्याणकारी राज्य की ओर

प्रत्येक वर्ष १५ अगस्त को हम अपना स्वतन्त्रता दिवस मनाते हैं। आठ वर्ष हुए इसी दिन हमने विदेशी शासन का जुआ अपने कंधों से उतार फेंका था। तब से हमारा देश उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है। प्रशासन के स्थायित्व, रजवाड़ों के संघटन, और लोक तंत्रात्मक आधार पर संविधान के निर्माण द्वारा हमने अपनी स्वतन्त्रता की जड़ें पक्की की हैं। उधर देश में अस्पृश्यता का अन्त करके प्रगतिशील समाज की नींव डाली जा चुकी है और वयस्क मताधिकार की व्यवस्था करने से भारत को संसार का सबसे बड़ा लोकतन्त्र कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ है। लोक कल्याणकारी राज्य के अपने लक्ष्य के अनुकूल ही लगभग पाँच वर्ष हुए भारत की जनता ने अधिक समृद्ध जीवन के लिए निर्माण कार्य में जुटने का संकल्प किया था।

अतः प्रथम पंच वर्षीय योजना के मुख्य उद्देश्य ये थे :

अधिक अन्न का उत्पादन।

अधिक वस्तुओं का उत्पादन।

सामाजिक सेवाओं में सुधार, और

अधिक रोज़गार का प्रबन्ध।

प्रथम पंचवर्षीय योजना

मार्च सन् १९५१ में जब प्रथम पंचवर्षीय योजना बनाई गई थी, तब देश के सामने अनेक गम्भीर समस्यायें थीं। खाद्यान्न की भारी कमी थी और वित्तीय साधन भी बहुत कम थे। इसके साथ ही मंहगाई का जोर था जिसके कारण व्यापार और उद्योग का विकास रुका हुआ था। इस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योजना से विकास का वह क्रम आरम्भ हुआ जिसका उद्देश्य रहन-सहन का स्तर ऊँचा बनाना और लोगों के लिए सुखी व समृद्ध जीवन की नींव डालना है। आरम्भ में योजना पर २,०६८·७५ करोड़ रुपया खर्च करने की व्यवस्था की गई थी किन्तु बाद में इस राशि को बढ़ाकर २,३२४·५ करोड़ रुपये कर दिया गया। विभिन्न कार्यक्रमों पर व्यय का वितरण इस प्रकार किया गया :

	रुपये
(क) कृषि और सामुदायिक विकास	३७२·६ करोड़
(ख) सिंचाई और बिजली	६५३·५ करोड़
(ग) परिवहन और संचार	५५७·७ करोड़
(घ) उद्योग	१७६·३ करोड़
(ङ) सामाजिक सेवाएँ	३७६·६ करोड़
(च) पुनर्वास तथा अन्य	१८४·८ करोड़

अनुमान है कि सन् १९५४-५५ के अन्त तक योजना पर १,४०१·३ करोड़ रुपया व्यय हो चुकेगा। इस प्रकार योजना के अन्तिम वर्ष के लिए विभिन्न विकास कार्यक्रमों पर व्यय करने के लिए ७०१·८ करोड़ रुपया शेष रहेगा। योजना पर अब तक का कार्य बहुत सफल रहा है और आशा की जाती है कि प्रथम योजना की समाप्ति तक हमारा ९५ प्रतिशत लक्ष्य पूरा हो चुकेगा।

उत्पादन के लक्ष्य :

योजना में विभिन्न क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि की व्यवस्था की गई थी, विशेषकर खाद्यान्न, सिंचाई, बिजली और अनेक उद्योगों के सम्बन्ध में निम्न तालिका से आपको प्रथम योजना के लक्ष्य और अबतक की सफलता का संकेत मिलेगा।

योजना की प्रगति

	१९५५-५६ तक का लक्ष्य	१९५४-५५ तक की सफलता
खाद्यान्न	७६ लाख टन अतिरिक्त उत्पादन प्रति वर्ष	प्रति वर्ष लगभग ११६ लाख टन
सिंचाई (अतिरिक्त एकड़ भूमि)	८५ लाख एकड़	६५ लाख एकड़
बिजली	१० लाख ८० हजार किलोवाट	१८ लाख ३० हजार किलोवाट
नई राष्ट्रीय सड़कें	६४० अतिरिक्त मील	४४० अतिरिक्त मील
सूती कपड़ा	४७० करोड़ गज	५०४ करोड़ ६० लाख गज
सामुदायिक कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा	१,२०,००० गांव	१,०५,५५७ गांव

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

	१९५५–५६ तक का लक्ष्य	१९५४–५५ तक की सफलता
नए स्कूल (प्रारम्भिक और जूनियर बेसिक)	४७,५३०	२५,७००
नए अस्पताल	२,४०८	२,३८५

योजना की सबसे बड़ी सफलता खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि है। इस क्षेत्र में १९४९-५० की तुलना में मार्च १९५५ में १ करोड़ २० लाख टन की वृद्धि हुई। यह वृद्धि अच्छी वर्षा, खेती के अच्छे उपायों और सिंचाई की अधिक सुविधाओं के कारण सम्भव हो सकी। बहुत-सी नई जमीन को खेती योग्य बनाया गया। नहरें निकाली गईं, कुएँ बनाए गए और अन्न पर से राशन हटा लिया गया। कृषि के उत्पादन के साथ-साथ ग्राम्य जनता के जीवन स्तर में भी योजनाबद्ध विकास करने का प्रयत्न किया गया। प्रधान मन्त्री के शब्दों में हमारे सामुदायिक कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा प्रथम पंचवर्षीय योजना को गतिशील बनाने वाली शक्ति है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम में यह बातें शामिल हैं: खेती के अच्छे तरीके सिखाना, सहायक कुटीर उद्योगों को बढ़ाना, गाँवों के बीच संचार साधन सुधारना, अच्छे मकान बनाना, पंचायतों की स्थापना करना आदि जो कि ग्राम्य जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस संयुक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत १,०५,५५७ गांव अब तक आ चुके हैं और आशा की जाती है कि योजना की समाप्ति तक एक-चौथाई देश इसके अन्तर्गत आ जाएगा।

सिंचाई और बिजली

एक कृषिप्रधान देश के लिए सिंचाई का महत्व पहचानते हुए योजना के निर्माताओं ने सिंचाई और बिजली के लिए ६५३ करोड़ रुपए की राशि निर्धारित की थी। स्वतन्त्रता से पूर्व समूचे देश के लिए सिंचाई और बिजली पर जितनी रकम खर्च की गई थी, यह रकम उससे अधिक है। इस क्षेत्र में सिंचाई के अनेक छोटे-मोटे काम ही नहीं किए गए जैसे नए कुएँ बनाना और पुराने कुओं को सुधारना, बिजली के कुएँ लगाना, पंपिंग सेट लगाना, तालाब और नहरें आदि बनाना। साथ ही भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी कार्पोरेशन, हीराकुड और तुंगभद्रा आदि विशाल अनेक लाभ वाली योजनाओं पर भी तेजी से काम किया गया। हमारे प्रधान मन्त्री ने ८ जुलाई, १९५४ को भाखड़ा नहरें चालू कर दीं और २ जनवरी, १९५५ को राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने गंगूवाल में इस योजना के पहले बिजलीघर का उद्घाटन किया। दामोदर घाटी योजना के बोकारो बिजलीघर और तलैया पन-बिजली केन्द्र चालू हो चुके हैं। हीराकुड और तुंगभद्रा पर भी सन्तोषजनक प्रगति हो रही है। चम्बल और कोसी जैसी कुछ नई योजनाएँ भी हाथ में ले ली गई हैं। इन योजनाओं की अब तक की प्रगति के फलस्वरूप मार्च, १९५५ तक लगभग ९५ लाख एकड़ अतिरिक्त जमीन में सिंचाई का प्रबन्ध हो गया है और १८ लाख ३० हजार किलोवाट बिजली तैयार होने लगी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योजना से विकास का वह क्रम आरम्भ हुआ जिसका उद्देश्य रहन-सहन का स्तर ऊँचा बनाना और लोगों के लिए सुखी व समृद्ध जीवन की नींव डालना है। आरम्भ में योजना पर २,०६८·७५ करोड़ रुपया खर्च करने की व्यवस्था की गई थी किन्तु बाद में इस राशि को बढ़ाकर २,३२४·५ करोड़ रुपये कर दिया गया। विभिन्न कार्यक्रमों पर व्यय का वितरण इस प्रकार किया गया :

	रुपये
(क) कृषि और सामुदायिक विकास	३७२·६ करोड़
(ख) सिंचाई और बिजली	६५३·५ करोड़
(ग) परिवहन और संचार	५५७·७ करोड़
(घ) उद्योग	१७९·३ करोड़
(ङ) सामाजिक सेवाएँ	३७६·६ करोड़
(च) पुनर्वास तथा अन्य	१८४·८ करोड़

अनुमान है कि सन् १९५४-५५ के अन्त तक योजना पर १,४०[illegible]·३ करोड़ रुपया व्यय हो चुकेगा। इस प्रकार योजना के अन्तिम वर्ष के लिए विभिन्न विकास कार्यक्रमों पर व्यय करने के लिए ७०१·८ करोड़ रुपया शेष रहेगा। योजना पर अब तक का कार्य बहुत सफल रहा हैं और आशा की जाती है कि प्रथम योजना की समाप्ति तक हमारा ९५ प्रतिशत लक्ष्य पूरा हो चुकेगा।

उत्पादन के लक्ष्य :

योजना में विभिन्न क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि की व्यवस्था की गई थी, विशेषकर खाद्यान्न, सिंचाई, बिजली और अनेक उद्योगों के सम्बन्ध में निम्न तालिका से आपको प्रथम योजना के लक्ष्य और अबतक की सफलता का संकेत मिलेगा।

योजना की प्रगति

	१९५५-५६ तक का लक्ष्य	१९५४-५५ तक की सफलता
खाद्यान्न	७६ लाख टन अतिरिक्त उत्पादन प्रति वर्ष	प्रति वर्ष लगभग ११६ लाख टन
सिंचाई (अतिरिक्त एकड़ भूमि)	८५ लाख एकड़	९५ लाख एकड़
बिजली	१० लाख ८० हजार किलोवाट	१८ लाख ३० हजार किलोवाट
नई राष्ट्रीय सड़कें	६४० अतिरिक्त मील	४४० अतिरिक्त मील
सूती कपड़ा	४७० करोड़ गज	५०४ करोड़ ६० लाख गज
सामुदायिक कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा	१,२०,००० गांव	१,०५,५५७ गांव

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

	१९५५–५६ तक का लक्ष्य	१९५४–५५ तक की सफलता
नए स्कूल (प्रारम्भिक और जूनियर बेसिक)	४७,५३०	२५,७००
नए अस्पताल	२,४०८	२,३८५

योजना की सबसे बड़ी सफलता खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि है। इस क्षेत्र में १९४९-५० की तुलना में मार्च १९५५ में १ करोड़ २० लाख टन की वृद्धि हुई। यह वृद्धि अच्छी वर्षा, खेती के अच्छे उपायों और सिंचाई की अधिक सुविधाओं के कारण सम्भव हो सकी। बहुत-सी नई जमीन को खेती योग्य बनाया गया। नहरें निकाली गईं, कुएँ बनाए गए और अन्न पर से राशन हटा लिया गया। कृषि के उत्पादन के साथ-साथ ग्राम्य जनता के जीवन स्तर में भी योजनाबद्ध विकास करने का प्रयत्न किया गया। प्रधान मन्त्री के शब्दों में हमारे सामुदायिक कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा प्रथम पंचवर्षीय योजना को गतिशील बनाने वाली शक्ति है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम में यह बातें शामिल हैं: खेती के अच्छे तरीके सिखाना, सहायक कुटीर उद्योगों को बढ़ाना, गाँवों के बीच संचार साधन सुधारना, अच्छे मकान बनाना, पंचायतों की स्थापना करना आदि जो कि ग्राम्य जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस संयुक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत १,०५,५५७ गांव अब तक आ चुके हैं और आशा की जाती है कि योजना की समाप्ति तक एक-चौथाई देश इसके अन्तर्गत आ जाएगा।

सिंचाई और बिजली

एक कृषिप्रधान देश के लिए सिंचाई का महत्व पहचानते हुए योजना के निर्माताओं ने सिंचाई और बिजली के लिए ६५३ करोड़ रुपए की राशि निर्धारित की थी। स्वतन्त्रता से पूर्व समूचे देश के लिए सिंचाई और बिजली पर जितनी रकम खर्च की गई थी, यह रकम उससे अधिक है। इस क्षेत्र में सिंचाई के अनेक छोटे-मोटे काम ही नहीं किए गए जैसे नए कुएँ बनाना और पुराने कुओं को सुधारना, बिजली के कुएँ लगाना, पंपिंग सेट लगाना, तालाब और नहरें आदि बनाना। साथ ही भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी कार्पोरेशन, हीराकुड और तुंगभद्रा आदि विशाल अनेक लाभ वाली योजनाओं पर भी तेजी से काम किया गया। हमारे प्रधान मन्त्री ने ८ जुलाई, १९५४ को भाखड़ा नहरें चालू कर दीं और २ जनवरी, १९५५ को राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने गंगूवाल में इस योजना के पहले बिजलीघर का उद्घाटन किया। दामोदर घाटी योजना के बोकारो बिजलीघर और तलैया पन-बिजली केन्द्र चालू हो चुके हैं। हीराकुड और तुंगभद्रा पर भी सन्तोषजनक प्रगति हो रही है। चम्बल और कोसी जैसी कुछ नई योजनाएँ भी हाथ में ले ली गई हैं। इन योजनाओं की अब तक की प्रगति के फलस्वरूप मार्च, १९५५ तक लगभग ६५ लाख एकड़ अतिरिक्त जमीन में सिंचाई का प्रबन्ध हो गया है और १८ लाख ३० हजार किलोवाट बिजली तैयार होने लगी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योजना से विकास का वह क्रम आरम्भ हुआ जिसका उद्देश्य रहन-सहन का स्तर ऊँचा बनाना और लोगों के लिए सुखी व समृद्ध जीवन की नींव डालना है। आरम्भ में योजना पर २,०६८·७५ करोड़ रुपया खर्च करने की व्यवस्था की गई थी किन्तु बाद में इस राशि को बढ़ाकर २,३२४·५ करोड़ रुपये कर दिया गया। विभिन्न कार्यक्रमों पर व्यय का वितरण इस प्रकार किया गया :

	रुपये
(क) कृषि और सामुदायिक विकास	३७२·६ करोड़
(ख) सिंचाई और बिजली	६५३·५ करोड़
(ग) परिवहन और संचार	५५७·७ करोड़
(घ) उद्योग	१७९·३ करोड़
(ङ) सामाजिक सेवाएँ	३७९·६ करोड़
(च) पुनर्वास तथा अन्य	१८४·८ करोड़

अनुमान है कि सन् १९५४-५५ के अन्त तक योजना पर १,४०·३ करोड़ रुपया व्यय हो चुकेगा। इस प्रकार योजना के अन्तिम वर्ष के लिए विभिन्न विकास कार्यक्रमों पर व्यय करने के लिए ७०१·८ करोड़ रुपया शेष रहेगा। योजना पर अब तक का कार्य बहुत सफल रहा हैं और आशा की जाती है कि प्रथम योजना की समाप्ति तक हमारा ९५ प्रतिशत लक्ष्य पूरा हो चुकेगा।

उत्पादन के लक्ष्य :

योजना में विभिन्न क्षेत्रों के उत्पादन में वृद्धि की व्यवस्था की गई थी, विशेषकर खाद्यान्न, सिंचाई, बिजली और अनेक उद्योगों के सम्बन्ध में निम्न तालिका से आपको प्रथम योजना के लक्ष्य और अबतक की सफलता का संकेत मिलेगा।

योजना की प्रगति

	१९५५-५६ तक का लक्ष्य	१९५४-५५ तक की सफलता
खाद्यान्न	७६ लाख टन अतिरिक्त उत्पादन प्रति वर्ष	प्रति वर्ष लगभग ११६ लाख टन
सिंचाई (अतिरिक्त एकड़ भूमि)	८५ लाख एकड़	९५ लाख एकड़
बिजली	१० लाख ८० हजार किलोवाट	१८ लाख ३० हजार किलोवाट
नई राष्ट्रीय सड़कें	६४० अतिरिक्त मील	४४० अतिरिक्त मील
सूती कपड़ा	४७० करोड़ गज	५०४ करोड़ ६० लाख गज
सामुदायिक कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा	१,२०,००० गांव	१,०५,५५७ गांव

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

	१९५५–५६ तक का लक्ष्य	१९५४–५५ तक की सफलता
नए स्कूल (प्रारम्भिक और जूनियर बेसिक)	४७,५३०	२५,७००
नए अस्पताल	२,४०८	२,३८५

योजना की सबसे बड़ी सफलता खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि है। इस क्षेत्र में १९४९-५० की तुलना में मार्च १९५५ में १ करोड़ २० लाख टन की वृद्धि हुई। यह वृद्धि अच्छी वर्षा, खेती के अच्छे उपायों और सिंचाई की अधिक सुविधाओं के कारण सम्भव हो सकी। बहुत-सी नई जमीन को खेती योग्य बनाया गया। नहरें निकाली गईं, कुएँ बनाए गए और अन्न पर से राशन हटा लिया गया। कृषि के उत्पादन के साथ-साथ ग्राम्य जनता के जीवन स्तर में भी योजनाबद्ध विकास करने का प्रयत्न किया गया। प्रधान मन्त्री के शब्दों में हमारे सामुदायिक कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा प्रथम पंचवर्षीय योजना को गतिशील बनाने वाली शक्ति है। सामुदायिक विकास कार्यक्रम में यह बातें शामिल हैं: खेती के अच्छे तरीके सिखाना, सहायक कुटीर उद्योगों को बढ़ाना, गाँवों के बीच संचार साधन सुधारना, अच्छे मकान बनाना, पंचायतों की स्थापना करना आदि जो कि ग्राम्य जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस संयुक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत १,०५,५५७ गांव अब तक आ चुके हैं और आशा की जाती है कि योजना की समाप्ति तक एक-चौथाई देश इसके अन्तर्गत आ जाएगा।

सिंचाई और बिजली

एक कृषिप्रधान देश के लिए सिंचाई का महत्व पहचानते हुए योजना के निर्माताओं ने सिंचाई और बिजली के लिए ६५३ करोड़ रुपए की राशि निर्धारित की थी। स्वतन्त्रता से पूर्व समूचे देश के लिए सिंचाई और बिजली पर जितनी रकम खर्च की गई थी, यह रकम उससे अधिक है। इस क्षेत्र में सिंचाई के अनेक छोटे-मोटे काम ही नहीं किए गए जैसे नए कुएँ बनाना और पुराने कुओं को सुधारना, बिजली के कुएँ लगाना, पंपिंग सेट लगाना, तालाब और नहरें आदि बनाना। साथ ही भाखड़ा नांगल, दामोदर घाटी कार्पोरेशन, हीराकुड और तुंगभद्रा आदि विशाल अनेक लाभ वाली योजनाओं पर भी तेजी से काम किया गया। हमारे प्रधान मन्त्री ने ८ जुलाई, १९५४ को भाखड़ा नहरें चालू कर दीं और २ जनवरी, १९५५ को राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने गंगूवाल में इस योजना के पहले बिजलीघर का उद्घाटन किया। दामोदर घाटी योजना के बोकारो बिजलीघर और तलैया पन-बिजली केन्द्र चालू हो चुके हैं। हीराकुड और तुंगभद्रा पर भी सन्तोषजनक प्रगति हो रही है। चम्बल और कोसी जैसी कुछ नई योजनाएँ भी हाथ में ले ली गई हैं। इन योजनाओं की अब तक की प्रगति के फलस्वरूप मार्च, १९५५ तक लगभग ६५ लाख एकड़ अतिरिक्त जमीन में सिंचाई का प्रबन्ध हो गया है और १८ लाख ३० हजार किलोवाट बिजली तैयार होने लगी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

औद्योगिक उत्पादन

भारत में आज एक औद्योगिक क्रान्ति आरम्भ हो रही है। स्वतन्त्रता के बाद उत्पादन का देशनांक इस समय सर्वोच्च है। हमने रेलों के इंजन और डिब्बे बनाने आरम्भ कर दिए हैं। साइकिलें, सिलाई की मशीनें, रेडियो सेट तथा अनेक प्रकार के औद्योगिक सामान भी देश में ही तैयार होने लगे हैं। कपड़े का उत्पादन इतना है कि हम विदेशों को भी निर्यात कर सकते हैं। सरकार ने कई बड़े कारखानों की स्थापना की है, उदाहरणार्थ सिन्द्री का रासायनिक कारखाना, चितरंजन का इंजन कारखाना, दुर्लभ मिट्टी कारखाना, भारतीय टेलीफोन उद्योग, हिन्दुस्तान केबल्स और पेराम्बूर का सवारी गाड़ी के डिब्बों का कारखाना। भारत ने तीन नये इस्पात कारखाने खोलने का भी फैसला किया है। देश के विभिन्न भागों में लगभग एक दर्जन राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना भी की गई है जिससे वैज्ञानिक अनुसन्धान का देश के सर्वतोमुखी विकास में उपयोग हो सके।

संचार

किसी भी देश का आर्थिक विकास बहुत कुछ परिवहन की सुविधाओं पर निर्भर करता है। देश में अनेक नई रेल लाइनें बिछाई जा रही हैं और उन लाइनों को भी फिर से बिछाया जा रहा है जो बीच में उखाड़ ली गई थीं। राष्ट्रीय सड़कों का भी विस्तार किया जा रहा है और ४४० मील लम्बी नई सड़कें बनाई जा चुकी हैं।

समाज कल्याण

देश के स्वतन्त्र होने के तुरन्त बाद एक बहुत बड़ी समस्या पाकिस्तान से आए लगभग १ करोड़ विस्थापित व्यक्तियों के पुनर्वास की थी। सरकार ने इन व्यक्तियों के पुनर्वास के लिए १३० करोड़ रुपये की राशि स्वीकार की। अधिकतर व्यक्तियों को अब जल्दी से जल्दी मुआवज़ा दिया जा रहा है।

अगस्त, १९५३ में एक समाज कल्याण बोर्ड की स्थापना की गई जिसका ध्येय देश में समाज कल्याण के कार्य को प्रोत्साहन देना है। इस बोर्ड ने अन्य समाज कल्याण कार्यों के अतिरिक्त पिछड़े वर्गों की स्त्रियों और बच्चों के कल्याण का काम भी अपने हाथ में ले लिया है।

शिक्षा

आशा की जाती है कि प्रथम पंचवर्षीय योजना की समाप्ति पर देश के प्रत्येक पांच बच्चों में से तीन को प्रारम्भिक शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध होंगी। १९५५ के अन्त तक २०,००० नए प्राइमरी स्कूल और ५,७०० जूनियर बेसिक स्कूल खोले जाएंगे। आशा की जाती है कि १९५६ तक प्रारम्भिक स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या २ करोड़ ३६ लाख और माध्यमिक स्कूलों में उनकी संख्या ७६ लाख ८१ हज़ार होगी। सार्वजनिक स्वास्थ्य की अधिक सुविधाओं का भी प्रबन्ध किया जा रहा है और इसके लिए नए अस्पताल खोले जा रहे हैं और अधिक जच्चा-बच्चा तथा शिशु-पालन केन्द्रों की स्थापना की जा रही है।

भारत की प्रथम पञ्चवर्षीय योजना एक महान् राष्ट्रीय प्रयास का प्रतीक है। अब तक की सफलता का श्रेय सब के सम्मिलित प्रयत्नों को ही है। यह जनता की योजना है और जनता का कल्याण ही इसका उद्देश्य है। अब तक की सफलता से प्रोत्साहित होकर देश में द्वितीय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योजना की रूपरेखा तैयार की जा रही है जिसके अन्तर्गत अगले पाँच वर्षों में अर्थात् १९५६ से १९६१ तक ४३०० करोड़ रुपये की राशि विकास कार्यों पर खर्च की जाएगी।

सामुदायिक विकास योजना कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा

भारत की दो तिहाई जनता कृषि पर आश्रित है। इसलिए प्रथम पंच-वर्षीय योजना में ग्रामोन्नति कार्यक्रमों को ही प्राथमिकता दी गयी है जिनके ये उद्देश्य हैं : कृषि के उत्पादन में वृद्धि, समुदाय उन्नति कार्यक्रमों द्वारा रहन-सहन के स्तर में सुधार, और भूमि सुधार के द्वारा ग्राम जीवन का कायापलट।

सामुदायिक उन्नति कार्य और राष्ट्रीय विस्तार सेवा के अन्तर्गत गाँवों की अर्थव्यवस्था को सुधारने और स्वयं गाँव वालों के सहयोग से ग्रामजीवन को सुखी बनाने का सतत सक्रिय प्रयत्न हो रहा है। गाँवों में रहने वाले ६ करोड़ परिवारों में यह भावना उत्पन्न की जा रही है कि उन्हें भी "अच्छी तरह जीने का अधिकार है" और वे लोक-कल्याणकारी राज्य की जिम्मेदारियाँ निभाना सीखें। उन्हें नया ज्ञान और जीवन के नये तरीके सीखने हैं और अधिक सम्पन्न व समृद्ध जीवन की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प होना है।

कार्यक्रम में निम्न बातें शामिल की गयी हैं जिन्हें उच्च प्राथमिकता प्राप्त है। वास्तव में, ग्राम जीवन के लगभग सभी पहलू उसके अन्तर्गत आ जाते हैं :

(क) **कृषि उन्नति :** छोटे और बड़े सिंचाई कार्यों, भूमि सुधार, रासायनिक खाद एवं उत्तम बीज वितरण, और कृषि के आधुनिक उपायों द्वारा।

(ख) **उन्नत संचार व्यवस्था :** सड़कों के निर्माण, यंत्रचालित सड़क परिवहन सेवा के प्रोत्साहन और पशु परिवहन के विकास द्वारा।

(ग) **शिक्षा प्रसार :** अनिवार्य और निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा, हाई और मिडिल स्कूलों, प्रौढ शिक्षा प्रशिक्षण, सामाजिक शिक्षा तथा पुस्तकालयों के उपबंध द्वारा।

(घ) **स्वास्थ्य व्यवस्था :** सफाई, और सार्वजनिक स्वास्थ्य के उपायों, प्रसूति के पूर्व और उपरांत की देखभाल और मिडवाइफों की सेवा द्वारा।

(च) **प्रशिक्षण प्रबंध :** दस्तकारों के लिए ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों, कृषकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों, राष्ट्रीय विस्तार सहायकों, निरीक्षकों, प्रबंध कर्मचारियों, स्वास्थ्य कर्मचारियों और योजना कार्य के प्रबंध अधिकारियों द्वारा।

(छ) **रोजगार में वृद्धि :** गांवों में अपूर्ण रोजगार से परित्राण एवं छोटे तथा ग्रामोद्योगों के प्रोत्साहन से रोजगार में वृद्धि, और योजना बद्ध वितरण, व्यापार सहायक तथा कल्याण सेवाओं द्वारा।

(ज) **भवन व्यवस्था :** कम लागत के मकानों के लिए भवन निर्माण के आधुनिक उपायों और नमूनों के प्रोत्साहन और निर्माण में स्थानीय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्राप्य सामग्री के उपयोग द्वारा।

(ज्ञ) **समाज कल्याण** : स्थानीय प्रतिभा और संस्कृति पर आधारित समुदाय मनोरंजन, शिक्षा एवं आमोद के लिए फिल्म प्रदर्शन, स्थानीय खेल व मेलों के आयोजन, सहकारी संस्थाओं व पंचायतों के विकास द्वारा।

संगठन : केन्द्र में इन कार्यक्रमों के संचालक सामुदायिक कार्य प्रशासक हैं। राज्यों में विकास समितियां बनी हुई हैं जो विकास कमिश्नरों की मार्फत कार्य करती हैं। जिलों में, योजना अधिकारी विकास कार्यक्रम तैयार और संगठित करते हैं। प्रत्येक सामुदायिक उन्नति कार्य-क्षेत्र में लगभग ३०० गांव आते हैं। कार्यक्षेत्र अफसर इसका मुख्य अधिकारी होता है और उसकी सहायतार्थ कुछ विशेषज्ञों का एक दल रहता है। समुदाय उन्नति कार्यक्षेत्र सौ-सौ गांवों के तीन विकास खंडों में विभक्त होता है। प्रत्येक विकास खंड की जनसंख्या ६० से ७० हजार तक होती है और इसका मुख्य अधिकारी खंड विकास अफसर कहलाता है। इस शृङ्खला की अंतिम किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी है ग्रामसेवक। हरेक ग्रामसेवक के इलाके में ५ गांव सामुदायिक उन्नति कार्य के और १० गांव राष्ट्रीय विस्तार सेवा के रहते हैं। गांव वाले अपनी समस्त कठिनाइयाँ ग्रामसेवक के सन्मुख उपस्थित करते हैं जो उन्हें दूर करने के उपाय बताता है, कारवाई की रूपरेखा स्थिर करता है और गांव वालों की सहायता से उसे क्रियान्वित भी करता है। संक्षेप में वह गांव वालों का पथप्रदर्शक और मित्र होता है।

प्रगति के तीन वर्ष

तीन वर्ष हुए महात्मा गांधी की जन्म तिथि २ अक्तूबर १९५२ को यह कार्यक्रम ५५ कार्य-क्षेत्रों में आरंभ किया गया था। शीघ्र ही कार्यक्रम के विस्तार की मांग बढ़ने लगी। आज ये समुदाय उन्नति कार्य, सामुदायिक उन्नति की एक वृहत्तर योजना के अंग बन चुके हैं, जिसे राष्ट्रीय विस्तार सेवा के जरिये कार्यान्वित किया जा रहा है। इस प्रकार अक्तूबर १९५३ से सामुदायिक उन्नति कार्य और विस्तार खण्ड दोनों साथ-साथ चल रहे हैं। पहले उपयुक्त इलाकों को विस्तार खण्डों के लिए चुना जाता है, बाद में इन्हीं में से कुछ को उस तरह के तीव्र विकास के लिए चुन लिया जाता है, जिसका सामुदायिक उन्नति कार्य के अन्तर्गत निदेश है। इलाके चुनते समय मुख्य रूप से इस बात का ध्यान रखा जाता है कि स्थानीय लोगों में अपनी उन्नति के लिए स्वेच्छापूर्वक काम करने की इच्छा कहाँ तक बलवती है और उनमें कितना सामर्थ्य है।

लक्ष्य और अब तक की सफलता

प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि में लगभग १२,००० गाँव अर्थात् देश की लगभग एक चौथाई ग्रामीण जनता इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आ जायगी। अप्रैल १९५५ तक अर्थात् कार्यक्रम आरंभ होने के ढाई वर्ष बाद ८२८ खण्ड स्थापित हो चुके थे जिनके अन्तर्गत ९९,२९२ गाँव और ६ करोड़ २२ लाख जनता आ चुकी थी। इनमें से ३२,९५७ गाँव जिनकी जनसंख्या २ करोड़ है सामुदायिक उन्नति कार्यक्रम के अन्तर्गत और ६६,३३५ गांव जिनकी जनसंख्या ४ करोड़ १८ लाख है राष्ट्रीय विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत आये थे। इस प्रकार प्रत्येक पाँच ग्रामवासियों में से एक संयुक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत आ चुका है। शेष ग्रामीण जनता भी अधिक समय तक इस कार्यक्रम के लाभों से वंचित नहीं रहेगी। लोक कल्याणकारी नये भारत के पथ पर उसे भी अग्रसर होना है। यही बात

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ध्यान में रखकर भारत सरकार ने यह लक्ष्य निर्धारित किया है कि द्वितीय पंच वर्षीय योजना की अवधि समाप्त होते होते समस्त देश की ग्राम जनता राष्ट्रीय विस्तार कार्यक्रम के अन्तर्गत आ जानी चाहिये।

ग्रामोद्योग

सामुदायिक कार्यों और राष्ट्रीय विस्तार सेवा के द्वारा ग्रामीण इलाके में अपूर्ण रोजगार तो घटा ही है, सभी वर्गों के लोगों के लिए विभिन्न प्रकार के कामों के लिए क्षेत्र बन गया है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत जब समूचा देश इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आ जाएगा तो देश में कुशल और प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या साढ़े तीन लाख होगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थ व्यवस्था में विस्तार होगा, जिसमें कुटीर और छोटे तथा अन्य ग्रामोद्योग आ जाएंगे।

गांधी जी ने ग्रामोद्योगों, दस्तकारियों और कलाओं का महत्त्व पहचान लिया था और इसलिए उनके पुनरुद्धार के आन्दोलन का समारंभ किया था। प्रथम पंचवर्षीय योजना में उनके विकास को महत्त्वपूर्ण स्थान दे दिया गया है और द्वितीय योजना में उन्हें और भी अधिक स्थान मिलेगा। हरेक घर में ग्रामोद्योग शुरू हो जाना चाहिए जिसमें लोग अपनी पुश्तैनी जानकारी और कुशलता का सदुपयोग करें; और सुन्दर कलात्मक कृतियों द्वारा राष्ट्र के धन में और रोज़गार में वृद्धि करें। राज्य सरकारों के सहयोग से ग्रामोद्योगों की उन्नति के लिए एक बोर्ड की स्थापना की जा चुकी है। आगामी पांच वर्षों में यह बोर्ड १४२ करोड़ रुपये खर्च करेगा और ८८ लाख व्यक्ति रोज़गार पा सकेंगे। अखिल भारतीय कर्घा बोर्ड के तत्वावधान में हाथ के कर्घे की बुनाई का विकास होगा और इस प्रकार लाखों व्यक्तियों को रोज़गार मिलेगा। उधर अखिल भारतीय दस्तकारी बोर्ड को यह काम सौंपा गया है कि वह ग्रामोद्योग की वस्तुओं में लोगों की दिलचस्पी बढ़ाये।

बुनियादी शिक्षा

स्वतन्त्र भारत के लिए गांधीजी ने शिक्षा की एक प्रणाली का निरूपण किया था जिसका उद्देश्य बालक अथवा मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वोत्तम गुणों को विकसित करना है। उन्होंने अपनी इस नई शिक्षा प्रणाली को नई तालीम अथवा बुनियादी शिक्षा की संज्ञा दी थी।

इस मूल शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को सर्वतोमुखी विकास द्वारा उसे जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना है। यह शिक्षा भ्रातृ-भाव, आत्म-निर्भरता और नेतृत्व आदि गुणों का पोषण करती है।

बुनियादी शिक्षा में मुख्य बल किसी दस्तकारी पर दिया जाता है, उदाहरणार्थ कताई, बुनाई, बाग़बानी, खिलौने बनाना अथवा चमड़े की चीजें बनाना आदि। व्यावहारिक कार्यों से विद्यार्थी अपने वातावरण के प्रति दिलचस्पी पैदा करते हैं और उन्हें अपने पांवों पर खड़ा होने में मदद मिलती है। इस शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी जीवन के बाद जीवन संघर्ष में उतरना सुगम बन जाएगा। बुनियादी शिक्षा की योजना का सबसे पहला प्रयोग सेवाग्राम में किया गया था। इसके पश्चात प्रयोग के रूप में अनेक बुनियादी स्कूल देश भर में खोले गए। योजना कमीशन ने सिफारिश की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

है कि १४ वर्ष तक की आयु के बच्चों को बुनियादी ढंग से शिक्षा दी जाए। कई हजार जूनियर बेसिक स्कूल पिछले तीन वर्षों में खोले जा चुके हैं। आगामी वर्ष में इस प्रकार के और भी स्कूल तेज़ी से खोले जाएँगे क्योंकि केन्द्रीय सरकार ने बुनियादी स्कूलों के विस्तार के लिए राज्यों को सहायता देने का निर्णय कर लिया है।

अस्पृश्यता का अंत

गांधीजी कहा करते थे कि अस्पृश्यता एक ऐसी महामारी है जिसे दूर करना प्रत्येक हिन्दू का धर्म है। लोकतन्त्र समाज में यह कल्पना भी नहीं की जा सकती कि जन्म के कारण कोई ऊँचा हो सकता है और कोई नीचा। हमारे संविधान ने अस्पृश्यता समाप्त कर दी है और किसी भी रूप में अस्पृश्यता बरतना अपराध घोषित कर दिया गया है। हरिजनों के उद्धार के लिए एक राष्ट्र व्यापी कार्यक्रम का परिपालन करने के लिए प्रथम पञ्चवर्षीय योजना में १४ करोड़ रुपये की व्यवस्था है। चूंकि उनकी हीन स्थिति का मुख्य कारण निरक्षरता है, इसलिए हरिजन विद्यार्थियों को स्कूलों, कालेजों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए मुफ्त शिक्षा की तथा अन्य क्षात्रवृत्तियों की व्यवस्था की गई है। सरकारी नौकरियों में उनकी संख्या में वृद्धि करने के लिए यह प्रबन्ध किया गया है कि जितनी भी जगह होंगी, उनका एक निश्चित भाग हरिजनों के लिए सुरक्षित रहेगा। उनकी आय में वृद्धि करने के लिए उन्हें व्यावसायिक और टैकनिकल शिक्षण की सुविधा भी दी जा रही है। ग्रामीण इलाकों में जहाँ पर अधिकांश हरिजन या तो बटाईदार हैं अथवा भूमिहीन खेतिहर हैं उन सब को राज्यों के भूमि सुधारों और आचार्य विनोबा भावे के भू-दान आन्दोलन से लाभ होगा। अच्छे मकानों की व्यवस्था करने के लिए हरिजनों को जमीनें दी जा रही हैं और सहकारी संस्थाओं के द्वारा उन्हें ऋण देने का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अस्पृश्यता को अवैध ठहरा दिया गया है और अस्पृश्यता बरतने के लिए दण्ड की व्यवस्था कर दी गई है। फिर भी उसे समाप्त करने का एक ही उपाय है कि अस्पृश्यता के विरुद्ध जनमत तैयार किया जाए। हम सबको चाहिए कि अपने देश से यह कलंक मिटाने के लिए भरसक प्रयत्न करें।

लोक कल्याणकारी राज्य में नागरिकों का दायित्व

नए भारत के निर्माण के महान् कार्यों में, प्रत्येक भारतीय साझीदार है। इसमें सभी क्षेत्र आ जाते हैं। आर्थिक क्षेत्र में, राष्ट्र की विकास योजनाओं के लक्ष्य पूरा करने के दायित्व आते हैं। राजनैतिक क्षेत्र में, हमें अपनी सरकार स्वयं चुनने का अधिकार प्राप्त है। इस अधिकार का उपयोग हम केन्द्र और राज्यों के विधान मण्डलों के चुनाव में मत-दान द्वारा करते हैं। इस प्रकार मत-दान का अधिकार एक विशेष अधिकार है जिसका उचित उपयोग किया जाना चाहिए। प्रत्येक भारतीय जिसकी आयु २१ वर्ष हो हो चुकी है, मतदान का अधिकारी है। प्रत्येक ५ वर्ष में लोकसभा और राज्य विधान सभाओं के चुनाव होते हैं। मत डालने के पहले यह जान लेना जरूरी होता है कि मतदाता का जो विवरण दिया गया है वह मत-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दाता सूची में सही-सही लिखा गया है या नहीं। यदि आपका नाम मतदातासूची में नहीं है तो आपको पहले अपने चुनाव क्षेत्र के मतदान पंजीकरण कार्यालय को लिखना चाहिए जिससे कि आप का नाम सूची में लिख लिया जाए।

मतदान के दिन सार्वजनिक छुट्टी रहती है जिससे कि सब लोग सुविधापूर्वक मतदान में भाग ले सकें। चुनाव केन्द्रों के बाहर चुनाव अधिकारी से आपको एक परचा मिलता है। आपके अन्दर जाने पर एक और अधिकारी उस परचे की जाँच-पड़ताल करता है, आपको चुनाव-पत्र दे देता है और आपके बाएँ हाथ की तर्जनी पर ऐसी स्याही से निशान लगा देता है जो मिट नहीं सकती। इसके बाद आपको उस स्थान पर पहुँचा दिया जाता है जहाँ चुनाव पेटियाँ रहती हैं और जहाँ आप बिलकुल अकेले रहते हैं ताकि स्वेच्छापूर्वक मतदान कर सकें। चुनाव पेटियों पर अलग-अलग उम्मीदवारों के अलग-अलग चिह्न रहते हैं। मत-दान पत्र को बिना मोड़े या किसी तरह खराब किए आपको उस उम्मीदवार की पेटी में डालना होता है जिसके पक्ष में आप मत दान करना चाहते हैं। यह मतदान लोकसभा के लिए रहता है। बाहर आने पर आपको दूसरा चुनाव पत्र दिया जाता है जिसे आपको उसी प्रकार राज्य विधान सभा के उम्मीदवार के लिए डालना होता है। इस प्रकार आप लोकसभा और राज्य सभा के लिए मतदान करते हैं।

लोकतन्त्र की रक्षा के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि मतदान शांतिपूर्वक और न्यायपूर्ण ढंग से हो। इसलिए आशा की जाती है कि आप कुछ नियमों का पालन करेंगे। उदाहरणार्थ

(क) आप किसी उम्मीदवार की या उसकी पार्टी की ओर से दी जाने वाली सवारी का उपयोग नहीं करें;

(ख) दूसरे मतदाता के स्थान पर आप मतदान न करें क्योंकि ऐसा करना विधि के अन्तर्गत दण्डनीय अपराध है;

(ग) मतदान के समय आप न तो चुनाव पेटियों में ही किसी तरह की गड़बड़ करें और न उन पर चिपके हुए चिह्नों को ही खराब करें;

(घ) आप यह न बताएं कि आपने किसको मत दिया;

(ङ) चुनाव केन्द्र के चारों ओर १०० गज के फासले में आप न तो किसी उम्मीदवार के लिए कोशिश करें और न किसी तरह का चिह्न ही प्रदर्शित करें।

(च) यदि आप सरकारी कर्मचारी हैं तो आप किसी उम्मीदवार के लिए कोशिश न करें और आपका व्यवहार इस प्रकार का हो कि आपकी निष्पक्षता में किसी को सन्देह न हो।

नागरिकों के रक्षा संगठन

देश की प्रतिरक्षा में नागरिकों का सहयोग प्राप्त करने के लिए और उन्हें आत्म-विश्वास एवं अनुशासन की शिक्षा देने के लिए नागरिकों के अनेक रक्षा संगठनों का आयोजन किया गया है। असैनिकों को सैनिक शिक्षा देने के लिए सबसे पहले प्रादेशिक सेना की स्थापना की गई। इसमें १८ से ३५ वर्ष तक की आयु के सभी स्वस्थ नागरिक सम्मिलित हो सकते हैं। जो लोग इस सेना में भर्ती होते हैं उन्हें ७ वर्ष के लिए कोर में रखा जाता है और ८ वर्ष के लिए रिज़र्व में। यदि आप गाँव के रहने वाले

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हैं तो आप प्रान्तीय शाखा में सम्मिलित हो सकते हैं जहां ३० दिन के प्रशिक्षण की व्यवस्था है। शहरों के और कस्बों के रहने वालों के लिए १२० घण्टों के प्रशिक्षणकी व्यवस्था है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक दलकी स्थापना पिछले वर्ष की गई थी। इसका उद्देश्य ५ वर्ष में पांच लाख व्यक्तियों को प्रारम्भिक सैनिक शिक्षा देना है। १८ से ४० वर्ष तक की आयु के सभी स्वस्थ व्यक्ति इसके सदस्य हो सकते हैं। सैनिक सेवा की शर्त इसके लिए अनिवार्य नहीं है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में अशिक्षित लोगों को साक्षर बनाने का कार्य भी सम्मिलित किया गया है। ३० दिन में उन्हें इतना प्रशिक्षित कर दिया जाता है कि वे देश के प्रत्येक रक्षा के विकास कार्यों में भाग ले सकें। देश के नवयुवकों के लिए राष्ट्रीय केडेट कोर की स्थापना की गई है। इस कोर में स्थल सेना, नौ सेना और वायु सेना की टुकड़ियाँ रहती हैं और ये बड़े युवकों, छोटे बच्चों और लड़कियों के लिए अलग-अलग विभागों में विभक्त है। सैनिक प्रशिक्षण के साथ-साथ राष्ट्रीय केडेट कोर के केडेट ३ सप्ताह के वार्षिक कैम्पों में सामाजिक कार्य करते हैं। वे ग्रामवासियों को सड़कों, नहरों, तालाबों के निर्माण में सहायता देते हैं और साक्षरता प्रसार व डाक्टरी सहायता के कार्यों में भी मदद करते हैं। उन लड़कों और लड़कियों के लिये जो राष्ट्रीय केडेट कोर में स्थान नहीं पाते, सैनिक प्रशिक्षण की माँग को पूरा करने के लिए सहायक केडेट कोर की स्थापना की गई है। यह कोर राष्ट्रीय केडेट कोर के संचालक के निरीक्षण में कार्य करता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट्स

बारह वर्षीय सर्टिफिकेट्स

खरीदने के समय मूल्य : ५ रु०, १० रु०, ५० रु०, १०० रु०, ५०० रु०, १,००० रु०, और ५,००० रु०।

भुनाने के समय मूल्य : ७ रु० ८ आ०, १५ रु०, ७५ रु०, १५० रु०, ७५० रु०, १,५०० रु०, और ७,५०० रु०।

सात वर्षीय सर्टिफिकेट्स

खरीदने के समय मूल्य : ५ रु०, १० रु०, ५० रु०, १०० रु०, १,००० रु०, और ५,००० रु०।

भुनाने के समय मूल्य : ६ रु० ४ आ० १२ रु० ८ आ०, ६२ रु० ८ आ०, १२५ रु०, १,२५० रु० और ६,२५० रु०।

पंच वर्षीय सर्टिफिकेट्स

खरीदने के समय मूल्य : ५ रु०, १० रु०, ५० रु०, १०० रु०, १,००० रु० और ५,००० रु०।

भुनाने के समय मूल्य : ५ रु० १२ आ०, ११ रु० ८ आ०, ५७ रु० ८ आ०, ११५ रु०, १,१५० रु० और ५,७५० रु०।

दस वर्षीय ट्रेजरी सेविंग्स डिपोजिट सर्टिफिकेट्स

२५,००० रुपये तक पूंजी जमा करने के लिए ली जाती है बशर्ते कि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जमा की जाने वाली रकम १०० रुपया या उसका कोई अपवर्त्य हो। एक व्यक्ति के नाम से अधिकतम २५,००० रुपये जमा किये जा सकते हैं। व्याज की वार्षिक दर ३॥ प्रतिशत है।

दस वर्षीय नेशनल प्लेन सर्टिफिकेट्स

खरीदने के समय मूल्य—२५ रु०, ५० रु०, १०० रु०, ५०० रु०।

भुनाने के समय मूल्य—३६ रु० ४ आ०, ७२ रु० ८ आ०, १४५ रु०, ७२५ रु०।

एक व्यक्ति अपने नाम अधिक से अधिक २,५०० रुपये के सर्टिफिकेट रख सकता है।

पन्द्रह वर्षीय ऐन्युटी सर्टिफिकेट्स

प्रचालन मूल्य—३,५०० रु०, ७,००० रु०, १४,००० रु० और २८,००० रु०।

एक व्यक्ति अपने नाम अधिक से अधिक २८,००० रुपये के सर्टिफिकेट्स रख सकता है। प्रत्यर्पण, ३॥ प्रतिशत वार्षिक चक्रवृद्धि व्याज लगाकर, १५ वर्ष तक नियमित मासिक अदायगी के रूप में होता है।

पोस्ट आफिस सेविंग्स बैंक अकाउंट

१०,००० रुपये जमा-धन पर २ प्रतिशत की दर से और बकाया रकम पर १५,००० रुपये तक १॥ प्रतिशत की दर से व्याज दिया जाता है।

आयकर की दरें

प्रत्येक विवाहित व्यक्ति और प्रत्येक हिन्दू अविभक्त परिवार के लिए—

		दर	अधिभार
१.	कुल आय के पहले २,००० रु० पर	+	+
२.	कुल आय के अगले ३,००० रु० पर	६ पाई प्रति रु०	पहले कालम में निर्दिष्ट दर का बीसवाँ भाग
३.	कुल आय के अगले २,५०० रु० पर	१ आना ६ पाई प्रति रुपया	....
४.	कुल आय के अगले २,५०० रु० पर	२ आना ३ पाई प्रति रुपया	....
५.	कुल आय के अगले ५,००० रु० पर	३ आना ३ पाई प्रति रुपया	....
६.	कुल आय के शेष भागपर	४ आना प्रति रु०	....

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारतीय साहित्य के विश्वविख्यात प्रकाशक
और विक्रेता (लाहौर वाले)

मोतीलाल बनारसीदास

का दिल्ली कार्यालय ७८ चांदनीचौक, (कुमार टाकीज) तथा
स्टेट बैंक आफ इण्डिया के सामने आ गया है।
पोस्ट बाक्स नं० वही १५८६ है।

हमारी बनारस ब्रांच का पता यह है :—

मोतीलाल बनारसीदास
नैपाली खपरा, पो० बा० ७५, बनारस।

और पटना ब्रांच का पता यह है :—

मोतीलाल बनारसीदास
बांकीपुर, पटना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवतरणिका

"ज्योतिश्चक्रस्य केन्द्राय जगतः स्थितिरूपिणे । त्रिनेत्रनेत्ररूपाय ग्रहेशाय नमो नमः ॥"

इस पृथिवी के याम्योत्तरीय दोनों ध्रुवों के मध्य समानान्तर में जिस वृत्त की कल्पना है उसे विषुवद्वृत्त कहते हैं, और सूर्य के गमन मार्ग को क्रान्तिवृत्त कहते हैं। यह क्रान्तिवृत्त जहां विषुवद्वृत्त को काटता है उसे अयन सम्पात कहते हैं। यह वर्ष में दो बार होता है, एक सायनमेष संक्रान्ति के समय वसन्तसम्पात, दूसरा सायनतुला संक्रान्ति के समय शरत्सम्पात। यह भचक्र रेवती के अन्तिम भाग से २७ अंश दोनों ओर जाकर लौटता है। एकबार में २६००० वर्ष का समय लगता है। रेवती योग तारा से जो सम्पात की दूरी है उसे अयनांश कहते हैं "स्फुटदृक्तुल्यां गच्छेदयने विषुवद्द्वये।" सायन कर्कसंक्रान्ति और सायन मकरसंक्रान्ति एवं सायन मेषसंक्रान्ति तथा सायन तुलासंक्रान्ति के समय अयन चलन स्पष्ट दीखता है। इसी अयन चलन एवं वेधोपलब्ध अयनांश तथा आरम्भ स्थान सम्बन्धी मतभेद होने से आज ज्योतिष संस्थाओं में मतभेद बढ़ता ही जा रहा है। इसी का यह परिणाम है कि प्रायः दाक्षिणात्यों के पंचाङ्गों में मलमास संक्रान्ति निरयन ग्रहों में बहुधा अवाञ्छनीय अंशों तक का अन्तर देखने में आता है। इसी अयनांश को बहुधा १९ से लेकर २४ तक मानने वाले देखे जाते हैं। परन्तु हमने आर्ष वाक्यों का समादर कर पञ्चाङ्गनिर्माण को एक महान् एवं लौकिक व्यवहार तथा धर्म का प्रधान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य समझते हुए श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग में सूक्ष्म अयनांश का साधन करने में सम्प्रति बहुसम्मत चित्रापक्षीय मत को और श्री १०५ धर्म मार्तण्ड बघाटनरेश जी के आदेशानुसार धर्म-शास्त्र सम्मत तिथ्यादि साधन में अदृश्य (आर्ष) गणना को ही स्वीकार किया है। आचार्य कमलाकर ने अपने सिद्धान्ततत्त्वविवेक में लिखा भी है—

"अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद्युक्तितः कुरु। गणितं यदि दृष्टार्थं तद्दृष्टं युद्भवः सदा ॥"

शाकल्यसंहिता में भी—

"तिथ्यादिसाधने क्वापि नार्केन्द्वोर्बीजयोगिता। राहुदर्शनतोऽन्यत्र दृक्सिद्धा नेष्यते तिथिः ॥"

उधर स्पष्टग्रहों के विषय में फलितज्योतिष के श्री केशवाचार्यादिकों ने "यत्पक्षे हि घटन्त" तथा "यान्ति संसाधिताः खेटा येन दृग्गणितैक्यताम्" इत्यादि लिखकर वर्ष प्रश्न के लिये तात्कालिक दृक्पक्षीय गणित को ही स्वीकृत किया है। तदनुकूल हमने भी नये ध्रुवे के अनुसार विशेष परिश्रमपूर्वक दृक्पक्षीय दैनिक सूक्ष्मग्रह स्पष्ट करके लिखे हैं जो यन्त्रों द्वारा वेध करके आकाश में प्रत्यक्ष दिखाये जा सकते हैं। जो दैनिक ग्रहों के साथ लिखा हुआ सूर्य है वह वेधोपयोगी दृक्पक्षीय है, और तिथ्यादि के सामने लप्टर में जो दैनिक सूर्य लिखा हुआ है वह सूर्यसंक्रमण एवं क्षयाधिकमासनिर्णयार्थ सौरपक्षीय है, क्योंकि महाकवि कालिदासजी ने लिखा है—

"श्रीसूर्यसिद्धान्तमतोद्भवार्कसाध्यौ तदा तावधिकक्षयाख्यौ।
मासौ तथा संक्रमकाल एव साध्यः सदा हौरिकशास्त्रविद्भिः ॥"

प्रश्न मुहूर्तादिक में चन्द्रमा का स्पष्ट नवांशादि देखने के लिए दस दस घटी के अन्तर पर (दिन में ६ बार) सौरपक्षीय चन्द्रस्पष्ट भी कठिन परिश्रम करके लिखा है, जोकि आप को अन्य किसी भी पञ्चांग में नहीं मिलेगा।

इस पञ्चांग का फलित लेखन एवं अन्य उपयुक्त विषयों का सङ्कलन मेरे पूज्य श्रीपिताजी (प्रधान सम्पादक) ने किया है, और गणितादि का सम्पूर्ण कार्य मुझ अल्पज्ञ ने किया है। यद्यपि मैंने श्री पूज्य ज्येष्ठ भ्राता साहित्याचार्य श्री सत्यव्रतजी शास्त्री कविवर्य के तत्त्वावधान में अपने अनुज शक्तिधर शास्त्री के साथ सम्पूर्ण गणित किया है, तथापि यह अङ्कजाल बड़ा ही गहन है, अतः कदाचित् "गन्तुर्हि स्खलनं भवेत्" —"भ्रान्तिर्मनुष्यधर्मः" इस न्याय से प्रमादवश कोई त्रुटि अथवा लिखने छापने की कोई अक्षम्य अशुद्धि रह गई हो तो उसे विद्वान् निर्मत्सर हो दयार्द्रदृष्ट्या सुधार कर अपने नूतन सुझाव के साथ सूचित करने की कृपा करें यही नम्र निवेदन है—

श्रीमार्तण्ड भवन कुराली	निर्मत्सराणां सतामनुचरः—
(अम्बाला)	प्रियव्रतशर्मा शास्त्री (पञ्जाब) साहित्याचार्य-
ज्ये. शु. २ सं. २०१२	(राजस्थान) सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य (काशी)

आभार प्रदर्शन

मुझ जैसे अल्पज्ञ को ज्योतिष सिद्धान्त का पूर्ण ज्ञान तथा काशी की कठिन ज्योतिषाचार्य परीक्षा में सफलता प्राप्त करवाने का सम्पूर्ण श्रेय श्रीगुरुवर्य्य श्री ६ अच्युतानन्दजी झा ज्योतिषाचार्य्य प्रो. संस्कृत कॉलेज खुर्जा वालों को है और आधुनिक भूमण्डलीय सूर्यग्रहणादि-दृश्यगणित में निपुण कराने का श्रेय मेरे श्रीपिताजी के मित्र जयपुर पञ्चांगकर्ता श्री गुरुवर्य श्री ६ पं० वंशीधर ज्योतिर्भूषण सिमारला वालों को है, अतः मैं सफल होकर श्रद्धा भक्ति युक्त चित्त से इनों के चरणों में नतमस्तक होकर आभार प्रदर्शन करता हूँ। (प्रियव्रत शर्मा)

कात्यायनोक्त नक्षत्रों के अन्य समर्थक

गत वर्षों के श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग पढ़ने वाले विद्वज्जन इस बात से पूर्ण परिचित हैं, कि कात्यायनोक्त श्रवणादि नक्षत्रचतुष्टयी में विवाह करने के पक्ष में काशी जम्मू काश्मीर पटियाला उज्जैन दरभंगा जयपुर गढ़वाल मुंबई तथा पूर्वपिञ्जाब के सैकड़ों धुरन्धर विद्वानों ने अपने २ सम्मतिपत्र भेज कर इनका समर्थन किया है। अब भी कोई न माने तो दुराग्रह ही कहा जायेगा। अनेकों नये सम्मतिपत्र मिल रहे हैं, जिनको स्थानाभाव से नकल नहीं दे सके। केवल परिचयार्थ उन विद्वानों में से कुछेक विशिष्ट विद्वानों के नाम मात्र लिख रहे हैं।

१ श्री पं. भद्दाभिराम जी साहित्य न्यायमीमांसाचार्य कलकत्ता विश्वविद्यालय संस्कृत विभागाध्यक्ष। २. श्री पं० वृद्धिचन्द्रजी धर्मशास्त्र व्याकरणाचार्य महाराज सं. कालेज जयपुर। ३. श्री पं० जगदीश जी कथाभट्टसाहित्याचार्य साहित्य प्रोफेसर महाराज संस्कृत कालेज जयपुर। ४. श्री पं० घनश्याममिश्र शास्त्री कर्मकाण्डभूषण, मु. साम्बा (जम्मू) आदि २।

वेद एक था या चार इसका उत्तर विवाहादिमुहूर्तों के पृष्ठों के बाद देखिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मूक प्रश्न का अनुभूत प्रकार

बिना पूछे किसी के मन का प्रश्न कह देने से ज्योतिषी की मानप्रतिष्ठा विशेष होती है और ज्योतिश्शास्त्र पर प्रष्टा की श्रद्धा भी बढ़ती है। एतदर्थ हम श्री मार्तण्डपञ्चाङ्ग प्रेमी पण्डितों के हितार्थ अनुभव सिद्ध मूक प्रश्न का प्रकार लिखते हैं, जिस से मूक प्रश्न पूर्ण मिलता है। स्मरण रहे कि प्रश्नकालिक शुद्ध स्वदेशीय लग्न स्पष्ट तथा तात्कालिक सूक्ष्म ग्रह स्पष्ट बनाने में गलती न हो। हमारे पञ्चाङ्ग के दैनिक ग्रह स्पष्टों से केवल घटचादि चालन द्वारा तात्कालिक प्रश्नोपयोगी सूक्ष्म ग्रह आते हैं।

प्रश्न कथन प्रकार—प्रश्न कुण्डली में नव ग्रहों में से इष्टदेव नमस्कृति पूर्वक देखिये जो ग्रह अधिक बली (उच्च, स्वराशि, मित्रराशि, मूलत्रिकोण, केन्द्रस्थ, स्वनवांश, वर्गोत्तमांश अर्थात् जिस राशि का ग्रह हो नवांश में भी उस राशि का) हो, वह लग्न से जिस भाव में हो उस भाव का निःसन्देह प्रश्न कहे। यदि उस ग्रह की स्थिति द्वारा दो तीन प्रश्न निकलें तो उनमें से प्रष्टा की परिस्थिति,आयु,देश और कालादि का विचारकरके बुद्धिद्वारा जो ठीक बैठे वही प्रश्न कहे। जैसे किसी ने प्रश्न किया तो उस समय अन्य ग्रहों से बली राहु मिला और वह बैठा भी लग्न में है, तो राहु के प्रथम भाव में होने से पुत्र और विद्या का प्रश्न समझें। ऐसे दो प्रश्न निकले,अब प्रष्टा की ओर देखा तो उसकी आयु १६वर्ष के लगभग है तो पुत्र एवं विद्या दोनों प्रश्नों में से ज्योतिषी को चाहिये कि उसे कहे आपका विद्या सम्बन्धी प्रश्न है। अगर वही प्रष्टा बड़ी उमर का हो तो पुत्र विद्या दोनों में से पुत्र का प्रश्न कहना युक्तिसंगत था, इत्यादि बुद्धिमान् ज्योतिषी को चाहिये कि मूक प्रश्न कहने के लिये शास्त्र और बुद्धि दोनों का उपयोग करके जो निकले वही कहे तो सत्य होगा।

सूर्य—

१ भाव में बली-शरीर संबंधी प्रश्न
२ ,, में—धन सम्बन्धी
३ ,, में—झगड़े का प्रश्न
४ ,, में—जय उच्चता का
५ ,, में—पुत्र सम्बन्धी
६ ,, में—यात्रा सम्बन्धी
७ ,, में—स्त्री सम्बन्धी
८ ,, में—जहाज बेड़ी दरिया जल सम्बन्धी
९ ,, में—यात्रा विदेश संबन्धी
१० ,, में—राज कर्म संबन्धी
११ ,, में—धन लाभ क्रयविक्रय विषयक
१२ ,, में—शत्रु झगड़ा परदेश खर्च का प्रश्न समझे

चन्द्रमा—

१ भाव में बली होकर बैठा हो तो-क्षेत्र धन और भोजनका प्रश्न
२ भाव में—धन और झगड़े का
३ ,, में–वर्षा जल का
४ ,, में—माता व मकान का
५ ,, में—पुत्र का
६ ,, में—रोग का
७ ,, में—स्त्री का
८ ,, में—भोजन चिन्ता
९ ,, में—मकान का
१० भाव में—यात्रा का
११ ,, में—क्षेत्र खाता दुष्ट पुरुष, पवित्रता वस्त्र कपड़े आदि का
१२ ,, में—नष्ट वस्तु के लाभ का

मंगल—

१ भाव में बली हो तो—भय वा झगड़े का प्रश्न कहे।
२ भाव में—नष्ट वस्तु का
३ ,, में-भाई व मित्र वा क्लेश का
४ ,, में—मित्र या वैरी वा चौपाया व क्रयविक्रय का
५ ,, में—क्रोध, नीति नौकरी का
६ ,, में—सोना, सिक्का कली चांदी का,
७ ,, में—नष्ट वस्तु, नौकर,धन, घर जमीन का
८ ,, में—यात्रा का
९ ,, में—झगड़े का
१० ,, में—शत्रु के आने का
११ ,, में—लाभ का
१२ ,, में—युद्ध झगड़े का

बुध—

१ भाव में हो तो—शस्त्र व सुख का प्रश्न समझें।
२ ,, में—वस्त्र, धन, शरीर का
३ ,, में—सास भाई का
४ भाव में—बावली, जल, खेती बगीचा का
५ ,, में—सन्तान और कार्य-सिद्धि का
६ ,, में—कार्यसिद्धि धन, खोई हुई गुप्त स्त्री की मैत्री का
७ ,, में—पक्षी और स्त्री का
८ ,, में—राजा व आज्ञा नष्ट चीज का
९ ,, में—पशु पक्षी का
१० ,, में—शास्त्र,कथा व सुख का
११ ,, में—धन लाभ का
१२ ,, में—पाखण्ड,द्रोह छल और सुख का

गुरु—

१ भाव में बली हो तो—सुख का प्रश्न समझो।
२ ,, में—धन, कल्याण, सुखका
३ ,, में—संबन्धी श्वसुर का
४ ,, में—कुल संबन्धी विवाह का
५ ,, में—पुत्र, प्रीति, विवाह का
६ भाव में—स्त्री, विवाद, और गर्भ का
७ ,, में—अर्थ द्रव्य मंत्र सिद्धि
८ ,, में—सूम का
९ ,, में—परदेश, मार्ग, धन प्राप्ति का
१० ,, में—मित्र फूटना और सुख का
११ ,, में—स्थिति, सुख का
१२ ,, में—यश का

शुक्र—

१ भाव में बली हो तो इष्ट देव नाचना और मित्र सुख का
२ भाव में—रत्न धन और वस्त्र का
३ ,, में—स्त्री,गर्भ,बहिन भाई का
४ ,, में—विवाह, सुख का
५ ,, में—मित्र, भाई और पुत्रका
६ ,, में–गर्भोत्पत्ति का
७ ,, में—स्त्री, योगाभ्यास और प्रीति का
८ भाव में—दूसरे की स्त्री का
९ ,, में—स्वप्न का
१० ,, में—श्रेष्ठ कर्म का
११ ,, में—स्त्री व झगड़े का
१२ ,, में—नष्ट वस्तु का

शनि—

१ भाव में बली हो तो—रोग वा स्त्री का
२ भाव में—विद्या पुत्र का
३ ,, में—भाई के नाश का
४ ,, में—स्त्री के दूध व अन्य दूध का
५ ,, में—दो पुरुषों की कार्य सिद्धि का
६ ,, में—शत्रु का
७ ,, में—स्त्री वा पुत्र का
८ ,, में—व्यापार का
९ ,, में—यात्रा का
१० ,, में—धन वा आरोग्य का
११ ,, में–विद्या वा यश का
१२ ,, में—शुभकर्म, खर्च अथवा शुभ कर्म में खर्चका प्रश्न कहे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रह | केतु

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

२ „ में—मकान का ... ३ „ में— ... में—पुत्र प्रीति विवाह का ... प्रीति का ... शुभ कर्म में खर्चका प्रश्न कहें

राहु

१ भाव में हो तो—पुत्र और विद्या का प्रश्न समझे
२ „ में—यश वा आरोग्य का
३ „ में—मित्र वा भाई का
४ „ में—स्त्री सुख का
५ „ में—द्रव्य का
६ „ में—व्यापार का
७ „ में—अन्य देश का
८ „ में—नष्ट द्रव्य कूप जमीन धन का
९ „ में—जय का
१० „ में-शोक दुःख वा भय का
११ „ में—लाभ का
१२ „ में—विवाह खर्च वा विवाह का खर्च

केतु

१ भाव में हो तो—लाभ वा खर्च का
२ „ में—मैत्री वा जय का
३ „ में—शोक पुत्र भाई का
४ „ में—द्रव्य वा वृक्ष का
५ „ में—स्त्री नौकर वा अधिकार का
६ „ में—नृत्य गायन वा रोग का
७ „ में—मन्त्र सिद्धि का
८ „ में—क्रूर कर्म वा मरने का
९ „ में—विद्याभ्यास वा पर स्त्री संग का
१० „ में—घर मकान वा सुख का
११ „ में—सब प्रकार के लाभ का
१२ „ में—नष्ट वस्तु, नजर वा खर्च का प्रश्न कहना चाहिए

नोट—मूक प्रश्न विषयक अन्य चमत्कारी संकेत भी आगामी वर्ष के पञ्चाङ्ग में लिखे जावेंगे।

मंत्रों का अद्भुत चमत्कार

मननात्त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्जपात्सिद्धिर्न संशयः॥

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह होता है कि जिनके दृढ़ इच्छा शान्ति पूर्वक उच्चारणमात्र से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं, थोड़े शब्दों में इसी का नाम मन्त्र है। इसमें शब्दों का ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कंपन (स्वरलहरी) उत्पन्न होता है। जिसमें रचना करने की तथा इच्छित वस्तु को आकर्षित करने की बड़ी प्रबल शक्ति होती है और वह मानसिक तथा भौतिक आकृतिपर आश्चर्यजनक प्रभाव डालने के साथ-साथ जिन कामों को हम असम्भव समझते हैं या वर्षों में भी नहीं कर सकते, उन्हें वह दिव्यशक्ति चन्द मिनटों में पूर्ण कर सकती है।

मन्त्र शास्त्रों का कथन है कि वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तांत्रिक मन्त्रों को भगवान शिव ने शक्तिमान् बनाया। इसी तरह कलियुग में शिवावतार श्री शावरनाथ जी ने शावरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की है। मन्त्र का पुरश्चरण करते हुए गुप्त रक्खें, प्रकट करने में उस किये हुए पुरश्चरण का प्रभाव कम वा नहीं के बराबर रह जाता है। ऐसी गलती होने पर पुनः गुप्तरीति से पुरश्चरण करे अत्युत्कट प्रभाव होगा।

शावरी मन्त्रों के चमत्कार—कलियुगी क्षुद्रजीवों के उपकारार्थ श्री शावरनाथजी ने शावरीमन्त्रों का निर्माण किया है। शावरीमंत्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है जिसके प्रायः कोई अर्थ नहीं होते परन्तु श्री शंकरजी के प्रताप से वह असर से खाली नहीं है। श्री गो० तुलसीदास जी ने इस विषय में क्या ही अच्छा कहा है—

अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेशप्रतापू॥

नोट—स्मरण रहे इन मंत्रों को जैसा लिखा वा बतलाया गया हो वैसा ही जपना और बोलना चाहिए। अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाकर किसी शब्द वा अक्षर को न्यूनाधिक न करें।

यंत्र विज्ञान

अनन्त अज्ञात प्रकृति के अन्तराल में मानवज्ञान से परे कितनी अपार एवं महाशक्तियां छिपी पड़ी हैं इसकी गणना कौन कर सकता है? मनुष्य ज्ञानके उस अपार सिन्धु के किनारे भटकता रहता है और कभी एक दो पुलिन पर पड़े सीप या मोती पा जाता है, वह समझता है कि बस यहीं समाप्त है, इतना ही सब कुछ है, महर्षियों की कठोर साधना ने उन्हें जहां पहुंचा दिया था, वहां उनके लिए स्थूल और सूक्ष्म के सारे रहस्य हस्तामलकवत् थे। प्रकृति के उदर का विशाल प्रान्त उनकी दृष्टि के सामने अनावृत था। उन्होंने उससे देखा उसकी छानबीन की उसका पता लगाया और उसमें से जितना उन्हें लोककल्याण के लिए आवश्यक प्रतीत हुआ, प्रसंगवश जितने की आवश्यकता पड़ी उसे वे जगत् में प्रगट कर गये। यंत्रविज्ञान उन तपोमूर्त्ति ऋषियों की एक उदार देन है, पुरश्चरण के बाद उसके अन्दर एक महाशक्ति उत्पन्न होती है। ऋषियों ने बतलाया है कि कामना या उद्देश्य भेद से एक ही यंत्र जो रेखाओं से नियंत्रित होने के कारण ही यंत्र कहलाते हैं, विभिन्न वस्तुओं से विभिन्न पदार्थों पर सीधे वक्र उलटे आदि क्रमों से बनाया जाता है। जैसा उद्देश होता है वैसा ही विधान के अनुसार ये यंत्र बीज मन्त्रों से अथवा देवताओं के अंग रूप रेखाचित्र या मण्डलाकृति से बनाये जाने का प्रकार है। किंबहुना मन्त्र की भांति यंत्र भी एक स्वतंत्र एवं शक्तिशाली विज्ञान है। जिन कार्यों में औषधि और मानवी बुद्धि असमर्थ हो जाती है, वह भी श्रद्धापूर्वक सिद्ध किये यंत्रों द्वारा बड़ी सरलता से सिद्ध होते देखे गये हैं।

आंख फोला झाड़ने का मन्त्र

इन्द्र तारा की सात बेटी सातों कान्धे कुदारी, सातों चली फोला काटने, फोला काटो आंखें राखो, दोहाई ईश्वर महादेव, नैना योगिनी कामरू कामक्षया, गौरा पार्वती को।

विधि—लोहे की करद लेकर मन्त्र पढ़ता जावे, इस तरह सात लकीरें खींचे सात मन्त्र पढ़कर फिर मन्त्र पढ़ता जाय और एक लकीर को काट कर मुख से आंख की तरफ फूंक मारदे इस तरह सात लकीरों को काटे फिर करद को वहीं पर गाड़ कर उसके ऊपर टोकरा ढक दे। इक्कीस दिन बराबर झाड़ने से नया फोला जाला कटता चला जावेगा। २१वें दिन आंख बिल्कुल ठीक हो जावेगी।

नजर झाड़ने का मन्त्र

शुक्र शनीचर मङ्गलवार टोनाहिन चली बीर दरबार। झारभूर चङ्गा किया टोना हिन के मुड़वा पर पटक दिया।

सिद्ध करने की विधि—शुक्रवार के दिन सवा हजार गोलियां मन्त्र पढ़कर बनावे आटे की, शनिवार को मन्त्र पढ़ कर जल में मछलियों को डाले, सिद्ध हो जाय। फिर जिसकी नजर दूर करनी हो राख लेकर उसके ऊपर २१ बार मन्त्र पढ़ कर बच्चे की माता को दे दे, कह दे कि इसके मुंह, नाक, पेट, मस्तक को बिभूती लगा दे। बच्चा अच्छा हो दूध पीना शुरू कर देगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

—: नजर की सिद्ध यन्त्र :—

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ॐ	ह्रीं	श्रीं
क्लीं	ह	नु
म	ताय	नग

यह यन्त्र रक्त चन्दन से भोजपत्र या कागद पर लिखकर बालक के गले में बांधे तो नजर न लगे। आजमाया हुआ है।

मवेशियों के घाव के कीड़े मारने का मन्त्र—गङ्गा पार बबूर के गाछी झड़े कीड़ा झड़े रसाई ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दुहाई—विधि—शाम के वक्त नीम की टहनी से २१ बार इस मन्त्र को पढ़कर झाड़े—सिद्ध करने की विधि—अनार की कलम से लाल चन्दन की स्याही से कागज पर १०८ वार लिखे, ग्यारह मरतवा रोज लिखता जावे बारहवें दिन दरया या तालाब के किनारे जाकर आटा गून्धकर एक परची मन्त्र की आटे की गोली मिला कर मछलियों को डालता जावे, तेरहवें दिन कुछ बालकों को मिट्ठा भोजन करवावे। तब यह मन्त्र काम करेगा, अन्यथा नहीं।

श्री घण्टाकर्ण का चमत्कारी मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशक
आधि व्याधि विपत्ति च महाभीति विनाशय ॥
नाममन्त्रोऽस्ति ते सिद्धः सर्व मङ्गल कारकः इष्टसिद्धि महासिद्धि जयं लक्ष्मीं विवर्धय ॥
त्वच्छ्रद्धा भक्तियोगेन भवन्तु सर्वशक्तयः पराभवन्तु दुष्टाश्च शत्रवो वैरिदुर्जनाः ॥
आपत्कालेषु मां रक्ष मम बुद्धि प्रकाशय सर्वोपद्रवतो रक्ष घोर रोगान्विनाशय ॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर धनसमृद्धि प्रवर्धय। राज्यं च राज्यमानं च बलं बुद्धि प्रवर्धय॥
ॐ क्रीं ह्रीं श्रीं घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशक। महारोगान्भयान्घोरान्नाशय नाशय द्रुतम्॥
दर्शनं देहि प्रत्यक्षं संरक्ष सर्व संकटात् रणे वने समुद्रे च रक्ष संरक्ष मे द्रुतम् ॥
अग्निचोरादितो रक्ष त्वन्नाममन्त्र जापतः ह्रीं घण्टाकर्ण नमोऽस्तुते ठः ठः ठः स्वाहा ॥
ध्यान—रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तगन्धानुलेपनः सेवितो यक्षकन्याभिर्वेष्टितश्चन्द्रशेखरः ॥
एवं ध्यात्वा महावीरं जपेद् रुद्र सहस्रकम् पायसान्नेन जुहुयाद् गुग्गुलेन घृतेन वा ॥

उक्त मन्त्र को पहिले सूर्यचन्द्रग्रहण में अथवा ११ हजार जप कर सिद्ध कर ले, तब प्रयोग में लाना चाहिये। यदि इस मन्त्र को परोपकार दृष्टि से कार्य में लाया जाय तभी कार्य होता है, व्यापारिक दृष्टि से नहीं। कुत्ते के काटने पर "ठः ठः ठः स्वाहा" इस मन्त्र को पढ़कर मिट्टी के गोले से सात बार झड़े तो कुत्ते के बाल मिट्टी के गोले के अन्दर आ जाते हैं। गौ की रक्षा में इस मन्त्र को सात बार जप कर गौ पर हाथ फेरने से गौ के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं। इस सिद्ध मन्त्र से बड़े २ साधक कार्य लेते हैं, नारियल की गिरि, छोहारा, दाख, घी, शक्कर, मधु से बारह हजार होम करने और इस मन्त्र का यन्त्र बनाकर अपने पास रखने से सब उपद्रवों की शान्ति होती है। प्रातः २१ बार पढ़कर तीन अञ्जलि जलपान करने से विद्यावृद्धि, इतनी ही बार अभिमन्त्रण कर अपने थूक का तिलक कर राजदरबार कोर्ट आदि में जाने से अपना अभीष्ट कार्य सिद्ध होता है। पगड़ी की कोन में गांठ बांध कर उस गांठ को लटकाने पर दुर्जन वा शत्रु वशीभूत हो जाता है। अपने ओढ़ने के वस्त्र का अभिमन्त्रण कर ओढ़ने से आठ प्रकार के भयों की निवृत्ति मार्ग में होती है। ग्रहदोष, शाकिनीदोष, रोगभय में संमार्जनी से झाड़ देने पर वह दोष हटता है। लक्ष्मी प्रार्थना पूर्व मुख से श्वेत वस्त्र धारण कर ७२ दिन भोजनोत्तर श्वेतासन पर सवा लक्ष जप करने से और मेवों का होम करने से ६ महीने के भीतर धनवृद्धि होगी। पञ्चामृत से रोगनिवृत्ति, गुग्गल के होम से भयनिवृत्ति होती है। इसी मन्त्र से सात वार फूंक देने से दाढ़ की पीड़ा दूर होती है। नौ तागे का कन्या के काता हुए सूत को सिर से पैर तक नाप कर उसमें सात गांठें दे। इक्कीस वार अभिमन्त्रित कर गुग्गुल की धूप देकर स्त्री की कमर में बांधने से गर्भस्तंभन होता है। मन्त्र से २१ बार फूंक देकर स्त्री को वस्त्र ओढ़ाने से उसका बालक रोने से रुकता है। चन्दन को घिस कर जल में मिला दे और उस जल को अभिमन्त्रित कर भूतग्रहपीडित को पिलाने से भूतभय दूर होता है।

१ पैसा मधु कुम्हार के चाक की मिट्टी, मिट्टी के कसोरे में धर कर मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गल्ला धरने के पास एक ओर गाड़ देने से लाभ सात गुणा होता है। नमक की कङ्कड़ी सात मुट्ठी राख, सात सात बार अभिमन्त्रित कर आंख पर बांधने से आंखों का नया फोला कटता है। सात वार भस्म से माथे को झाड़ने से सिर का दर्द साफ होता है। शीतज्वर, मासिकज्वर, मोतीझरा आदि २१ बार झाड़ने से दूर होता है। बिक्री की चीजें न बिकती हों तो सात बार उन पर हाथ रखकर मन्त्र पढ़ना चाहिये। इस मन्त्र को हिंगुल से घर के भीतर दीवार पर लिख देने से आधि व्याधि महामारी आदि नहीं होतीं। सात बार मन्त्र से कान को फूंक दे, पीप निकलनी बन्द होगी, दर्द भी हट जावेगा। इस मन्त्र से १०८ बार चित्त सोकर जप करे और पञ्चाङ्ग धूप दे, नाभि पर घी का दीपक सुरक्षित रूप से जलावे, सात दिन में गई वस्तु चोर से मिले। २१ बार अभिमन्त्रित कर कच्चे चावल चोरी गये स्थान में सभी को खिलावे, चोर के मुंह से खून गिरेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

राशयः	वैशाख	ज्येष्ठ

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशयः	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	अचानक लाभ, सन्तान चिन्ता, शत्रु नाश, कारोबार श्रेष्ठ, बन्धु सुख।	शरीरकष्ट, खर्च अधिक, कुटुम्ब व मित्र सुख, राज्य भय, स्त्री सुख।	रोग पीड़ा, सन्तान सुख, भाग्योदय, लाभ उत्तम, किसी काम में खर्च हो।	शरीर सुख, लाभ मध्यम, चित्त अशान्त, सन्तान सुख पशुहानि, यात्रा में कष्ट।	शरीर कष्ट, धनहानि, काम में विघ्न, मित्रों से मदद, शत्रुभय, लाभ मध्यम।	स्वास्थ्य मध्यम, मित्र-बन्धु-सुख, शत्रुनाश, दौड़ धूप, चित्त में व्याकुलता।
वृष	स्वास्थ्य ठीक, स्त्रीचिन्ता, राजमान, धर्म में अरुचि, मित्र विरोध।	चित्त में अशान्ति, कार्य में विघ्न, भ्रातृसुख, लाभ मध्यम, स्थान हानि।	शरीर सुख मध्यम, चौर-भय, स्त्री कष्ट, गृहसुख, राज सम्मान।	स्त्री रोगी रहे, लाभ व्यय सम, सन्तति सुख मध्यम, राज्य सम्मान।	स्वास्थ्य खराब, गुप्त चिन्ता, पुत्रसुख, स्त्री कष्ट धन प्राप्ति, राज सम्मान।	कुटुम्ब सुख, नये काम की योजना, सन्तान सुख मध्यम, स्त्री कष्ट।
मिथुन	लाभ उत्तम, शत्रु नाश, राज्य से सुख, अग्निभय, रक्त विकार।	खर्च ज्यादा, स्वास्थ्य मध्यम, शत्रुनाश, मानसिक चिंता, यात्रा में कष्ट।	चित्त अशान्त, शत्रु नाश, प्रतिष्ठा वृद्धि, धर्म में अरुचि, व्यय अधिक।	शत्रु पराजित, स्वास्थ्य-अच्छा, खर्च ज्यादा, कुटुम्ब सुख, धर्म हानि।	शत्रु नाश, चित्त प्रसन्न, नये काम की योजना, स्वास्थ्य उत्तम, व्यय।	शत्रु नाश, शरीर सुख, कारोबार बढ़े, चित्त शान्त यश फले, लाभ हो।
कर्क	सन्तति कष्ट, स्त्री द्वारा विशेष व्यय, राज भय कारोबार मध्यम।	शरीर सुख, स्त्री पुत्र पीड़ा, लाभ श्रेष्ठ, खर्च प्रबल, व्यर्थ विवाद।	धन प्राप्ति, रक्त विकार, सन्तान द्वारा खर्च, यात्रा में कष्ट।	स्वास्थ्य खराब, फायदा अच्छा, कोपवृद्धि, संतान कष्ट, धर्म में रुचि।	सन्ततिकष्ट धनहानि, चित्त अशान्त, यात्रा में विघ्न, नेत्र पीड़ा।	कोपवृद्धि, शरीर सुख, सन्तान कष्ट, पैर में पीड़ा मासान्त में लाभ।
सिंह	इष्ट मित्र से हर्ष, स्वास्थ्य खराब, बन्धु सुख, अचानक हानि।	राज्य भय, पशु व खेती हानि, शत्रुनाश, धनलाभ व्यापार अच्छा।	शरीर सुख, कार्य में असफलता, स्त्री कष्ट, राज्य सम्मान।	स्वास्थ्य मध्यम, घर में अनबन, अचानक यात्रा, कारोबार अच्छा।	स्त्री कष्ट, स्वास्थ्य मध्यम, लाभ श्रेष्ठ, मान वृद्धि, राज्य में विजय।	नेत्र पीड़ा, स्त्री कष्ट, गृह कलह, व्यय, व्यापार मध्यम।
कन्या	बन्धु चिन्ता, पुण्य की ओर प्रवृत्ति, कारोबार ठीक, लाभखर्च सम।	चित्त स्वस्थ, प्रतिष्ठा, प्रगति, संतान कष्ट, राज्य सम्मान, लाभ श्रेष्ठ।	व्यापार वृद्धि, लाभमध्यम, व्यर्थ विवाद, शत्रु नाश, स्वास्थ्य उत्तम।	सितारा चमके, शत्रु दबें, राज्यमान, कारोबार बढ़े स्वास्थ्य अच्छा।	शत्रुनाश, स्वास्थ्य श्रेष्ठ, प्रताप बढ़े, लाभ उत्तम, किसी काम में रुपया लगे।	सिर में पीड़ा, भ्रातृ विरोध धर्म में अरुचि, शुभ काम में रुकावट, व्यापारमें लाभ
तुला	लाभ में रुकावट, कार्य-सिद्धि में विघ्न, अपयश नीच भय, कार्यसंलग्नता।	हाथ तंग, शरीर कष्ट, कार्य में विघ्न, मित्र वियोग शत्रुभय, कार्यमें प्रवृत्ति।	शरीर कष्ट, धन हानि, गुप्त चिन्ता, यात्रा में विघ्न, भाग्य मध्यम।	सन्तान कष्ट धन हानि, चित्त अशान्त, कारोबार ठीक चले, लाभ भी हो।	सन्तान कष्ट, भाग्योदय, लाभ अच्छा, व्यय भी अधिक, व्यर्थकी दौड़ धूप।	लाभ व्यय समान, सन्तति कष्ट, चित्त अशान्त, व्यापार साधारण।
वृश्चिक	घरेलू कामों में विघ्न, विरोधियों से नम्रता रखना अच्छा, शत्रुनाश।	ज्वर विकार, स्त्री कष्ट, सन्तान सुख, मानसिक उद्वेग, यात्रा।	वायु पीड़ा, स्त्री कष्ट, यात्रा, शत्रुवृद्धि, बेचैनी, लाभ मध्यम।	स्वास्थ्य मध्यम, गृह कलह भाग्य बदले, व्यापार अच्छा रहे।	कारोबार उन्नत हो, राज-कीय कार्य में जीत, स्त्री कष्ट, स्वास्थ्य मध्यम।	व्यर्थ कलह, स्वास्थ्य मध्यम, शरीर कष्ट, लाभ अच्छा, व्यापार वृद्धि।
धनुः	चित्त में उद्वेग, स्त्री व सन्तान की ओर से कष्ट, लाभ कम, खर्च ज्यादा।	लाभ कम, शत्रुनाश, स्त्री कष्ट, स्वास्थ्य मध्यम, मित्र मिलाप।	स्वास्थ्य मध्यम, शत्रुनाश, पुत्र वियोग, व्यय, राज-मान।	व्यय अधिक, भाईयो से अनबन, शत्रुनाश, व्यापार साधारण।	खर्च अधिक स्वजनविरोध, सन्तान सुख, कारोबार अच्छा।	भाग्य परिवर्त्तन, व्यापार में लाभ, मानसिक चिन्ता, शत्रुनाश, कार्य सिद्धि।
मकर	रक्त विकार, गृह कलह, सन्तान सुख मध्यम, स्त्री सुख उत्तम, लाभ श्रेष्ठ।	शत्रुभय, स्त्री सुख, लाभ अच्छा, सन्ततिकष्ट, मित्र मिलाप।	शरीर सुख, लाभ अच्छा, स्त्री सुख, बन्धु मिलाप, शुभ यात्रा।	स्त्री कष्ट, शुभ यात्रा, सन्तान कष्ट, लाभ श्रेष्ठ, मान बढ़े।	गुप्त चिन्ता, सन्तान कष्ट धन खर्च, शत्रु प्रबल, व्यापार साधारण।	भाग्योदय, स्त्री सुख, व्यापार वृद्धि, नेत्र पीड़ा, सफल यात्रा, शरीर सुख।
कुम्भ	शत्रु वृद्धि, खर्च ज्यादा, कुटुम्ब सुख मध्यम, राज्य-मान, स्वास्थ्य अच्छा।	मान हानि, भय, कार्य में रुकावट, मानसिक दुर्बलता, सन्तान सुख।	स्त्री सुख, करोबार में उन्नति, रक्त विकार, सन्तान सुख।	रक्त विकार, ज्वर पीड़ा, स्त्री सन्तान सुख, कार्य में सफलता।	ज्वर, सन्तान सुख, राज-सम्मान, व्यापार उत्तम, गुप्त चिन्ता।	सिर दर्द, पशु पीड़ा, शत्रु प्रबल, गुप्त चिन्ता, स्त्री सुख, भाग्य मध्यम।
मीन	सन्तान सुख, लाभ श्रेष्ठ, प्रतिष्ठा, बन्धुसुख, धर्म में अरुचि, स्त्री सुख मध्यम।	भ्रातृ कष्ट, मित्र सुख, सन्तान से लाभ, धर्म में अरुचि, व्यापार उत्तम।	मित्र वृद्धि, शत्रु से हानि, भाग्य निर्बल, पशु कष्ट, खर्च विशेष।	भ्रातृ विरोध, शत्रु व रोग भय, कारोबार मध्यम राजमान, घर में शान्ति।	स्वजन विरोध, मित्र मिलाप, शत्रुनाश, स्त्री सुख, कारोबार में विघ्न।	सन्तान सुख, व्यय ज्यादा लाभ कम, व्यापार मध्यम, चित्तअशान्ति, शत्रु प्रबल।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

—: नजर का सिद्ध यन्त्र :—

ॐ	ह्रीं	श्रीं
क्लीं	ह	नु
म	ताय	नमः

यह यन्त्र रक्त चन्दन से भोजपत्र वा कागद पर लिखकर बालक के गले में बांधे तो नजर न लगे। आजमाया हुआ है।

मवेशियों के घाव के कीड़े मारने का मन्त्र—गङ्गा पार बबूर के गाछी झड़े कीड़ा झड़े रसाई ईश्वर महादेव गौरा पार्वती की दुहाई—विधि—शाम के वक्त नीम की टहनी से २१ बार इस मन्त्र को पढ़कर झाड़े—सिद्ध करने की विधि—अनार की कलम से लाल चन्दन की स्याही से कागज पर १०८ बार लिखे, ग्यारह मरतबा रोज लिखता जावे बारहवें दिन दरया या तालाब के किनारे जाकर आटा गून्धकर एक परची मन्त्र की आटे की गोली मिला कर मछलियों को डालता जावे, तेरहवें दिन कुछ बालकों को मिट्ठा भोजन करवावे। तब यह मन्त्र काम करेगा, अन्यथा नहीं।

श्री घण्टाकर्ण का चमत्कारी मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशक
आधि व्याधि विपत्ति च महाभीति विनाशय॥

नाममन्त्रोऽस्ति ते सिद्धः सर्व मङ्गल कारकः इष्टसिद्धि महासिद्धि जयं लक्ष्मीं विवर्धय॥
त्वच्छ्रद्धा भक्तियोगेन भवन्तु सर्वशक्तयः पराभवन्तु दुष्टाश्च शत्रवो वैरिदुर्जनाः॥
आपत्कालेषु मां रक्ष मम बुद्धि प्रकाशय सर्वोपद्रवतो रक्ष घोर रोगान्विनाशय॥
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर धनसमृद्धि प्रवर्धय। राज्यं च राज्यमानं च बलं बुद्धि प्रवर्धय॥
ॐ क्रौं ह्रीं श्रीं घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशक। महारोगान्भयान्घोरान्नाशय नाशय द्रुतम्॥
दर्शनं देहि प्रत्यक्षं संरक्ष सर्व संकटात् रणे वने समुद्रे च रक्ष संरक्ष मे द्रुतम्॥
अग्निचोरादितो रक्ष त्वन्नाममन्त्र जापतः ह्रीं घण्टाकर्ण नमोऽस्तुते ठः ठः ठः स्वाहा॥
ध्यान—रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तगन्धानुलेपनः सेवितो यक्षकन्याभिर्वेष्टितश्चन्द्रशेखरः॥
एवं ध्यात्वा महावीरं जपेद् रुद्र सहस्रकम् पायसान्नेन जुहुयाद् गुग्गुलेन घृतेन वा॥

उक्त मन्त्र को पहिले सूर्यचन्द्रग्रहण में अथवा ११ हजार जप कर सिद्ध कर ले, तब प्रयोग में लाना चाहिये। यदि इस मन्त्र को परोपकार दृष्टि से कार्य में लाया जाय तभी कार्य होता है, व्यापारिक दृष्टि से नहीं। कुत्ते के काटने पर "ठः ठः ठः स्वाहा" इस मन्त्र को पढ़कर मिट्टी के गोले से सात बार झड़े तो कुत्ते के बाल मिट्टी के गोले के अन्दर आ जाते हैं। गौ की रक्षा में इस मन्त्र को सात बार जप कर गौ पर हाथ फेरने से गौ के सब प्रकार के रोग दूर होते हैं। इस सिद्ध मन्त्र से बड़े २ साधक कार्य लेते हैं, नारियल की गिरि, छोहारा, दाख, घी, शक्कर, मधु से बारह हजार होम करने और इस मन्त्र का यन्त्र बनाकर अपने पास रखने से सब उपद्रवों की शान्ति होती है। प्रातः २१ बार पढ़कर तीन अञ्जलि जलपान करने से विद्यावृद्धि, इतनी ही बार अभिमन्त्रण कर अपने थूक का तिलक कर राजदरबार कोर्ट आदि में जाने से अपना अभीष्ट कार्य सिद्ध होता है। पगड़ी की कोन में गांठ बांध कर उस गांठ को लटकाने पर दुर्जन वा शत्रु वशीभूत हो जाता है। अपने ओढ़ने के वस्त्र का अभिमन्त्रण कर ओढ़ने से आठ प्रकार के भयों की निवृत्ति मार्ग में होती है। ग्रहदोष, शाकिनीदोष, रोगभय में संमार्जनी से झाड़ देने पर वह दोष हटता है। लक्ष्मी प्रार्थना पूर्व मुख से श्वेत वस्त्र धारण कर ७२ दिन भोजनोत्तर श्वेतासन पर सवा लक्ष जप करने से और मेवों का होम करने से ६ महीने के भीतर धनवृद्धि होगी। पञ्चामृत से रोगनिवृत्ति, गुग्गल के होम से भयनिवृत्ति होती है। इसी मन्त्र से सात बार फूंक देने से दाढ़ की पीड़ा दूर होती है। नौ तागे का कन्या के काता हुए सूत को सिर से पैर तक नाप कर उसमें सात गांठें दे। इक्कीस बार अभिमन्त्रित कर गुग्गुल की धूप देकर स्त्री की कमर में बांधने से गर्भस्तंभन होता है। मन्त्र से २१ बार फूंक देकर स्त्री को वस्त्र ओढ़ाने से उसका बालक रोने से रुकता है। चन्दन को घिस कर जल में मिला दे और उस जल को अभिमन्त्रित कर भूतग्रहपीडित को पिलाने से भूतभय दूर होता है।

१ पैसा मधु कुम्हार के चाक की मिट्टी, मिट्टी के कसोरे में धर कर मन्त्र से अभिमन्त्रित कर गल्ला धरने के पास एक ओर गाड़ देने से लाभ सात गुणा होता है। नमक की कङ्कड़ी सात मुट्ठी राख, सात सात बार अभिमन्त्रित कर आंख पर बांधने से आंखों का नया फोला कटता है। सात बार भस्म से माथे को झाड़ने से सिर का दर्द साफ होता है। शीतज्वर, मासिकज्वर, मोतीझरा आदि २१ बार झाड़ने से दूर होता है। बिक्री की चीजें न बिकती हों तो सात बार उन पर हाथ रखकर मन्त्र पढ़ना चाहिये। इस मन्त्र को हिंगुल से घर के भीतर दीवार पर लिख देने से आधि व्याधि महामारी आदि नहीं होतीं। सात बार मन्त्र से कान को फूंक दे, पीप निकलनी बन्द होगी, दर्द भी हट जावेगा। इस मन्त्र से १०८ बार चित्त सोकर जप करे और पञ्चाङ्ग धूप दे, नाभि पर घी का दीपक सुरक्षित रूप से जलावे, सात दिन में गई वस्तु चोर से मिले। २१ बार अभिमन्त्रित कर कच्चे चावल चोरी गये स्थान में सभी को खिलावे, चोर के मुंह से खून गिरेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

राशयः	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	अचानक लाभ, सन्तान चिन्ता, शत्रु नाश, कारोबार श्रेष्ठ, बन्धु सुख।	शरीरकष्ट, खर्च अधिक, कुटुम्ब व मित्र सुख, राज्य भय, स्त्री सुख।	रोग पीड़ा, सन्तान सुख, भाग्योदय, लाभ उत्तम, किसी काम में खर्च हो।	शरीर सुख, लाभ मध्यम, चित्त अशान्त, सन्तान सुख पशुहानि, यात्रा में कष्ट।	शरीर कष्ट, धनहानि, काम में विघ्न, मित्रों से मदद, शत्रुभय, लाभ मध्यम।	स्वास्थ्य मध्यम, मित्र-बन्धु-सुख, शत्रुनाश, दौड़ धूप, चित्त में व्याकुलता।
वृष	स्वास्थ्य ठीक, स्त्रीचिन्ता, राजमान, धर्म में अरुचि, मित्र विरोध।	चित्त में अशान्ति, कार्य में विघ्न, भ्रातृसुख, लाभ मध्यम, स्थान हानि।	शरीर सुख मध्यम, चौर-भय, स्त्री कष्ट, गृहसुख, राज सम्मान।	स्त्री रोगी रहे, लाभ व्यय सम, सन्तति सुख मध्यम, राज्य सम्मान।	स्वास्थ्य खराब, गुप्त चिन्ता, पुत्रसुख, स्त्री कष्ट धन प्राप्ति, राज सम्मान।	कुटुम्ब सुख, नये काम की योजना, सन्तान सुख मध्यम, स्त्री कष्ट।
मिथुन	लाभ उत्तम, शत्रु नाश, राज्य से सुख, अग्निभय, रक्त विकार।	खर्च ज्यादा, स्वास्थ्य मध्यम, शत्रुनाश, मानसिक चिंता, यात्रा में कष्ट।	चित्त अशान्त, शत्रु नाश, प्रतिष्ठा वृद्धि, धर्म में अरुचि, व्यय अधिक।	शत्रु पराजित, स्वास्थ्य-अच्छा, खर्च ज्यादा, कुटुम्ब सुख, धर्म हानि।	शत्रु नाश, चित्त प्रसन्न, नये काम की योजना, स्वास्थ्य उत्तम, व्यय।	शत्रु नाश, शरीर सुख, कारोबार बढ़े, चित्त शान्त यश फले, लाभ हो।
कर्क	सन्तति कष्ट, स्त्री द्वारा विशेष व्यय, राज भय कारोबार मध्यम।	शरीर सुख, स्त्री पुत्र पीड़ा, लाभ श्रेष्ठ, खर्च प्रबल, व्यर्थ विवाद।	धन प्राप्ति, रक्त विकार, सन्तान द्वारा खर्च, यात्रा में कष्ट।	स्वास्थ्य खराब, फायदा अच्छा, कोषवृद्धि, संतान कष्ट, धर्म में रुचि।	सन्ततिकष्ट धनहानि, चित्त अशान्त, यात्रा में विघ्न, नेत्र पीड़ा।	कोषवृद्धि, शरीर सुख, सन्तान कष्ट, पैर में पीड़ा मासान्त में लाभ।
सिंह	इष्ट मित्र से हर्ष, स्वास्थ्य खराब, बन्धु सुख, अचानक हानि।	राज्य भय, पशु व खेती हानि, शत्रुनाश, धनलाभ व्यापार अच्छा।	शरीर सुख, कार्य में असफलता, स्त्री कष्ट, राज्य सम्मान।	स्वास्थ्य मध्यम, घर में अनबन, अचानक यात्रा, कारोबार अच्छा।	स्त्री कष्ट, स्वास्थ्य मध्यम, लाभ श्रेष्ठ, मान वृद्धि, राज्य में विजय।	नेत्र पीड़ा, स्त्री कष्ट, गृह कलह, व्यय, व्यापार मध्यम।
कन्या	बन्धु-चिन्ता, पुण्य की ओर प्रवृत्ति, कारोबार ठीक, लाभखर्च सम।	चित्त स्वस्थ, प्रतिष्ठा, प्रगति, संतान कष्ट, राज्य सम्मान, लाभ श्रेष्ठ।	व्यापार वृद्धि, लाभमध्यम, व्यर्थ विवाद, शत्रु नाश, स्वास्थ्य उत्तम।	सितारा चमके, शत्रु दबें, राज्यमान, कारोबार बढ़े स्वास्थ्य अच्छा।	शत्रुनाश, स्वास्थ्य श्रेष्ठ, प्रताप बढ़े, लाभ उत्तम, किसी काम में रुपया लगे।	सिर में पीड़ा, भ्रातृ विरोध धर्म में अरुचि, शुभ काम में रुकावट, व्यापारमें लाभ
तुला	लाभ में रुकावट, कार्य-सिद्धि में विघ्न, अपयश नीच भय, कार्यसंलग्नता।	हाथ तंग, शरीर कष्ट, कार्य में विघ्न, मित्र वियोग शत्रुभय, कार्यमें प्रवृत्ति।	शरीर कष्ट, धन हानि, गुप्त चिन्ता, यात्रा में विघ्न, भाग्य मध्यम।	सन्तान कष्ट धन हानि, चित्त अशान्त, कारोबार ठीक चले, लाभ भी हो।	सन्तान कष्ट, भाग्योदय, लाभ अच्छा, व्यय भी अधिक, व्यर्थकी दौड़ धूप।	लाभ व्यय समान, सन्तति कष्ट, चित्त अशान्त, व्यापार साधारण।
वृश्चिक	घरेलू कामों में विघ्न, विरोधियों से नम्रता रखना अच्छा, शत्रुनाश।	उदर विकार, स्त्री कष्ट, सन्तान सुख, मानसिक उद्वेग, यात्रा।	वायु पीड़ा, स्त्री कष्ट, यात्रा, शत्रुवृद्धि, बेचैनी, लाभ मध्यम।	स्वास्थ्य मध्यम, गृह कलह भाग्य बदले, व्यापार अच्छा रहे।	कारोबार उन्नत हो, राजकीय कार्य में जीत, स्त्री कष्ट, स्वास्थ्य मध्यम।	व्यर्थ कलह, स्वास्थ्य मध्यम, शरीर कष्ट, लाभ अच्छा, व्यापार वृद्धि।
धनुः	चित्त में उद्वेग, स्त्री व सन्तान की ओर से कष्ट, लाभ कम, खर्च ज्यादा।	लाभ कम, शत्रुनाश, स्त्री कष्ट, स्वास्थ्य मध्यम, मित्र मिलाप।	स्वास्थ्य मध्यम, शत्रुनाश, पुत्र वियोग, व्यय, राजमान।	व्यय अधिक, भाईयों से अनबन, शत्रुनाश, व्यापार साधारण।	खर्च अधिक स्वजनविरोध, सन्तान सुख, कारोबार अच्छा।	भाग्य परिवर्त्तन, व्यापार में लाभ, मानसिक चिन्ता, शत्रुनाश, कार्य सिद्धि।
मकर	रक्त विकार, गृह कलह, सन्तान सुख मध्यम, स्त्री सुख उत्तम, लाभ श्रेष्ठ।	शत्रुभय, स्त्री सुख, लाभ अच्छा, सन्ततिकष्ट, मित्र मिलाप।	शरीर सुख, लाभ अच्छा, स्त्री सुख, बन्धु मिलाप, शुभ यात्रा।	स्त्री कष्ट, शुभ यात्रा, सन्तान कष्ट, लाभ श्रेष्ठ, मान बढ़े।	गुप्त चिन्ता, सन्तान कष्ट धन खर्च, शत्रु प्रबल, व्यापार साधारण।	भाग्योदय, स्त्री सुख, व्यापार वृद्धि, नेत्र पीड़ा, सफल यात्रा, शरीर सुख।
कुम्भ	शत्रु वृद्धि, खर्च ज्यादा, कुटुम्ब सुख मध्यम, राज्य-मान, स्वास्थ्य अच्छा।	मान हानि, भय, कार्य में रुकावट, मानसिक दुर्बलता, सन्तान सुख।	स्त्री सुख, कारोबार में उन्नति, रक्त विकार, सन्तान सुख।	रक्त विकार, ज्वर पीड़ा, स्त्री सन्तान सुख, कार्य में सफलता।	ज्वर, सन्तान सुख, राज-सम्मान, व्यापार उत्तम, गुप्त चिन्ता।	सिर दर्द, पशु पीड़ा, शत्रु प्रबल, गुप्त चिन्ता, स्त्री सुख, भाग्य मध्यम।
मीन	सन्तान सुख, लाभ श्रेष्ठ, प्रतिष्ठा, बन्धुसुख, धर्म में अरुचि, स्त्री सुख मध्यम।	भ्रातृ कष्ट, मित्र सुख, सन्तान से लाभ, धर्म में अरुचि, व्यापार [illegible]	मित्र वृद्धि, शत्रु से हानि, भाग्य निर्बल, पशु कष्ट, खर्च [illegible]।	भ्रातृ विरोध, शत्रु व रोग भय, कारोबार मध्यम राजमान, घर में शान्ति।	स्वजन विरोध, मित्र मिलाप, शत्रुनाश, स्त्री सुख, कारोबार में विघ्न।	सन्तान सुख, व्यय ज्यादा लाभ कम, व्यापार मध्यम, चित्तअशान्त, शत्रु प्रबल।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०१२

राशयः	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	सन्तान सुख, शत्रु प्रबल, चित्तअशान्त, स्त्री कष्ट, धन हानि।	कोषक्षय, मानसिक चिंता स्त्री सुख, शत्रु प्रबल, निष्फल यात्रा।	नई चिन्ता, मित्र से दुःख कारोबार मध्यम, शत्रु उभरें।	मान पराक्रम बढ़े, घरेलू कार्य रुकें, स्वास्थ्य खराब, लाभ कम।	घर में रोग, शुभ काम की इच्छा, लाभ में विघ्न मित्र सुख।	खर्च में हैरानी, मित्रमिलाप शत्रुभय, दुःस्वप्न, लाभ अच्छा, पशुलाभ।
वृष	शरीर में पीड़ा, सन्तति: सुख, मित्रमिलाप, वाहन सुख, शत्रुनाश।	स्वास्थ्य खराब, दवाइयों में खर्च, स्त्रीकष्ट, पुत्र से सुख प्राप्ति।	बिगड़े कामों का सुधार, भाइयों की तरफ से चिंता, लाभ ठीक।	शुभ में खर्च, इच्छित कार्यों में कुछ सफलता, सन्तान स्त्रीचिन्ता।	घर में वृथा झगड़ा, हैरानी लाभ खर्च बराबर, पशु लाभ, मित्र मिलाप।	चित्तभ्रम, स्त्री चिन्ता, उदासी, राज्य में विजय, लाभमध्यम, मान वृद्धि.
मिथुन	भ्रातृसुख, सम्पत्तिवृद्धि सन्तान पीड़ा, शत्रुपराजित, धर्म हानि।	भ्रातृविरोध, भूमि सुख, सन्तान सुख विशेष, शत्रु नाश।	मन चञ्चल, लाभ उत्तम, राज्य में विजय, मकान आदि में खर्च।	अचानक लाभ, स्त्रीसुख, निर्मूल झगड़ा, राजकीय कार्य अनुकूल।	मन कुछ बेचैन, मित्रों के सहयोग से सफलता, करोबार ठीक,	अकस्मात् यात्रा, लाभ उत्तम, शत्रुनाश, जायदाद वृद्धि के विचार।
कर्क	स्वास्थ्य उत्तम, क्रोधवृद्धि मित्र कलह, चित्तअशान्त, पुत्रपीड़ा।	कुटुम्बियों से सुख, भूमि से लाभ, व्यवसाय ठीक राज्य में विजय।	शुभ में खर्च, बन्धुसुख, नये काम का विचार, पुत्रादि की चिन्ता।	अशुभविचार, पुत्र द्वारा खर्च, शत्रु उभरें, लाभ अच्छा, मित्रमिलाप।	तरक्की में बाधा, शत्रु भय, बन्धुसुख, स्त्रीचिन्ता, अशुभविचार, लाभ कम।	लाभ मध्यम, चोरभय, धर्म में रुचि, सन्ततिकष्ट, विवाद से हानि।
सिंह	शरीर सुख, स्त्रीकष्ट, घरेलू सुख हानि, पशु हानि, व्यापार श्रेष्ठ।	सभा में मान, कुटुम्बसुख, मित्रों से विरोध, यात्रा में हानि, व्यवसाय ढीला।	कारोबार की चिन्ता, मित्रमिलाप, शत्रु उभरें, घर में झगड़ा।	चिन्ता मिटे, यात्रा की इच्छा, जायदाद वृद्धि, लाभअच्छा, गुप्तरोगभय।	कोई नया काम हाथ आवे, उत्साह बढ़े, पशु सुख वाहन लाभ।	दुष्ट संग, कारोबार की चिन्ता, उदरपीड़ा, वृथा क्रोध, मित्र वा स्त्री सुख।
कन्या	स्वास्थ्य उत्तम, गृहकलह, शत्रुनाश भाग्य में कमी, शुभ काम में व्यय।	स्त्रीकष्ट, शरीरसुख, इकट्ठा धन मिले, भ्रातृ कलह।	कहीं से लाभ की आशा उत्पन्न हो, स्त्रीपुत्रचिन्ता, वृथा यात्रा।	परिश्रम करने पर भी सामान्य लाभ, सप्ताहान्त में अस्वस्थता।	बन्धु कष्ट, नौकरों से सावधान, कारोबारअच्छा नये काम का ख्याल।	स्त्री से खुशी, कारोबार ठीक, प्रिय वस्तु का लाभ वायु पीड़ा, खर्च विशेष।
तुला	स्वास्थ्य हानि, हाथतंग, चित्तअशान्त, लाभ उत्तम खर्च भी ज्यादा हो।	शरीर सुख, धन की कमी, यात्रा में रुकावट, शत्रु क्षय, चिन्ता व्यापै।	हाकिमों की ओर से चिंता शत्रुभय, कारोबार में परेशानी।	कोई नवीन कार्य बनाने की धुन, बन्धु सुख, शत्रु दबें, कोष में कमी।	शरीर पीड़ा, बड़ों से मतभेद, गृहादि के झगड़े, वृथा खर्च, चिन्ता।	स्त्रीपुत्र से बिगाड़, कुछ लाभ, वायुपीड़ा, पशुभय, यात्रा कष्ट।
वृश्चिक	स्वास्थ्य खराब, सुख कम, स्त्री से अनबन, मानवृद्धि, लाभउत्तम।	विनोद हानि, सन्तान-स्त्री कष्ट, धन व्यय, व्यापार अच्छा, लाभ उत्तम।	लाभ होते हुए भी चिंता, छोटी सी गलती का भारी पश्चाताप।	कारोबार में झगड़े, वृथा खर्च, शुभ कार्य में ध्यान।	मस्तक वा पैरों में रोग, लाभ होते २ रुके, कारोबार में विशेष ध्यान।	इधर उधर दौड़धूप, नये २ विचार, शिरपीड़ा, लाभ साधारण।
धनु	भ्रातृकलह, स्वास्थ्यउत्तम व्ययअधिक, भाग्योदय, व्यापार में लाभ।	चित्त में घबराहट, पैसे की तंगी, गृहकलह, शत्रु दमन हो।	मित्रचिन्ता, लाभ से खर्च विशेष, यात्रा में विघ्न, पशुहानि।	मित्रों के सहयोग से सुख, बुद्धि दोष से बिगाड़, लाभ मध्यम।	नजलादि से दुख, वृथा चिन्ता, लाभ कम, खर्च ज्यादा, जलअग्निसे भय।	जमीन वा यात्रा की चिता, श्रेष्ठ नर मिलाप, गृह झंझटों से उदासी।
मकर	खजाना में कमी, नेत्र पीड़ा, गृहसुख, स्त्रीसुख, सन्तान कष्ट।	आरोग्यवृद्धि, सन्तानपीड़ा, भाग्योदय, कारोवार बढ़े, मानवृद्धि।	स्त्री पुत्र चिन्ता, धर्म में रुचि, कारोबार अच्छा, स्वास्थ्य ठीक।	जोखिमी कामों से अलग रहो, मित्र से मनमुटाव, शुभ में खर्च।	बन्धुओं से बिगाड़, उद्योग में सफलता, राज्य से विजय, कारोबार ठीक।	स्वास्थ्य अच्छा लाभ से खर्च विशेष, धर्म में रुचि उदर पीड़ा, पशु लाभ।
कुम्भ	स्वास्थ्य मध्यम, सुख कम, स्त्रीसुख, घरेलू झंझट, शुभ यात्रा।	नेत्रपीड़ा, गृह कलह, शुभ यात्रा, व्यवसाय में लाभ, राजसम्मान।	लाभ होकर भी न रहे, स्वास्थ्य में खराबी, हाकिमों की कृपा।	लाभ उत्तम, कार्य सफल, शत्रुओं से निर्मूल विवाद, मित्र मिलाप।	अचानक खर्च, स्वास्थ्य में गड़बड़, मित्रों से सुख, बड़े जनों से मिलाप।	सवारी से भय, कारोबार ठीक, स्वजन विरोध, हैरानी, शुभ में खर्च।
मीन	भ्रातृकष्ट, शत्रुवृद्धि, स्त्री सुख, भाग्य में अड़चन, वंशवृद्धि।	स्वास्थ्य मध्यम, भाइयों से अनबन, तरक्की हो, कार्य में सफलता।	कारोबार में सफर, मित्र मिलाप, नये २ विचार, [illegible]	शुभसमाचार मिले, मित्रों से खुशी, सौदे में लाभ, [illegible] स्वास्थ्यठीक।	कारोबार ठीक, स्वास्थ्य मध्यम, कोषकमीकीचिन्ता वृथा यात्रा स्त्री सुख।	मानवृद्धि, मित्र से खुशी, गतमास की अपेक्षा लाभ ठीक, पुत्र सुख।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

चन्द्रग्रहण का स्पर्शादि काल

ग्रहण मध्ये ग्रास स्वरूपम

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मीन	भ्रातृकष्ट, शत्रुवृद्धि, स्त्री सुख, भाग्य में अड़चन, वंशवृद्धि ।	से ... कार्य में सफलता ।	... मिलाप नये २ विचार, खोटी उमंग ।	से खुशी, सौदे में लाभ, ...	मध्यम. ... स्त्री सुख ।	ठीक, पुत्र सुख ।

— दैनिक ग्रहों से इष्ट कालिक ग्रह साधन की सरल विधि —

बहुत से ज्योतिषी लोग दैनिक ग्रहों के होते हुवे भी पंक्तिस्थ ग्रहों से इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करते हैं, जिसमें कि परिश्रम भी अधिक होता है और सूक्ष्मता भी नहीं आती। इस प्रकार पंक्तिस्थ ग्रहों से इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करने पर नवांश आदि में भी अन्तर आ जाता है, अतः दैनिक ग्रहों से ही अपने इष्ट कालिक ग्रह स्पष्ट करने चाहिये, जिससे परिश्रम भी कम हो एवं सूक्ष्मता भी आ जावे। दैनिक ग्रहों से इष्ट कालिक ग्रह बनाने की विधि अत्यन्त सरल है। जिस दिन इष्ट काल का ग्रह बनाना हो उस दिन के ग्रह की गति निकाल लीजिये (जिस दिन आप ग्रह स्पष्ट करना चाहते हैं उस दिन के स्पष्ट ग्रह का और दूसरे दिन के स्पष्ट ग्रह का अन्तर करने पर ग्रह की सूक्ष्म गति प्राप्त होगी) इस प्रकार निकाली गई ग्रह की गति से अपने इष्ट को गोमूत्रिका विधि से गुणा कर जो कलादि फल आवे उसे मार्गी ग्रह हो तो अभीष्ट दिन के ग्रह में जोड़ दो यदि ग्रह वक्री हो तो घटा दो। इस प्रकार इष्ट कालिक सूक्ष्म ग्रह स्पष्ट हो जाता है। उदाहरण—संवत् २०१३ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार को इष्ट ३१।४१ का सूर्य स्पष्ट करना है। इस दिन का सूर्य स्पष्ट ११।२८।५१।२५ है और इससे अगले दिन का स्पष्ट सूर्य ११।२६।५०।१६ है। इन दोनों अन्तर ५८।५४ कलादि गति हुई। गति ५८।५४ तथा इष्ट ३१।११ का गोमूत्रिका-क्रम से गुणन करने पर ३०।३६ कलादि फल आया। इस ३०।३६ कलादि फल को चै. शु. १ गुरुवार के स्पष्ट सूर्य ११।२८।५१।२५ में जोड़ देने पर इष्ट कालिक सूक्ष्म सूर्य स्पष्ट ११।२६।२२।१ हुआ। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह सूक्ष्म स्पष्ट होता है।

ग्रहण निर्णयः (ज्योतिषे ग्रहणं सारम्)

सं० २०१३ विक्रमी में भू मण्डल पर तीन ग्रहण (दो चन्द्रग्रहण एक सूर्यग्रहण) होंगे। इन में से कार्तिक शुक्ल १५ रविवार को होने वाला चन्द्रग्रहण सुदूर पश्चिम देशों में ही दृष्टिगोचर होगा, भारत में नहीं। भारत में होने वाले बाकी दोनों ग्रहणों का विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) खग्रासकल्पं चन्द्रग्रहणम्—वैशाख शुक्ल १५ गुरुवार ता. २४ मई सन् १९५६ ई० को यह चन्द्रग्रहण खग्रासतुल्य ही देखने में आवेगा। वस्तुतः इस ग्रहण में दक्षिण दिशा की ओर से चन्द्र बिम्ब का अत्यन्त थोड़ा सा भाग जो कि सामान्य दृष्टिग्राह्य नहीं होगा, अनाच्छादित रहेगा। यह चन्द्रग्रहण काश्मीर, कराची, पेशावर, लाहौर आदि पश्चिमी पंजाब में ग्रस्तोदय होगा, और इधर अमृतसर में चन्द्रोदय के समय ही स्पर्श होगा। अन्यत्र सर्वत्र पूर्वीपञ्जाब, पैप्सू, यू. पी., दिल्ली, बंबई आदि में सब जगह इसका स्पर्श होता दीखेगा, अर्थात् यहाँ ग्रस्तोदय नहीं होगा।

चन्द्रग्रहण का स्पर्शादि काल
(प्रचलित घड़ी के अनुसार)

काल		स्पर्श सायं	मध्य	मोक्ष रात को	पर्वकाल
देहली	घं०	७	८	१०	३
	मि०	१७	५८	४३	२६

ग्रहण मध्ये ग्रास स्वरूपम्

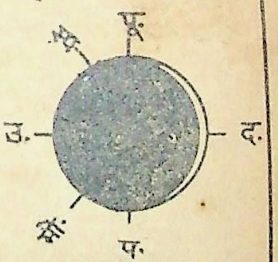

इस ग्रहण का सूतक—दिनके १० बजकर १७ मिनट पर सूतक लगेगा। सूतक में अशक्त गृहस्थ बाल वृद्ध व रोगियों के अतिरिक्त अन्य सबके लिये भोजन करना धर्मशास्त्रद्वारा निषिद्ध है।

इस चन्द्रग्रहण का प्रभाव—मारवाड़वासियों तथा धनाढ्यों को पीड़ा हो। तेल, अफीम, वस्त्र, रूई सुगन्धित वस्तुएँ आगे तेज हों।

(२) खण्डग्रास सूर्यग्रहण—मार्गशीर्षकृष्ण ३० रविवार (ता० २ दिसंबर सन् १९५६ ई०) को अनुराधा नक्षत्र में होगा। जो सम्पूर्ण भारत में दीखेगा।

यह सूर्यग्रहण विश्व के किसी भी प्रदेश में कङ्कण अथवा खग्रास के रूप में नहीं दिखाई देगा, सर्वत्र खण्डग्रास ही दीख पड़ेगा, ऐसा भूमण्डलीय गणित से ज्ञात किया गया है। भारत-वर्ष के अभीष्ट नगर का सूक्ष्म स्पर्श मोक्षकाल जानने के लिये भारत भूमण्डलीय सूर्यग्रहण का मानचित्र देखें जोकि इस पञ्चाङ्ग में दिया गया है। अभग्न वक्र रेखाएं स्पर्शकाल की और बिन्दुनिर्मित वक्र रेखाएं मोक्षकाल की ज्ञापक हैं। इस चित्र में स्पर्शमोक्ष द्योतक रेखाएं ८-८ मिनट के अन्तर में अङ्कित की गई हैं। (केवल एक मोक्षज्ञापक रेखा जो कि काश्मीर, पंजाब, यू. पी., भूटान, आसाम पर से गुजरती है अपनी नीचे की रेखा से ४ मिनट के अन्तर पर है, ऐसा ध्यान रहे) उन रेखाओं पर स्थित नगरों का स्पर्श मोक्षकाल तत्तद्रेखा के प्रान्त भाग पर लिखा है। रेखाओं से इधर उधर स्थित नगरों का स्पर्श मोक्षकाल अनुमान से अथवा अनुपात से करें। कुछ प्रसिद्ध नगरों के स्पर्श मोक्षकाल अलग भी निकाल कर आगे लिखे हैं। इस चित्र में लिखा गया स्पर्शमोक्षकाल सब रेल्वे स्टैण्डर्ड है। परिलेख में खींची गई ग्रहण दक्षिणाग्रपथ रेखा से दक्षिण भाग में स्थित मद्रास, मैसूर, पाण्डिचरी, त्रिचनापल्ली त्रिवेन्द्रम्, रामेश्वर तथा लङ्का में यह ग्रहण नहीं होगा। अपि च दक्षिणाग्रपथ रेखा पर स्थित नगरों में तथा उनके निकट उत्तर भाग में स्थित शृङ्गेरी, बल्लारी आदि नगरों में भी यह ग्रहण दृष्टिग्राह्य नहीं होगा। केवल सूक्ष्मवीक्षक यन्त्रों द्वारा ही यत्किञ्चित् दीख पड़ेगा। बागलकोट, गोवा आदि नगरों से उत्तर की ओर उत्तरोत्तर अधिकग्रास दिखाई देगा। भारतवर्ष में यह अर्धग्रास से न्यून ही दिखाई पड़ेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

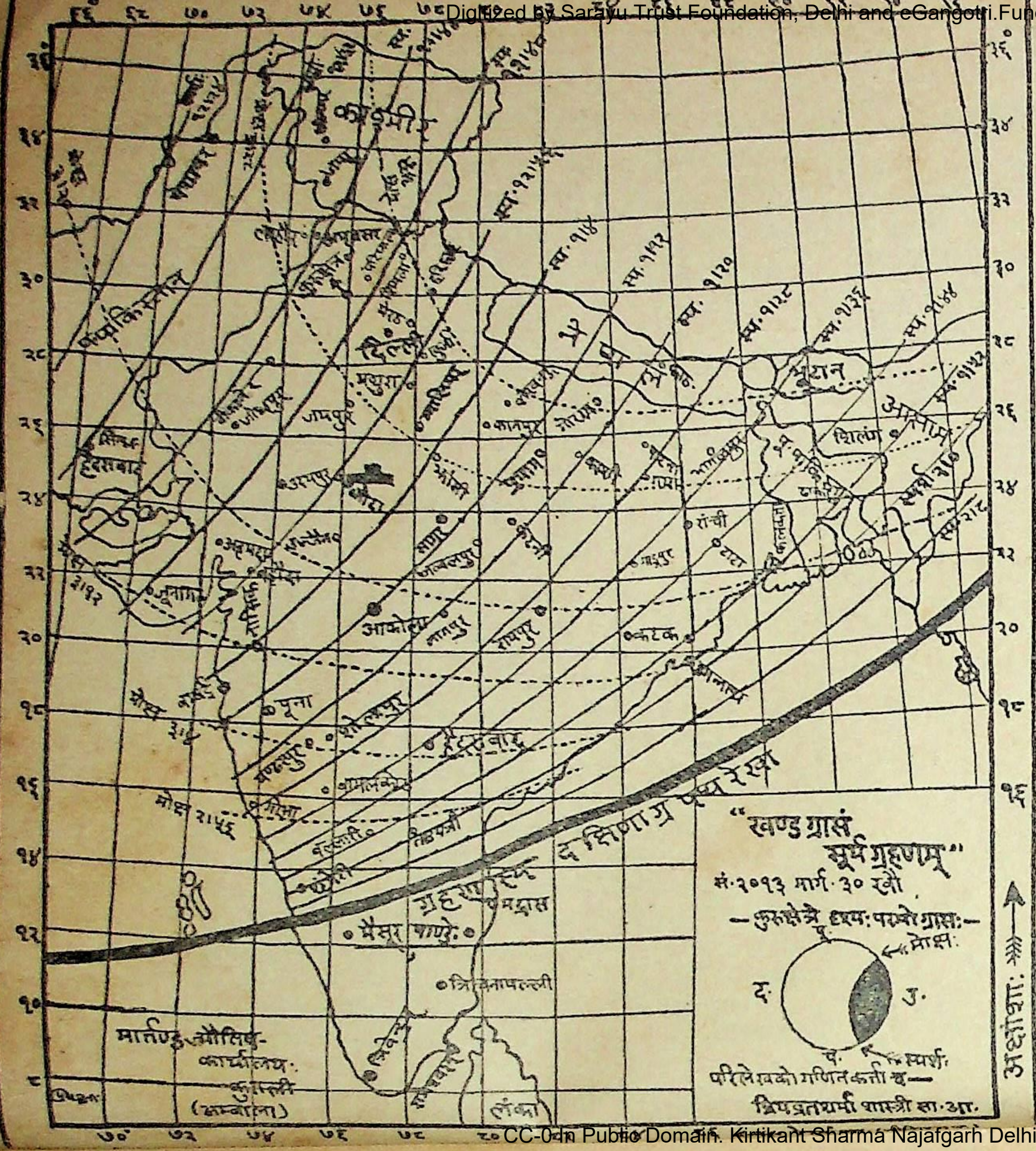

भारत भूमण्डलीय सूर्यग्रहण परिलेख (नक्शा)

सं० २०१३ मार्गशीर्ष कृ. ३० रविवार २ दिसंबर १९५५

कुरुक्षेत्रे स्पर्शादिकालाः

(प्रचलित घड़ी के अनुसार)

काल	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
रेलवे				
घण्टा	१२	२	३	२
मिण्ट	४५	७	३०	४५

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक (वेध) चतुर्दशी शनिवार ता. १ दिसंबर रात को १२ बजकर ४५ मिंट से प्रारम्भ होगा। सूतक में अशक्त गृहस्थ बालवृद्ध रोगियों को छोड़कर भोजन का निषेध है। दृश्य ग्रहण में तो बालवृद्धादि को भी भोजन नहीं करना चाहिये।

सूर्य ग्रहण का प्रभाव—आफिसर वाहन पर चढ़ने के सौकीन साधुजनों को पीड़ा हो। चावल मकई मूंग तिल और विशेष कर धातुओं का भाव तेज हो। गेहूँ चावल गुड़ संग्रह में दो मास में लाभ हो।

दोनों ग्रहणों का राशियों पर शुभाशुभ फल—इस वर्ष के ये दोनों सूर्य चन्द्रग्रहण अनुराधा नक्षत्र और वृश्चिक राशि पर हो रहे हैं। अतः वृश्चिक मेष सिंह धनुः राशि और अनुराधा नक्षत्र वाले प्राणियों और ग्रामों तथा राष्ट्रों को यह दोनों ग्रहण चिन्ता हानि आदि अनिष्ट फलकारक हैं। वृष कर्क तुला मीन राशियों को मध्यम और मिथुन कन्या मकर कुम्भ राशि वालों को शुभफलकारक हैं। अशुभ राशि नक्षत्र वाले ग्रहणों का दर्शन न करें। कल्याणार्थं यथाशक्ति स्वर्णयुक्त तिल पात्र तथा छाया-

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत व पाकिस्तान के कुछेक प्रधान नगरों का स्पर्श मोक्ष काल

(रेलवे स्टैण्डर्ड टाइम)

सूर्य ग्रहण (२–१२–५६ ई०) मार्गशीर्ष कृ. ३०–

नगर	स्पर्श घं० मि०	मोक्ष घं. मि.	नगर	स्पर्श घं० मि०	मोक्ष घं०मि०
अम्बाला	१२।४६	३।३०	अजमेर	१२।५०	३।२५
आकोला	१।१२	३।१८	उदयपुर	१२।५२	३।२२
उज्जैन	१। १	३।२२	बीकानेर	१२।४२	३।२५
शोलापुर	१।२४	३।५	जयपुर	१२।५३	३।२७
पूना	१।१५	३।७	जोधपुर	१२।४३	३।२३
जालन्धर	१२।४४	३।३०	मथुरा	१२।५७	३।३०
अमृतसर	१२।४०	३।३०	गोरखपुर	१।१६	३।३३
लुधियाना	१२।४५	३।३०	कानपुर	१।७	३।३०
पटियाला	१२।४७	३।३०	लखनऊ	१।८	३।३१
सोलन	१२।४७	३।३२	इलाहाबाद	१।१५	३।३०
कुरुक्षेत्र	१२।४८	३।३०	शिमला	१२।४८	३।३२
दिल्ली	१२।५२	३।३०	कलकत्ता	१।५२	३।२०
आगरा	१२।५६	३।३०	बम्बई	१।५	३।७
लाहौर	१२।३८	३।२६	जमशेदपुर	१।४४	३।२४
श्रीनगर	१२।३६	३।३०	ढाका	१।५१	३।२५३
जम्मू	१२।३७	३।३०	मेरठ	१२।५४	३।३१
दरभङ्गा	१।२६	३।३१	हरिद्वार	१२।५३	३।३२
अहमदाबाद	१२।५१	३।१८	दार्जिलिङ्ग	१।३३	३।३३
बनारस	१।१८	३।३०	पटना	१।२५	३।३०
नासिक	१। ५	३।१२	गया	१।२८	३।२६
जगन्नाथ	१।५६	३।१३	नागपुर	१।२०	३।१८
द. हैदराबाद	१।३७	३।५	गोआ	१।२७	२।५७
ग्वालियर	१। १	३।२६	झांसी	१।५	३।२८
बिलाङ्ग	१।५१	३।२६	पण्ढरपुर	१।२३	३।४
होशियारपुर	१२।४५	३।३१	पठानकोट	१२।४३	३।३१

आकाशी कौंसिल का विचार

स्वतन्त्र भारत का जन्मलग्न

ता० १५ अगस्त भृगु
१९४७ इष्ट ४५–२०

विसृज्य ग्रहसद्‌गतिं मुनिवचः
सिद्धान्तयित्वा स्फुटम् ।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्यनित-
रामालोच्य सत्संहिताः ॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये
ह्युद्‌भाविनी या स्थितिः ।
सा शम्भोः कृपया यथामति
मया प्रागेव निर्णीयते ॥

वर्षारम्भे यम (प्लूटो)
रा. ४।२।५८।४८

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुण्डली

ग्रहभाव स्पष्टानुसार यहाँ
सू. शु, श. गु. चल गये हैं

स्वतन्त्र भारत के १०म वर्ष प्रवेश की कुण्डली

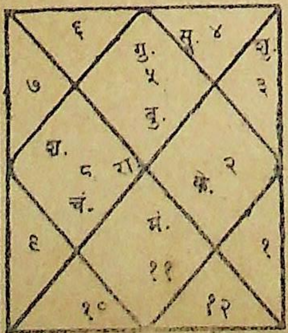

१५ अगस्त घटचादि इ.
५।३ बुधवार

मुस्लिम राष्ट्रों के नव वर्ष प्रवेश की कुण्डली

९ अगस्त इ. ०।० गुरुवार

यूरोपीय राष्ट्रों के नव वर्ष प्रवेश की कुण्डली

१८ पौष इ. ०।० मंगलवार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

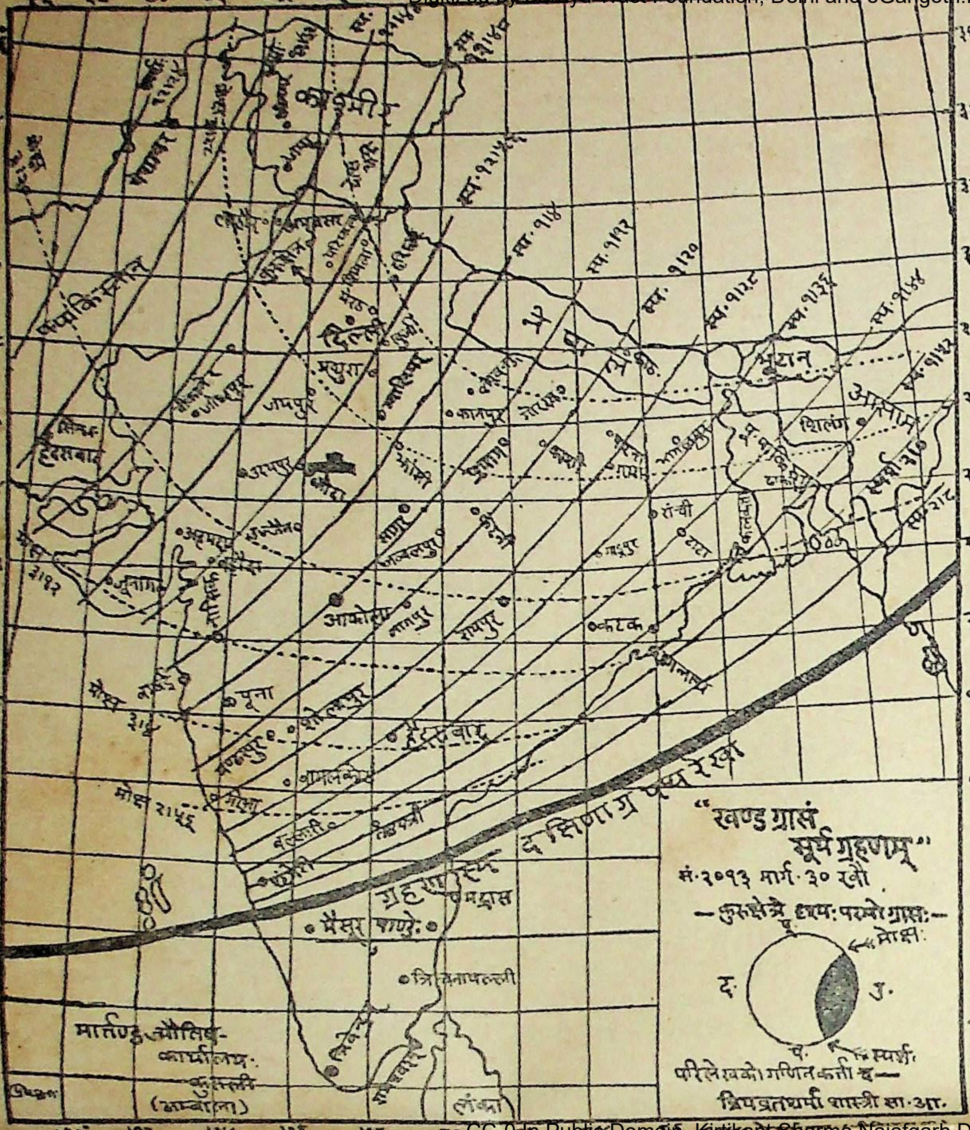

भारत भूमण्डलीय सूर्यग्रहण परिलेख (नक्शा)

सं० २०१३ मार्गशीर्ष कृ. ३० रविवार २ दिसंबर १९५५

कुरुक्षेत्र स्पर्शादिकालाः

(प्रचलित घड़ी के अनुसार)

काल	स्पर्श	मध्य	मोक्ष	पर्वकाल
रेलवे				
घण्टा	१२	२	३	२
मिण्ट	४५	७	३०	४५

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक (वेध) चतुर्दशी शनिवार ता. १ दिसंबर रात को १२ बजकर ४५ मिंट से प्रारम्भ होगा। सूतक में अशक्त गृहस्थ बालवृद्ध रोगियों को छोड़कर भोजन का निषेध है। दृश्य ग्रहण में तो बालवृद्धादि को भी भोजन नहीं करना चाहिये।

सूर्य ग्रहण का प्रभाव—आफिसर वाहन पर चढ़ने के सौकीन साधुजनों को पीड़ा हो। चावल मकई मूंग तिल और विशेष कर धातुओं का भाव तेज हो। गेहूँ चावल गुड़ संग्रह में दो मास में लाभ हो।

दोनों ग्रहणों का राशियों पर शुभाशुभ फल—इस वर्ष के ये दोनों सूर्य चन्द्रग्रहण अनुराधा नक्षत्र और वृश्चिक राशि पर हो रहे हैं। अतः वृश्चिक मेष सिंह धनुः राशि और अनुराधा नक्षत्र वाले प्राणियों और ग्रामों तथा राष्ट्रों को यह दोनों ग्रहण चिन्ता हानि आदि अनिष्ट फलकारक हैं। वृष कर्क तुला मीन राशियों को मध्यम और मिथुन कन्या मकर कुम्भ राशि वालों को शुभफलकारक है। अशुभ राशि नक्षत्र वाले ग्रहणों का दर्शन न करें। कल्याणार्थ यथाशक्ति स्वर्णयुक्त तिल पात्र तथा छाया-

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वतो भद्र भविष्य

पूर्व

उत्तर | दक्षिण | शनि

अ	कृ.	रो	मृ.	आ	पुन	पु.	श्ले	म।
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लृ	वृष	मिथुन	कर्क	लृ	म.	पू
रे	च	मेष	ओ	शु. म. नंदा	औ	सिंह	ट	उ
उ.भा.	द	मीन	शुक्र रि.	शनि पूर्णा	बुध भद्रा	कन्या	प	ह
पू. भा.	स	कुंभ	अः	गुरु जया	अं	तुला	र	चि
श	ग	ऐ	मक	धन	वृं	ए	त	स्वा
ध	ॠ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	वि
ई	श्र	ऽभि	उ.षा	पू. षा.	मू	ज्ये	ऽनु	इ

पश्चिम (बृहस्पति)

ग्रहदृष्टिवेधोनाथ ग्राममनुन्नतिर्हिशी।

यद्भिमनुभागेमेंस्थितापापखेटास्तभभागस्थानगामायाति दं घातः। वेधस्थानं पीड़यन्तीह हन्ति, तत्रस्था ये सत्फलं वस्तु दिष्टाः॥

अखिल ब्रह्माण्ड में जगत्पिता की अलौकिक शक्ति का परिज्ञान कराने वाले जो अनन्त कोटि तारे आकाशमण्डल में हमको दीखते हैं, उनमें जिन तारों (ग्रहों) का हमारी पृथ्वी से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है उन्हीं का उच्च नीच स्थानादि स्थित एवं वक्रमार्गादि, अष्टधा गतियों के भ्रमणवशात् इस पृथ्वी के राष्ट्रों में सुभिक्ष दुर्भिक्ष कभी युद्धविग्रह वा रोग महामारी भय फूट परस्पर विद्वेष कभी शान्त कभी अशान्त वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन सदैव हुआ करते है। यह बात ज्योतिःशास्त्रज्ञ भली प्रकार जानते हैं।

(ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः, सृष्टिरक्षणसंहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः)

जिस तरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासनमण्डल में प्रधान मन्त्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पांच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है और उन अधिकारप्राप्त व्यक्तियों की योग्यता, अयोग्यता, सच्चरित्रता दुश्चरित्रता नि.स्वार्थता एवं स्वार्थपरायणता आदि गुणावगुणों के अनुसार जैसे शासनयन्त्र-पर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशीय-कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय-कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट फेर तथा अघटित घटनाएं घटित होती हैं वह त्रिकालज्ञ महर्षियों के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती हैं। अब हम इस वर्ष आकाशी कौंसिल का धार्मिक सामाजिक तथा राजकीय स्थिति पर जैसा भी शुभाशुभ प्रभाव पड़ेगा वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभुकृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है लिख रहे हैं। इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजमन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्षविचारपूर्वक [illegible] राष्ट्रों की राशि

[illegible] तथा ग्रह रीत्या उस देश का लग्न कितने अंश में है, यह [illegible] जान करके विश्व के राष्ट्रीयफल सहित यह आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) का विचार लिखा गया है। और जहां २ वर्ष में क्रूर मन्द गति ग्रहों की युति हुई है, उनके दक्षिणोत्तर शर आदि से जो २ फल आचार्य वराह मिहिरादिकों एवं श्री जैनाचार्यों ने लिखे हैं, उनको भी यथामति स्फुट रीत्या समझ कर इसी आकाशी कौंसिल में श्रद्धापूर्वक अन्तर्हित कर दिया है।

इस उपरोक्त खगोलीय कौंसिल से ज्ञात होता है कि इस वर्ष भारत में दानादि शुभ कर्म अधिक हों। साधु ब्राह्मण यज्ञ यजनादि में दत्तचित्त हों। प्रजा में बहुत अंशों में शान्ति हो। राजा शासक लोग परस्पर शत्रुता दूर करने के प्रयत्नों में लगे रहें। अन्न दूध दही से प्राणी संतुष्ट रहें। गत वर्ष की अपेक्षा विदेशी फल भी सस्ते रहें। आश्विन कृ० ११ से कार्तिक सुदी १५ तक सिंह कन्या में गुरु शुक्र का योग रहेगा। जो अकाल वृष्टि तथा विश्व में कहीं युद्ध का वातावरण तैयार करता है।

गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद् वृष्टि जंगत्यां नात्र संशयः॥

विक्रमी सं०२०१४ में देशों में भय व्यापे और सं० २०१८ में विश्व डोलायमान हो। उसके अनन्तर सर्वत्र सुख वर्तेगा। स्वतन्त्र भारत की जन्म कुण्डली और ग्रहदशा देखते हुए प्रतीत होता है, कि वर्तमान भारत के शासकों के शासन में धर्मनिरक्षेपता वि० संवत् २०१८ तक ही रहेगी, तदनन्तर किसी महापुरुष के प्रभाव से यही राज्यसत्ता निश्चितरूप से धर्मसापेक्ष होकर विश्व की पथ प्रदर्शक बनेगी। हमारे विचार में भी जब तक भारत सरकार भारत की प्राचीन उदार आर्य संस्कृति व धर्म से दूर रहेगी, तब तक भारत की स्वानुरूप उन्नति नहीं होगी, क्योंकि धर्महीन राजनीति पंगु ही बनी रहेगी।

भारत—इस वर्ष राजा प्रजा में सामान्य स्थिति रहेगी। कई बातों में प्रजा राज्यसत्ता की तर्फ से क्षोभ दुःख सन्ताप भी प्राप्त करेगी, नव निर्मित कानूनों के प्रचलन से कष्ट का अनुभव करेगी। राजनैतिक मतभेद के कारण कहीं जनहानि तथा ज्येष्ठ, आषाढ़ में कहीं हड़तालादि हों। शुक्रगतिवश भारत में नये सिक्के तथा नये आविष्कार देखने में आवेंगे। भारत की वर्षप्रवेशादि कुण्डलियों को देखते हुए निश्चय होता है, कि भारत की प्रतिष्ठा अब और भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगी। इस वर्ष भी भारत के तटस्थ रहने के योग हैं। सरकार को जल स्थल आकाशीय सैनिकों में वृद्धि करने के कारण गत वर्ष की अपेक्षा विशेष खर्च करना पड़ेगा। महावैज्ञानिक शुक्र गुरु की कन्या राशि में युति के फल स्वरूप भारत सरकार के विज्ञानानुसन्धान विभाग की आश्चर्यमय उन्नति होगी। भारत सरकार को इस वर्ष के १७ ज्येष्ठ बाद और सं० २०१४ के कार्तिक तक कहीं भूगर्भ में से धनरत्न आदि बहुमूल्य अलौकिक वस्तुएं प्राप्त होंगी। जिन में से कुछ अंश पहिले ही रहस्यमय ढंग से गुम होने के भी योग हैं। सरकार को भारत के अन्तर्गत ही नाममात्र के स्वतन्त्रीकरण व विलीनीकरण तथा नई सीमाबन्दीकरण जैसी नीति अपना कर शासन चलाना पड़ेगा। फिर भी जनता में संतोष की बजाय असंतोष ही रहेगा।

भारतीय भूमण्डल पर भविष्य की ग्रहस्थिति देखते हुए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि सं० २०२१ विक्रमी तक विघ्न बाधाओं के बाद भारत अन्य बड़े देशों की तरह समृद्ध हो जायेगा।

इस वर्ष विमान व यातायात विभाग में उन्नति विशेष होगी। साथ ही विदेशीय विधर्मी गुप्तचरों से भारत सरकार को हानि पहुंचाने के अथक प्रयत्न होंगे। भारत की द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना से सरकार को एक बार दैवी अड़चनों के कारण विघ्न बाधाओं का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रभुकृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है लिख रहे हैं। इस वर्ष आकाशी कौंसिल (प्रहारपद) ... वर्षीय योजना से सरकार को एक और दवा ...
के राजमन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्यविचारपूर्वक भारत ...

सामना करना पड़ेगा। कहीं अव्यवस्था से हानि तथा विशेष समय में कार्यपूर्ति होगी। फिर
भी इस योजना से सरकार को यशलाभ तथा देश में सुख समृद्धि होगी। इस वर्ष मद्यबन्दी
योजना को विशेष सफलता नहीं मिलेगी। ग्रहगति देखते हुए मादक द्रव्यों के बाहर से
आयात होने के मौके बनते रहेंगे। भौम राहु गति वशात् सरकार धार्मिक स्थानों की सम्पत्ति
आदि में हस्तक्षेप करेगी, जिस से धर्मप्राण जनता में असन्तोष फैलेगा, और इसका परिणाम
भी भविष्य में सरकार पर कुछ बुरा पड़ेगा। १७ वैशाख के बाद सरकार का देश के किनारे
सीमावर्ती स्थानों पर विशेष खर्च होगा। भारत की बहुमूल्य वस्तुएं चोरी से विदेशों में
जावेंगी। इस विषय में वर्ष के पूर्वार्द्ध में भी कई दुष्ट देशद्रोही दण्ड पावेंगे। ज्येष्ठ या
मार्गशीर्ष के लगभग कोई उत्पात या किसी शासन का अन्त हो। इस वर्ष श्री विनोबा जी
के भूदान यज्ञ का प्रवाह मध्यमगति से चलेगा, और स्वास्थ्य में भी गड़बड़ी रहेगी।

ब्रिटेन अमेरिका आदि राष्ट्रों पर आकाशीय कौंसिल का प्रभाव

ब्रिटेन आदि देशों का शुभाशुभ तथा भविष्य देखने से ज्योतिर्विदों ने रेखांश व अक्षांश
द्वारा उनकी जो २ राशियें निश्चित की है, उनका सर्वतोभद्रादि द्वारा तथा अन्य गुरुगम्य
ज्योतिष के संकेतों द्वारा जो फल आकाशीय कौंसिल से ज्ञात होता है, सो लिखते हैं :—

ब्रिटेन—इस वर्ष ब्रिटेन का भारत से मध्यम संबन्ध रहेगा। संहारक शस्त्र निर्माण में
विशेष रूप से दत्तचित्त रहेगा, और आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। राष्ट्र सभा में चीन को
इच्छित स्थान दिलाने और उस को स्थिर रखने का ख्याल रखेगा। कुटिल नीति द्वारा
रूस से विशेष संबन्ध बढ़ाने का उद्योग करेगा। भारत के उलझे हुए प्रश्नों को अन्दर से
बिगाड़ने की नीति बर्तेगा। प्रधान मण्डल में कोई अदला बदली होगी, तथा अचानक विमान
तथा अन्य यानों की दुर्घटनायें होंगी। किसी सम्मानित बड़े पुरुष की मृत्यु से शोक भी होगा।

अमेरिका—इस वर्ष अमेरिका के प्रधान को विशेष चिन्तित रहना पड़ेगा। कोई दूसरा
प्रधान बनने का वातावरण तय्यार करे। यहां की राजनीति में भारी परिवर्तन हो। यहां
के वैज्ञानिक विद्वानों के लिये यह वर्ष महाभयोत्पादक है। शासकों के अतिरिक्त यहां की
जनता भारत से प्रेम रखने के पक्ष में रहे। दक्षिण अमेरिका के निवासी तो भारत से
विशेष संबन्ध बढ़ाने में उत्सुक हों, रूस चीन से कुछ नरमाई का व्यवहार करे।

रूस—इस वर्ष भारत से उत्तम संबन्ध रहेगा, तथा अयाचित सहायता देकर मैत्री
बढ़ावेगा। अमेरिका, यूरोप के साथ वर्षारम्भ में कुछ अच्छे संबन्ध रखेगा। परन्तु वर्ष के
उत्तरार्ध में कारणान्तरों से कुछ बिगाड़ उत्पन्न होगा। कई विदेशी राजदूतों में अदला
बदली हो। राष्ट्र का कोई गुप्त भेद प्रकट होने के कारण कई राज्य के उच्चाधिकारी
दण्ड पावें।

फ्रांस—इस वर्ष युद्ध बल की वृद्धि करने में लगा रहेगा। भारत से मध्यम संबन्ध
रखेगा, तथा भारत के हित को बिगाड़ने की आन्तरिक नीति ग्रहण करेगा। भारत के
शत्रुओं से मेल मिलाप बढ़ावेगा।

जर्मनी—इस वर्ष से इस देश की प्रतिष्ठा पुनः बढ़ने लगे। शनि गुरु ग्रह का भ्रमण
विभाजित प्रदेश को एकत्र करने एवं बल वृद्धि कराने में सहायक होगा। यहां की जनता
भारत को अच्छी दृष्टि से देखेगी, और देववाणी ... करेगी।

जापान चीनादि—इस वर्ष जापान में कई जगह हड़ताल आदि हों, जिस में पुलिस की
मदद लेनी पड़ेगी। भारत के साथ व्यापार बढ़ेगा, कुछ और स्वतन्त्रता भी प्राप्त होगी।
बल का संचार होगा। चीन की प्रगति बलवान् राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर रहेगी। भारत
से उत्तम संबन्ध रहे। कोई स्थान प्रदेश इनको प्राप्त हो। विश्व के बड़े राष्ट्रों से मान
मर्यादा मिले। इस वर्ष गुप्तरूप से अणु शस्त्र का किसी विदेशी से प्राप्त होने का योग है।
अफ्रीका देश, शनि सूर्य मंगल के प्रभाव का देश है। इनका भ्रमण इस देश पर किसी
प्राकृतिक हानि की सूचना देता है। यहां किसी नवीन सत्ता का प्रवेश हो। यहां के एशिया
वासियों पर संकट आवे। दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों पर ग्रहगति भारी भय की
सूचना देती है, परस्पर मारकाट हो। युगोस्लोवाकिया के मार्शल टीटो को शनि भौम गति
वशात् अपनी नीति तथा मन्त्रिमण्डल में हेरफेर करना पड़ेगा। इण्डोनेशिया में अन्तःकलह
होगा। मिश्र देश में सुभिक्ष हो। श्याम का भारत के साथ प्रेम बढ़ेगा, दृढ़ संबन्ध स्थापित
होगा। ब्रह्मदेश के नेताओं पर इन्द्र शनैश्चर का भ्रमण अशुभ है, अतः यहां की आर्थिक
स्थिति कमजोर रहेगी। विदेशों से सहायता प्राप्त करे। भारत के साथ व्यापार का विशेष
विकास नहीं होगा। भाद्रपद आश्विन में कोई प्राकृतिक भय हो।

पाकिस्तान—पाकिस्तान जन्मलग्नेश के साथ क्रूर ग्रहों का समागम होने के कारण
राजनैतिक पार्टियों में मतभेद हो। किसी राजकीय सत्ताधारी पर अपघात का भय हो।
कहीं परस्पर उपद्रव हो। यहां के शासक विदेशों में दौड़ भाग करें। जा की कठिनाईयां
बढ़ें। अन्य मुस्लिम देश मित्र बनें। भौम राहु वशात् बाहर से युद्ध प्रवीणों का आगमन
हो। ज्येष्ठ में यहां का राजकीय वातावरण क्षुब्ध रहे। सीमा प्रान्त में झड़पे हों। पख्तूनों
का प्रश्न हैरान करे। अफगानिस्तान के साथ ज्येष्ठ आषाढ़ में कोई पुनः समझौता हो।
यहां के शासक भारत के साथ इस वर्ष भी खोटा ही व्यवहार करेंगे। यहां की शेष हिन्दू
प्रजा को सुख शान्ति नहीं मिलेगी, घर छोड़ प्रवृत्ति बढ़ेगी। काश्मीर के कुछ भाग को
हजम करने का पूर्ण प्रयत्न होगा। ज्येष्ठ बाद मन्त्रिमण्डल में कोई परिवर्तन हो।

पाठको ! आज से सहस्रों वर्ष पहिले महर्षि वेद व्यास ने अपनी तत्त्व दृष्टि से भारत के
भविष्य का जैसा दर्शन किया था, वह आज हम अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख रहे हैं। उन्हों
"श्रीमद्भागवत" के द्वादश स्कन्ध के प्रथम अध्याय में लिखा है —

सिन्धो स्तटं चन्द्रभागां कौन्तीं काश्मीरमण्डलम्
भोक्ष्यन्ति शूद्रा व्रात्याश्च म्लेच्छाश्चाब्रह्मवर्चसः ॥१॥

म्लेच्छ लोग सिन्धु तट, चन्द्रभागा (चनाव नदी) कौन्ती नगरी और काश्मीर आदि
स्थानों में राज्य करेंगे। यहां महर्षि वेदव्यास ने, राज्य करेंगे, लिखा है, किन्तु आज हम
प्रत्यक्ष देख रहे हैं, कि सिन्ध नदी का प्रदेश, चनाव नदी, और काश्मीर के कुछ प्रदेश पर
यवन लोग राज्य कर रहे हैं। आगे फिर लिखा है —

एतेऽधर्मा नृतपराः फल्गुदा स्तीव्रमन्यवः ।
स्त्री बाल गोद्विजघ्नाश्च परदारधनाहृताः ॥२॥

अर्थात् "ये सब अधर्मी झूठ बोलने वाले, थोड़ा देने वाले, बहुत क्रोधी, पर स्त्री और पर
धन का हरण करने वाले और स्त्री बालक गौ ब्राह्मण का वध करने वाले होंगे।" यह स
लक्षण पाकिस्तान पर घटते हैं। इनके लिये आगे —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यस्मिन् ऋक्षे स्थितः खेटस्तद्वेधस्थं भवेत् ।
ग्रहदृष्टिवशेनाथ वामसम्मुखदक्षिणी ।

सर्वतो भद्र भविष्य

पूर्व

उत्तर — दक्षिण — शनि

अ	कृ.	रो	मृ.	आ	पुन	पु.	श्ले	आ
म	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लु	वृष	मिथुन	कर्क	लृ	म.	पू
रे	च	मेष	ओ	सू. मं. नंदा	औ	सिंह	ट	उ
उ.भा.	द	मीन	शुक्र रि	शनि पूर्णा	बुध भद्रा	कन्या	प	ह
पू. भा.	स	कुंभ	अः	गुरु जया	अं	तुला	र	चि
श	ग	ऐ	मक	धन	वृ	ए	त	स्वा
ध	ॠ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	वि
ई	श्र	ऽभि	उ.पा	पू. पा.	मू	ज्ये	ऽनु	इ

पश्चिम (बृहस्पति)

यस्मिन्भांशे स्थितापापखेटास्तन्भागस्थानामायान्ति वै धात।
वेधस्थानं पीड़यन्तीह नूनं, तत्त्रस्था वै सत्फलं वद्धु रिष्टि: ॥

अखिल ब्रह्माण्ड में जगत्पिता की अलौकिक शक्ति का परिज्ञान कराने वाले जो अनन्त कोटि तारे आकाशमण्डल में हमको दीखते हैं, उनमें जिन तारों (ग्रहों) का हमारी पृथ्वी से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है उन्हीं का उच्च नीच स्थानादि स्थित एवं वक्रमार्गादि, अष्टधा गतियों के भ्रमणवशात् इस पृथ्वी के राष्ट्रों में सुभिक्ष दुर्भिक्ष कभी युद्धविग्रह वा रोग महामारी भय फूट परस्पर विद्वेष कभी शान्त कभी अशान्त वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन सदैव हुआ करते हैं। यह बात ज्योतिःशास्त्रज्ञ भली प्रकार जानते हैं।

(ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः, सृष्टिरक्षणसंहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः) जिस तरह इस भूमण्डल पर लोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासनमण्डल में प्रधान मन्त्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पांच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है और उन अधिकारप्राप्त व्यक्तियों को योग्यता, अयोग्यता, सच्चरित्रता दुश्चरित्रता नि.स्वार्थता एवं स्वार्थपरायणता आदि गुणावगुणों के अनुसार जैसे शासनयन्त्र-पर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलाने के लिए एक दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती आकाशीय-कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय-कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट फेर तथा अघटित घटनाएं घटित होती हैं वह त्रिकालज्ञ महर्षियों के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकती हैं। अब हम इस वर्ष आकाशी कौंसिल का धार्मिक सामाजिक तथा राजकीय स्थिति पर जैसा भी शुभाशुभ प्रभाव पड़ेगा वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभुकृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है लिख रहे हैं। इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजमन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्षविचारपूर्वक भारत एवं अन्य राष्ट्रों की राशि का आधिपत्य तथा सूक्ष्म रीत्या उस देश का लग्न कितने अंश में है, यह भी भली प्रकार जान करके विश्व के राष्ट्रीयफल सहित यह आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) का विचार लिखा गया है। और जहां २ वर्ष में क्रूर मन्द गति ग्रहों की युति हुई है, उनके दक्षिणोत्तर शर आदि से जो २ फल आचार्य वराह मिहिरादिकों एवं श्री जैनाचार्यों ने लिखे हैं, उनको भी यथामति स्फुट रीत्या समझ कर इसी आकाशी कौंसिल में श्रद्धापूर्वक अन्तर्हित कर दिया है।

इस उपरोक्त खगोलीय कौंसिल से ज्ञात होता है कि इस वर्ष भारत में दानादि शुभ कर्म अधिक हों। साधु ब्राह्मण यज्ञ यजनादि में दत्तचित्त हों। प्रजा में बहुत अंशों में शान्ति हो। राजा शासक लोग परस्पर शत्रुता दूर करने के प्रयत्नों में लगे रहें। अन्न दूध दही से प्राणी संतुष्ट रहें। गत वर्ष की अपेक्षा विदेशी फल भी सस्ते रहें। आश्विन कृ० ११ से कार्तिक सुदी १५ तक सिंह कन्या में गुरु शुक्र का योग रहेगा। जो अकाल वृष्टि तथा विश्व में कहीं युद्ध का वातावरण तैयार करता है।

गुरु शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद् वृष्टि र्जगत्यां नात्र संशयः॥

विक्रमी सं० २०१४ में देशों में भय व्यापे और सं० २०१८ में विश्व डोलायमान हो। उसके अनन्तर सर्वत्र सुख वर्तेगा। स्वतन्त्र भारत की जन्म कुण्डली और ग्रहदशा देखते हुए प्रतीत होता है, कि वर्तमान भारत के शासकों के शासन में धर्मनिरक्षेपता वि० संवत् २०१८ तक ही रहेगी, तदनन्तर किसी महापुरुष के प्रभाव से यही राज्यसत्ता निश्चितरूप से धर्मसापेक्ष होकर विश्व की पथ प्रदर्शक बनेगी। हमारे विचार में भी जब तक भारत सरकार भारत की प्राचीन उदार आर्य संस्कृति व धर्म से दूर रहेगी, तब तक भारत की स्वानुरूप उन्नति नहीं होगी, क्योंकि धर्महीन राजनीति पंगु ही बनी रहेगी।

भारत—इस वर्ष राजा प्रजा में सामान्य स्थिति रहेगी। कई बातों में प्रजा राज्यसत्ता की तर्फ से क्षोभ दुःख सन्ताप भी प्राप्त करेगी, नव निर्मित कानूनों के प्रचलन से कष्ट का अनुभव करेगी। राजनैतिक मतभेद के कारण कहीं जनहानि तथा ज्येष्ठ, आषाढ़ में कहीं हड़-तालादि हों। शुक्रगतिवश भारत में नये सिक्के तथा नये आविष्कार देखने में आवेंगे। भारत की वर्षप्रवेशादि कुण्डलियों को देखते हुए निश्चय होता है, कि भारत की प्रतिष्ठा अब और भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होगी। इस वर्ष भी भारत के तटस्थ रहने के योग हैं। सरकार को जल स्थल आकाशीय सैनिकों में वृद्धि करने के कारण गत वर्ष की अपेक्षा विशेष खर्च करना पड़ेगा। महावैज्ञानिक शुक्र गुरु की कन्या राशि में युति के फल स्वरूप भारत सरकार के विज्ञानानुसन्धान विभाग की आश्चर्यमय उन्नति होगी। भारत सरकार को इस वर्ष के १७ ज्येष्ठ बाद और सं० २०१४ के कार्तिक तक कहीं भूगर्भ में से धनरत्न आदि बहुमूल्य अलौकिक वस्तुएं प्राप्त होंगी। जिन में से कुछ अंश पहिले ही रहस्यमय ढंग से गुम होने के भी योग हैं। सरकार को भारत के अन्तर्गत ही नाममात्र के स्वतन्त्रीकरण व विलीनीकरण तथा नई सीमाबन्दीकरण जैसी नीति अपना कर शासन चलाना पड़ेगा। फिर भी जनता में संतोष की बजाय असंतोष ही रहेगा।

भारतीय भूमण्डल पर भविष्य की ग्रहस्थिति देखते हुए तो यह निष्कर्ष निकलता है कि सं० २०२१ विक्रमी तक विघ्न बाधाओं के बाद भारत अन्य बड़े देशों की तरह समृद्ध हो जायेगा।

इस वर्ष विमान व यातायात विभाग में उन्नति विशेष होगी। साथ ही विदेशीय विधर्मी गुप्तचरों से भारत सरकार को हानि पहुंचाने के अथक प्रयत्न होंगे। भारत की द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना से सरकार को एक वार दैवी अड़चनों के कारण विघ्न बाधाओं का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

के राजमन्त्री आदि दलाधिकारियों तथा आर्थविचार ... दैवी अड़चनों के कारण विघ्न बाधाओं का

सामना करना पड़ेगा। कहीं अव्यवस्था से हानि तथा विशेष समय में कार्यपूर्ति होगी। फिर
भी इस योजना से सरकार को यशलाभ तथा देश में सुख समृद्धि होगी। इस वर्ष मद्यबन्दी
योजना को विशेष सफलता नहीं मिलेगी। ग्रहगति देखते हुए मादक द्रव्यों के बाहर से
आयात होने के मौके बनते रहेंगे। भौम राहु गति वशात् सरकार धार्मिक स्थानों की सम्पत्ति
आदि में हस्तक्षेप करेगी, जिस से धर्मप्राण जनता में असन्तोष फैलेगा, और इसका परिणाम
भी भविष्य में सरकार पर कुछ बुरा पड़ेगा। १७ वैशाख के बाद सरकार का देश के किनारे
सीमावर्ती स्थानों पर विशेष खर्च होगा। भारत की बहुमूल्य वस्तुएं चोरी से विदेशों में
जावेंगी। इस विषय में वर्ष के पूर्वार्द्ध में भी कई दुष्ट देशद्रोही दण्ड पावेंगे। ज्येष्ठ या
मार्गशीर्ष के लगभग कोई उत्पात या किसी शासन का अन्त हो। इस वर्ष श्री विनोबा जी
के भूदान यज्ञ का प्रवाह मध्यमगति से चलेगा, और स्वास्थ्य में भी गड़बड़ी रहेगी।

ब्रिटेन अमेरिका आदि राष्ट्रों पर आकाशीय कौंसिल का प्रभाव

ब्रिटेन आदि देशों का शुभाशुभ तथा भविष्य देखने से ज्योतिर्विदों ने रेखांश व अक्षांश द्वारा उनकी जो २ राशियें निश्चित की हैं, उनका सर्वतोभद्रादि द्वारा तथा अन्य गुरुगम्य ज्योतिष के संकेतों द्वारा जो फल आकाशीय कौंसिल से ज्ञात होता है, सो लिखते हैं :—

ब्रिटेन—इस वर्ष ब्रिटेन का भारत से मध्यम संबन्ध रहेगा। संहारक शस्त्र निर्माण में
विशेष रूप से दत्तचित्त रहेगा, और आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। राष्ट्र सभा में चीन को
इच्छित स्थान दिलाने और उस को स्थिर रखने का ख्याल रखेगा। कुटिल नीति द्वारा
रूस से विशेष संबन्ध बढ़ाने का उद्योग करेगा। भारत के उलझे हुए प्रश्नों को अन्दर से
बिगाड़ने की नीति वर्तेगा। प्रधान मण्डल में कोई अदला बदली होगी, तथा अचानक विमान
तथा अन्य यानों की दुर्घटनायें होंगी। किसी सम्मानित बड़े पुरुष की मृत्यु से शोक भी होगा।

अमेरिका—इस वर्ष अमेरिका के प्रधान को विशेष चिन्तित रहना पड़ेगा। कोई दूसरा
प्रधान बनने का वातावरण तय्यार करे। यहां की राजनीति में भारी परिवर्तन हो। यहां
के वैज्ञानिक विद्वानों के लिये यह वर्ष महाभयोत्पादक है। शासकों के अतिरिक्त यहां की
जनता भारत से प्रेम रखने के पक्ष में रहे। दक्षिण अमेरिका के निवासी तो भारत से
विशेष संबन्ध बढ़ाने में उत्सुक हों, रूस चीन से कुछ नरमाई का व्यवहार करे।

रूस—इस वर्ष भारत से उत्तम संबन्ध रहेगा, तथा अयाचित सहायता देकर मैत्री
बढ़ावेगा। अमेरिका, यूरोप के साथ वर्षारम्भ में कुछ अच्छे संबन्ध रखेगा। परन्तु वर्ष के
उत्तरार्ध में कारणान्तरों से कुछ बिगाड़ उत्पन्न होगा। कई विदेशी राजदूतों में अदला
बदली हो। राष्ट्र का कोई गुप्त भेद प्रकट होने के कारण कई राज्य के उच्चाधिकारी
दण्ड पावें।

फ्रांस—इस वर्ष युद्ध बल की वृद्धि करने में लगा रहेगा। भारत से मध्यम संबन्ध
रखेगा, तथा भारत के हित को बिगाड़ने की आन्तरिक नीति ग्रहण करेगा। भारत के
शत्रुओं से मेल मिलाप बढ़ावेगा।

जर्मनी—इस वर्ष से इस देश की प्रतिष्ठा पुनः बढ़ने लगे। शनि गुरु ग्रह का भ्रमण
विभाजित प्रदेश को एकत्र करने एवं बल वृद्धि कराने में सहायक होगा। यहां की जनता
भारत को अच्छी दृष्टि से देखेगी, और देववाणी के प्रति प्रेम वृद्धि प्रदर्शित करेगी।

जापान चीनादि—इस वर्ष जापान में कई जगह हड़ताल आदि हों, जिस में पुलिस की मदद लेनी पड़ेगी। भारत के साथ व्यापार बढ़ेगा, कुछ और स्वतन्त्रता भी प्राप्त होगी। चीन की प्रगति बलवान् राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर रहेगी। भारत से उत्तम संबन्ध रहे। कोई स्थान प्रदेश इनको प्राप्त हो। विश्व के बड़े राष्ट्रों से मान मर्यादा मिले। इस वर्ष गुप्तरूप से अणु शस्त्र का किसी विदेशी से प्राप्त होने का योग है। अफ्रीका देश, शनि सूर्य मंगल के प्रभाव का देश है। इनका भ्रमण इस देश पर किसी प्राकृतिक हानि की सूचना देता है। यहां किसी नवीन सत्ता का प्रवेश हो। यहां के एशिया वासियों पर संकट आवे। दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों पर ग्रहगति भारी भय की सूचना देती है, परस्पर मारकाट हो। युगोस्लोवाकिया के मार्शल टीटो को शनि भौम गति वशात् अपनी नीति तथा मन्त्रिमण्डल में हेरफेर करना पड़ेगा। इण्डोनेशिया में अन्तःकलह होगा। मिश्र देश में सुभिक्ष हो। श्याम का भारत के साथ प्रेम बढ़ेगा, दृढ़ संबन्ध स्थापित होगा। ब्रह्मदेश के नेताओं पर इन्द्र शनैश्चर का भ्रमण अशुभ है, अतः यहां की आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। विदेशों से सहायता प्राप्त करे। भारत के साथ व्यापार का विशेष विकास नहीं होगा। भाद्रपद आश्विन में कोई प्राकृतिक भय हो।

पाकिस्तान—पाकिस्तान जन्मलग्नेश के साथ क्रूर ग्रहों का समागम होने के कारण राजनैतिक पार्टियों में मतभेद हो। किसी राजकीय सत्ताधारी पर अपघात का भय हो। कहीं परस्पर उपद्रव हो। यहां के शासक विदेशों में दौड़ भाग करें। जा की कठिनाईयां बढ़ें। अन्य मुस्लिम देश मित्र बनें। भौम राहु वशात् बाहर से युद्ध प्रवीणों का आगमन हो। ज्येष्ठ में यहां का राजकीय वातावरण क्षुब्ध रहे। सीमा प्रान्त में झड़पे हों। पख्तूनों का प्रश्न हैरान करे। अफगानिस्तान के साथ ज्येष्ठ आषाढ़ में कोई पुनः समझौता हो। यहां के शासक भारत के साथ इस वर्ष भी खोटा ही व्यवहार करेंगे। यहां की शेष हिन्दु प्रजा को सुख शान्ति नहीं मिलेगी, घर छोड़ प्रवृत्ति बढ़ेगी। काश्मीर के कुछ भाग को हजम करने का पूर्ण प्रयत्न होगा। ज्येष्ठ बाद मन्त्रिमण्डल में कोई परिवर्तन हो।

पाठको ! आज से सहस्रों वर्ष पहिले महर्षि वेद व्यास ने अपनी तत्त्व दृष्टि से भारत के भविष्य का जैसा दर्शन किया था, वह आज हम अपनी आंखों से प्रत्यक्ष देख रहे हैं। उन्होंने "श्रीमद्भागवत" के द्वादश स्कन्ध के प्रथम अध्याय में लिखा है —

सिन्धो स्तटं चन्द्रभागां कौन्तीं काश्मीरमण्डलम्
भोक्ष्यन्ति शूद्रा व्रात्याश्च म्लेच्छाश्चाब्रह्मवर्चसः ॥१॥

म्लेच्छ लोग सिन्धु तट, चन्द्रभागा (चनाव नदी) कौन्ती नगरी और काश्मीर आदि स्थानों में राज्य करेंगे। यहां महर्षि वेदव्यास ने, राज्य करेंगे, लिखा है, किन्तु आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं, कि सिन्ध नदी का प्रदेश, चनाव नदी, और काश्मीर के कुछ प्रदेश पर यवन लोग राज्य कर रहे हैं। आगे फिर लिखा है —

एतेऽधर्मा नृतपराः फल्गुदा स्तीव्रमन्यवः ।
स्त्री बाल गोद्विजघ्नाश्च परदारधनाहृताः ॥२॥

अर्थात् "ये सब अधर्मी झूठ बोलने वाले, थोड़ा देने वाले, बहुत क्रोधी, पर स्त्री और पर धन का हरण करने वाले और स्त्री बालक गौ ब्राह्मण का वध करने वाले होंगे।" यह सब लक्षण पाकिस्तान पर घटते हैं। इनके लिये आगे —

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

"उदितास्त मितप्राया अल्पसत्वाल्प ... राज्य सत्ता थोड़े समय अर्थात् १५ या २० वर्ष के मध्य में ही नष्ट होगी, ऐसा संकेत किया है। सो ठीक ही होगा, इसमें संशय नहीं।

ईरान में उद्दण्ड जनसमूह किसी राजसत्ता युक्त पुरुष को गिराने में लगे रहें।

नेपाल-आसाम—इस वर्ष नेपाल में कांग्रेस सत्ता का पूर्ण प्रभुत्व नहीं हो सकेगा। तद्देशीय राणाओं का आधिपत्य अभी रहेगा। विदेशी सत्ता द्वारा आर्थिक सहायता मिलेगी। भारत से मैत्री पूर्ववत् बनी रहेगी। देश की व्यवस्था का सुधार होता रहेगा। आसाम की जनता का प्रेम भारत सरकार के साथ रहेगा। अन्य विधर्मी यवनादिकों को वहां धार्मिक व राजनैतिक कोई सफलता नहीं मिलेगी।

सिलोन (लंका) में भारतीयों की स्थिति भी अच्छे होने के योग नहीं हैं। फिर भी ज्येष्ठ मास से सिलोन सरकार कुछ नर्म नीति अपनावेगी। यहां विदेशियों का राज्य तो नहीं होगा परन्तु उनका मुख्यत्व अभी रहेगा।

काश्मीर—गुरु शनि के भ्रमणवशात् इस वर्ष पाकिस्तान नैतिकबल से सम्पूर्ण काश्मीर को फिर भी हड़पने का निष्फल प्रयत्न करेगा। काश्मीर के विषय में भारत की नीति एवं क्रियात्मक पग से जनता में चिन्ता व नाराजी फैलेगी।

आकाशीय कौंसिल का विश्व पर प्रभाव

इस वर्ष संपूर्ण विश्व का वातावरण अभी अडोल नहीं रहेगा। परस्पर झगड़ा स्वार्थमय खेंचातानी चलती रहेगी। प्रजा में नीच जन बड़े हों। कई बस्ती स्थान उजाड़ और उजाड़ बस्ती बनें। छोटी आयु के मनुष्यों में शर्म लज्जा का अभाव हो। प्रेमविवाह का प्रवाह अधिक मात्रा में चलेगा। साधु लोग ग्रहस्थों की सी स्थिति में आवें। कई जगह सेठों की स्थिति ऐसी बिगड़े, कि अन्तरात्मा से नौकरी करने पर उतारू हों। गुरु और यम की युति के कारण विश्व की पुरानी संस्कृति में सर्वत्र परिवर्तन आता रहेगा। इस वर्ष यूरोप में महा वृष्टि, जल भय से त्राहि २ मचे, ऐसे योग हैं। विश्व में कहीं विस्फोट से हानि हो। किसी राजधानी में भय व्यापे। वैशाख सुदी १५ के बाद किसी शासक को मृत्युभय हो। भाद्रपद कृष्ण से एक मास के अन्दर कहीं उत्तर दिशा में प्रजा को भय त्रास हो।

पाप ग्रह वेध वशात एशिया तीन विभागों में बंट जावेगा, और बड़े २ राष्ट्र परस्पर नजदीक आने की चाल में रहेंगे, परन्तु आन्तरिक भाव से एक दूसरे को शङ्का की दृष्टि से देखेंगे। यूरोप में वैशाख, ज्येष्ठ में कुछ भय खड़ा हो, परन्तु शुभ ग्रहों के भ्रमणवशात (ग्रहाधीनं जगत्सर्वम्) बड़े राष्ट्रों के दिल कुछ काल के लिये बदलेंगे।

भयरोगोपद्रव—इस वर्ष भारत में बालकों को कई जगह शीतला के प्रकोप से हानि पहुंचे। हैजे आदि से भी जन हानि के योग हैं। पशुओं की बीमारी से कृषक चिन्तित रहें। मार्गशीर्ष के बाद महिषी (भैंस) रोग से पीड़ित होकर मरें। जिन को शनैश्चर अशुभ हो, वह इस वर्ष भैंसों का व्यापार न करें, अन्यथा हानि होगी। राहु के प्रभाव से बहुत जगह मार्ग में सर्प एवं चौर तथा घरों में अग्नि से भय हो। इस वर्ष नियमानुसार कोई युद्ध के योग नहीं है, फिर भी एक बार कहीं न कहीं युद्ध होने जैसी दशा देखने में आवेगी। ३ वैशाख के बाद सरहद्द एवं समुद्र नद प्रधान देशों के तट में सरकार को विशेष सावधानी रखनी पड़ेगी। आषाढ़ में कहीं सैनिक हलचल हो। प्रजा में साम्प्रदायिकता से परस्पर कहीं असंतोष

क्षोभ से अन्तःकलह जैसी दशा वर्षारम्भ वा वर्षान्त में होगी। राज्यविरुद्ध तत्त्वों के कारण देश को हानि भय हो। शासकों को कोई न कोई भय बना रहेगा। नये कर भार से जनता में असंतोष हो। शनैश्चर की दृष्टि पश्चिम में होने के कारण पश्चिमी देशों में भय विग्रह पर चक्र से भय होवे। फाल्गुन में कहीं भारत में प्रजाको उपद्रवादि से भय हो, अन्य किसी प्रदेश में युद्ध वा मुठभेड़ से नर मरें। इस वर्ष भारत में अप्रैल मई में हवा के तूफानों से हानि पहुंचे, और टिड्डी आदिसे भय हो, विशेषकर मध्यभारत में। विशेष शीतके कारण रोग हों। पर्वतीय प्रान्तों में बर्फ ज्यादा पड़े। सवंत्सर दीपिका के "मंगसिर में होय कटो राज दक्षिण ही खोवे" इस संकेत से ज्ञात होता है, कि वृश्चिक का शनैचर दक्षिण स्थित पुर्तगाली राज्य गोआ को भारत में विलीन कर के उनका शासन समाप्त कर देगा। आषाढ़ श्रावण में कोई मान्य व्यक्ति रोगी होवे तथा कोई ऐसा ही व्यक्ति मृत्यु पावे और खानों में धडाके तथा कहीं भूकंप के झटके लगें। जून, जुलाई में कही परस्पर खून खराबी चोरी डाके से कष्ट होवे। आठ अगस्त के अन्दर कोई सवारी की दुर्घटना हो। आश्विन शुक्ल ८ से १० तक कहीं अग्नि बिजली आदि से कारखानों में भय होगा, सावधान भारतीय मजदूर और उद्योगपति मालिकों में सामान्य स्थिति रहेगी। इसवर्ष यद्यपि मजदूर वर्ग को अच्छे लाभ का योग है परन्तु वह उस लाभ का सदुपयोगयोग नहीं कर सकेंगे और इनका स्वास्थ्य भी कुछ ठीक नहीं रहेगा। देश में पौष तक कहीं प्रान्तवाद कहीं कौमवाद से शासकों को हैरानी उठानी पड़ेगी। बड़े जमीदार, जागीरदार आदिकों में असंतोष की ज्वाला धधकती रहेगो। भौम-गुरु गति वशात न्याय के नाते कोई नेता इनकी आन्तरिक कानूनी रियायत कराने को उद्यत होंगे। जनता के स्वास्थ्य के लिये यह वर्ष कई प्रदेशों में खराब ही रहेगा। कहीं नेत्र, दिमाग, कहीं उदर, हृदय, फेफड़े, आंतड़ियों की बामारियों से कष्ट होगा। पौष, माघ में शीत रोग से अशक्त बालक वृद्धों को खतरा हो। वर्ष के पूर्वार्ध में सिंध गुजरात में महारोग भय हो। वैद्य लोगों को लाभ हो। धर्माचार्य, महन्त, गुसाँई, गद्दीधर, मठाधीशों के लिये इस वर्ष से लेकर आगामी सं २०१४ के मध्य तक कष्ट, भय, अशान्ति, विपत्ति का वातावरण बनेगा तथा इनके वैभवऐश्वर्य पर शनैश्चर की दृष्टि पड़ने का योग बन रहा है। स्वतन्त्राब्द में राहु शनि चन्द्र भारतीयों को कोई असह्य दुःखान्त घटना के द्योतक हैं। भारतीय सैनिकों में कहीं कुछ आन्तरिक असंतोष फैले जो सरकार की सुन्दर नीति से शीघ्र ही दूर हो जायेगा।

आकाशी कासिल का व्यापार पर प्रभाव

वर्ष योगायोग तथा मुख्याधिकारियों को देखते हुए यह वर्ष व्यापारियों के लिये मध्यम रहेगा। इस वर्ष बहुधा व्यापार में ज्यादा नफे की प्रतीक्षा में मिलना नफा भी हाथ से खो बैठने से व्यापारी लोग खिन्न चित्त रहेंगे। अर्थात् चतुर व्यापारियों को भी व्यापार-रुख समझने में कठिनता पड़ेगी। विदेशों के साथ व्यापार का विशेष विकास नहीं होगा। नये उद्योग कार्यों में परदेशी विशेष लाभ उठावेंगे। गृह उद्योग दस्तकारी में साधारण उन्नति होवे। चैत्र शुक्ल से रुई में मंदी रहे। चैत्र के अनन्तर वस्त्र, तांबा, रेशमी में मन्दा, और रसकस, मिर्च, लशुन, तम्बाखू, मूंगफली में तेजी रहे। वैशाख में घृत तेज रहे। वैशाख शुक्ल के प्रारम्भ में तिल, तेल, रुई और पीली, लाल वस्तु तथा सुगन्धित द्रव्य संग्रह से दो मास के अन्दर लाभ हो। चावल, मकई, ज्वार के व्यापारी भी इस वर्ष लाभ में रहेंगे। मार्गशीर्ष कृष्ण ११ बाद भी अन्न संग्रह से लाभ होवे। वैशाख कृ. ११ बाद नागर पान,

आवेगी, उतनी तेजी फिर देर तक नहीं मिलेगी। आगे मन्द का धौर २ ध्यान रख कर ... प्रकारेण सफलता पूर्वक निभा देगी। भारत भूमि पर ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

... भी अन्न संग्रह से लाभ होवे। वैशाख कृ. ११ बाद नागर पान,

आवेगी, उतनी तेजी फिर देर तक नहीं मिलेगी। आगे मन्दे का धीरे २ ध्यान रख कर काम करें। कार्तिक में अन्न संग्रह से आगे लाभ हो। गेहूँ, चावल, गुड़, उड़द तेज हों। धनु संक्रान्ति से क्रमशः आगे की संक्रान्तियों में शनि रवि भौम बार पड़े हैं, जो खर्परयोग के कारण प्रजा को किसी प्रकार का भय, अन्न तेज, कष्ट, धन हानि आदि कारक हैं। माघ कृ. ३ से आगे व्यापारियों को आशा से बहुत कम लाभ हो। ग्रीष्म ऋतु में गुड़, खांड, शक्कर हींग, तेज रहें। फाल्गुन में शुक्रास्त, अन्न तथा पशुओं का चारा घास तेज करता है। भाद्रपद कृष्ण १३ से पहिले जौ, मूंगी, अन्न तथा कपड़े का संग्रह करे तो सातवें मास में उत्तम लाभ हो। ऐसे ही मार्गशीर्ष के पहिले तिल खरीदे तो ३ मास के अन्दर लाभ मिले। इस वर्ष शनि राहु वृश्चिक में एकत्र फाल्गुन शुक्ल ५ तक रहेंगे, जो अन्न में महर्घता और राजाओं (शासकों) को किसी न किसी प्रकार से भय चिन्ता युक्त रक्खेंगे।

शनि राहू यदैकत्र भवेतां सहितौ यदा। सर्व धान्य महर्घत्वं राजानो भय विह्वला: ॥१॥

बैशाख शु. १२ से, भाद्र कृ. ७ से, आश्विन कृ. १० से, माघ कृष्ण १ से सुवर्ण में तेजी का और भाद्र शु. ६ से सुवर्ण में कुछ दिन मन्दी का ध्यान रख काम करें। श्रावण कृ. ६ से, भाद्र शु. ७ से, माघ कृ. ३ से चांदी में तेजी का और मार्गशीर्ष १ से चान्दी में कुछ दिन मंदी का ध्यान रख काम करें।

भारत की वर्षा वायु आदि पर ग्रहों का प्रभाव

इस वर्ष यद्यपि कहीं २ ज्येष्ठ शुदी से ही कुछ वर्षा होने के आसार हैं, फिर भी सार्वत्रिक उत्तम वृष्टि आषाढ़ शुदी चतुर्थी के बाद श्रावण कृष्ण १२ तक ही होगी, अनन्तर खण्डवृष्टि होती रहेगी। श्रावण शु० ११ से १५ के अन्दर सर्वत्र उत्तम वृष्टि होगी। पहिले गुजरात में वर्षा की भारी कमी का अनुभव हो। भारत के पूर्व पश्चिम में वर्षा की खेंच रह कर पीछे वर्षा होगी। भाद्रपद शुदी में अच्छी वर्षा होकर कृषकों में भविष्य की आशा का संचार होगा। पौष शुदी के पश्चात् में माघ तथा फाल्गुन कृष्ण में वर्षा अच्छी हो। अपने २ प्रान्त की ठीक वर्षा का भविष्य जानने के लिए वर्षाविज्ञानसारणी का आश्रय लेना चाहिए। इस वर्ष हमने साप्ताहिक स्पष्ट ग्रहों के नीचे वर्षाज्ञानार्थ ग्रहों की अमृतादि नाड़ियें भी लिख दी हैं, ताकि वर्षा ज्ञान ठीक २ हो सके। इस वर्ष खेती बाड़ी में उन्नति के पूर्ण सफल प्रयत्न होंगे।

ग्रहयोग कहीं २ पर खड़ी फसल को अवर्षण वा अतिवर्षण से हानि पहुंचावेंगे। फिर भी वर्षराट् गुरु होने के कारण खाद्य पदार्थों की तरफ से देश स्वावलम्बी रहेगा। सिन्ध, गुजरात में श्रावण की फसल को विशेष हानि पहुँचेगी। मेषार्क प्रवेश में वृष लग्न में वर्ष का प्रवेश होगा, जिसका फल पश्चिम में अकाल, पूर्व में राजविग्रह, उत्तर में धान्य की प्राप्ति, दक्षिण में सुभिक्ष हो। वृषेऽर्कपश्चिमेकाल: पूर्वस्यां राजविग्रह:।

उदग्धान्यर्द्धिनिष्पत्ति र्दक्षिणस्यां सुकालक: ॥

भारत सरकार—इस वर्ष भारत सरकार की परदेश सम्बन्धी नीति और संरक्षण व्यवस्था ठीक रहेगी। साम्यवाद की बाढ़ रुके। और भारतीय जनसंघ का उत्कर्ष बढ़े। देश के आन्तरिक क्षोभ शान्त्यर्थ किसी स्थान में सरकार को बल का प्रयोग करना पड़ेगा। फिर भी कांग्रेस सरकार का प्रभुत्व व प्रेम जनता के हृदय में बना रहेगा। आगामी चुनाव में कांग्रेस की प्रधान विजय के साथ ही और पार्टियों के नेता भी गत चुनाव से ज्यादा सफल रहेंगे। देश की आन्तरिक और बाह्य व्यवस्था ठीक चलेगी। सरकार अपने कार्यों को ... के कमी होते हुए भी धन कन प्रकारेण सफलता पूर्वक निभा देगी। भारत भूमि पर देव गुरु बृहस्पति का आधिपत्य है, इस वर्ष प्रधान भी स्वयं बृहस्पति हुए हैं। बृहस्पति का असल ध्येय शान्ति है, सो इस वर्ष भी शान्ति के प्रयत्न हों। विश्व युद्ध निवृत्यर्थ धार्मिक व राजनैतिक दोनों प्रकार से सतत प्रयत्न हों। गत वर्ष हिमालय की कठिन पवित्रतम तपोभूमि बदरीनाथ के समीप अनेकों दाक्षिणात्यादि कर्मठ विद्वानों द्वारा विश्व शान्ति का सफल अनुष्ठान हुआ था। निश्चित संभव है जिसके अदृष्टफल से ही दैवी बल से प्रेरित व सम्पन्न होकर श्री नेहरू जी ने विश्वशान्त्यर्थ भ्रमण किया और कुछ शान्ति की झलक भी दिखाई दी, जिसका सेहरा अपने भारतमार्तण्ड श्री नेहरू जी को मिल रहा है, जो उपयुक्त ही है।

सं० २०१४ के कुयोग और सं० २०१८ माघ कृष्ण १४ रविवार के अष्टग्रही महाकुयोग (कालकूट) आदि के कुयोगों को देखते हुए ऐसे विश्वशान्ति यज्ञों का आयोजन भारतसरकार तथा भारतीय धनाढ्यों को धन का मोह छोड़ कर और भी विशेषता से करना चाहिए। जिस से विश्व में शान्ति हो, अन्यथा धन का मोह करने तथा पाश्चात्यशिक्षा द्वारा प्राप्त नास्तिकता से यज्ञों को कुछ न समझते हुए नाक भौं सिकोड़ने से भयानक असह्य कष्ट में ही पड़ोगे, समय पर फिर कुछ न बनेगा।

भारतेतर अन्य यूरोपादि देशवासी यद्यपि आधुनिक विज्ञान विद्या में पूर्ण निपुण हैं, परन्तु उनमें कोई भी व्यक्ति शान्ति यज्ञ के रहस्य एवं उस यज्ञ की वैज्ञानिक आर्ष विधि को नहीं जानते।

सहयज्ञा: प्रजा: सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापति:।
अनेन प्रसविष्यध्व मेष वोऽस्त्विष्ट कामधुक् ॥१॥

पूर्वकाल में प्रजापति ने यज्ञ के साथ २ प्रजोत्पत्ति करके कहा कि हे मनुष्यो! इस यज्ञ रूपी वैदिककर्म को करते हुए तुम बढ़ते रहो, यह क्रिया तुम्हारे अभीष्टसिद्धि की देने वाली है।

ये तु न प्रतिकुर्वन्ति क्रिया मश्रद्धयान्विता:।
नास्तिक्यादथवा कोपाद्विनश्यन्ति च तेऽचिरात् ॥२॥

जो लोग नास्तिकता से क्रोध अभिमान लोभ आदि के कारण शास्त्र वचनों पर श्रद्धा न करके विधिपूर्वक शान्ति नहीं करते, वे लोग शीघ्र नाश को प्राप्त होते हैं। श्रद्धाहीन देवपूजन तथा शास्त्र विधिहीन वृथा घृत फूंकने से यज्ञविधान कभी सफल नहीं होते। यज्ञ में सदैव आर्षकर्म विधि प्रधान रहती है। श्रीकृष्ण भगवान् ने गीता में कहा है —

य: शास्त्र विधि मुत्सृज्य वर्तते कामकारत:
न स सिद्धि मवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ॥३॥

अर्थात् जो पुरुष शास्त्रविधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है वह न इच्छानुरूप सिद्धि को न सुख को और न परमगति को पाता है।

काल कूट अष्टग्रही आदि के कुयोग अल्पशान्ति करने से शान्त नहीं होते हैं, इसलिये राजा प्रजा दोनों मिल कर शान्ति यज्ञ करें। गत जर्मन महायुद्ध के समय श्री करपात्री जी के समक्ष ब्रिटिश विजयार्थ युद्ध शान्ति यज्ञ देहली में हुआ था। उस यज्ञ की जिस दिन पूर्णाहुति हुई थी, उसी दिन से जर्मनी बराबर परास्त होता चला गया था। यह विश्व शान्तियज्ञ उस यज्ञ से भी बड़ा होगा। इस यज्ञ के ज्ञाता कर्मठ विद्वान् भारत में अभी तक कहीं २ जीवित हैं।

विधि पूर्वक यज्ञ विधान से उपरोक्त कुयोगों का कुफल विश्व से विशेष कर भारत से टल जायेगा। भारत का बालबांका भी न होने पावेगा। विशेष सूक्ष्म ग्रहगणित विचार से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मालुम हुआ है, कि विक्रमी सं० २०१४ की अपेक्षा सं० २०१८ के माघ कृ० १४ रविवार को होने वाला अष्टग्रही कालकूट योग संसार के लिये विशेष अशुभ है। इस के आगे चिरकाल तक देखने से भविष्य में कोई ऐसा कुयोग नहीं है। इस योग के बाद विश्व भर में शान्ति ही दृष्टिगोचर होगी। कोई देश किसी का शत्रु न रहेगा। भारत भी पुनः अखण्ड हो जायेगा। बन्धुत्व की भावना सर्वत्र जागृत होगी। आगे सर्वज्ञ प्रभु हैं।

विश्वमहोदयो, ये भविष्य को देख सकने वाली दृष्टि तो इस कलियुग में कठिन ही है फिर भी ज्योतिषशास्त्रदृष्ट्या और श्रीप्रभुकृपावशात् जो मुझे विश्व का शुभाशुभ फल दीख पड़ा वह मैंने अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार लिख दिया है आगे कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थ श्रीप्रभु ही हैं। उनकी प्रबल माया के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति क्या भविष्य लिख सकते हैं। तत्त्वञ्चात्मेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन।

काले वर्षतु पर्ज्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥
सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात्॥

कुराली
२४—६—५५

शुभेच्छु :—
बघाटनरेशाश्रितो मुकुन्दवल्लभः

उज्जैन कुम्भ निर्णयः

उज्जैन का कुम्भ पर्व प्रत्येक बारहवें वर्ष वैशाख की पूर्णमासी में मेष के सूर्य औरसिंह के गुरु होने पर माना जाता है। तद्यथा वृद्धोक्ति :—

मेषसिंहगयो रर्कजीवयोः क्रमश स्तिथौ। पूर्णिमायां भवेत्कुम्भ उज्जयिन्यां सुखप्रदः॥१॥

सो इस वर्ष वैशाख की पूर्णमासी को सिंह का गुरु तो है, परन्तु मेष का सूर्य न होने से यह कुम्भपर्व नहीं होगा। आगामी सं० २०१४ में गुरु की वेध सिद्ध तथा सूक्ष्मगणितानुसार यह पर्व उज्जैन में होगा। साथ ही अर्ध कुम्भी हरिद्वार भी सं० २०१४ में होगी, सदा चार भी है कि तीर्थयात्री साधु महात्मादि लोग हरिद्वार में अर्धकुम्भ का स्नान करके उसी मास उज्जैन के कुम्भपर्व का स्नान करते हैं।

नोट—सिंह के गुरु की सूक्ष्म स्पष्ट राशि भोगकाल एवं पञ्चाङ्गों की गणित की शुद्धि जानने के लिये जयपुर के ज्योतिष यन्त्रालय ने गत १ फरवरी सन् १९५५ को सायं काल ७ बज कर ३६ मिट ३८ सैकिंड पर राशिवलययन्त्र में श्री पं० केदारनाथ जी तथा श्री पं० विन्ध्याचलादि बड़े २ ज्योतिषाचार्य विद्वान् राजपण्डितों के समक्ष गुरुग्रह को नलिका द्वारा देखा गया तो ग्रहलाघवीय गणितागत गुरु स्पष्ट में ४४ कला की अशुद्धि पाई गई। एतदर्थ मकरन्दीय ग्रहलाघवीय स्थूल गणित से बने पञ्चाङ्गों पर धर्मकार्य करने तथा पर्वादि मनाने से शास्त्रोक्त फल की प्राप्ति कदापि नहीं हो सकती, यही शास्त्राज्ञा है।

गोदावरी नासिक कुम्भपर्व

सिंह के गुरु और सिंह के सूर्य में यह पर्व माना जाता है, जो इस वर्ष सं० २०१३ में श्रावण शु १० गुरुवार से प्रारम्भ होकर १ मास रहेगा। इस कुम्भ का महापर्व दिन भाद्रपद कृ. ३० भौमवार (ता० ४ सितम्बर १९५६) है। इसी दिन भगवान् श्रीरामचन्द्र जी ने त्र्यम्बक क्षेत्र में पितृश्राद्ध किया था। नासिक क्षेत्र के रामकुण्ड में भी स्नानोत्तर तीर्थश्राद्ध का माहात्म्य है।

शनैश्चर की लघुकल्याणी बृहत्कल्याणी (ढैया साढे साती) का विचार

जन्म का स्पष्ट चन्द्र जिस राशि के जितने अंश का होता है, उससे तीस ३० अंश पहिले शनैश्चर आने पर सूक्ष्मरीत्या साढेसाती व ढैया प्रारम्भ होती है। इतने ही अंश बाद में समाप्त होती है। केवल जन्मराशि से ढया व साढेसाती का विचार स्थूलरूप से है।

सं० २०१३ में लघुकल्याणी (ढैया) व बृहत्कल्याणी (साढेसाती) का विचार नीचे दिया जाता है।

इस वर्ष सिंह राशि वालों को ढैया चान्दी के पावे, मेष राशि वालों को लोहे के पावे रहेगा। तुला राशि वालों को पैरों पर, वृश्चिक राशि वालों को हृदय पर, धनु राशि वालों को मस्तक पर साढसती होगी। जो तुलाराशि वालों को लोहे के, वृश्चिक राशि वालों को सुवर्ण के, धनुः राशि वालों को तांबे के पावे रहेगी।

जिन्हें शनैश्चर नेष्ट होवे, उन्हें शनैश्चर प्रीत्यर्थ तैल, सप्तधान्य का दान तथा महावीर जी पर शनिवार को तैल, सिन्दूर चढ़ावें तो शनिकृत पीड़ा दूर हो॥

तेजीमंदीज्ञानार्थ वस्तुराशिसारिणी

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
साना, मसूर कंबल, पस मीनाराज, गेहूँ, यव	वस्त्र पुष्प सरसों, गेहूँ, वय, चावल महिष, बैल	बाजरी, रुई, कपास, कमल कंद, गुवार, जुवार, मक्का	कोद्र, केला, दूर्वा, जायफल तमालपत्र, दालचीनी	शाली, षट्रस, मृगछाल, गुड़, खांड	जवासा, बटला, कुलथी, मूंग, सफेद गेहूं, अलसी	उड़द, लालगेहूँ नालि, सरसों हरड़े, मटर	गुड़खांड नागरपा, लोहमीढ़ा शर्करा	रस, घोडाह लवण, चित्र, वस्त्र, आयुध, मूल	कनीर, सकूट, मजीठ च. जमीकंद	रस, पोस्ता, रत्न, चित्र वि. वस्त्र.	सीप, मोती, हीरा, अतर

श्लोकः—षट् सप्तमगो हानि वृद्धि शुक्रः करोति शेषेषु। उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः॥१॥

उदाहरण—जिस वस्तु की तेजी व मन्दी देखनी हो, तो वस्तु की चक्र में शक्ति कौन है ऐसा पहले देखे फिर उस राशि से कौन ग्रह किस २ स्थान में हैं, ऐसा देखे। यदि वस्तु की राशि से गुरु ४।१०।२।११।७।९।५ राशि पर हो तो उस वस्तु की मंदी करे और यदि १।३।६।८।१२ स्थानों में गुरु होतो वस्तु की तेजी करता है। इसी प्रकार २।११।१०।५।८ में बुध हो तो मन्दी करे और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों में बुध होवे, तो तेजी करे। शुक्र ६।७ में सदा तेजी करे और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ में शुक्र सदा मन्दी करे। मं. श रा. के. सू. क्षीणचन्द्र ये ग्रह ३।६।१०।११ में मन्दी करे और १।२।४।५।७।८।९ स्थानों पर तेजी करे। ऐसे पूर्ण चन्द्रमा का फल बृहस्पति सदृश देखना। ऐसे नवम ग्रह से देख कर फल की दो पंक्ति स्थापित करनी। जिन ग्रहों में ज्यादा बल होवे, और तेजी, मंदी तर्फ अधिक ग्रह होवें, वही फल विशेष होता है। यह निःसन्देह है फिर ग्रहोंका उच्चमूल त्रिकोणी स्वगृहादि यथावत् बल को ... ... विशेष होगा वैसा उन चार का नहीं होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

… करनी। जिन ग्रहों में ज्यादा बल होवे, और तेजी, मंदी तक अधिक ग्रह होवें, वहां … विशेष होता है। … विशेष होगा वैसा उन चार का नहीं होगा।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्र्युत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।१२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२८	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२४	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५५	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।[illegible]	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५९	७।१९
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।[illegible]	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।२	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४२	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

१८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५६	७।१८
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४६	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४२	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना--मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्नसारणी देखने की रीति—

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेल्वे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं। जैसे रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४ एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारणी में उस दिन १५।४६ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४६ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरू हो गया—जिसका समाप्तिकाल १८।६ अर्थात् शाम के ६ बजकर ६ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की सन्धि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि—

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्नसारिणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवें, शेष घंटा मिनट बचेंगे। घंटा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार वह सम्पूर्ण लग्नमान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट जानें। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सेकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होगा। तुम्हें जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल में जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आ जावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा।

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुए के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घंटा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घंटा ३३ मिनट शेष बचे। १ घंटा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़ें तो ९३ मिनट हुए। अर्थात मेष लग्न का कुल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सैकेण्ड एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारम्भ काल का ज्ञान करना है। यहां मेष से लकर कर्क तक अर्थात ४ नवांश गत हुए, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सैकेण्ड) को ४ से गुणा किया तो ४१ मिनट २० सैकेण्ड हुआ। इस ४१ मिनट २० सैकेण्ड को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घंटा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेण्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भकाल हुआ। इसी प्रारम्भकाल ६ घंटा ४२ मिनट २० सैकेण्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सैकेण्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घंटा ५२ मिनट ४० सैकेण्ड हुआ। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विवाह, यज्ञोपवीत, गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्तों में उपयुक्त सूक्ष्म विधि से सिद्ध किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है। अथ चन्द्रोदयास्तज्ञानम्-तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणभूनं च युतं भुजाभ्याम्॥ कृष्णे सिते यास्तिथिमस्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उनमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अङ्क संख्या में से दो घटी निकाल देना, तदनन्तर उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जानें।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरांत दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लालमलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान और मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आईं, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८।३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४।३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भमि पर जन्मा, घर के दक्षिणभाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।४८।६२ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व में शिर, मलीन-सा लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

खट्टा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८ इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन से बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैर्ऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला--माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्म समय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामुली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया दीर्घ केश, घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु:—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८। ३१।३८।४२।६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २ स्त्री पीछे से आईं। उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८। ३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, ...

जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक जन्म लग्न जानना, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे, २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कही शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैर्ऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचार :—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिए। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार॥ केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च व मूल त्रिकोण राशिका) केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैर्ऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो०-तनुस्थान राशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनिदशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीप तैल सों युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहै: स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूति का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्नसे चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इसी प्रकार जो ग्रहलग्नमें हों,और उसके अंश लग्नसे अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ना अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हितकारक है, इन वर्षों से बच तो ९० वर्ष जावे ।
मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या म...

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हों तो द्विगुण करना, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग्य है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गत ग्रहलग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्य्यन्त होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्य्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य, ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पाया फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाहु॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।

बालारिष्ट

दो०-द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशीजो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन॥
बसैं चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दश वासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव॥

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आइ बसे त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह रोग है भाषत बुध समुदाय॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान॥

मूकयोगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त गुरु त्रिक हि मूक कहि सोय॥ शुक्र त्रिके गुरुसिंह अज, दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश॥

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युत लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अङ्ग कलेश॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख बिस्वाबीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि रुजताय॥

बन्धनयोगः—क्रूर रहै धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर करि, निबसे कारागार॥

सुखदयोगाः—अङ्गधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह में परे तो जानो सुख संग॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो कहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय॥

क्लीव (नपुंसक) योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसे विलब भानु॥ २३

कुष्ठयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह वरणत गुणी सचेतु॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अति रुष्ट॥ जलजगंडयुत चन्द जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो, बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परैं ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय॥

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धन के उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान होकर द्विस्वभाव राशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हों वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐ मुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर माचिर स्वाहा॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसा का यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्टचा भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दाभद्रा जया रिक्ता पूर्णा च तिथयः क्रमात् ॥

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह २ घड़ियाँ नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती हैं । यदि अमावस्या का स्पष्ट घटयादिमान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जाने ।

तीस का यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	शूरअङ्गपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म ९	दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान	सुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थ ग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	समुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विमुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिणी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	कीर्तिनी	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाशयोगः—(१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मङ्गल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिये ।

पितृनाशयोगाः—(१) सूर्य मङ्गल दशमें वा नवमें गये हों (२)दशमेश रवि मङ्गल से युक्त हो (३)शत्रु राशि का मङ्गल १०वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ।

भ्रातृनाशयोगाः-भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय ।
जाके ऐसो योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

संतानसुखनाशयोगः

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव । पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योगते सदापुत्र की हान ।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पाँचवें गुरु बसै नीचजात मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होइ कुछ दिवस में यदपि ब्रह्माको बाल ॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज ॥

जारजयोगाः—भानु चन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है पर पुरुषको भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो जार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्—

जिस बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों वा सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । इसी प्रकार यदि चन्द्र के साथ २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो माता को कष्ट जानना ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

... दानकर व्याहृति मन्त्रा स घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा बन्धे तो कार्तिक शांति

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामि दृष्टि नहिं होय। सो कन्या कुब गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय ॥ जाके कुज दशमें बस ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु ॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवरकहै कुज नीच ॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर ॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहें, पति को तजे तमारि ॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग। भौम आठवें भवन में सो पति करिहैं भंग ॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन ॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पापग्रहों के बीच में लग्न होई वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द ॥ सप्तम मृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि ॥

वैधव्य विषकन्या योगाः—चौ० रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय ॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार ॥ साते तिथि का करो विचार ॥२॥ होय शतभिषामंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार ॥३॥ इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय ॥४॥ जन्म लग्न द्वै शुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय ॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो ॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय ॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे ॥१०॥ दो०—धर्म सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान ॥११॥

वैधव्य विषकन्या भंग योगाः—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय ॥

काकवन्ध्यादि योगाः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या ॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई—केंद्रधाम नभगा शुभ होई। नरतनु पाय कलत्र समोई ॥ रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइ है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाई। लाभ भवन गुरु आवे धाई ॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी। जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होई। शशि दृग केन्द्रभवन में होई। ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी ॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइ है तौन ॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः—पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को लड़का पिता को भय धन हानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता तोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चाँदी सोना ताँबा) दान करे।

बालककी दन्तोत्पत्ति फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातुल पक्ष को भय, हो माया शांति करे। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख, ८वे में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११ वें में सुख, १२वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्—

शीर्ष	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जान्वोः	पादे	स्थान,
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशुना	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयाव.	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्—

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ चं०)
फलम्	(१।२।३ चं०) श्वशुरहानि	(२।३।४ चं०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः ॥

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की आदि की दो दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गंडान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गन्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			अश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२। ५। ८। ११	३। ६। ९। १२	१। ४। ७। १०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुशलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवते। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ॥ ब्रह्मदंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम् ॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। यथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥
रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेनहि ॥
बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ॥
विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥

अथाभुक्तमूल विचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथ नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालकका जन्म काल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	म० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	फल

मघा पादफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा ॥

रेवती पादफलम् - रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुलहानि	कुल नष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जा[illegible] अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्म फलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दि[illegible] स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि; वैधृति में पितृक[illegible] वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति[illegible] करने से कल्याण हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

यमघण्टके ।। ब्रह्मदंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशु । ... कुर्वीत | वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहीन हो,जपहोमशान्ति-
शान्तिकम् ।।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बालकष्टावली

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ।।					स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है ?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थं द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय		
प्रथम दिन मास वर्ष में योगनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष ।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५, ५दीपक ५आटे के सतिये,कपूर लोबान	श्वेतभात, ५पूर्णपोली(सुहाली) १ पहर दिनचढ़े पूर्वदिशा में चौरस्ते पर रखना ।	ॐब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै-श्रवणस्तथा । रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।।	राई खस आक के फल बिल्ली और मनुष्य के बाल
द्वितीय दिन मास वर्ष में सनन्दना	ज्वर, हाथपैर अकड़ना,संकोच, दांतचबाना, नेत्रखुले, नेत्ररोग, भय, कृशता ।	एक सेर चावल का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावल के आटेके सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े,मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिमदिशामेंचौरस्तेपर रखना	ॐनमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं हू हू दुष्टा ग्रहां गच्छन्त्वत स्थानाद्रुद्राज्ञायां स्वाहा सुनन्दनाविधानोक्त	निम्बपत्र गोघृत
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हडफूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा ।	एक सेर चावल का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत-ध्वजादीपक१०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एकसेर लालभात,आधेसेर पूर्णपोली (सुहाली)पश्चिमदिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन गो शृंग सांप की कांचली
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता ।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५,दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प ।	भात १सेर आटे केपूड़े आधसेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना ।		नीम के पत्ते, पुरुष
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज ।	एक सेर चावल का आटा	श्वेतचंदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशामें वृक्ष के नीचे रखना ।	ॐभगवती ह्रींह्रींहू हू मुंच रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठ चामुण्डे सर्वारिचण्डिके ठःठः स्वाहा योगिनीविधानोक्त	और बिल्ली के बाल, गोघृत ।
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हडफूटन, हंसना कभी२ रोना, मोह, मूर्च्छा ।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचंदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५ ।	भात, ५मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां,१ पहरदिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना ।		कूट गुग्गुल राई
सप्तम दिद मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन ।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ।	भात,७पूड़ियां,सायंकाल पश्चिम में चौरस्तेपरमौनहोकररखना।	विडालिकाविधानोक्त	हाथीदांत, घृत ।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ।	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, सन्ध्या में चौरस्ते पर रखना ।	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा ।	एक सेर गेहूं का का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५ ।	भात,मत्स्य,मांस,पापड़ी,सुहाली, उत्तरमें प्रातःचौरस्तेपर रखना ।	ॐनमो भगवते बासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलि आदायहनहनहुंफट् स्वाहा	गोशृंग, लसुन,
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हडफूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास ।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक, २५ सतिये ।	गुड़के घी भुनेचावल, गौघृत,सायंकालदक्षि. मेंचौरस्ते मेंरखना	ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा ।	सांप की कांचली
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता ।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेतभात,७पूड़े,सुहाली७,सायं० प्रातःदक्षिणमेंचौरस्तेपर रखना।	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्राहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।	निम्बपत्र मनुष्य और बिल्ली के
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप ।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली, पूड़े७ पूड़ियां ७ मत्स्य मांस, पापड़ी,सायंकाल दक्षिण में चौरस्ते पर रखना ।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहन शोपय२ मर्दय२ शोपय२ हुं३ हन २ दुष्टान् हं हू फट् स्वाहा	बाल, राई, गोघृत ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तदनन्तर शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			अश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पादे	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि. म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२ । ५ । ८ । ११	३ । ६। ९ । १२	१ । ४ । ७ । १०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुशलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवते। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके ॥ ब्रह्मदंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम् ॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। यथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेनहि ॥ बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम् ॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः ॥

अथाभुक्तमूल विचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांति कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथ नाशमाप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालकका जन्म काल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	म० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	फल

मघा पादफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होना है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा ॥

रेवती पादफलम् - रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुलहानि	कुल नष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जा[illegible] अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्म फलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दि[illegible] स्त्री,पशु,गौ,भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कु[illegible] अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली — जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल — व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि; वैधृति में पितृक[illegible] वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो,जपहोमशान्ति[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

यमघण्टके ॥ ब्रह्मदंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने [illegible] ... वा दारिद्र ... सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति ... शान्तिकम् ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बालकष्टावली

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ॥				स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है ?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलिविधान व समय		
प्रथम दिन मास वर्ष में योगनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष ।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प ५ रंग की झंडी ५, ५दीपक ५आटे के सतिये, कपूर लोबान	श्वेतभात, ५पूर्णपोली (सुहाली) १ पहर दिनचढ़े पूर्वदिशा में चौरस्ते पर रखना ।	ॐब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वैश्रवणस्तथा । रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई खस आक के फल बिल्ली और मनुष्य के बाल
द्वितीय दिन मास वर्ष में सनन्दना	ज्वर, हाथपैर अकड़ना, संकोच, दांतचबाना, नेत्रखुले, नेत्ररोग, भय, कृशता ।	एक सेर चावल का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावल के आटेके सतिये १०	भात एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिमदिशामेंचौरस्तेपर रखना	ॐनमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं दुष्टा ग्रहां गच्छन्त्वत स्थानाद्रुद्राज्ञायां स्वाहा	निम्बपत्र गोघृत
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हृडफूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा ।	एक सेर चावल का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेतध्वजादीपक१०, गेहूँ के आटे के सतिये १० ।	एकसेर लालभात, आधेसेर पूर्णपोली (सुहाली) पश्चिमदिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन गोशृंग सांप की कांचली
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता ।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प ।	भात १सेर आटे के पूड़े आधसेर, पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत ।
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज ।	एक सेर चावल का आटा	श्वेतचंदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा५, गेहूँ के आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशामें वृक्ष के नीचे रखना ।	ॐभगवती ह्रींह्रींहूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठ चामुण्डे सर्वारिचण्डिके ठःठः स्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हृडफूटन, हंसना कभी२ रोना, मोह, मूर्च्छा ।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचंदन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५ ।	भात, ५मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, १ पहरदिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना ।	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल राई
सप्तम दिद मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन ।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ।	भात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरस्तेपरमौनहोकररखना ।	विडालिकाविधानोक्त	हाथीदांत, घृत ।
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप ।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ।	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, सन्ध्या में चौरस्ते पर रखना ।	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा ।	एक सेर गेहूँ का का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५ ।	भात, मत्स्य, मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तरमें प्रातःचौरस्तेपर रखना ।	ॐनमो भगवते बासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादायहनहनहुंफट् स्वाहा	गोशृंग, लसुन,
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हृडफूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास ।	एक सेर गेहूँ का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक, २५ सतिये ।	गुड़के घी भुनेचावल, गौघृत, सायंकालदक्षि. मेंचौरस्ते मेंरखना	ॐनमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा ।	सांप की कांचली
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हृडफूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता ।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७पूड़े, सुहाली७, सायं व प्रातःदक्षिणमेंचौरस्तेपर रखना ।	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्राहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।	निम्बपत्र मनुष्य और बिल्ली के
द्वादश दिन मास वर्ष में अदभुता	ज्वर, दांतचबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप ।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली, पूड़े७ पूड़ियां ७ मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरस्ते पर रखना ।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहन शोषय२ मर्दय२ शोषय२ हुं३ हन २ दुष्टानां हं हूं फट् स्वाहा	बाल, राई, गोघृत ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्रकष्टावलीचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्विष्णुपूजा कर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ।। ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः ।
वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैन वेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्या–(दतुलं धनञ्च) ।।

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जपसंख्या
अश्विनी (दस्त्रौ)	६	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भंग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प घृत-गुग्गुलधूप घृतदीप क्षीर मोदक गुड नैवेद्य	गुडौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ।।१।।	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दिरोग ।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप गुडोदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृत शर्करा छायापा ब्राह्मणभोजन	ॐ यमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देव-स्त्वासवितामध्वानवतु । पृथिव्याः संस्पृश-स्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोसि ॐ यमाय नमः ।	१० हजार
कृत्तिका । (अग्निः)	६	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपतिलमाषान्नबडावीकानैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण योदान ब्राह्मणभोजन	ॐ अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतांसिजिन्वति । ॐ अग्नये नमः ।। ३ ।।	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	६	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीडाकुक्षि शूलशिरःपीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णागोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवे-नआवः । सुबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च-योनिमसतश्च विव्वः । ॐ ब्रह्मणे नमः ।।४।।	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	६	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	अर्द्ध गात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधितण्डुल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ इमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमह-तेज्यैष्ठचायमहतेजानराज्बायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यविषएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा । ॐ चंद्रमसे नमः ।।	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभकृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ।। ॐ रुद्राय नमः ।। ।।६।।	१ हजार
पुनर्बसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क--मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्ध धूप घृतदीप घृताक्त पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः । विश्वदेवा अदितिः पंचजना अदिति-र्जातमदितिजनित्वम् । ॐ अदितये नमः ।।७।।	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७.	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल कष्ट ।	महाकुंकुमगन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपघृतपायसशर्करा नैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गो पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुम-ज्जनेषु । यद्दीदयच्छ वस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं बेहि चित्रम । ॐ बृहस्पतये नमः ।।८।।	१० हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु ये १०

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(गुरुः)					मूलम्	कष्ट।	धूपघृतदीपघृतपायसशर्करा नैवेद्य	मोदक	पायस	ब्राह्मणभोजन	द्रविणं धेहि चित्रम् । ॐ बृहस्पतये नमः ॥८॥ हजार
आश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । ॐ सर्प्पेभ्यो नमः॥ ९॥ १० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्र पीड़ा तथा शिर पीड़ा	श्वेतचन्दनगन्ध चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यःस्वधानमः ।प्रपितामहेभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽतीतृपन्न पितरः पितरः सुन्धध्वम् ॐ पितृभ्योनमः १० हजार
पू. भा. (भागः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि-मूलम्	ज्वर शिर पीडा गात्रव्याथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालती पुष्प घृत बिल्व धूप घृतदीप अपूपोदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु केगनीतिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदान भोजन	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाद दन्नः भगप्रणोजनगो गभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम ॥ ॐ भगायनमः ॥ ११ ॥ १० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल, शिर शूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐ देव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा । मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रम् ॐ अर्यम्णे नमः ॥ १२ ॥ १० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा ऊरु शूल सर्वांग-पीडा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्रा. भोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिवतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता ववि‌ह्रुतम् । वात जूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधाविराजति । ॐ सवित्रे नमः ५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव-मूलम्	विचित्रानेक-रोग, अतिकष्ट	केसर अगरगन्ध विचित्र वर्ण पुष्प घृत गुग्गुलधूप घृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुड़विचित्र वृ. ष. छा. पा. ब्रा. भो.	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रयमक्षागौर्नावयोदधुः ॥ ॐ विश्वकर्मणेनमः ॥ १४ ॥ १०० हजार
स्वाति (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति-मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगन्धदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐ वायोयेते सहस्रिणो रथासस्तेभिराग हि नियुत्वान् सोमपीतये ॥ ॐ वायवे नमः॥१५॥ १० हजार
विशाखा (इंद्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुञ्जा-मूलम्	कुक्षिशूल सर्वांग पीड़ा	चन्दनकेसरगंध कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहिव चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रक. वृ. छायापा.दा. व.भो.	ॐ इंद्राग्नी आगतं सुतं गीभिर्नमो वरेण्यम् । अस्यपातं धियाषिता ॥ ॐ इंद्राग्निभ्यां नमः १० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीड़ा	केसरगंध कमलपुष्प चंदन धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड़ यवाज्य	स्वर्णगोछांया पात्र दान ब्रा. भोजन	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महादेवायतदृतं सपर्यतं दूरदृशे देवजातायकेतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायशंसत । ॐ मित्राय नमः ॥ १७ ॥ १० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्र)	५९	९	६	४	अपामार्ग-मूलम्	व्याकुलता पित्त रोगकम्पन	श्वेतचंदन गंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन सुपुष्प	तण्डुलतिल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्रा. भोजन	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवंशूरमिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॐशक्रायनमः ॥१८॥ १० हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

मूलम् (राक्षस)	०	६	१५	६	मन्दरा-मूलम्	उदरतथामुख रोगसन्नि-मय	[illegible] कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न-नैवेद्य	[illegible] माषान्न	[illegible] कन्दमूल	[illegible] पात्र दा.कु.पू.वि	[illegible] पुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेयोनाव भारुखा । तांविश्वेदेवऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमञ्चतु । ॐनिर्ऋतय नमः ।१६।	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पासि मूलम्	शिरपीड़ाकम्पन महाकष्ट	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्ठान्न	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव. ति.त.ज. कु.गो.दा. ब्रा.भो.	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः । अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्न्यं सुव ॥ ॐ अद्भ्योनमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	३०	२४	२६	१६	कार्पासि-मूलम्	ऊरशूल कटि-पीड़ा प्रलाप	श्वेतचंदनगन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मण भोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतम हवंयम अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठाये अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिषिमादयध्वम् । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	६	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वांग पीड़ा त्रि. भय	श्वेतचन्दनगन्ध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषड्रस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मण भोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्व ॐ विष्णवे नमः ॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज-मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचन्दनगन्ध कमलपुष्पगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व-गो.दा. ब्रा. भो.	ॐ वसोःपवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सवितापुनातु वसोःपवित्रणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः ॥ वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल मूलम्	सन्निपातमय वातज्वर कष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचं धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत. चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्र गोदान कु. पू. ब्रा. भो.	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसि वरुणस्यऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजैकपाः)	०	१२	२१	११	भृंगराज मूलम्	शरीरपीड़ार्ति व्याकुलतावमन	केसरचन्दनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौप. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायस नैवेद्य	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजतअन्नश्वेत छा. पात्र दान ब्रा. भोजन	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवीसमुद्रः । विश्वेदेवाः ऋतावधीहुवानः स्तुतामंत्रा कविशस्ताअवन्तु । ॐ अजैकपदे नमः	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्य)	१०	२	६	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामलारोग	चन्दनकर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजत तिल कृष्णवस्त्र दान ब्रा. भोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिंसीः । निवर्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननायसयस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय । ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥ २६ ॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	६	२०	अश्वत्थ-मूलम्	चित्तभ्रम उरु शू. ज्वर वा.पि.	रक्तचन्दनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्रपंत्तल पा.वृ.छा.दा.ब्रा.भो	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः	५ हजार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा वा ज्येष्ठा व मृग. या जया (३।८।१३) व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता (४।६।१४) आर्द्रा व धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त वा पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।६।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा. आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये.धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु व मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि बिना मारकेश आयें मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है।

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निस्संदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रग के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाड़) होती है। काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयन्त्र

ॐ

प	व	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधें तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिखकर देना शुरू करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१ सौ लिखकर आट की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलिपीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्नबलिरक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलिसुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

वारकष्टावलीयन्त्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठें भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों में युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह गोचराद्यं दशाक्रमाद्यं ग्रहकलानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः														जपनीयमन्त्राः	समय-समिधः	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मुंगा	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	१९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचंदन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सु. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशबत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि— (यथा सिद्धौषाधै रोगा नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुस्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	बमनी	गजदन्त	गजदंत
खश	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तुरी	छागमूत्र
मुलेठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

शनिविचारः—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रदद्राति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिं बन्धुविरोध-देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ वृहत् कल्याणी (साढेसाती) लम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म(१)हृदये पादौ द्वितीये(२)शनिः नानाक्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् । हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा ॥ २ ॥

सप्तधान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक(गेहूँ) ३, छोले(चने) ४, जौ ५, धान्य(तण्डुल) ६, कंगनी ७

अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर, दोनों चन्दन ।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है। गुरु के बचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम, तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

॥ देशभेद से दशानिर्णयः॥

शुक्लगेऽर्के होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा । कृष्णे चन्द्रस्य होरायां
रात्रावष्टोत्तरी मता ॥ अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥१॥

अर्थः—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली, राजस्थान, मध्यभारत पंजाब, युक्तप्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है । किन्तु विशेष निर्णय में यथा समय के फल विकास कार्य के लिये शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म, सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी । कृष्ण पक्ष रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना अन्यथा योगिनी दशा से विचार करना ।

अथ कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्त्ता श्री देवी जी का स्मरण करके पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे । यदि १।५। पर धरे तो शीघ्र कार्य सिद्ध हो । ३।७ पर धरे तो सहारे से कार्य सिद्ध होवे । ४।६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे । २।८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है ।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	मुक्.ना.	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाशः	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनलाभ	धनना.
बुधः	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःख	धनलाभ	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैर	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैर	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वर	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्त्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं. मं. बृ.	सू. बु.	सू. चं. बृ.	सू. शु.	सू. मं. चं.	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	० ०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

शनि-यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यह यन्त्र शनिवार को भोजपत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

अथ ग्रहाणामेकर्क्षभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श	रा.के.	ग्रहाः
मा.१	दि. २।	मा.१॥	मा.१	मा.१२	मा. १	मा.३०	मा.१८	एकर्क्षभोगः
आदौ	आंत्ये	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फलसमयः
दि. ५	घ. ३	दि. ८	दि. ७	मा. १	दि. ७	मा. ६	मा. ६	गंतव्यराशे प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थधारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्परागं	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैडूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	लाजवर्त	लाजवर्त

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्पलाद उवाच—ॐनमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो !। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढ़ने से साढ़ेसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती॥ अथ शनैश्चर पाद विचार—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादीपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर, जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चंद्रमा(जन्मनि रसे रुद्र सुवर्णं हानि)१।६।११वें स्थान में होतो सुवर्ण पाद जानना फल हानि॥यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ(द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च)यदि ४।८।१२वें होतो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१०वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च)अथ सुवर्णपादफलं—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम्॥ अथ रजतपादफलं—व्यापारमुग्रं धन धान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे॥ २२॥ अथ ताम्रपादफलं—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे॥ ३॥ अथ लोहपादफलं—शरीर पीडा रुधिरप्रकोपं कलत्रपीडां पशु पुत्र पीडां। व्यापारनाशं नृपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम्॥ ४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ.चंद्र मोती
उ. बृ. पुखराज	मध्येसू. मणि	द.भौम मूंगा
वा. केतु वैडूर्य	प. शनि नीलम	नै.राहु गोमद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्रम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टिः
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनं
कृ. उफा. उषा	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	आश्ले. ज्ये. रे.	पुन. वि. पू. भा.	भ. पूफा पू. षा.	पुष्य. अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरीनक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरीवर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रु ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २	धनुः १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री. नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल.	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त,	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा राशि में श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होना, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे [1]नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्)

अथ नक्षत्रराशिज्ञानचक्रम्

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	बे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	प	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	बो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०	भो	जे	खू	गो	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृक्[2] अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते। चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाचक्रम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन । ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स्वरः स ए व हि ॥ ३ ॥ अथ जन्मराशिः—नामराश्यो प्रधानता निर्णीयते-विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णयः—वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वाँ भाग जोड़ के उसके चार भाग करो, उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो । उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक एक चरण मानो । श्रवण का १५वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १-१ चरण मानो । इसप्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थं यहां लिखा गया है ।(अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हो तो "राश्यभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नैपाली खपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मँगाइये । मूल्य १।) रु० ।—)

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्—अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये। क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना यथा—जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणा कर ६० का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है । इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है । उदाहरण—मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तकअर्थात्२७।३०से३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना

टिप्पणी—(१) जञोर्ज्ञः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः। कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः । एवं क्षालारामस्य कुम्भराशिः । (२) यथा--ऋषभदेवः ऋतकरामः लृतरामः । (३) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेय च निष्क्रमप्राशने क्रमात् । चूडोपनयनं वेद-व्रतानां च चतुष्टयम् । गोदान-मेखलोन्मोकौ विवाह. षोडशक्रिया ॥

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो ।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है ।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा—ल० तृ० शे । द × मं. = यो. शे. — यो. = शे) शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृकष्ट होता है ।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है ।

(४) लग्नेश, तृतीयेश,दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्कोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये ।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चंद्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना ।

(२) सुखेश, चंद्रमा या इसके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिए विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना—(१) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्री सुख होने का समय जानना—(१) जन्म लग्नेश सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना—(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पाराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्टकाल शुद्ध करना—जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्धि आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष फल रहें उनको दुगुने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशि अंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।६ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

भावीविचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों में वर्षा होवे। अर्थात् मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र वर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढा से पुनर्वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा., उ. भा. से हस्त., रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचारपूर्वक अपने पास नोट कर लें जिससे वर्षा का अन्दाज ध्यान में रहे॥

(२) माघशुक्लसप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले, आकाश बादलों से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघगर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूर होती है॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्र सम्बन्धी कोई वर्षानाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता है। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटें बिजली वा वर्षा हो और मृगशिरा में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटे न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा-बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी वर्षता है। अतः कृत्तिका के सूर्य में बूंदा-बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है।

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खेंच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु, बादल, बिजली वर्षा होना हितकर नहीं, स्वच्छ धूप पड़नी चाहिये, रोहिणी में बूंदाबांदी होने पर वर्षा की खींच जरूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का असर तो पहिले होता ही है॥

(९) मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और कम भी होती है॥

गये हुए धन के वापस न मिलने का योग

ऊ गुन पू गुन वि अज कृ म, आ भ अ मू गुनु साथ।
हरो धरो गाड़ो दिओ, धन फिर चढ़ह न हाथ॥
(संत शिरोमणि श्री तुलसीदासजी)

अर्थात् उ से आरम्भ होने वाले तीन नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद) पू से आरम्भ होने वाले तीन नक्षत्र (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद), वि (विशाखा), अज (रोहिणी), कृ (कृत्तिका), म (मघा); आ (आर्द्रा), भ (भरणी), अ (अश्लेषा), मू (मूल),—इन चौदह नक्षत्रों में चोरी गया हुआ, धरोहर रखा हुआ, गाड़ा हुआ अथवा किसी को दिया हुआ धन लौटकर वापस नहीं आता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां बर्षा न होवे । जैसे

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७५	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी-सी बर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायु से राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में बर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दशा में वर्षा की कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञानसारिणी

दिसंबर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जुलाई	जू.																	जु,													
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई	जु.																	अ.													
अगस्त	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	—	—	—
अगस्त	अ.																	सि.													
सितंबर	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितंबर	सि.																			अ.											
अक्टूबर	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रैल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	—
अक्टूबर	अ.																			न.											
नवम्बर	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति–दिसंबर, जनवरी, फरवरी व मार्च इन चारो मासों की तारीखों में जिन-जिन तारीखों में जहां वर्षा होती है उसके हिसाब सेहीवर्षा ऋतु में जुलाई,अगस्त,सितंबर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टिविज्ञान के सिद्धांत से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसंबर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मानलो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसंबर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां २ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मानलिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारणी यह बता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुईहो तो वहां ५सितंबर को वर्षा होगी। इसमें ज्योतिष शास्त्र के विज्ञान का नियम यह भी है कि जिन२ तारीखों में शतभिषा श्लेषा मघा स्वाती आर्द्रा नक्षत्र पड़ जायें और उन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जो तारीखें सारणी में आकर पड़ेंगी उन तारीखों में वर्षा अवश्य होगी और अधिक भी होगी, क्योंकि यह नक्षत्र बहुत जलवाले माने जाते हैं। इसी प्रकार शीतकाल में जिन २ ता. में पू. भा. उ. भा. पू. फा उ. फा. रोहिणी ये पांच नक्षत्र पड़ जावें और उन तारीखों में वर्षा हो जाय तो आगे वर्षाऋतु में जिन महीनों की जो तारीखें सारणी में पड़ेंगी उनमें कई दिनों की वर्षा की झड़ी लगेगी। वर्षाज्ञान के लिए शीतकाल में होनेवाली वर्षा को तारीखवार टाइम सहित नोट करके देखने से वर्षाऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है, विशेष सूक्ष्मता के लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों का सप्तनाड़ी चक्रादिसे विचार करना चाहिए।

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़ के अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब या बन वा शिव के मन्दिर में जाकर वहां मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यंत्र बना के उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजा करे। (मेघों के नाम और आवाहन मंत्र) ॐ ह्रीं मेघदूताय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीं मेवदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥ ॐ ह्रीं महानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥३॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥४॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाश-निवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामशृङ्गमेरुनिवासाय मेघ-राजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥६॥ ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणशृङ्गमेरुनिवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभि मात्र जल में खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मंत्र को १०००-१००० जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत-सी शहद तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मंत्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे॥ अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग। "ॐ नमो हनवन्तवीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सत खण्ड जावसी।" अति वर्षा के समय इस मंत्र का ७-७ बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूंक मारने से अतिवर्षा करते हुवे मेघ भी तत्काल फट जावे। इसी मंत्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा कर दे तो वर्षा बन्द हो जावे। मन्त्र को पहले दीपमाला में जप-कर सिद्ध करले॥

हर प्रकार की सुन्दर छपाई के लिए—

स्वतन्त्र भारत प्रेस,

४२३, गली जैनियां,

एस्प्लेनेड रोड, दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ केरलमते प्रश्न-विचारः

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् । सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौ तु देवतां वदेत् ॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वाक्ष	अष्टकवर्गाः
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	प्रश्ननिर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	प्रश्नः
कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी	प्रवासीप्रश्न
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	स्थिर	स्थिर	कष्ट	प्रवासीचरादि
समीप	समीप	दूर	पुनर्गतः	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासीगमागम
स्वल्प	सप्त	एकविंश	१ मास	सार्धमा	२ मास	६ मास	१ वर्ष	प्रश्नदिनानि
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्न
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव	धान्य ज्ञान
कौसुम्भ	श्वेत	लोहितांग	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि वर्ण
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्नः
सप्तदिन	दो मास	पक्ष	१ माश	पक्ष	१ मास	सप्तदिन	२ मास	कष्टदिन
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभः
पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिक्षुनष्टः
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धानक	नौकर	टहलन	नाई	चौर जाति
ऊखले	अग्निगृहे	अरण्ये	अन्तरिक्षे	भांडगते	काष्ठशिल	गृहे	भुविमध्ये	नष्टस्थानम्
भैरव	जगदंबा	सूर्य्य	हनुमत	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितृ	देव पूजा
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रुगमागमौ
जय	हानिः	जय	हानि	जय	हानिः	जय	हानिः	शत्रुजयहानि
न मोक्षं	मोक्षं	न मोक्षं	मोक्षं	न मोक्षं	मोक्षं	न मोक्षं	मोक्षं	बंदीमोक्षप्रश्न
सप्तदिन	१ वर्ष	पक्ष १५	मास ६	मास १	मास ६	मास ३	वर्ष १	दिनानि
स्थिर	न सिद्धि	त्वरितं	दीर्घकालं	त्वरितं	दीर्घकालं	स्थिर	न सिद्धि	कार्य्यसिद्धि
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	व्यवहार प्रश्न
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	स्त्रीलाभ प्रश्न
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्रकन्या प्रश्न
शतं	एक	शतं	२०	६०	४५	७५	१६	आयु प्रश्न
विलंब	उत्तम	विलंब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	न वर्षा	वृष्टिप्रश्न
२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०	दिनानि

रोगोत्पत्ति सन्तान प्रतिबन्धादि में देवदोष ज्ञान

प्रश्नलग्न से ३।६।६।१२ स्थान शुभरहित कोई पापग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानें। यदि ८।१२ वें स्थान में राहु हो तो प्रेतदोष, गुरु हो तो पितृदोष, चन्द्रमा या शुक्र हो तो जलदेवी का दोष, सूर्य हो तो देवीदोष, (लग्न में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष,) शनि हो तो सती दोष, बुध हो तो भूतदोष, भौम हो तो शाकिनीदोष स्वधर्महानि अथवा ईश्वर से विमुख मनुष्य को होता है। भौम स्वक्षेत्री १२ में हो तो छाया चुड़ैल, चौथे श. मं. राहु चौपटिवा, बली वा नीच भौम १।४।८वें हो तो शत्रु के घर से मसाणी, १० सू. मं. सौकण, १२ भौम नणद बड़ी, ८ वें भौम नणद छोटी, ४ भौम मैणा, १० मं. गु. सती कुल की, १० मं. चं. अपने दुर्गास्थान का दोष कहना। यह ग्रह योग न हों तो केवल प्रश्नलग्न से दोष निम्नलिखित जानें। बलवान् मेषलग्न में प्रश्न हो तो पितृदोष कहें, वृष हो तो आकाशदेवी का, मिथुन हो तो महामाया का, कर्क में शाकिनी का, सिंह में जलभय प्रेतदोष, कन्या में केवल ग्रहदोष, तुला में क्षेत्रपाल का, वृश्चिक में नाग का, धन में कर्मजन्य, मकर में श्रीदुर्गा का, कुम्भ में भूतप्रेत का, मीन में योगिनी का दोष कहें। बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य, शुभ ग्रह हो तो साध्य होते हैं।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यक् विचार्य गणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥
तिथिर्वारञ्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजाकर, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हींग, नमक (सैंधा) अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बीमारी नहीं होती)।

पञ्चाङ्गस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्टान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य—

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्र्यरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं संवत्सरस्याधिपतौ, राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं वृद्धिदम्। धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वं सुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इति संवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रम वर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती है। अब ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१ वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय है। इस दिनकी १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्ष संख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होना है ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ये छः मनु व्यतीत हो गये हैं, अब सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८ वां कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था—सत्ययुग—कार्त्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायण के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार श्रीमत्स्यजी ने वेदों के और शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मंथन करा कर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहजीने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतारने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बोकर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युग में तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामनजी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्रीपरशुरामजी ने कर्तव्य विमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेम में प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार नाश करके ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था। श्रीरामचन्द्रजी ने महा-अभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौवें त्रिकाल दूध देनेवाली होती थीं, प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री-परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युग में सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीयप्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरीयान् योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४००० वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्णने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्मका उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौवें दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देनेवाली होती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करनेवाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चन्द्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री-परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था।

कलियुग—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक [illegible] अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएँ दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कर्गज मुद्रा प्रायः चलेंगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्र निन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियाँ ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या विक्रय करेंगे। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम्। राजानोऽर्थपरा ह्यरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथ्वी निरौषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणो, हा ! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह ! कलिकालो विलसति ॥ कलौ गंगायाः स्थितिः। पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव ॥ **भगीरथंप्रतिगंगा वाक्यञ्च**—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थोदिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रं वड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दश सहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ, ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

अथ वर्ष राजादि फल विचार २०१३

अथ श्रीमन्नृपतिधर्ममूर्ति-विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवताभिधः २०१३ श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणि—शकजातियवननिर्बीजक-शालिवाहनराज्याद् गतहायनानि तत् शकाभिधः १८७८ श्रीकृष्णजन्म सं० ५१८२ श्रीमहावीरनिर्वाण (जैन) संवत्सरः, २४८२–८३। ईस्वीसन् १९५६—५७। हिजरी सन् १३७५—७६। फसली सन् १९६१। वर्षादौ गुरुमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये रुद्रविंशत्यां सौम्यनामा संवत्सरस्तस्य फलम्—सौम्याब्दे निखिला लोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः। विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥ अर्थात् सौम्यनामक संवत्सर में समस्त जनता प्रसन्न रहे, अच्छा धान्य उत्पन्न हो, वर्षा पर्याप्त हो। राजा लोग शत्रुहीन हों, ब्राह्मण अपने धर्म कर्म में निरत रहें। तथा च—सौम्येऽब्दे रुद्रः स्वामी, अल्पो मेघः, गावोऽल्पक्षीराः, वृक्षेऽल्पं फलम्; चैत्रे महर्घता, वैशाखे उद्दण्डवायुः, ज्येष्ठे विग्रहः, प्रजापीडा, आषाढेऽल्पो मेघः अन्नं महर्घं, श्रावणे महामेघः, धान्ये [illegible] ता, भाद्रे खण्डवृष्टिः, अन्नं दुर्भिक्षं, आश्विने राजविरोधः, लोकपीड़ा, मार्गे विषमता, अन्ने संग्रहः, बालकरोगः, देशान्तरीयलोकपीड़ा, फाल्गुने उद्दण्डवायुः, पश्चिमायां सुभिक्षं, सिन्धुदेशे राजविरोधः ॥ अथास्मिन् वर्षे राजा गुरुः, मन्त्री शुक्रः, सस्येशश्चन्द्रः, धान्येशः शनिः, मेघेशो गुरुः, रसेशो बुधः; नीरसेशो रविः, फलेशो बुधः, धनेशो रविः, दुर्गेशो गुरुः।

राजा गुरुस्तस्य फलम्—गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः। यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते। इस वर्ष का राजा गुरु होने के कारण पर्याप्त वर्षा हो, गायें बहुत दूध देवें, बहुत अग्निहोत्री ब्राह्मण यज्ञ करें और सब लोगों में महान् आनन्द उत्सव हो। **२ मन्त्री शुक्रस्तस्य फलम्**—भृगुसुते ननु मन्त्रिपदं गते शलभमूषकरावथमाहिषैः। भवति धान्य समर्घतया भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम् ॥ इस वर्ष शुक्र के मन्त्री होने से टिड्डे, चूहे, भैंसें आदि से धान्य में न्यूनता व मन्दी होवे, जल अधिक बरसे। **३ सस्येशश्चन्द्रस्तस्य फलम्**—सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोपगोधुक्। देवद्विजाराधनतत्परा नृपा धरा भवेद्धान्यधनौघपूर्णा ॥ इस वर्ष सस्येश चन्द्रमा है, इसलिये प्रजा में सुख हो। मेघ वर्षा करें, गायें दूध दें। राजा लोग देवताओं और ब्राह्मणों को पूजें। पृथ्वी धन धान्य से पूर्ण हो। **४ धान्येशः शनिस्तस्य फलम्**—निर्धनाः क्षितिभुजो रणाद्रराः सस्य मल्पमति रोगिणो नराः। नैव मुञ्चति जलं सुरेश्वरः स्याद् यदान्त्यकरणपः शनैश्चरः ॥ इस वर्ष धान्येश शनि है इसलिये राजा लोग निर्धन होवें, धान्य की कमी हो, रोग अधिक फैलें। वर्षा न हो। **५ मेघेशो गुरुस्तस्य फलम्**—गुरुरपि प्रिय वृष्टिकरः सदाऽखिल विलासवती धरणी तदा। श्रुतिविचारपरा नरपालकाः रससमृद्धियुताखिल मानवाः। इस वर्ष मेघेश गुरु होने के कारण वर्षा अच्छी हो, पृथ्वी पर नाना प्रकार के आनन्द विलास हों। राजा लोग वेद चर्चाओं में लगे रहें, सभी पुरुष आनन्द रस ऐश्वर्य से पूर्ण हों। **६ रसेशो बुधस्तस्य फलम्**—रसपतौ द्विजराज सुते मही सुलभधान्यघृतादियुता जनाः। प्रमुदिता वरनायकपालिता बहुजलाखिलदेशसुरक्षिताः। इस वर्ष बुध के रसेश होने से पृथ्वी घृत धान्यादि पदार्थों से युक्त हो। मनुष्य प्रसन्न तथा अच्छे नेता से सुरक्षित हों। जल अधिक हो, सभी देश सुरक्षित रहें। **७ नीरसेशो रविस्तस्यफलम्**—नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्रचन्दनयोरपि। रत्नमाणिक्यमुक्तादेरर्घवृद्धिः प्रजायते ॥ इस वर्ष सूर्य के नीरसेश होने से तांबा, चन्दन, माणिक्य, रत्न तथा मोती आदि की कीमत में तेजी आवे। **८ फलेशो बुधस्तस्य फलम्**—यदि बुधः फलपः फलमुत्तमं जलधरा जलराशि मुचस्तदा। बहुतृणं कुसुमैः कमलैर्युतं जनपदो जनसौख्यमुदान्वितः ॥ इस वर्ष बुध के फलेश होने से फल उत्तम हों, वर्षा खूब हो। घास की उत्पत्ति अधिक हो। सभी नगरों के लोग सुखी रहें। **९ धनेशो रविस्तस्य फलम्**—द्रविणपो यदि वासरपस्तदा वणिजतो बहुद्रव्य समागमः। गजतुरङ्गमसेषखरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रयविक्रयात् ॥ सूर्य के धनेश होने के कारण व्यापार से बहुत लाभ हो और हाथी घोड़े आदि के क्रय-विक्रय से धन लाभ अच्छा हो। **१० दुर्गेशो गुरुस्तस्य फलम्**—"सुरगुरौ गढ़पे नयशोभिता नरवरा नरपाः करपालिताः। गिरिषु वा नगरेषु समं सुखं सुखमतिद्विजशस्त्रवतोऽनिशम् ॥" इस वर्ष गुरु के दुर्गेश होने से राजा लोग जनता का न्यायपूर्वक पालन करें। पर्वतों और नगरों में एक सा ही सुख हो, और ब्राह्मण सशस्त्र हों। **नव मेघों में द्रोण नामक मेघ का फल**—सम्पूर्ण पृथ्वी पर सामान्य वर्षा हो। सात पवनों में संवह नामक पवन का फल—वायु सञ्चार अच्छा हो। द्वादश नागों में अश्वतर नाग का फल—वर्षा कम हो, अनाज की क्षति हो।

रोहिणी वास—इस वर्ष रोहिणी का वास तट में है इसलिये वर्षा अच्छी हो, अन्न अच्छा उपजे। समय का वास धोबी के घर में है अतः वर्षा उत्तम हो। समय का वाहन [illegible] शुक्ल प्रतिपदा को गुरुवार होने से चातक है। शनि की दृष्टि पश्चिम में है। फल—पश्चिमीय

अथ लाभ व्यय चक्रम्—

[illegible]	[illegible]	वृ०	[illegible]	[illegible]	सि०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म का उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैर वाला धर्म रह जायेगा। गौएँ दूध कम देंगी। मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कर्गज मुद्रा प्रायः चलेंगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेद ज्ञान से शून्य तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेषरूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शास्त्र निन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियाँ ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं-कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या विक्रय करेंगे। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम्। राजानोऽर्थपरा ह्यरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथ्वी निरौषधि-रसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्राः पितुर्द्वेषिणो, हा ! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह ! कलिकालो विलसति ॥ कलौ गंगायाः स्थितिः। पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ। तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव ॥ **भगीरथंप्रतिगंगा वाक्यञ्च**—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्थोदिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रं वड़वा-नलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते ॥ इति ॥ कलौ दश सहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ, ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

अथ वर्ष राजादि फल विचार २०१३

अथ श्रीमन्नृपतिधर्ममूर्ति-विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवता-भिधः २०१३ श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणि—शकजातियवननिर्बीजक-शालिवाहनराज्याद् गत-हायनानि तत् शकाभिधः १८७८ श्रीकृष्णजन्म सं० ५१९२ श्रीमहावीरनिर्वाण (जैन) संवत्सरः, २४८२—८३। ईस्वीसन् १९५६—५७। हिजरी सन् १३७५—७६। फसली सन् १९६१। वर्षादौ गुरुमानेन प्रभवादिषष्ट्यब्दानां मध्ये रुद्रविंशत्यां सौम्यनामा संवत्सरस्तस्य फलम्—सौम्याब्दे निखिला लोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः। विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥ अर्थात् सौम्यनामक संवत्सर में समस्त जनता प्रसन्न रहे, अच्छा धान्य उत्पन्न हो, वर्षा पर्याप्त हो। राजा लोग शत्रुहीन हों, ब्राह्मण अपने धर्म कर्म में निरत रहें। तथा च—सौम्येऽब्दे रुद्रः स्वामी, अल्पो मेघः, गावोऽल्पक्षीराः, वृक्षेऽल्पं फलम्; चैत्रे महर्घता, वैशाखे उद्दण्डवायुः, ज्येष्ठे विग्रहः, प्रजापीडा, आषाढेऽल्पो मेघः अन्नं महर्घं, श्रावणे ...

द्विगुणो लाभः, सर्वधान्य समता, रस महर्घता, भाद्रे खण्डवृष्टिः, अन्नं दुर्भिक्षं, आश्विने राज-विरोधः, लोकपीड़ा, मार्गे विषमता, अन्ने संग्रहः, बालकरोगः, देशान्तरीयलोकपीड़ा, फाल्गुने उद्दण्डवायुः, पश्चिमायां सुभिक्षं, सिन्धुदेशे राजविरोधः ॥ अथास्मिन् वर्षे राजा गुरुः, मन्त्री शुक्रः, सस्येशश्चन्द्रः, धान्येशः शनिः, मेघेशो गुरुः, रसेशो बुधः; नीरसेशो रविः, फलेशो बुधः, धनेशो रविः, दुर्गेशो गुरुः। **राजा गुरुस्तस्य फलम्**—गुरौ नृपे वर्षति कामदं जलं महीतले कामदुघाश्च धेनवः। यजन्ति विप्रा बहवोऽग्निहोत्रिणो महोत्सवः सर्वजनेषु वर्तते। इस वर्ष का राजा गुरु होने के कारण पर्याप्त वर्षा हो, गायें बहुत दूध देवें, बहुत अग्निहोत्री ब्राह्मण यज्ञ करें और सब लोगों में महान् आनन्द उत्सव हो। **२ मन्त्री शुक्रस्तस्य फलम्**—भृगुसुते ननु मन्त्रिपदं गते शलभमूषकरावथमाहिषैः। भवति धान्य समर्घतया भयं जनपदेषु जलं सरितोऽधिकम् ॥ इस वर्ष शुक्र के मन्त्री होने से टिड्डे, चूहे, भैंसें आदि से धान्य में न्यूनता व मन्दी होवे, जल अधिक बरसे। **३ सस्येशश्चन्द्रस्तस्य फलम्**—सस्याधिपे शीत-करे प्रजासुखं मेघः पयो मुञ्चति गोपगोधुक्। देवद्विजाराधनतत्परा नृपा धरा भवेद्धान्य-धनौघपूर्णा ॥ इस वर्ष सस्येश चन्द्रमा हैं, इसलिये प्रजा में सुख हो। मेघ वर्षा करें, गायें दूध दें। राजा लोग देवताओं और ब्राह्मणों को पूजें। पृथ्वी धन धान्य से पूर्ण हो। **४ धान्येशः शनिस्तस्य फलम्**—निर्धनाः क्षितिभुजो रणाद्दराः सस्य मल्पमति रोगिणो नराः। नैव मुञ्चति जलं सुरेश्वरः स्याद् यदान्यकणपः शनैश्चरः ॥ इस वर्ष धान्येश शनि है इसलिये राजा लोग निर्धन होवें, धान्य की कमी हो, रोग अधिक फैलें। वर्षा न हो। **५ मेघेशो गुरुस्तस्य फलम्**—गुरुरपि प्रिय वृष्टिकरः सदाऽखिल विलासवती धरणी तदा। श्रुतिविचारपरा नरपालकाः रससमृद्धियुताखिल मानवाः। इस वर्ष मेघेश गुरु होने के कारण वर्षा अच्छी हो, पृथ्वी पर नाना प्रकार के आनन्द विलास हों। राजा लोग वेद चर्चाओं में लगे रहें, सभी पुरुष आनन्द रस ऐश्वर्य से पूर्ण हों। **६ रसेशो बुधस्तस्य फलम्**—रसपतौ द्विजराज सुते मही सुखभधान्यघृतादियुता जनाः। प्रमुदिता वरनायकपालिता बहुजलाखिलदेश-सुरक्षिताः। इस वर्ष बुध के रसेश होने से पृथ्वी घृत धान्यादि पदार्थों से युक्त हो। मनुष्य प्रसन्न तथा अच्छे नेता से सुरक्षित हों। जल अधिक हो, सभी देश सुरक्षित रहें। **७ नीरसेशो रविस्तस्यफलम्**—नीरसाधिपतौ सूर्ये ताम्रचन्दनयोरपि। रत्नमाणिक्यमुक्तादेरर्घवृद्धिः प्रजायते ॥ इस वर्ष सूर्य के नीरसेश होने से तांबा, चन्दन, माणिक्य, रत्न तथा मोती आदि की कीमत में तेजी आवे। **८ फलेशो बुधस्तस्य फलम्**—यदि बुधः फलपः फलमुत्तमं जल-धरा जलराशि मुचस्तदा। बहुतृणं कुसुमैः कमलैर्युतं जनपदो जनसौख्यमुदान्वितः ॥ इस वर्ष बुध के फलेश होने से फल उत्तम हों, वर्षा खूब हो। घास की उत्पत्ति अधिक हो। सभी नगरों के लोग सुखी रहें। **९ धनेशो रविस्तस्य फलम्**—द्रविणपो यदि वासरपस्तदा वणि-जतो बहुद्रव्य समागमः। गजतुरङ्गममेषखरोष्ट्रतो धनचयं लभते क्रयविक्रयात् ॥ सूर्य के धनेश होने के कारण व्यापार से बहुत लाभ हो और हाथी घोड़े आदि के क्रय-विक्रय से धन लाभ अच्छा हो। **१० दुर्गेशो गुरुस्तस्य फलम्**—"सुरगुरौ गढ़पे नयशोभिता नरवरा नरपाः करपालिताः। गिरिषु वा नगरेषु समं सुखं सुखमतिद्विजशस्त्रवतोऽनिशम् ॥" इस वर्ष गुरु के दुर्गेश होने से राजा लोग जनता का न्यायपूर्वक पालन करें। पर्वतों और नगरों में एक सा ही सुख हो, और ब्राह्मण सशस्त्र हों। **नव मेघों में द्रोण नामक मेघ का फल**—सम्पूर्ण पृथ्वी पर सामान्य वर्षा हो। सात पवनों में संवह नामक पवन का फल—वायु सञ्चार अच्छा हो। द्वादश नागों में अश्वतर नाग का फल—वर्षा कम हो, ...

रोहिणी वास—इस वर्ष रोहिणी का वास तट में है ...

अथ लाभ व्यय चक्रम्—

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोहिणी वास—इस वर्ष रोहिणी का वास तट में है इसलिये वर्षा अच्छी हो, अन्न अच्छी उपजे। समय का वास धोबी के घर में है अतः वर्षा उत्तम हो। समय का वाहन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को गुरुवार होने से चातक है। शनि की दृष्टि पश्चिम में है। फल—पश्चिमीय प्रदेशों में भय उपद्रव रहे। इस वर्ष भारतवर्ष में दो ग्रहण दिखाई देंगे। पहिला चन्द्र ग्रहण वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को, दूसरा खण्डग्रास सूर्यग्रहण मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस को होगा। इस वर्ष सोमवती अमावस दो हैं, श्रावण तथा पौषमें। बुधाष्टमी तीन हैं, चैत्र, भाद्रपद और पौषमें।

अथ वर्षादीनां विश्वामानम्—वर्षा विश्वे १७ धान्य १३ तृण ११ शीत ५ तेज ५ वायु १३ वृद्धि १५ क्षय १५ विग्रह ११ क्षुधा ५ तृषा ५ निद्रा ७ आलस्य ३ उद्यम ७ शान्ति ५ क्रोध ५ दम्भ ५ लोभ ३ मैथुन १५ रसनिष्पत्ति ९ फलनिष्पत्ति १३ उत्साह ११ उग्रता ७ पाप ११ पुण्य ५ व्याधि ११ व्याधिनाश १७ आचार ९ अनाचार ७ मृत्यु १५ जन्म १ देशोपद्रव १ देश स्वास्थ्य १ चौरभय ३ चौर नाश ९ अग्नि ३ अग्निशान्ति ३ टिड्डी १५ तोता १३ मूषक १७ सुवर्ण ३ ताम्र १३ स्वचक्र १३ परचक्र ३ अतिवृष्टि ११ अनावृष्टि ११ उद्भिज्ज (वृक्ष लता क्षुप आदि) ९ जरायुज (मनुष्य एवं गौ पशु आदि) ३ अण्डज (पक्षी तथा सर्प आदि) ११ स्वेदज (पसीने से पैदा होने वाले जूं आदि) ५ संवत् विश्वा २०।

अथ वर्षस्तम्भचतुष्टय विचार:—इस वर्ष जल स्तम्भ रुपये में २ आना है। फल.—वर्षा की कमी से कृषक चिन्तित रहें। तृण के स्तम्भ का अभाव है। फल—तृणोत्पत्ति कम हो। वायु स्तम्भ १३ आने है। फल—गर्मी अधिक हो और वायु अधिक चले। अन्नस्तम्भ १२ आना है। फल—अन्न खूब हो। आर्षमान (वर्षरक्षा के ४ किले)—पहिला आर्ष गत वर्ष पौष की अमावस को मूल का अभाव है। दूसरा आर्ष अक्षय तृतीया रोहिणी का १॥ विश्वा है। तीसरा आर्ष श्रावण पौर्णमासी को श्रवण का ३ विश्वा है। चौथा आर्ष कात्तिक शुक्ल पौर्णमासी को कृत्तिका का ९ विश्वा है। अतः आर्षमान विचार से यह वर्ष अच्छा नहीं।

अखैतीज रोहिणी नहीं होई, पौष अमावस मूल न जोई
राखी श्रवणों हीन विचारो, कातिक पुण्यों कृत्तिका टारो ॥
महीमांह खलबली प्रकाशै, कहे भड्डली साख विनाशै ॥

अथ नव वर्ष प्रवेशः—गत सं० २०१२ वि० चैत्र कृष्ण ३० बुधवार को इष्टघट्यादि ५।६ वृषलग्न के ७ अंश पर नव वर्ष प्रवेश होगा। दक्षिण पश्चिम में अकाल, पूर्व में राज विग्रह और उत्तर में अन्नादिक की उत्पत्ति आधी रहे। **वर्षेश लग्नम्**—सं० २०१३ वि० चैत्र ३ शुक्रवार को इष्टघट्यादि ६।४६ वृषलग्न के १९ अंश पर श्री सूर्यदेव मेषराशि में प्रवेश करेंगे। यहाँ लग्न स्वस्वामी और केतु से युक्त है, और सप्तम में शनि, राहु और द्वादश में चन्द्र बुध हैं। अतः इस वर्ष खड़ी खेती का नाश हो। प्रजा में बेकारी बढ़े, आर्थिक संकट रहे। इस वर्ष सातवां, नौवां, बारहवां मास प्रजा को भय और चिन्ता देने वाला है। **सूर्य का आर्द्रा प्रवेश कालिक फल विचार**—सं० २०१३ वि० ज्ये० शु० १३ गुरुवार को इष्ट-घट्यादि ३१।२५ वृश्चिक लग्न के १७ अंश पर श्री सूर्यनारायण आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। **तात्कालिक तिथि १४ का फल**—धान्य तथा सभी वस्त्रों में महंगाई हो। **वार गुरु का फल**—जीव सुखी हों, द्रव्य में वृद्धि हो। **नक्षत्र ज्येष्ठा का फल**—सभी लोग भयभीत रहें। **योग शुभ का फल**—वर्षा से संतुष्टि हो। **समय फल**—घास में कमी और खेती की हानि हो। **विशेष फल**—आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में चन्द्रमा लग्न में शनि राहु से युक्त है। खेती बाड़ी उत्पादन के स्थान चतुर्थ में भौम गुरु से पूर्ण दृष्ट है। इत्यादि योगों पर विचार करने से ज्ञात होता है—कि इस वर्ष वर्षा ठीक न होने से अन्न में कमी हो।

अथ लाभ व्यय चक्रम्—

राशय:	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
लाभ:	११	५	८	२	५	८	५	११	१४	२	२	१४
व्यय:	५	१४	११	११	५	११	१४	५	११	८	८	११

लाभ व्यय देखने की रीति—लाभ व्यय के अङ्कों को जोड़कर एक घटावें और ८ का भाग दें, १।२।६।७ बचे तो उस वर्ष में लाभ उत्तम होवे और शेष ३।४।५।० बचे तो लाभ बहुत कम होवे और चिन्ता भी रहे।

वर्षलग्नम्

वर्षेश (जगल्लग्नम्)

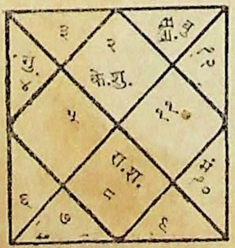

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

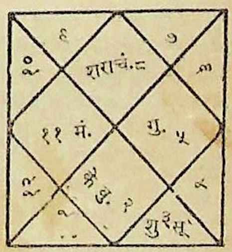

जन्मलग्न, जन्मराशि और वर्षलग्न से यदि वर्षेश (जगल्लग्न) ८ वां १२ वां हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता।

सूचना—राजा का फल काश्मीर व अफगानिस्तान में विशेष होगा, मन्त्री का बाल्हीक और मालवे में सस्येश का पौण्ड्र विदर्भ में, धान्येश का नर्मदा किनारे तथा मध्यदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोङ्कण मगध में, नीरसेश का मालवा देश में, फलेश धनेश और दुर्गेश का फल सब जगह विशेष होता है।

अथ व्रतोत्सव परिचय

पञ्चाङ्गों में प्रायः सर्वत्र व्रतोत्सव पर्वों का उल्लेख रहता है, इनकी सृष्टि मनो-विनोद ही के लिए नहीं हुई है, किन्तु यह सत्कर्म के प्रवर्तक तथा जातीय इतिहास के अटल स्मारक हैं। परन्तु खेद इस बात का है कि जनता में आमोद-प्रमोद वर्धन होने पर भी अब भक्ति उत्साह कम होने लगा है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा—चैत्र शु० १ को प्रात. बिस्तर से उठते समय जिसका चन्द्र (बांया) स्वर चलता हो तो उसे उस वर्ष में लाभ और आरोग्यादि सुख मिलते हैं। यदि सूर्य (दाहिना) स्वर चलता हो तो अशुभ अथवा साधारण वर्ष निकलता है। यदि स्वर ठीक न हो तो दाहिनी करवट लेटे रहे जब चन्द्र चलने लगे तब ईश्वर स्मरण पूर्वक उठ बैठना चाहिए, जिससे अशुभ फल कम हों। आज घर को सब प्रकार से सुसज्जित करके दरवाजों पर ध्वजा तोरणादि लगाना चाहिये, नया वर्ष सुख से व्यतीत हो इस कारण आज अवश्य ही आनन्द मनाना चाहिए, कालीमिर्च, हींग, लवण, जीरे को अजमोद और नीम के पत्तों के साथ खाने

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से वर्ष भर में होने वाले तीव्र ज्वर तथा रक्त विकारादि रोग नहीं होते, इसी दिन ब्रह्माजी ने प्रथम जगत् को रचा है, इस दिन ब्रह्मा जी का पूजन एवं वर्षेशादिकों का फल श्रवण करना चाहिए, और सर्व प्रकार से शक्ति सम्पन्न होने के लिए कलशस्थानपूर्वक प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त श्री दुर्गा का पूजन करना या कराना चाहिये।

गणगौरीव्रत—चैत्र शुक्ल ३ के दिन सौभाग्यवती स्त्रियों को श्रीमहादेव गौरी का कुंकुम अगर वस्त्रालङ्कारादि से यथाशक्ति पूजनपूर्वक रात्रि में जागरण करना चाहिए। दूसरे दिन प्रातः दक्षिणा देने से सौभाग्य और वंश की वृद्धि होती है।

श्रीरामनवमी—इस दिन धर्म की मर्यादा सुदृढ़ करने के लिए भगवान श्रीरामचन्द्रजी का अवतार हुआ था, अतः इस जयन्ती को व्रत पूजन जागरणोत्सव करने का विशेष माहात्म्य है।

श्रीपरशुराम जयन्ती—वैशाख शुक्ल ३ को कर्त्तव्यविमुख एवं विलासिता के मद में प्रमत्त क्षत्रियों के अभिमान को दूर करने के लिए भगवान श्री परशुराम जी ने अवतार लिया था, इस दिन भगवान परशुराम का पूजन तथा उत्सव मनाने का विशेष माहात्म्य है। (श्रीमदमृतवाग्भवाचार्य्यप्रणीतश्रीपरशुराम स्तोत्र पढ़ना चाहिये) ।

गंगासप्तमी—आज पतितपावनी भगवती भागीरथी के स्नान पूजन का बड़ा पुण्य है।

नृसिंहचतुर्दशी—"भक्ति चाहिए परमात्मा कहाँ नहीं है" इस सिद्धान्त को पुष्ट करने के लिए भगवान नृसिंहजी ने इस दिन सायंकाल के समय प्रकट होकर हिरण्यकश्यपु का वध कर भक्त प्रह्लाद को अभय किया, अतः इस दिन व्रत पूजन का विशेष पुण्य है।

गंगादशहरा—इस दिन गंगादि यथा लब्ध नदियों में स्नानपूर्वक कुशसहित तिलोदक देने से मनुष्य दश पापों से निवृत्त होकर विष्णु लोक को जाता है।

गुरुपूर्णिमा—त्रिताप से बचाकर जीव को कल्याण की ओर अग्रसर करने वाले श्री गुरुदेव की पूजा तथा भेंट आज अवश्य करनी चाहिए।

नागपंचमी—"समः शत्रौ च मित्रे च" का सिद्धान्त पुष्ट करने को तथा भगवान की विभूति पूजनार्थ पाँच फण वाले विभूतिमान नागदेव के पूजन का विधान है. विभूति पूजा का अभिप्राय उसके शरीर की पूजा नहीं, किन्तु शरीर के द्वारा परमात्मा के अंश का जितना विकास हुआ है उसकी पूजा है ॥ **उपाकर्म श्रावणी**—विशेषकर ब्राह्मणों एवं अव्रात्य यज्ञोपवीत धारी क्षत्रिय वैश्यों को श्रावणी अवश्य ही करनी चाहिए, इसके करने से कर्ता तेजस्वी और पाप रहित होता है, यह ब्राह्मण जाति का मुख्य त्यौहार है शोक है कि हमारे देश में बहुत से ब्राह्मण भाई भी इस काम से दूर भागते हैं।

जन्माष्टमी—भारत के विधाता तथा भारत के अन्तिम पथप्रदर्शक भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्म अर्धरात्रि के समय व्रज में हुआ था, शास्त्रों में आज के व्रत पूजन एवं जागरणोत्सव का विशेष माहात्म्य लिखा है। **अनन्त चतुर्दशी**—विष्णुप्रीत्यर्थ भगवान अनन्त का धारण और षोडशोपचार से पूजन तथा कथा श्रवण करना चाहिए।

विजयादशमी—यह क्षत्रियप्रधान त्यौहार है, विजय कामना से भगवती अपराजिता का पूजन करके विजयादशमी में राजाओं को युद्धोपयोगी शस्त्र अश्वादि पूजन पूर्वक सायंकाल में मार्गहाली बाँधकर विजय का शकुन मनाना चाहिए. भगवान श्रीरामचन्द्र जी ने भी अपनी वानरी सेना को साथ लेकर इसी दिन प्रस्थान कर रावण के दश सिर हरण करने के लिये लंका पर चढ़ाई की थी, इसी कारण से इस दिन का नाम ...

शरद् पूर्णिमा—इस दिन दूध क्षीरादि श्वेत पदार्थ और श्वेत वस्त्र भगवान को चाँदनी में अर्पण कर, लक्ष्मी तथा इन्द्र के पूजनोपरान्त जागरण भी करना चाहिये। **करक (करवा) चतुर्थी**—स्त्रियों को स्थिर सौभाग्य प्राप्त्यर्थ इस व्रत को अवश्य करना चाहिये, खेद है कि इस व्रत के विषय में वामन पुराण की शास्त्रीय कथा के स्थान में कल्पित भूत की कथा प्रचलित हो रही है वह ठीक नहीं। इस व्रत में चंद्र, शिव, स्वामी कार्तिक, गणेशऔर गौरी का पूजन कुंकुमादि से करना लिखा है, तदन्तर चन्द्रोदय के समय चन्द्रार्घ्य देकर व्रत का पालन करना चाहिए। यह व्रत स्त्रियों को सच्ची अर्धाङ्गिनी बनने का उपदेश देता है और बतलाता है कि पति के हित में ही स्त्री का हित है, स्त्रियों को चाहिये कि लौकिक पारलौकिक कोई भी कर्म अपने उद्देश्य से न कर पति के उद्देश्य से ही करें, वैसे तो "तपः प्रधाना नार्यः" लिखा है, परन्तु सौभाग्यवती स्त्रियों को पति की आज्ञा बिना अन्य व्रत करने का विधान नहीं है (हाँ, आज्ञा लेकर कर सकती हैं) स्त्रियों को व्रतादिसाधनों में उतना ही लगना चाहिए जितने में उनके प्राणपति को कष्ट न हो, उक्तञ्च—पत्युराज्ञां बिना नारी उपोष्य व्रतचारिणी। आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत् ॥

अहोई अष्टमी—पञ्जाब तथा बंगाल प्रान्त में इस दिन पुत्रों वाली माताय व्रत रखकर रात्रि को भगवती काली का पूजनार्चन करके बच्चों को पकवान भरे बर्तन दिया करती हैं।

दीपावली—यद्यपि यह वैश्य प्रधान त्यौहार है, तथापि सब वर्णों की श्री लक्ष्मी जी का पूजनार्चन दारिद्र्य निवृत्यर्थ प्रदोष काल में करना चाहिये। राजा बलि के जेलखाने में समस्त देवी देवताओं के साथ लक्ष्मी जी भी कैद थीं, उनको भगवान विष्णु ने आज के दिन ही छुड़ाया था।

अन्नकूट—आज नाना प्रकार के पदार्थ बनाकर भगवान को भोग लगाने का और गौओं की सेवा का विशेष माहात्म्य है ॥ **गोपाष्टमी**—आज सायंकाल गौओं को पुष्पमालाओं से अलंकृत करके मिष्ठान्न देकर उत्सव मनाना चाहिए।

भीष्म पंचक—महाभारत के अन्त में शरशय्या पर लेटे हुए भीष्मपितामह ने महाराजा युधिष्ठिर को सम्बोधन कर राजधर्म १, मोक्षधर्म २, नारीधर्म ३, पुरुषधर्म ४, और वर्णधर्म ५, आदि पर अनेक अमूल्य उपदेश किये थे, जिनकी प्रशंसा भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं की है, जो सम्पूर्ण कार्त्तिक स्नान न कर सके वह भीष्म पंचक में स्नान व्रत दान से अतुल पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

संकट चतुर्थी—इस दिन भगवान गणेश का व्रत रखकर चन्द्रोदय समय यथालब्धोपचार भगवान गणपति का पूजन करे और तिलमोदक भुग्गों का नैवेद्य लगाकर व्रतपारण करे तो सर्व संकट दूर हों, इस दिन कथा श्रवण का विशेष माहात्म्य है।

वसन्तपंचमी—यह कान्ति एवं पुरुषार्थप्रद ऋतुराज का प्रारम्भिक उत्सव है, अपने इष्टदेव को गुलाल आदि समर्पण कर उत्सव मनाना चाहिये।

श्रीमहाशिवरात्रि—इसी दिन प्रदोष वा अर्द्धरात्रि के समय भगवान शङ्कर के पूजन का विशेष माहात्म्य है, व्रत रखकर रात्रि को जागरण करने से शिवलोक की प्राप्ति होती है। **सूचना**—यद्यपि अधिकांश हमारे धार्मिक व्रत ऐसे हैं कि जिनमें निर्जल रहने का विधान है जैसे रामनवमी, जन्माष्टमी शिवरात्रि आदि, परन्तु यह विधान अशक्त बाल-वृद्ध रोगी के लिए नहीं है।

श्रीसंवद् २०१३ शाकः १८७८ चैत्र शुक्लपक्षः १ | तारीख | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाइम | सौर सूर्यस्पष्टः ...२५ अप्रै. तक १९५६ ई०) उत्तरायण गोलो, वसन्तर्तुः।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(१२ अप्रै. से २५ अप्रै. तक १९५६ ई०) उत्तरायण गोलो, वसन्ततुः
ग्रहदर्शन—मं. अर्धरात्रि में पूर्व में दीखेगा। ति. ८ को बुध प. में उदित होगा। सूर्यास्त बाद गु. ख. मध्य में शु. प. में दीखेगा श. पूर्वरात्रि में पूर्व में दीखेगा।

श्रीसंवत् २०१३ शाकः १८७८ चैत्र शुक्लपक्षः १										तारीखें			चन्द्र	स्टैण्डर्ड टाईम		सौर सूर्यस्पष्टः	
दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले	
३१ ४१	१	गु	२ ५०	अ	१३ १९	वि.	१६ ५८	व.	२ ५०	३१	१२	३०	मेषे	६ ४	६ ४६	११ २८ ५४ ४१	चन्द्रदर्शनम् उत्तरशृङ्गोन्नतिरभावकल्पा, अ. ३बुधः३५।२९ चान्द्र+
अवम	२	गु	५६ ३६	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	+संवत्सरारम्भः, नवरात्रा, घटस्था. वर्षफल श्र. निम्बपत्रभक्ष.
३१ ४५	३	शु	५५ ९	भ.	११ ३४	प्री.	११ १४	तै.	२७ १७	वै १	१३	१	वृ. २५।५५	६ ३	६ ४७	११ २९ ५३ २३	सं. अ. मेषेऽर्कः ६।४६, मु. १५ पुण्यं २१।४६ या. गणगौरी ३ पू., ×
३१ ५०	४	श	५० ९	कृ.	८ ५७	आ.	४/५७ ५५/५७	व.	२२ ३९	२	१४	२	वृषे	६ १	६ ४७	० ० ५२ ४	भ. २२।३९ उ.५०।९ या. अश्वि. ४बुधः १०।३१, रो. ३ शु. ४।२४,✽
३१ ५५	५	र	४४ ३६	रो.	५ ४०	सौ.	५० ४१	व.	१७ २२	३	१५	३	मि. ३३।४६	६ १	६ ४८	० १ ५० ४३	भरि. १बुधः ४७।५७ × मत्स्यजय., वैशाखी मेला, रम. मु. ९ ✽चं. शु. के. यु.
३२ ०	६	चं	३८ ३९	मृ.	५७/१ ४६/५३	अ.	४३ ४	कौ.	११ ३७	४	१६	४	मिथुने	६ ०	६ ४९	० २ ४९ १९	मेला माई सरखाना
३२ ४	७	मं	३२ ३६	पुन.	५३ ३८	सु.	३५ २२	ग.	५ ३७	५	१७	५	क. ३९।४१	५ ५९	६ ५०	० ३ ४७ ५३	भ. ३२।३६ उ. ५९।३४ या. भरि. २ बुधः २८।०, मार्गी गु. १२।० रो. ४ शु. [
३२ ९	८	बु	२६ ३२	पु.	४९ ३६	धृ.	२७ ४५	व	२६ ३२	६	१८	६	कर्के	५ ५७	६ ५०	० ४ ४६ २३	पश्चिमोदयो बुधः ०।५६ दुर्गा८ मेला मनसादेवी। चं. वरु. यु. [३४।१२
३२ १४	९	गु	२० ४६	श्ले.	४५ ५५	शू	२० १७	कौ.	२० ४६	७	१९	७	सि. ४५।५५	५ ५६	६ ५१	० ५ ४४ ५३	सा. बृ. भा. २१।४१, भ. ३बुधः १०।४२ रा. न व्र., ग्रीष्मर्तु प्रा. अगस्त्यो[]
३२ १९	१०	शु	१५ ३२	म.	४२ ४५	गं.	१३ १२	ग.	१५ ३२	८	२०	८	सिंहे	५ ५५	६ ५२	० ६ ४३ २०	भा. ४३।८ उ., श्र. भौ. ४।४६, भरि. ४ बुधः ५७।४३
३२ २४	११	श	१० ४५	पू. फा	४० २१	वृ.	६ ३७	वि.	१० ४५	९	२१	९	कं ५४।५७	५ ५४	६ ५३	० ७ ४१ ४४	भ. १०।४५ या., मृ. १शु. ११।४५, कामदा ११व्र. =मोक्षः २५।३२
३२ २८	१२	र	६ ५२	उ. फा	३८ ४५	ध्रु.	५५/५५ ४५/३६	बा	६ ५२	१०	२२	१०	कन्यायाम्	५ ५३	६ ५४	० ८ ४० ६	कृ. १बुधः ५२।३४ प्र. व्र. []ऽस्तः १९।४९, चं. गु यु. पातस्पर्शः १२।३४=
३२ ३१	१३	चं	३ ५७	ह.	३८ १२	ह.	५१ १६	तै.	३ ५७	११	२३	११	,,	५ ५२	६ ५४	० ९ ३८ २७	श्रीजैनमहावीर जयन्ती
३२ ३५	१४	म	२ १०	चि.	३८ ५१	व.	४७ ५९	व.	२ १०	१२	२४	१२	तु. ८।३१	५ ५१	६ ५४	० १० ३६ ४७	भ. २।१० उ. ३१।५१ या. कृ. २ वृ. बुधः ५६।२२ मृ. २ शु. ()
३२ ३९	१५	बु	१ ३३	स्वा.	४० ४६	सि	४५ ३९	व.	१ ३३	१३	२५	१३	तुलायाम्	५ ५०	६ ५५	० ११ ३५ ३	वैशाखस्नान प्रा. () ५८।१२ सत्यव्रतम् चं. इं. यु.

चैत्र शुक्ल ८ बुध इष्टम् ०।० के दिनगणः ७४४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	०	३	१	७	७	१
४	८	१७	२८	२०	८	१७	१७
४६	४१	४३	१३	२४	३०	७	७
२३	२५	८	२६	११	२	१६	१६
५८	३७	११६	०	५५	३	३	३
३०	४६	२७	६	४०	१८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	अ	अ	उ.	उ	उ.	अ.	अ.
अ.	उ.पा	भ.	श्ले.	रो.	अनु	ज्ये.	रो.
२	४	२	४	४	२	१	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

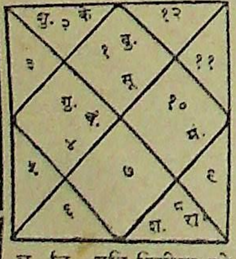

इस पक्ष में राजाओं को पीड़ा और अनाज गुड़ खांड का भाव तेज रहेगा। रुई चाँदी में घटाबढ़ी चलकर रुख मन्दा रहे, अष्टमी से तेजी भी हो। ति० ७ से आठ दिन के अन्दर विनौला अलसी गुड़ सरसों तम्बाकू चावल श्वेत वस्त्र लाल चंदन का भाव तेज हो। रुई शेयर मन्दे हों। ति० ९ से गेहूँ जौ और धातु अफीम के भाव में अच्छी तेजी आवे। भारत पाक संबंध में कटुता हो, जिसकी निवृत्ति के लिए किसी सत्पुरुष के सफल प्रयत्न भी होंगे। महासागर में कोई उत्पात हो। भारत में राजनैतिक हलचलें बहुत हों।

आ. ल.—इस पक्ष में वायु का जोर रहे। ति० ३ से ५, तथा ८,९,१५ को कहीं २ बादल, पूर्वोत्तर में कहीं बूंदाबांदी भी हो।

श. वि.—यदि द्वितीया को चंद्र श्यामरंग बादलों से ढका हुआ हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाय तो घृतादि वस्तु की कीमत बढ़े।

चैत्र शुदि जो पंचमी दक्षिण पूर्व बाय, वर्षा भी होवे कुछ भादों तेज विकाय।
चैत्र शुदि जो त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान, आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान।

चैत्र शुक्ल १५ बुध इष्टम् ०।० के. दिनगणः ७५१

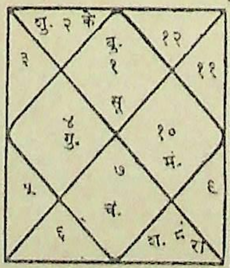

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	१	३	१	७	७	१
११	१३	०	२८	२६	८	१६	१६
३५	५	५	१८	४१	५	४५	४५
३	१८	४४	२४	३४	४६	५	५
५८	३७	६०	१	५१	३	३	३
१६	३३	४४	२५	३८	४२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अ.	श्र.	कृ.	श्ले.	मृ.	अनु	ज्ये	रो.
४	१	२	४	२	२	१	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ बैशाख कृष्णपक्षः २ (२६ अप्रैल से १० मई १९५६ ई०) उत्तरायण गोलौ गीष्मर्तुः

ग्रहदर्शन—बु. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में गु. खमध्य में शनि पूर्व रात्रि में पूर्व में मंगल पश्चिमरात्रि में खमध्य की ओर जाता दिखाई देगा

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	तारीखें हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	स्टैण्डर्ड टाइम सू. उ.	सू. अ.	सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले	
३२ ४२	१	गु.	२ १७	वि.	४३ ५७	व्य.	४४ २४	का.	२ १७	१४	२६	१४	बृ. २८। ६	५ ४६	६ ५६	० १२ ३३ १७	भरि. र. ४८।११, अनु. ४ रा. रो. २ के. ३६।८
३२ ४६	२	शु.	४ १८	अनु.	४८ १४	व.	४४ २	ग.	४ १८	१५	२७	१५	वृश्चिके	५ ४८	६ ५६	० १३ ३१ २७	भ. ३५।५० उ. कृ. ३ बुधः १२।३ चं. श., चं. रा. यु.
३२ ५०	३	श.	७ २२	ज्ये.	५३ ३		४४ ३०	वि.	७ २२	१६	२८	१६	ध. ५३।३७	५ ४७	६ ५६	० १४ २९ ३६	भ. ७।२२ या. मृग. ३ मिथुने शु. ५४।१७ श्री गणेश ४ व्र.
३२ ५३	४	र.	११ ३१	मू.	५९ ४२	शि.	४५ ३५	बा.	११ ३१	१७	२९	१७	धनुषि	५ ४६	६ ५७	० १५ २७ ४४	कृत्ति. ४ बुधः ४४।२८
३२ ५७	५	चं.	१६ २१	पू. षा.	६० ०	सि.	४७ ५	तै.	१६ २१	१८	३०	१८	धनुषि	५ ४५	६ ५८	० १६ २५ ५१	
३३ १	६	मं.	२१ ३१	पू. षा.	६ १६	सा	४८ ४२	व.	२१ ३१	१९	१म	१९	म. २२।५३	५ ४५	६ ५८	० १७ २३ ५६	भ. २१।३१ उ. ५४।२ या. मई ५ ता. ३१
३३ ४	७	बु.	२६ ३३	उ. षा.	१२ ४७	शुभ	५० ५	ब	२६ ३३	२०	२	२०	मकरे	५ ४४	६ ५९	० १८ २१ ५८	रा. १ बुधः ४६।३२ चं. मं. यु., पातस्पर्शः २।१६ मोक्षः २०।४१
३३ ८	८	गु.	३१ ४	श्र.	१८ ५५	शु.	५० ५८	कौ.	३१ ४	२१	३	२१	कु ५१।३६	५ ४३	७ ०	० १९ १९ ५८	मृ. ४ शु. ६।४८, पंचक प्रा. ५१।३६
३३ १२	९	शु.	३४ ४८	ध.	२४ १७	ब्र.	५१ १२	तै.	२ ५६	२२	४	२२	कुम्भे	५ ४२	७ ०	० २० १७ ५५	
३३ १५	१०	श.	३७ २१	श.	२८ ३५	वै.	५० २६	व.	६ ४	२३	५	२३	कुम्भे	५ ४२	७ १	० २१ १५ ५०	भ. ६।४ उ. ३७।२१ या.
३३ १९	११	र.	३८ ४७	पू. भा.	३१ ४६	दि.	४८ ४६	ब.	८ ४	२४	६	२४	मी १५।५८	५ ४१	७ २	० २२ १३ ४५	रो. २ बुधः ५०।४४, वरूथिनी ११ व्र.
३३ २३	१२	चं.	३८ ५२	उ. भा.	३३ ४१	ऐ.	४६ ५	कौ.	८ ४९	२५	७	२५	मीने	५ ४०	७ २	० २३ ११ ३८	आर्द्रा १ शु. ४६।४७
३३ २७	१३	मं.	३७ ४१	रे.	३४ २१	प्री.	४२ २३	ग.	८ १६	२६	८	२६	मे. ३४।२१	५ ३९	७ ३	० २४ ९ ३०	भ. ३७।३१ उ. पंचक समा. ३४।२१ प्रदोष व्र.
३३ ३०	१४	बु.	३५ १९	अ.	३३ ४९	आ.	३७ ४९	वि.	६ ३०	२७	९	२७	मेषे	५ ३८	७ ३	० २५ ७ १९	भ. ६।३० या.
३३ ३४	३०	गु.	३१ ५२	भ.	३२ २०	सौ	३२ २५	च.	३ ३५	२८	१०	२८	वृ. ४६।४३	५ ३७	७ ४	० २६ ५ ६	कृ. र. ३६।१५, मेला पञ्जौर सू. चं. यु.

वैशाख कृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० के. दिनगण: ७५९

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१	३	२	७	७	१
१९	१८	१०	२८	३	७	१६	१६
१९	३	१३	३५	१४	३४	१९	१९
५८	३३	२८	२१	५५	९	४०	४०
५८	३६	५५	२	४४	४	३	३
०	४७	२२	५५	५४	९	११	११
मार्गी:	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	श्र.	रो.	श्ले.	मृ.	अनु	अनु	रो.
[illegible]	३	१	४	३	२	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

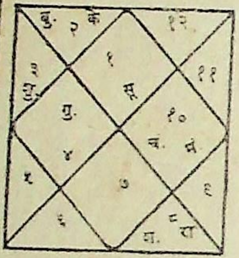

इस पक्ष में अलसी मन्दी, सुवर्ण चाँदी पीतल हल्दी मिर्च जौ चावल चना मोठ गुड़ घी तेज हों। रुई कपास सूत सन अनाज का भाव मन्दा रहे। ति० ८ से रुई कपास सूत तिल-तेल के भाव में तेजी रहे।

राजनैतिक हलचलों के कारण व्यापारी वर्ग चिन्तित रहे। बहुतों को मिलता लाभ भी हाथ न आवे। कई जगह कम्युनिष्टों से भय हो। कई जगह सीमाप्रांत की जनता में घबराहट हो।

आकाश लक्षण—ति. १ से ४ तक, तथा ति० १० से १३ तक कहीं कहीं मेघ दर्शन होगा। वायु प्रकोप से वृक्षों को हानि पहुंचेगी। उत्तर प्रदेश राजस्थान में गर्मी विशेष बढ़ने लगेगी।

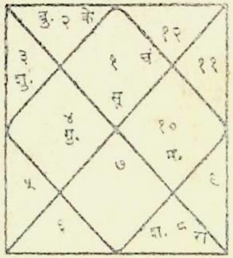

वैशाख कृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० के. दिनगण: ७६६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	१	३	२	७	७	१
२६	२२	१४	२८	८	७	१५	१५
५	१८	५५	५९	७	४	५७	५७
६	४४	४३	२३	१७	३२	२५	२५
५७	३६	१८	४	३७	४	३	३
४७	०	४९	६	३५	२०	११	११
मार्गी:	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	श्र.	रो.	श्ले.	आ.	अनु	अनु	रो.
४	४	२	४	१	२	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शकुन विचार—वैशाखवदी आठ दिना बिजली गर्जन होय। संवत अच्छा जानिये संशय करो न कोय॥
वैशाख वदी एकादशी प्रबल मेघ जो जान। धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत मान॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(... मई से २४ मई तक १९५६ ई०) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ वैशाख शुक्लपक्षः ३															तारीखें			चन्द्र	स्टैण्डर्ड टाइम				सौरसूर्यस्पष्टः			
दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि.	अं.	मु.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
३३	३८	१	शु.	२७	४१	कृ.	२९	५४	शो.	२६	२०	ब.	२७	४१	२९	११	२९	वृषे	५	३६	७	५	०	२७	२	५२
३३	४१	२	श.	२२	३५	रो.	२६	४४	अ.	१९	३५	कौ.	२२	३५	३०	१२	१	मि५४।५२	५	३६	७	५	०	२८	०	३६
३३	४५	३	र.	१६	५८	मृ.	२३	१	सु.	१२	२३	ग.	१६	५८	३१	१३	२	मिथुने	५	३५	७	६	०	२८	५८	१९
३३	४९	४	चं.	१०	५	आ.	१८	५९	धृ.	५ ४/७	५५/१०	वि.	१०	५	१जे	१४	३	मिथुने	५	३४	७	७	०	२९	५५	५९
३३	५२	५	मं.	४	५०	पुन.	१४	५०	गं.	४९	४२	बा.	४	५०	२	१५	४	क. ०।५२	५	३४	७	८	१	०	५३	३८
अवम		६	मं.	५३	५२	०		०	०		०	०		०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	० ० ०			
३३	५६	७	बु.	५२	५३	पु.	१०	४७	वृ.	४२	१५	ग.	२५	४७	३	१६	५	कक	५	३३	७	८	१	१	५१	१५
३४	०	८	गु.	४७	२५	श्ले.	६	५८	ध्रु.	३५	७	वि.	२०	९	४	१७	६	सि.६।५८	५	३२	७	९	१	२	४८	५१
३४	३	९	शु.	४२	३८	म.	३	४१	व्या	२८	२८	बा.	१५	१	५	१८	७	सिंहे	५	३१	७	१०	१	३	४६	२४
३४	७	१०	श.	३८	४०	पू.फा.	५ ३/२	३/१६	ह.	२२	३०	तै.	१०	३९	६	१९	८	कं.१५।३६	५	३१	७	१०	१	४	४३	५६
३४	११	११	र.	३५	३९	ह.	५८	२९	व.	१७	१४	ब.	७	९	७	२०	९	कंयायाम्	५	३०	७	११	१	५	४१	२६
३४	१४	१२	चं.	३३	४३	चि.	५८	५३	सि.	१२	४८	ब.	४	४१	८	२१	१०	तु.२८।४१	५	३०	७	१२	१	६	३८	५३
३४	१७	१३	मं.	३३	१	स्वा.	६०	०	व्य.	६	२१	कौ.	३	२२	९	२२	११	तुलायाम्	५	२९	७	१३	१	७	३६	२०
३४	१९	१४	बु.	३३	३७	स्वा.	०	३१	व.	६	५२	ग.	३	१९	१०	२३	१२	वृ.४७।४१	५	२९	७	१३	१	८	३३	४६
३४	२१	१५	गु.	३४	२	वि.	३	२४	प.	८	२६	वि.	३	४९	११	२४	१३	वृश्चिके	५	२९	७	१४	१	९	३१	१०

(११ मई से २४ मई तक १९५६ ई०) उत्तरायणगोलौ ग्रीष्मर्तुः।

ग्रहदर्शन—मं. पूर्वरात्रि में पूर्व में दीखेगा। बु. ति. ७ को पश्चिम में अस्त होगा। गु. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में दीखेंगे। सूर्यास्त बाद श. पूर्व में दीखेगा।

चन्द्रदर्शनम् उत्तरशृङ्गोन्नतिः, धनिष्ठा. भौमः ४२।१२ चं.बु. के.यु.
श्री परशुरामजयन्ती ३ (रात्रिप्रथमयामव्यापित्वात्) सब्बालमु. १०
भ. ४३।३१ उ. वक्री बुधः ४८।५९, आर्द्रा २ शुक्रः ५।२८, *
भ. १०।५ या. सं वृषेऽर्कः ४।११ मु. १५ पुण्यं २०।११ या
व. अनु. १ शनिः ३३।१३, चन्द्रवरुणयुति
* अक्षया ३, त्रेतायुगादिः, कल्पादिः, चं. शु. युतिः
भ. ५२।५३ उ. पश्चिमास्तो बुधः ३१।५ श्रीगंगाजन्म ७
भ. २०।९ या. चं. गु. युतिः
[] ग्रहणम्, कूर्मजयन्ती, वैशा. स्ना. स., सत्य व्र. यमाय जल—कुम्भदानम्
भ. ७।९ उ. ३५।३९ या. सा. मिथुने भानुः २५।३४ आर्द्रा ३ ॥
प्रदोषव्रतम् चं. इन्द्र युतिः ॥ शुक्रः ५।५७ मोहिनी ११ व्र.
व. रोहि. १ बुधः १५।२३ मघा. १ सिंहे गुरुः १२।१४
भ. ३३।३७ उ. कुम्भे भौमः ३।११ नृसिंहजयन्ती
भ. ३।४९ या. रोहि. रविः ३०।९ चं. श. चं. रा. युतिः चन्द्र- []

वैशाख शुक्ल ८ गुराविष्टम् ०।० के दिनगणः ७७३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	१	३	२	७	७	१
२	२६	१५	२९	१२	६	१५	१५
४८	२६	१६	३१	२	३३	३५	३५
५१	२	५३	३०	४	२८	११	११
५७	३५	१४	५	२६	४	३	३
३६	१८	२५	११	४८	२९	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	ध.	रो.	श्ले.	आ.	अनु	अनु	रो.
२	१	२	४	२	१	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में रुई के भाव में घटाबढ़ी खूब चल कर परिणाम में ३०-४० टका की तेजी हो। चांदी में भी घटाबढ़ी के साथ-२-टका की तेजी आवे। चावल चना उड़द तिल तेल। ऊन के भाव में १५।२० टका की मन्दी हो। सोना में एक टका तेजी। ति०-३ से मघ राई जौ के भाव में तेजी। गुड खण्ड घी राई सूत अनाज मन्दा। ति. ७ से रुई में मन्दे का झटका, चांदी में उथल पुथल होकर करीब ४ टका तेज। शेयरो के भाव भी तेज होंगे। ति० ३ से २४ दिन में घृत गुड खण्ड शक्कर कपूर तिल तैल एरण्ड बिनौला मूंगफली यह वस्तुयें तेज हों। गेहूँ जौ चना अनाज मन्दा। पक्षान्त में तेजी यहां पूर्णमासी को चन्द्र ग्रहण होगा। जो रुई कपास अलसी को आगे चल कर तेज करेगा। औरगुड़ खण्ड रसकस को मन्दा करैगा।

सुदूर पर्व एवं पश्चिम देशीय कई मन्त्रिमण्डलों में अकल्पित परिवर्तन होने जैसी परिस्थिति बनेगी। चोरी डाके आदि से जनता भयभीत होगी। व्यापारी वर्ग आर्थिक संकट का अनुभव करेगा।

आकाश-लक्षण—ति.-१-से-४-तक, तथा ति. ५ से ८ तक, तथा ति. १३ से १५ तक पश्चिमोत्तरीय प्रान्तों में कहीं २ बूंदा बांदी हो। वायु प्रकोप आंधी एवं कहीं अग्निकाण्ड से हानि हो।

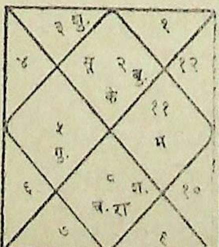

वैशाख शुक्ल १५ गुराविष्टम् ०।० के० दिनगणः ७८०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	४	२	७	७	१
९	०	१२	०	१४	६	१५	१५
३१	३२	२५	१०	३६	२	१२	१२
१०	२४	२९	४४	७	१२	५५	५५
५७	३४	३१	६	१५	४	३	३
२४	३	१६	११	३२	२६	११	११
[illegible]	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	ध.	रो.	म.	आ.	अनु	अनु	रो.
४	३	१	१	३	१	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ ज्येष्ठ कृष्णपक्षः (२५ मई से ८ जून तक १९५६ई०) उत्तरायण गोली ग्रीष्मर्तुः

ग्रहदर्शन—मं० पश्चिम रात्रि में खमध्य को आता दीखेगा । बु. ति. १० को पूर्व में उदित होगा । सूर्यास्त बाद गुरु खमध्य में शनि पूर्व में शुक्र पश्चिम में दीखेगा ।

दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि./ज्ये.	अं./म.	मु./स.	चन्द्र संचारः	स्टैण्डर्ड टाइम सू. उ.	सू. अ.	सौरसूर्यस्पष्टः उदयकाले	
३४ २२	१	शु.	३८ ३७	अनु.	७ २६	शि.	४ ५५	बा.	६ १९	१२	२५	१४	वृश्चिके	५ २९	७ १५	१ १० २८ ३२	
३४ २४	२	श.	४२ ३८	ज्ये.	१२ ४७	सि.	५ १९	तै.	१० ३७	१३	२६	१५	ध.१२।४७	५ २८	७ १५	१ ११ २५ ५३	
३४ २५	३	र.	४७ २१	मू.	१८ ४३	सा.	६ २३	व.	१४ ५९	१४	२७	१६	धनुषि	५ २८	७ १६	१ १२ २३ १३	भ. १४।५९ उ. ४७।२१ या.
३४ २७	४	चं.	५२ २६	पू.षा.	२५ १३	शु.	७ ५०	ब.	१९ ५३	१५	२८	१७	म:४१।५१	५ २८	७ १६	१ १३ २० ३१	ब. कृत्ति. ४ बुधः ३८।५०, श्रीगणेश ४ व्र.
३४ २९	५	मं.	५७ २६	उ.षा.	३१ ४७	शु.	९ ३१	कौ.	२४ ५६	१६	२९	१८	मकरे	५ २८	७ १६	१ १४ १७ ४८	
३४ ३१	६	बु.	६० ०	श्र.	३८ १	ब्र.	११ ०	ग.	२९ ३९	१७	३०	१९	मकरे	५ २८	७ १६	१ १५ १५ ४	
३४ ३२	६	गु.	१ ५३	ध.	४३ ३४	ऐ.	१२ ६	व.	१ ५३	१८	३१	२०	कु १०।४७	५ २८	७ १७	१ १६ १२ २०	भ. १।५३ उ. ३३।४४ या. वक्री शुक्रः १०।२६, पञ्चक प्रा. *
३४ ३४	७	शु.	५ ३६	श.	४८ ७	वै.	१२ २९	ब.	५ ३६	१९	जू१	२१	कुम्भे	५ २८	७ १७	१ १७ ९ ३३	जून ६ ता. ३० * १०।४७, चं. मं. यु.
३४ ३६	८	श.	८ ७	पू.भा.	५१ ३६	वि.	१२ ०	कौ.	८ ७	२०	२	२२	मी३५।४४	५ २८	७ १७	१ १८ ६ ४४	
३४ ३७	९	र.	९ ३०	उ.भा.	५३ ४५	प्री.	१० ४०	ग.	९ ३०	२१	३	२३	मीने	५ २८	७ १८	१ १९ ३ ५४	भ. ३९।३२ उ.
३४ ३९	१०	चं.	९ ३५	रे.	५४ ३९	आ.	८ १६	बि.	९ ३५	२२	४	२४	मे.५४।३९	५ २७	७ १९	१ २० १ ३	भ. ९।३५ या., शत. भौमः ३।५ पूर्वोदयो बुधः १७।२२, पञ्चक ।
३४ ४०	११	मं.	८ २४	अ.	५४ २३	सौ.	४ ५१	बा.	८ २४	२३	५	२५	मेषे	५ २७	७ १९	१ २० ५८ ११	अपरा ११ व्र. (भद्रकाली) ॥ स. ५४।३९
३४ ४२	१२	बु.	५ ५९	भ.	५३ १	शो	५५ ० / ५ २६	तै.	५ ५९	२४	६	२६	मेषे	५ २७	७ १९	१ २१ ५५ १८	प्रदोष व्र.
३४ ४३	१३	गु.	२ ३३	कृ.	५० ४८	सु.	४९ १८	व.	२ ३३	२५	७	२७	वृ.७।२७	५ २७	७ २०	१ २२ ५२ २४	भ. २।३३ उ. ३०।२४ या मृगेरविः २९।० मार्गीबुधः २७।१६ चं.बु.यु
अवम	१४	गु.	५५ ४२	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ०	
३४ ४५	३०	शु.	५३ ४	रो.	४७ ४४	धृ.	४२ ४३	चं.	२५ ३९	२६	८	२८	वृषे	५ २७	७ २१	१ २३ ४९ ३०	वट सावित्री ३० व्र., चं. सू. चं. के. यु.

ज्येष्ठ कृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० के दिन गणः ७८९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	४	२	७	७	१
१८	५	८	१	१५	५	१४	१४
६	३३	१	११	४५	२२	४४	४४
४४	२०	२१	३२	१६	३८	१८	१८
५७	३२	१८	७	४	४	३	३
११	३८	५६	२७	२५	१७	११	११
सौर	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रो.	ध.	कृ.	म.	आ.	अनु	अनु	रो.
३	४	४	१	१	१	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

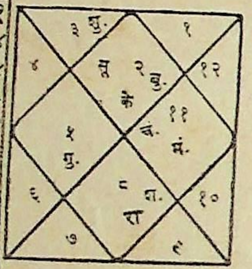

इस पक्ष में रुई पहिले तेज होकर बाद में मन्दी गिरे । सुवर्ण चाँदी में घटाबढ़ी खूब चलेगी । अलसी में २ टका तेजी । घृत, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, जौ, चना, तेज । ति० १० से रुई में मन्दे का झटका आकर तुरन्त बाद में १५।२० टका की तेजी हो । लालमिर्च, पाट, हैसियन, एरण्ड, विनौला तेज हों । कहीं कहीं कारखानों के मालिक और श्रमजीवियों में संघर्ष होते होते रुके । पूञ्जीपति पीड़ित रहें । अग्निकाण्ड से कई जगह हानि हो ।

आकाश लक्षण—ति० ३ से ६ तक तथा तिथि ८ से १० तक तथा ति० १३ से ३० तक आँधी वायु का जोर, कहीं कहीं बूंदा-बांदी का योग है ।

श. वि.—ज्येष्ठ वदी जो पंचमी बाजे दक्षिण बाय । घृत, तैल, तिल, लाभ दे आसो जाके माय ॥
ज्येष्ठ वदी मावस दिना मेघघटा हो जाय । अनावृष्टि दुर्भिक्ष हो ऐसा योग बताय ॥

ज्येष्ठकृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः ७९५

सू:	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	१	४	२	७	७	१
२३	८	६	१	१४	४	१४	१४
४९	४५	५८	५८	४४	५७	२५	२५
३०	१८	४	१३	५	३१	१४	१४
५७	३०	३	८	१८	४	३	३
६	११	३१	९	१८	२	११	११
सौर	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	श.	कृ.	म.	आ.	अनु	अनु	रोः
१	१	४	१	३	१	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ ज्येष्ठ शुक्लपक्षः (९ जून से २३ जून तक १९५६ ई०) उत्तरायणगोलो ग्रीष्मर्तुः

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma, Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ ज्येष्ठ शुक्लपक्षः ५ | तारीख | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरसूर्य स्पष्टः

(९ जून से २३ जून तक १९५६ ई०) उत्तरायणगोलो ग्रीष्मर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	मु.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
३४	४६	१	श.	४७	२६	मृ.	४४	८	शू.	३५	३७	कि.	२०	१६	२७	९	२९	मि१५।५६	५	२७	७	२१	१	२४	४६	३४
३४	४८	२	र.	४१	२६	आ.	४०	९	गं.	२८	१०	बा.	१४	२७	२८	१०	३०	मिथुने	५	२६	७	२२	१	२५	४३	३७
३४	४९	३	चं.	३५	१५	पुन.	३५	५८	वृ.	२०	३६	तै.	८	२०	२९	११	१	क. २२।१	५	२६	७	२२	१	२६	४०	३९
३४	५१	४	मं.	२९	५	पु.	३१	५०	ध्रु.	१२	५८	व.	२	१०	३०	१२	२	कर्के	५	२६	७	२२	१	२७	३७	४०
३४	५२	५	बु.	२३	१०	श्ले.	२७	५७	व्या	५/५८	३०/१९	बा.	२३	१०	३१	१३	३	सि२७।५७	५	२६	७	२३	१	२८	३४	३९
३४	५४	६	गु.	१७	३८	म.	२४	३०	व.	५१	३४	तै.	१७	३८	१अ	१४	४	सिंहे	५	२६	७	२४	१	२९	३१	३८
३४	५५	७	शु.	१२	४३	पू. फा.	२१	४१	सि.	४५	२९	व.	१२	४३	२	१५	५	कं.३६।१२	५	२६	७	२४	२	०	२८	३६
३४	५७	८	श.	८	४१	उ. फा.	१९	४५	व्य.	४०	४	व.	८	४१	३	१६	६	कन्यायाम्	५	२६	७	२४	२	१	२५	३३
३४	५८	९	र.	५	३४	ह.	१८	४२	व.	३५	२९	कौ.	५	३४	४	१७	७	तु.४८।४४	५	२६	७	२५	२	२	२२	३०
३५	०	१०	चं.	३	३०	चि.	१८	४७	प.	३१	५१	ग.	३	३०	५	१८	८	तुलायाम्	५	२६	७	२६	२	३	१९	२६
३५	१	११	मं.	२	३९	स्वा.	२०	७	शि.	२९	१५	वि.	२	३९	६	१९	९	तुलायाम्	५	२६	७	२६	२	४	१६	२२
३५	३	१२	बु.	३	५	वि.	२२	४३	सि.	२७	३७	बा.	३	५	७	२०	१०	वृ.७।४	५	२६	७	२६	२	५	१३	१७
३५	४	१३	गु.	४	५५	अनु.	२६	३१	सा.	२६	५९	तै.	४	५५	८	२१	११	वृश्चिके	५	२५	७	२७	२	६	१०	१२
३५	६	१४	शु.	७	४८	ज्ये.	३१	२९	शु.	२७	१३	व.	७	४८	९	२२	१२	ध.३१।२९	५	२५	७	२७	२	७	७	६
३५	४	१५	श.	११	४६	मू.	३७	१३	शु.	२८	१२	ब.	११	४६	१०	२३	१३	धनुषि	५	२६	७	२८	२	८	४	१

ग्रहदर्शन–शु. ति. ९ को पश्चिम में अस्त होगा। गु. सूर्यास्तबाद पश्चिम में, शनि पूर्व से खमध्य की ओर आता हुआ मं. पूर्वरात्रि में पूर्व मं. बु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा।

चन्द्रदर्श.–उत्तरशृङ्गोन्नतिः, पु.२ वरुण (हर्शल)१९।२०, चं.शु.यु.
व. आर्द्रा २ शुक्रः ५२।५४ जिल्काद मु.११ चं. व. यु.
भ. २।१० उ. २९।५ या.
चं. गु. यु.
सं. मिथुनेऽर्कः २९।५३ मु. ३० पुण्यं १३।५३ उ.
भ. १२।४३ उ. ४०।४२ या.
रोहि. ६ बुधः ५१।५१
मघा २ गु. २६।५७व. आर्द्रा१शु.५७।४७ पश्चिमास्तः शु.८।१०+
भ. ३३।४ उ. श्रीगंगादशहरा चं. इन्द्र यु. +शु.अ.
भ. २।३९ या. निर्जला ११ व्र.
सा. कर्के भानुः५५।२४ रो. २बु. ५२।१५ प्रदोष व्र. दक्षिणाय.नम्*
आर्द्रा रविः ३१।२५ चं.रा. यु. *वर्षर्तु प्रा. चं. श. यु.
भ. ७।४८ उ. ३९।४७ या. सत्यव्रतम् सू. शु. यु.
रो. ३ बुधः ४८।७ व. मृग. ४ शुक्रः ३४।२६

ज्येष्ठ शुक्ल ८ शनाविष्ट मू ०।० के. दिनगणः ८०३

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	२	१०	१	४	२	७	७	१
	१	१२	६	३	११	४	१३	१३
	२५	४७	२६	६	११	२६	५९	५९
	३३	१३	३८	९	०	२५	४८	४८
	५६	२८	३५	९	३६	३	३	३
	५७	५८	६	४४	१४	४३	११	११
क्रान्ति		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	मू.	श.	कृ.	म.	आ.	अनु	अनु	रो.
	२	२	४	१	२	१	४	२
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में पहिले रुई में मन्दी होकर पीछे तेजी आवे। चाँदी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो। शेयरों के भाव मंदे में रहें। ति. ७ तक गेहूँ जौ चना तेज, अलसी एरण्ड गुड़ बिनौला मूंगफली मंदी हो, ति. ९ से रुई के भाव में कुछ मन्दा। सुवर्ण चाँदी अनाज के भाव में तेजी। सूत कपड़ा घी तेल मन्दा। यहाँ शुक्रास्त देवता गण में हुआ है। अतः गुजरात मालवा में भय। ति १२ से रस कस सूत के भाव में कुछ तेजी आवे। योरोपीय देशों में तथा पश्चिमी अफ्रीका में विस्मय जनक घटनायें होंगी। कहीं पूर्वीयजनता में भय का संचार होगा। रेलवे आदि सुविधा होने पर भी कारणवशात् यात्रा बढ़ने से यात्री कष्ट पावें। आकाश लक्षण–ति. २ से ६ तक तथा ति. १३ से १५ तक वायु के साथ दक्षिणभारत मुम्बई आदि में वर्षा होगी। अन्यत्र उत्तर में कहीं बूंदाबाँदी होगी। श. वि.—ज्येष्ठ मास में आर्द्रा से चित्रा तक जोय। नभ में चमके बिजली अथवा बादल होय।
चौमासा बरसे नहीं सारा सूखा जाय। जितना भी यह योग हो उतना जल टपकाय।
ज्येष्ठ सुदी सप्तमदिने बिजुरी मेघ निहार। दक्षिण दिशि वायु चले तिल से लाभ अपार

ज्येष्ठ शुक्ल १५ शनाविष्टम ०।० के. दिनगणः ८१०

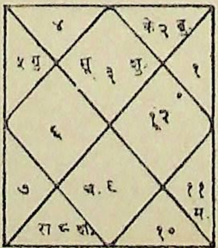

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	२	१०	१	४	२	७	७	१
	८	१६	१५	४	७	४	१३	१३
	४	३	४४	१२	०	१	३७	३७
	१	२२	२	१८	१४	४८	३३	३३
	५६	२६	६९	९	३५	३	३	३
	५५	४५	४७	४४	१५	१५	११	११
क्रान्ति		मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
	आ.	श.	रो.	भ.	आ.	अनु	अनु	रो.
	१	३	२	२	२	२	४	२
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

ग्रहदर्शन–शुक्र ति. ४ को पूर्व में उदित होगा । गु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में, शनि पूर्व से खमध्य की ओर आता हुआ, म. पूर्व रात्रि में पूर्व में और बु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा ।

दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	अं.	मु.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले	
३२ ३	(१)	र.	१६ २५	पू.षा.	४३ ३६	ब्र.	२९ ३८	कौ.	१६ २५	११	२४	१४	धनुषि	५ २७	७ २८	२ ९ ० ५५	
३५ १	२	चं.	२१ २६	उ. षा.	५० १३	ऐं.	३१ ३१	ग.	२१ २६	१२	२५	१५	म. ०।१५	५ २७	७ २७	२ ९ ५७ ४९	भ. ५३।५५ उ.
३५ ०	३	मं.	२६ २५	श्र.	५६ ३१	वै.	३२ ५६	वि.	२६ २५	१३	२६	१६	मकरे	५ २७	७ २७	२ १० ५४ ४२	भ. २६।२५ या., रोहि. ४ बुधः २७।२९ श्रीगणेश ४ व्र.
३४ ५८	४	बु.	३० ५२	ध.	६० ०	वि.	३४ ७	बा.	३० ५२	१४	२७	१७	कुं २९।२१	५ २८	७ २७	२ ११ ५१ ३३	पूर्वोदयः शुक्रः १९।१६ पञ्चक प्रा. २९।२१ [शु.उ.]
३४ ५७	५	गु.	३४ ३६	ध.	२ १२	प्री	३४ ४०	कौ.	२ ४४	१५	२८	१८	कुम्भे	५ २९	७ २७	२ १२ ४८ २४	मृग. १ बुधः ५०।२५ अनु. ३ राहुः रोहि. १ केतुः ३१।६, चं.मं.यु.
३४ ५५	६	शु.	३७ ७	शत.	७ ०	आ.	३४ २०	ग.	५ ५१	१६	२९	१९	मी५४।४५	५ २९	७ २७	२ १३ ४५ १६	भ. ३७।७ उ. व. मृग. ३ शुक्रः १८।३३
३४ ५४	७	श.	३८ ३६	पू. भा.	१० ४३	सौ.	३३ १०	वि.	७ ५१	१७	३०	२०	मीने	५ ३०	७ २७	२ १४ ४२ ८	भ. ७।५१ या.
३४ ५२	८	र.	३८ ४३	उ. भा.	१३ ९	शो	३० ५५	बा.	८ ३९	१८	१जु	२१	मीने	५ ३०	७ २७	२ १५ ३९ ०	मृग. २ बुधः ०।५९ जुलाई ७ ता. ३१
३४ ५०	९	चं.	३७ ३७	रे.	१४ १७	अ.	२७ ४२	तै.	८ १०	१९	२	२२	मे. १४।१७	५ ३१	७ २७	२ १६ ३५ ५२	पू. भा. भौमः २०।१८ पञ्चक स. १४।१७
३४ ४९	१०	मं.	३५ ११	अ.	१४ १५	सु.	२३ २८	व.	६ २४	२०	३	२३	मेषे	५ ३१	७ २७	२ १७ ३२ ४४	भ. ६।२४ उ. ३५।११ या., मृग. ३ मिथुने बुधः २।५३
३४ ४७	११	बु.	३१ ४८	भ.	१३ ५	धृ.	१८ २३	ब.	३ २९	२१	४	२४	वृ. २७।३४	५ ३२	७ २७	२ १८ २९ ३६	मृग ४ बुधः ५७।४७ योगिनी ११ व्र.
३४ ४६	१२	गु.	२७ २९	कृ.	११ २	शू.	१२ ३२	तै.	२७ २९	२२	५	२५	वृषे	५ ३२	७ २६	२ १९ २६ २८	पुन. रविः ३५।२३, प्रदोष व्र. चं.के.यु. * चं. बु. यु.
३४ ४४	१३	शु.	२२ २२	रो.	८ ८	गं.	[illegible]	व.	२२ २२	२३	६	२६	मि३६।२२	५ ३२	७ २६	२ २० २३ २०	भ. २२।२२ उ. ४९।३२ या. आर्द्रा १ बुधः ४७।३६ चं.शु.युतिः,
३४ ४३	१४	श.	१६ ४२	मृ.	४ ३६	ध्रु.	५१ ३८	श.	१६ ४२	२४	७	२७	मिथुने	५ ३३	७ २६	२ २१ २० १२	मघा ३ गुरुः १९।४९ व.मृग. २ वृषे शुक्रः ३५।१४ पितृ कार्ये अमा*
३४ ४१	३०	र.	१० ४०	आ.	[illegible]	व्या	४४ ४	ना.	१० ४०	२५	८	२८	कं. ४२।३४	५ ३४	७ २६	२ २२ १७ ३	आर्द्रा २ बुधः ३०।२३ व. विशा. ४ शनिः २२।४४, पूर्वास्तो × ×बुधः ३३।७ देवकार्ये अमा, र. चं. यु.

आषाढ़ कृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० कं० दिनगणः ८१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१०	१	४	२	७	७	१
१५	१९	२६	५	२	३	१३	१३
३९	२८	३८	३२	२२	३७	१२	१२
०	२३	२४	४६	५४	४४	६	६
५६	२३	९६	१०	२८	२	३	३
५२	४६	४८	२४	३५	४२	११	११
गतिः	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आ. ३	श. ४	मृ. १	म. २	मृ. ३	अनु. १	अनु. ३	रो. १

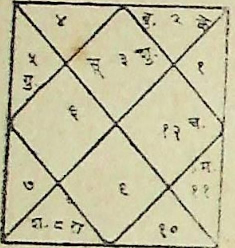

इस पक्ष मे हैजा आदि रोग भय हो । गेहूँ चना ज्वार आदि अनाज मन्दे रहें । ति० ५ से रंगीन वस्त्र रूई सूत चावल घी चांदी सोना तेज । ति० ३ से ३५ दिन के अन्दर किसी सम्मानित जनप्रिय व्यक्ति की मृत्यु हो । ति० ६ से रूई तेज होकर फिर मन्दी हो । अनाज मन्दा । तिथि १० से तिल-तेल सुपारी सूत अलसी तेज । सोना चाँदी में घटावढ़ी होकर मन्दी आवे । पक्षान्त में अनाज का रुख तेज हो । ग्रह योग देखते हुए ज्ञात होता है कि कई राष्ट्रों को अपनी निर्धारित-नीति में कुछ परिवर्तन करना पड़ेगा । सरकार जनता के हितार्थ बहुत प्रयत्नशील रहेगी, तदर्थ खर्च भी विशेष होगा । आ. ल.—इस पक्ष में प्रायः वर्षा कहीं न नहीं होती रहेगी तापमान कम होगा ति. ५ से ९ तक तथा ति. ११ से ३० तक बादल वर्षा के योग हैं ।

श. वि.–आषाढ़वदी जो अष्टमी बादल उगे चन्द । वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुख द्वन्द ॥
काला बादल करबरा धौलो करे सुकाल । चन्दा उगे निर्मला निश्चय पड़े दुकाल ।
आषाढ़वदी नौमी दिना बिजली बादल होय । धान्य बेच खेती करो संग्रह [illegible] न कोय ।

आषाढ़ कृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० कें० दिनगणः ८२५

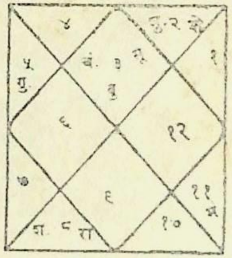

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
२	१०	२	४	१	७	७	१
२२	२२	९	६	२९	३	१२	१२
१७	४	०	४७	५३	२०	४९	४९
३	५६	९	१८	५६	४७	५१	५१
५६	२०	११८	१०	१२	२	३	३
५१	३४	१०	५८	३२	४	११	११
गतिः	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पु. १	[illegible]	आ. १	म. ३	मृ. २	अनु १	अनु ३	रो. १

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ आषाढ़ शुक्लपक्षः ७ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाइम | सौरसूर्यस्पष्टः | (९ जुलाई से २२ जुलाई तक १९५६ ई०) दक्षिणायनम्, उत्तरगोलः, वर्षर्तुः

...बुध अस्त है । गु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में, शनि पूर्व से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तरगोलः, वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—बुध अस्त है। गु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में, शनि पूर्व से खमध्य की ओर आता हुआ, मं पूर्वरात्रि में पूर्व में और शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा।

दि.मा.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि.	श्रा.	मु.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदयकाले	
३४ ४०	१ च.	४ ३०	पु.	५२ १९	ह	३६ २४	व.	४ ३०	२६	९	२९	कर्के	५ ३४	७ २६	२ २३ १३ ५४	चन्द्रदर्शनं सूक्ष्मं उ. शृङ्गोन्नतिः, मार्गी इन्द्रः (नेपच्यून) ०।०, ॥
अवम	२ चं.	५३ ४८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	॥ रथयात्रा । चं.वरु.यु.
३४ ३८	३ मं.	५२ २०	श्ले.	४८ २१	व.	२८ ५३	तै.	२५ १९	२७	१०	१	सि ४८।२१	५ ३५	७ २६	२ २४ १० ४६	आर्द्रा ३ बुधः ९।४९, जिल्हेज मु. १२
३४ ३६	४ बु.	४६ ४६	म.	४४ ४६	सि.	२१ ३६	व.	१९ ३३	२८	११	२	सिंहे	५ ३५	७ २५	२ २५ ७ ३९	भ. १९।३३ उ. ४६।४६ या आर्द्रा. ४ बुधः ४७।३ चं.गु.यु.
३४ ३५	५ गु.	४१ ४६	पू. फा.	४१ ४८	व्य.	१४ ४६	ब.	१४ १६	२९	१२	३	कं ५६।१५	५ ३५	७ २५	२ २६ ४ ३३	× श्रीगुरुव्यासपू., वायुपरीक्षा मन्वादिः, सत्यव्रतम्, बु. वरुणयु.
३४ ३३	६ शु.	३७ ३६	उ. फा.	३९ ३९	व.	८ ३३	कौ.	९ ४१	३०	१३	४	कन्यायाम्	५ ३६	७ २५	२ २७ १ २८	पुन. १ बुधः २२।४२
३४ ३२	७ श.	३४ २४	ह.	३८ २१	प	[illegible]	ग.	६ ०	३१	१४	५	कन्यायाम्	५ ३६	७ २५	२ २७ ५८ २३	भ. ३४।२४ उ. पुन. २ बुधः ५६।५६ मार्गी शुक्रः ३९।४२
३४ ३०	८ र.	३२ १२	चि.	३८ १०	सि.	५४ २४	वि.	३ १८	३२	१५	६	तु. ८।१५	५ ३७	७ २५	२ २८ ५५ १९	भ. ३।१८ या. चं. वरुण यु.
३४ २९	९ चं.	३१ १६	स्वा.	३९ ९	सा.	५१ ३४	बा.	१ ४४	अ१	१६	७	तुलायाम्	५ ३८	७ २५	२ २९ ५२ १६	सं. कर्केऽर्कः ८।९ मु. १५ पुण्यं ८।९ या. पुन. ३ बुधः २९।४०
३४ २७	१० मं.	३१ ३३	वि.	४१ २७	शु.	४९ ४४	तै.	१ २४	२	१७	८	बृ. २५।५३	५ ३८	७ २५	३ ० ४९ १४	चं. श. युतिः ❋ देवशयनी ११ व्र., चातुर्मास्य व्र. नियमाद्यारम्भः
३४ २६	११ बु.	३३ १७	अनु.	४४ ५९	शु.	४८ ५६	व.	२ २५	३	१८	९	बृश्चिके	५ ३८	७ २४	३ १ ४६ १३	भ. २।२५ उ. ३३।१७ या. पुन. ४ कर्के बुधः १।४७ चं.रा.यु. ❋
३४ २४	१२ गु.	३६ १	ज्ये.	४९ ४१	ब्र.	४८ ५९	ब.	४ ३९	४	१९	१०	ध. ४९।४१	५ ३९	७ २४	३ २ ४३ ११	पुष्य २ वि. ३८।४६ पुष्य १ बुधः ३४।५६, सू. बु. यु.
३४ २२	१३ शु.	३९ ५३	मू.	५५ ४५	ऐं.	४९ ५०	कौ.	७ ५७	५	२०	११	धनुषि	५ ३९	७ २४	३ ३ ४० १०	मृग. ३ मिथुने शुक्रः ३८।१०, प्रदोष व्र.
३४ २१	१४ श.	४४ २९	पू. षा.	६० ०	वै.	५१ ११	ग.	१२ ११	६	२१	१२	धनुषि	५ ४०	७ २३	३ ४ ३७ ९	भ. ४४।२९ उ. पुष्य २ बुधः ९।१६
३४ १९	१५ र.	४९ २९	पू. षा.	१ ३०	वि.	५२ ५३	वि.	१६ ५९	७	२२	१३	म. १८।७	५ ४०	७ २३	३ ५ ३४ ८	भ. १६।५९ या. सा. सिंहे भानुः ३३।१६ पुष्य३ बुधः ४४।५१ ×

आषाढ़ शुक्ल ८ रवाविष्टम् ०।० के० दिनगणः ८३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१०	२	४	१	७	७	१
२८	२४	२३	८	२९	३	१२	१२
५५	१९	२६	५	११	८	२७	२७
१९	२२	३२	३३	१९	१४	३५	३५
५६	१७	१२८	११	२	१	३	३
५६	२३	५६	२८	३०	२५	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन ३	[illegible]	पुन २	म. ३	मृ. २	वि. ४	अनु ३	रो. १

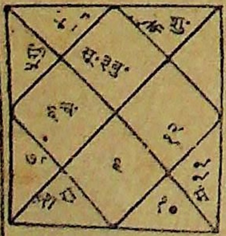

इस पक्ष में व्यापारियों को सुख तथा लाभ हो। रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी हो। ति० ५ तक चांदी में तेजी का झटका। मूंग मोठ चना गेहूं चावल अलसी तेज। यहाँ किसी भी अनाज के वायदे का सौदा करो तो तेजी में रहो लाभ में रहोगे। ति० ६ से रुई सूत मन्दा। पक्षादि में धान्य गुड़ संग्रह से लाभ हो। ति० १० के बाद रुई खासी मन्दी। सोना-चांदी तेज।

आकाश लक्षण—ति० १ से ३ तक तथा ति० ६ से १३ तक पूर्वोत्तरीय प्रान्तों तथा राजस्थान में वायु बादल वर्षा के योग हैं।

शकुन विचार—पूनम नौमी षाढ़ सुदी, निर्मल निसामयङ्क।
दुर्भिक्ष निश्चय जानिये, रुले प्रजा अरु रङ्क॥

आषाढ़ सुदी नौमी दिना ना बादल ना बीज।
हलफाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥

आषाढ़ शुक्ल १५ रवाविष्टम् ०।० के० दिनगणः ८३९

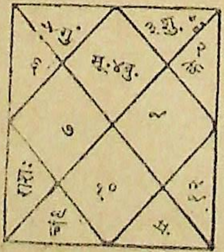

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	३	४	२	७	७	१
५	२६	८	९	०	३	१२	१२
३४	९	२६	२७	२१	०	५	५
८	४८	३४	८	१६	०	१८	१८
५६	१३	१२५	११	१७	०	३	३
५९	२१	१	५१	४३	४९	११	११
[illegible]	मा	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पु. १	पूभ २	पु. २	म. ३	मृ. ३	वि. ४	अनु ३	रो. १

सूर्योदय के साथ ही मेघ गर्जना होय।
प्रहर एक या दोय में वर्षा अच्छी होय॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ श्रावणकृष्णपक्षः ८ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्डटाइम | सौरसूर्यस्पष्टः | (२३ जुलाई से ६ अगस्त १९५६ ई०) दक्षिणायनम्, उत्तरगोलः वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—बुध ति. ९ को पश्चिम म उदय होगा। गु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में, शनि सूर्यास्त बाद मध्य की ओर जाता हुआ, मं. पूर्व रात्रि में पूर्व में, शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा।

दि.मा.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. श्राव.	अं. जुलाई	मु. जिल्हि.	चन्द्र सञ्चार	सू. उ.	सू. अ.	सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले	
३४ १७	१ चं.	५४ ३४	उ.षा.	८ ३	प्री.	५४ ३०	बा.	२२ १	८	२३	१४	मकरे	५ ४१	७ २२	३ ६ ३१ ९	
३४ १४	२ मं.	५९ ५	श्र.	१४ २७	आ	५५ ४२	तै.	२६ ४९	९	२४	१५	कु ४७।२३	५ ४१	७ २२	३ ७ २८ १०	पुष्य ४ बुधः २१।३९, मघा ४ गुरुः ४५।५१, पंचकप्रा. ४७।२३
३४ ११	३ बु.	६० ०	ध.	२० २०	सौ	५६ २३	व.	३० ५९	१०	२५	१६	कुम्भे	५ ४२	७ २१	३ ८ २५ १२	भ. ३०।५९ उ., सू. व. युतिः
३४ ७	३ गु.	२ ५३	श.	२५ २१	शो.	५६ १०	वि.	२ ५३	११	२६	१७	कुम्भे	५ ४२	७ २१	३ ९ २२ १६	भ. २।५३ या., श्ले. १ बुधः०।१५ श्रीगणेश ४ व्र., चं. मं. यु.
३४ ३	४ शु.	५ ३४	पू.भा.	२९ १५	अ	५५ ८	बा.	५ ३४	१२	२७	१८	मी १३।१६	५ ४३	७ २०	३ १० १९ २१	श्ले. २ बुधः ४१।५८
३४ ०	५ श.	७ ९	उ.भा.	३२ ०	सु	५३ ४	तै.	७ ९	१३	२८	१९	मीने	५ ४३	७ १९	३ ११ १६ २७	
३३ ५७	६ र.	७ २१	रे.	३३ २८	धृ	४९ ५८	व.	७ २१	१४	२९	२०	मे. ३३।२८	५ ४४	७ १९	३ १२ १३ ३५	भ. ७।२१ उ. ३६।५० या., श्ले. ३ बुधः २४।२८, मृग ४ शुक्रः—
३३ ५३	७ चं.	६ २०	अ.	३३ ४१	शू.	४५ ५२	ब.	६ २०	१५	३०	२१	मेषे	५ ४५	७ १९	३ १३ १० ४४	—३७।२०, पंचकस. ३३।२८
३३ ५०	८ मं.	४ ३	भ.	३२ ५१	ग.	४० ५७	कौ.	४ ३	१६	३१	२२	वृ. ४७।२२	५ ४५	७ १८	३ १४ ७ ५५	श्ले ४ बुधः१०।४मार्गी शनिः २०।०
३३ ४७	९ बु.	० ४५	कृ.	३० ५६	वृ	३५ १२	ग.	० ४५	१७	अ १	२३	वृषे	५ ४६	७ १८	३ १५ ५ ६	भ. २८।३८ उ.५६।३१ या., मघा १सिंहे बुधः ५८।१८, पश्चि*
क्षय	१० बु.	५५ ४६	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	* मोदयोबुधः १८।१९ अगस्त ८ ता.३१,जन्मदि श्रीलोकमान्य +
३३ ४३	११ गु.	५१ २७	रो.	२८ १२	ध्रु	२८ ४८	ब.	२३ ५९	१८	२	२४	मि ५६।२९	५ ४७	७ १७	३ १६ २ १८	श्ले. रविः३९।३२कामदा११ व्र. स्मार्तानाम् + तिलक चं.के.यु.
३३ ४०	१२ शु.	४५ ५०	मृ.	२४ ४७	व्या	२१ ४७	कौ.	१८ ३८	१९	३	२५	मिथुने	५ ४८	७ १५	३ १६ ५९ ३१	मघा २ बुधः ४९।२६ कामदा ११ वैष्णवानाम् चं.शु. यु.
३३ ३६	१३ श.	३९ ५३	आ.	२० ५५	ह	१४ २६	ग.	१२ ५१	२०	४	२६	मिथुने	५ ४९	७ १४	३ १७ ५६ ४६	भ.३९।५३ उ., आर्द्रा १ शुक्रः २५।५० शनिप्रदोष व्र.
३३ ३३	१४ र.	३३ ४०	पुन.	१६ ४९	व	६/५९ ५२/६	वि.	६ ४६	२१	५	२७	क. २।५०	५ ४९	७ १३	३ १८ ५४ २	भ. ६।४६ या., मघा ३ बुधः ४३।२२, चं. वरुण यु.
३३ ३०	३० चं.	२७ २९	पुष्य	१२ २६	व्य	५१ ३४	च.	० ३४	२२	६	२८	कर्के	५ ५०	७ १३	३ १९ ५१ १९	पुष्य ३ वरुणः (हर्शल) ३३।३ हरियाली ३० सोमवती,चं.सू.यु,

श्रावण कृष्ण ८ भौम इष्टम् ०।० के. दिनगणः ८४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	३	४	२	७	७	१
१४	२७	२६	११	४	२	११	११
७	४७	२१	१५	२	५६	३९	३९
५५	७	१५	२४	४०	३	४१	४१
५७	७	१११	१२	३३	०	३	३
११	३९	४३	१५	८	२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.	पू.भा.	श्ले.	म.	मृ.	वि.	अनु.	रो.
४	३	३	४	४	४	३	१

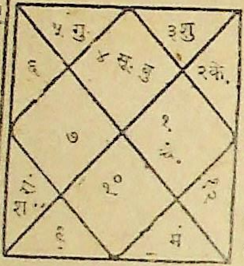

इस पक्ष में रसकस रुई तेज, चाँदी के भाव में घटावढ़ी बहुत हो। सुवर्ण तेज, घास लकड़ी तथा चौपाये पशुओं का भाव तेज हो। यहां सरसों की तेजी चल रही हो तो ति. ६ के लगभग बेचे तो जल्दी लाभ हो। ति. १० से रुई बिनौला गेहूं चावल उड़द मजीठ तेज हो। अलसी रसकस भी तेजी में रहें।

आकाश लक्षण—ति. ३ से ६ तक तथा ति. ९ से ११ तक और ति. १४।३० को कहीं कहीं वर्षा होगी। राजस्थान मध्यभारत में खण्ड वृष्टि के योग हैं। कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से फसल को हानि पहुँचेगी।

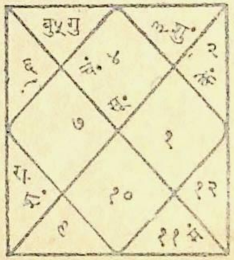

श्रावण कृष्ण ३० चन्द्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः ८५४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	४	४	२	७	७	१
१९	२८	७	१२	७	२	११	११
५१	२३	८	२९	४०	५७	१७	१७
१९	३२	५३	३३	३१	५०	३६	३६
५७	३	१०२	१२	३९	०	३	३
१७	४९	५७	२९	५३	३८	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्ले.	पू.भा	म.	म.	आ.	वि.	अनु	रो.
१	३	३	४	१	४	३	१

शकुन विचार—श्रावण पहली पंचमी, वर्षे करे निहाल। पवन चलै तो अति बुरी पड़े हलाहल काल॥

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ श्रावण शुक्लपक्षः ९ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरसूर्य स्पष्टः |(७ अग. से २१ अग. १९५६ई०) दक्षिणायनम्, उत्तरगो.वर्षर्तुः

हि. अं. मु. | ग्रहदर्शन—बुध सूर्यास्तबाद पश्चिम में शनि मध्य की ओर जाता

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहदर्शन—बुध सूर्यास्तवाद पश्चिम में शनि खमध्य की ओर जाता हुआ मं. पूर्वरात्रि पूर्व में शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। गु. ति. ४ को अस्त होगा।

दि. मा.	ति. वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. श्राव.	अं. अग.	मु. मुह.	सञ्चार:	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले	
३३ २७	१ म.	२१ ३१	श्ल.	८ ३०	व.	४३ १२	व.	२१ ३१	२३	७	२९	सि ८।३०	५ ५१	७ १२	३ २० ४८ ३८	मघा ४ बुध: ४०।३८ नक्तव्रतारम्भ: चं.बु.यु.
३३ २३	२ बु.	१५ ५६	म.	४ ४७	प.	३७ १३	कौ.	१५ ५६	२४	८	३०	सिंहे	५ ५१	७ १२	३ २१ ४५ ५९	चन्द्रदर्शनम् उत्तरश्रृङ्गोन्नति:, चं. गु. यु.
३३ १९	३ गु.	१० ५६	पू. फा.	१/५६ ३६/५८	शि.	३० ४८	ग.	१० ५६	२५	९	१	कं.१६।१४	५ ५१	७ १०	३ २२ ४३ २२	म. ३८।४९ उ.,पू.फा १बुध:४१।३०,आर्द्रा२शुक्र:२३।४८, मोह.+
३३ १५	४ शु.	६ ४३	ह.	५७ ४५	सि.	२५ ४	वि.	६ ४३	२६	१०	२	कन्यायाम्	५ ५२	७ ९	३ २३ ४० ४५	म.६।४३या.,पू.फा १गु. १।५०,गुरुसिंहांशकप्रारम्भ:
३३ १२	५ श.	३ २७	चि.	५७ १५	सा.	२० ८	बा.	३ २७	२७	११	३	तु.२७।३०	५ ५३	७ ८	३ २४ ३८ ९	पू.फा २बुध:४६।२० नागपंचमी चं. इं. यु.
३३ ८	६ र.	१ १३	स्वा.	५७ ५८	शु.	१९ ३	तै.	१ १३	२८	१२	४	तुलायाम्	५ ५४	७ ७	३ २५ ३५ ३४	वक्री भौम:४४।१३ .+मु.१स. १३७६ हिजरी, संधारा ३
३३ ५	७ चं.	० १४	वि.	५६ ५७	शु.	१२ ५९	व.	० १४	२९	१३	५	वृ.४४।२७	५ ५४	७ ७	३ २६ ३३ ०	म. ०।१४उ.३०।२२या.,पू.फा ३बुध:५५।२४आर्द्रा३शुक्र: ५२।२४*
३३ १	८ मं.	० ३०	अनु.	६० ०	ब्र.	१० ५४	व.	० ३०	३०	१४	६	वृश्चिके	५ ५५	७ ६	३ २७ ३० २८	श्री दुर्गा८, मेला श्रीनयना देवी व चिन्तपूरणी, चं.रा.यु.
३२ ५७	९ बु.	२ ९	अनु.	३ १३	ऐं.	९ ५२	कौ.	२ ९	३१	१५	७	वृश्चिके	५ ५५	७ ५	३ २८ २७ ५६	भारतस्वातन्त्र्योत्सव: जैहिंदसं.१० *तुलसी जयन्ती, चं.श.यु.
३२ ५४	१० गु.	४ ५०	ज्ये.	७ ३५	वै.	९ ४०	ग.	४ ५०	भा१	१६	८	ध.७।३५	५ ५५	७ ४	३ २९ २५ ३२	म.३६।४५उ.,सं. मघा सिंहेऽर्क: ३५।५५ मु.३०पुण्यं १९।५५उ.,×
३२ ५०	११ शु.	८ ४१	मू.	१२ ५९	वि.	१० १८	वि.	८ ४१	२	१७	९	धनुषि	५ ५६	७ ३	४ ० २३ ७	म.८।४१या.,आर्द्रा४शुक्र:५८।२५ पवित्रा ११ व्र.
३२ ४६	१२ श.	१३ १५	पू. षा.	१९ ४	प्री.	११ ३६	बा.	१३ १५	३	१८	१०	म.३५।४२	५ ५७	७ २	४ १ २० ४३	उ.फा १ बुध: २८।५८ शनि प्रदोषव्र. ×पू.फा४बुध: ९।२५
३२ ४३	१३ र.	१८ १५	उ. षा.	२५ ३५	आ.	१३ ६	तै.	१८ १५	४	१९	११	मकरे	५ ५८	७ १	४ २ १८ २०	() मेला अमरनाथ(काश्मीर) पं.प्रा.५।१ []९।२५ [गु.अ.]
३२ ३९	१४ चं.	२३ १९	श्र.	३२ १	सौ.	१४ ३९	व.	२३ १९	५	२०	१२	मकरे	५ ५८	७ ०	४ ३ १५ ५९	म.२३।१९उ.५५।३७या.,उ.फा २कं. बुध:५५।५४, अस्तो गुरु: []
३२ ३५	१५ मं.	२७ ५५	ध.	३८ १	शो.	१५ ५४	व.	२७ ५५	६	२१	१३	कु. ५।१	५ ५८	६ ५९	४ ४ १३ ३९	पुन.१शु. ५०।५१ रक्षाबंधनम् (रखड़ी), ऋषितर्पणम्, सत्यव्र.()

श्रावण शुक्ल ८ भौम इष्टम् ०।० के. दिनगण: ८६२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	४	४	२	७	७	१
२७	२८	२०	१४	१३	३	१०	१०
३०	३५	७	१०	२५	५	५२	५२
२८	४८	१	९	५३	३८	९	९
५७	१	६०	१२	४७	१	३	३
२८	२३	२४	४३	२६	२५	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्ले	पूभ	पू.फा	पू.फा	आ.	वि.	अनु	रो.
४	३	३	१	३	४	३	१

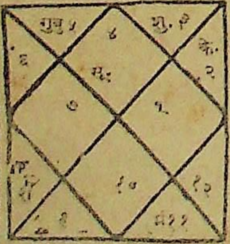

इस पक्ष में प्रजा में रक्तविकार से कष्ट हो कहीं परस्पर सङ्घर्ष रहे। रुई में घटाबढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। घी तेल चाँदी सोना में तेजी। ति. ७ से गेहूँ आदि में कुछ तेजी, गुड़ में मन्दापन हो। ति. ८ से सट्टे के व्यापार में विशेष उथल पुथल होगी व्यापारी लोग सावधानी से काम करें। ति. ११ से रुई में मन्दी का झटका आवेगा। सरसों मिर्च हींग तेज होंगे।

आकाश लक्षण—

ति. २ से ११ तक तथा ति. १४।१५ को कहीं कम कहीं अधिक वर्षा होगी। तूफान से भी कई जगह हानि होगी।

शकुन विचार—

श्रावणशुक्ला पंचमी और छठ को जान।
कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष पिछान।

श्रावणशुक्ल १५ भौम इष्टम् ०।० के. दिनगण: ८६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	२	७	७	१
४	२८	०	१५	१९	३	१०	१०
१३	१२	५	४०	१५	१७	२९	२९
३९	१२	२९	०	३८	३७	५३	५३
५७	५	७८	१२	५२	२	३	३
४०	३८	२०	५६	३०	५	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ.	वि.	अनु	रो.
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	४	३	१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ श्रावणकृष्णपक्षः ८									तारीखें			चन्द्र	स्टैण्डर्डटाइम		सौरसूर्यस्पष्टः
दि.मा.	ति.वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	हि. श्राव.	अं. जुलाई	मु. जि.	सञ्चार	सू.उ.	सू.अ.	उदय काले
३४ १७	१ च.	५४ ३४	उ.षा.	८ ३	प्री	५४ ३०	बा.	२२ १	८	२३	१४	मकरे	५ ४१	७ २२	३ ६ ३१ ९
३४ १४	२ मं.	५६ ५	श्र.	१४ २७	आ	५५ ४२	तै.	२६ ४६	९	२४	१५	कुं ४७।२३	५ ४१	७ २२	३ ७ २८ १०
३४ ११	३ बु.	६० ०	ध.	२० २०	सौ	५६ २३	व.	३० ५६	१०	२५	१६	कुम्भे	५ ४२	७ २१	३ ८ २५ १२
३४ ७	३ गु.	२ ५३	श.	२५ २१	शो.	५६ १०	वि.	२ ५३	११	२६	१७	कुम्भे	५ ४२	७ २१	३ ९ २२ १६
३४ ३	४ शु.	५ ३४	पू.भा.	२९ १५	अ	५५ ८	बा.	५ ३४	१२	२७	१८	मी१३।१६	५ ४३	७ २०	३ १० १९ २१
३४ ०	५ श.	७ ९	उ.भा.	३२ ०	सु	५३ ४	तै.	७ ९	१३	२८	१९	मीने	५ ४३	७ १९	३ ११ १६ २७
३३ ५७	६ र.	७ २१	रे.	३३ २८	धृ	४९ ५८	व.	७ २१	१४	२९	२०	मे. ३३।२८	५ ४४	७ १९	३ १२ १३ ३५
३३ ५३	७ चं.	६ २०	अ.	३३ ४१	शू.	४५ ५२	ब.	६ २०	१५	३०	२१	मेषे	५ ४५	७ १९	३ १३ १० ४४
३३ ५०	८ मं.	४ ३	भ.	३२ ५१	ग.	४० ५७	कौ.	४ ३	१६	३१	२२	वृ. ४७।२२	५ ४५	७ १८	३ १४ ७ ५५
३३ ४७	९ बु.	० ४५	कृ.	३० ५६	वृ	३५ १२	ग.	० ४५	१७	अ१	२३	वृषे	५ ४६	७ १८	३ १५ ५ ६
अवम	१० बु.	५५ ४६	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०
३३ ४३	११ गु.	५१ २७	रो.	२८ १२	ध्रु	२८ ४८	ब	२३ ५९	१८	२	२४	मि५६।२९	५ ४७	७ १७	३ १६ २ १८
३३ ४०	१२ शु.	४५ ५०	मृ.	२४ ४७	व्या	२१ ४७	कौ	१८ ३८	१९	३	२५	मिथुने	५ ४८	७ १५	३ १६ ५९ ३१
३३ ३६	१३ श.	३९ ५३	आ.	२० ५५	ह	१४ २६	ग.	१२ ५१	२०	४	२६	मिथुने	५ ४९	७ १४	३ १७ ५६ ४६
३३ ३३	१४ र.	३३ ४०	पुन.	१६ ४९	व	५९/६ ५३/६	वि.	६ ४६	२१	५	२७	क. २।५०	५ ४९	७ १३	३ १८ ५४ २
३३ ३०	३० चं.	२७ २९	पुष्य	१२ २६	व्य	५१ ३४	च.	० ३४	२२	६	२८	कर्के	५ ५०	७ १३	३ १९ ५१ १९

(२३जुलाई से ६ अगस्त १९५६ ई०) दक्षिणायनम्, उत्तरगोलः वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—बुध ति. ९ को पश्चिम म उदय होगा। गु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में, शनि सूर्यास्त बाद मध्य की ओर जाता हुआ, मं. पूर्व रात्रि में पूर्व में, शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा।

पुष्य ४ बुधः २१।३९, मघा ४ गुरुः ४५।५१, पंचकप्रा. ४७।२३
भ. ३०।५९ उ., सू. व. युतिः
भ. २।५३ या., श्ले. १ बुधः०।१५ श्रीगणेश ४ व्र., चं. मं. यु.
श्ले. २ बुधः ४१।५८

भ. ७।२१ उ. ३६।५० या., श्ले. ३ बुधः २४।२८, मृग ४ शुक्रः—
—३७।२०, पंचकस. ३३।२८
श्ले॰ ४ बुधः१०।४मार्गी शनिः २०।०
भ. २८।३८ उ.५६।३१ या., मघा १सिंहे बुधः ५८।१८, पश्चि*
* मोदयोबुधः १८।९ अगस्त ८ ता.३१,जन्मदि श्रीलोकमान्य +
श्ले. रविः३९।३२कामदा११ व्र. स्मार्तानाम् + तिलक चं.के.यु.
मघा २ बुधः ४९।२६ कामदा ११ वैष्णवानाम् चं.शु. यु.
भ.३९।५३ उ., आर्द्रा १ शुक्रः २५।५० शनिप्रदोष व्र.
भ. ६।४६ या., मघा ३ बुधः ४३।२२, चं. वरुण यु.
पुष्य ३ वरुणः (हर्शल) ३३।३ हरियाली ३० सोमवती,चं.सू.यु,

श्रावण कृष्ण ८ भौम इष्टम् ०।० के. दिनगणः ८४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	३	४	२	७	७	१
१४	२७	२६	११	४	२	११	११
७	४७	२१	१५	२	५६	३९	३९
५५	७	१५	२४	४०	३	४१	४१
५७	७	१११	१२	३३	०	३	३
११	३९	४३	१५	८	२	११	११
मार्गः	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पु. ४	पू.भा ३	श्ले. ३	म. ४	मृ ४	चि. ४	अनु ३	रो. १

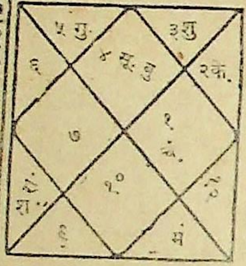

इस पक्ष में रसकस रुई तेज, चाँदी के भाव में घटावढ़ी बहुत हो। सुवर्ण तेज, घास लकड़ी तथा चौपाये पशुओं का भाव तेज हो। यहां सरसों की तेजी चल रही हो तो ति. ६ के लगभग बेचे तो जल्दी लाभ हो। ति. १० से रुई बिनौला गेहूं चावल उड़द मजीठ तेज हो। अलसी रसकस भी तेजी में रहें।

आकाश लक्षण—ति. ३ से ६ तक तथा ति. ९ से ११ तक और ति. १४।३० को कहीं कहीं वर्षा होगी। राजस्थान मध्यभारत में खण्ड वृष्टि के योग हैं। कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से फसल को हानि पहुँचेगी।

श्रावण कृष्ण ३० चन्द्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः ८५४

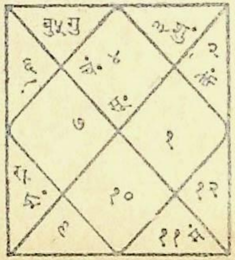

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	४	४	२	७	७	१
१९	२८	७	१२	७	२	११	११
५१	२३	८	२९	४०	५७	१७	१७
१९	३२	५३	३३	३१	५०	३६	३६
५७	३	१०२	१२	३९	०	३	३
१७	४९	५७	२९	५३	३८	११	११
मार्गः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ.
श्ले १	पू.भा ३	म. ३	म. ४	आ. १	वि. ४	अनु ३	रो. १

शकुन विचार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ श्रावण शुक्लपक्षः ६ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरसूर्य स्पष्टः (७ अग. से २१ अग. १९५६ई०) दक्षिणायनम्, उत्तरगो.वर्षर्तुः

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. श्राव.	अं. अग.	मु. मुह.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले				ग्रहदर्शन—बुध सूर्यास्तवाद पश्चिम में शनि खमध्य की ओर जाता हुआ मं. पूर्वरात्रि पूर्व में शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। गु. ति. ४ को अस्त होगा।
३३	२७	१	म.	२१	३१	श्ल.	८	३०	व.	४३	१२	व.	२१	३१	२३	७	२९	सि ८।३०	५	५१	७	१२	३	२०	४८	३८	मघा ४ बुधः ४०।३८ नक्तव्रतारम्भः चं.बु.यु.
३३	२३	२	बु.	१५	५६	म.	४	४७	प.	३७	१३	कौ.	१५	५६	२४	८	३०	सिंहे	५	५१	७	१२	३	२१	४५	५९	चन्द्रदर्शनम् उत्तरशृङ्गोन्नतिः, चं. गु. यु.
३३	१९	३	गु.	१०	५६	पू. फा.	१/५९	३९/१८	शि.	३०	४८	ग.	१०	५६	२५	९	१	कं.१९।४	५	५१	७	१०	३	२२	४३	२२	म. ३८।४९ उ.,पू.फा १बुधः४१।३०,आर्द्रा२शुक्रः२३।४८, मोह.+
३३	१५	४	शु.	६	४३	ह.	५७	४५	सि.	२५	४	वि.	६	४३	२६	१०	२	कन्यायाम्	५	५२	७	९	३	२३	४०	४५	म.६।४३या.,पू.फा १गु. १।५०,गुरुसिंहांशकप्रारम्भः
३३	१२	५	श.	३	२७	चि.	५७	१५	सा.	२०	८	बा.	३	२७	२७	११	३	तु.२७।३०	५	५३	७	८	३	२४	३८	९	पू.फा २बुधः४६।२० नागपंचमी चं. इं. यु.
३३	८	६	र.	१	१३	स्वा.	५७	५८	शु.	१६	३	तै.	१	१३	२८	१२	४	तुलायाम्	५	५४	७	७	३	२५	३५	३४	वक्री भौमः४४।१३ .+मु.१स. १३७६ हिजरी, संधारा ३
३३	५	७	चं.	०	१४	वि.	५६	५७	शु.	१२	५९	व.	०	१४	२९	१३	५	वृ.४४।२७	५	५४	७	७	३	२६	३३	०	म. ०।१४उ.३०।२२या.,पू.फा ३बुधः५५।२४आर्द्रा३शुक्रः ५२।२४*
३३	१	८	मं.	०	३०	अनु.	६०	०	ब्र.	१०	५४	व.	०	३०	३०	१४	६	वृश्चिके	५	५५	७	६	३	२७	३०	२८	श्री दुर्गा८, मेला श्रीनयना देवी व चिन्तपूरणी, चं.रा.यु.
३२	५७	९	बु.	२	९	अनु.	३	१३	ऐं.	९	५२	कौ.	२	९	३१	१५	७	वृश्चिके	५	५५	७	५	३	२८	२७	५६	भारतेस्वातन्त्र्योत्सवः जैहिंदसं.१० *तुलसी जयन्ती, चं.श.यु.
३२	५४	१०	गु.	४	५०	ज्ये.	७	३५	वै.	९	४०	ग.	४	५०	भा१	१६	८	ध.७।३५	५	५५	७	४	३	२९	२५	३२	म.३६।४५उ.,सं. मघा सिंहेऽर्कः ३५।५५ मु.३०पुण्यं १९।५५उ.,×
३२	५०	११	शु.	८	४१	मू.	१२	५९	वि.	१०	१८	वि.	८	४१	२	१७	९	धनुषि	५	५६	७	३	४	०	२३	७	म.८।४१या.,आर्द्रा४शुक्रः५८।२५ पवित्रा ११ व्र.
३२	४६	१२	श.	१३	१५	पू. षा.	१९	४	प्री.	११	३६	बा.	१३	१५	३	१८	१०	म.३५।४२	५	५७	७	२	४	१	२०	४३	उ.फा १ बुधः २८।५८ शनि प्रदोषव्र. ×पू.फा४बुधः ९।२५
३२	४३	१३	र.	१८	१५	उ. षा.	२५	३५	आ.	१३	६	तै.	१८	१५	४	१९	११	मकरे	५	५८	७	१	४	२	१८	२०	() मेला अमरनाथ(काश्मीर) पं.प्रा.५।१ []९।२५ [गु.अ.]
३२	३९	१४	चं.	२३	१९	श्र.	३२	१	सौ.	१४	३९	व.	२३	१९	५	२०	१२	मकरे	५	५८	७	०	४	३	१५	५९	म.२३।१९उ.५५।३७या.,उ.फा २कं. बुधः५५।५४, अस्तो गुरुः []
३२	३५	१५	मं.	२७	५५	ध.	३८	१	शो.	१५	५४	व.	२७	५५	६	२१	१३	कु. ५।१	५	५८	६	५९	४	४	१३	३९	पुन.१शु. ५०।५१ रक्षाबंधनम् (रखड़ी), ऋषितर्पणम्, सत्यव्र.()

श्रावण शुक्ल ८ भौम इष्टम् ०।० के. दिनगणः ८६२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१०	४	४	२	७	७	१
२७	२८	२०	१४	१३	३	१०	१०
३०	३५	७	१०	२५	५	५२	५२
२८	४८	१	९	५३	३८	९	९
५७	१	६०	१२	४७	१	३	३
२८	२३	२४	४३	२६	२५	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्ले	पू.म	पू.फा	पू.फा	आ.	वि.	अनु	रो.
४	३	३	१	३	४	३	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में प्रजा में रक्तविकार से कष्ट हो कहीं परस्पर सङ्घर्ष रहे। रुई में घटावढ़ी चलकर अन्त में तेजी रहे। घी तेल चाँदी सोना में तेजी। ति. ७ से गेहूँ आदि में कुछ तेजी, गुड़ में मन्दापन हो। ति. ८ से सट्टे के व्यापार में विशेष उथल पुथल होगी व्यापारी लोग सावधानी से काम करें। ति. ११ से रुई में मन्दी का झटका आवेगा। सरसों मिर्च हींग तेज होंगे।

आकाश लक्षण—

ति. २ से ११ तक तथा ति. १४।१५ को कहीं कम कहीं अधिक वर्षा होगी। तूफान से भी कई जगह हानि होगी।

शकुन विचार—

श्रावणशुक्ला पंचमी और छठ को जान।

कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्ष पिछान।

श्रावणशुक्ल १५ भौम इष्टम ०।० के. दिनगणः ८६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	२	७	७	१
४	२८	०	१५	१९	३	१०	१०
१३	१२	५	४०	१५	१७	२९	२९
३९	१२	२९	०	३८	३७	५३	५३
५७	५	७८	१२	५२	२	३	३
४०	३८	२०	५६	३०	५	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	आ.	वि.	अनु	रो.
२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	४	३	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ भाद्रपद कृष्णपक्षः १० | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाइम | सौरसूर्यस्पष्टः (२२ अग. से ४ सित. १९५६ ई०) दक्षिणायनम्, उत्तरगोलः शरदृतु

दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. भ. मु. / मा. क्रा. मा.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले	ग्रहदर्शन—गुरु अस्त है । बु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में, शनि खमध्य में, मं. पूर्व में, शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा ।
३२ ३२	१	बु.	३१ ५२	शत.	४३ १६	अ.	१६ ३९	कौ.	३१ ५२	७ २२ १४	कुम्भे	५ ५९	६ ५८	४ ५ ११ २१	सा. कन्या भानुः ५६।२२,अनु १ शनिः८।१५, शरदृतु प्रारम्भः
३२ २८	२	गु.	३४ ४०	पू.भा.	४७ २४	सु.	१६ ३८	तै.	३ १६	८ २३ १५	मी३११२२	५ ५९	६ ५७	४ ६ ९ ५	उ.फा. ३ बुधः३२।१६ चं. मं. यु.
३२ २४	३	शु.	३६ २३	उ. भा.	५० २७	धृ.	१५ ४३	व.	५ ३१	९ २४ १६	मीने	५ ५९	६ ५६	४ ७ ६ ५०	भ.५।३१उ. ३६।२३या.,कज्जली३ श्रीगणेश४ व्र.
३२ १९	४	श.	३६ ४५	रे.	५२ १०	शू.	१३ ४६	व.	६ ३४	१० २५ १७	मे.५२।१०	६ ०	६ ५५	४ ८ ४ ३८	पू.फा.२गुरुः३७।५८ गुरुसिंहांशक समाप्तिःपुन.२शुक्रः३४।१२ पंचक*
३२ १५	५	र.	३५ ५०	अ.	५२ ४३	गं.	१० ४२	कौ.	६ १७	११ २६ १८	,मेषे	६ १	६ ५४	४ ९ २ २९	उ.फा.४बुधः१८।३३ चंदनषष्ठीव्र. चंद्रोदयोरात्रौ रेलवे९।२९चं.के.यु.
३२ १०	६	चं.	३३ ४१	भ.	५२ ३	वृ.	६ ५५	ग.	४ ४५	१२ २७ १९	मेषे	६ १	६ ५३	४ १० ० २१	भ. ३३।४१ उ. * समा. ५२।१०
३२ ५	७	मं.	३० ३१	कृ.	५० १९	ध्रु.	२/५६ ८/२७	वि.	२ ६	१३ २८ २०	वृ. ६।३७	६ २	६ ५२	४ १० ५८ १४	भ.२।६या.,श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतस्मार्तानाम्चंद्रोदयोरात्रौरेल.१०।५८
३२ ०	८	बु.	२६ २३	रो.	४७ ४७	हृ.	५० ८	कौ.	२६ २३	१४ २९ २१	वृषे	६ ३	६ ५०	४ ११ ५६ १०	ह.१बुधः२२।३२ पुन.३ शुक्रः९।५२ श्रीकृ.जन्मा. ८व्र. वैष्णवानाम् ×
३१ ५५	९	गु.	२१ २५	मृ.	४४ ३२	व.	४३ १२	ग.	२१ २५	१५ ३० २२	मि१६।९	६ ४	६ ४९	४ १२ ५४ ८	भ.४८।३९उ.,पू.फा.रविः२६।४६,अनु.२ राहुःकृ.४ केतुः२३।३४,+
३१ ५०	१०	शु.	१५ ५४	आ.	४० ४४	सि.	३५ ५२	वि.	१५ ५४	१६ ३१ २३	मिथुने	६ ४	६ ४७	४ १३ ५२ ७	भ. १५।५४ या. × चंद्रोदयोरात्रौ ११।४७ रे. + गुग्गानवमी
३१ ४६	११	श.	९ ५९	पुन.	३६ ३६	व्य.	२८ १५	बा.	९ ५९	१७ १स २४	क.२२।३८	६ ५	६ ४६	४ १४ ५० ७	ह.२बुधः५३।२१,पुन.४ कर्केशुक्रः ३८।२१,अजा११ व्र, सितंबर ()
३१ ४१	१२	र.	३ ५०	पु.	३२ २१	व.	२० ३०	तै.	३ ५०	१८ २ २५	कर्के	६ ६	६ ४५	४ १५ ४८ ९	भ. ५७।४१ उ. प्रदोष व्र. गोवत्स १२ चं. व. यु.
अवम	१३	र.	५३ ५१	०	० ०	०	० ०	०	० ०	० ० ०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	() ९ ता.३० चं. शु. यु.
३१ ३६	१४	चं.	५१ ४१	श्ले.	२८ १५	प.	१२ ५०	वि.	२४ ४१	१९ ३ २६	सिं२८।१५	६ ६	६ ४४	४ १६ ४६ १४	भ. २४।४१ या.
३१ ३१	३०	मं.	४६ ९	म.	२४ २५	शि.	५/५८ ३१/१३	च.	१८ ५५	२० ४ २७	सिंहे	६ ७	६ ४३	४ १७ ४४ २३	अगस्तोदयः ११।४६ कुशोत्पाटिनी ३० ("ॐ हुंफट्" इति मन्त्रेण), चं. सू. शु. यु.

भाद्रपद कृष्ण ८ बुध इष्टम् ०।० के० दिनगणः ८७७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	२	७	७	१
११	२७	९	१७	२६	३	१०	१०
५६	१४	३७	२३	३०	३६	४	४
१०	२२	५	४३	३९	४४	२६	२६
५७	९	६१	१२	५६	२	३	३
५६	१६	१	५९	४९	४८	११	११
सौरः	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ
म. ४	पू.भा. ३	उ.फा. ४	पू.फा. २	पुन. ४	अनु. १	अनु. ३	रो. १

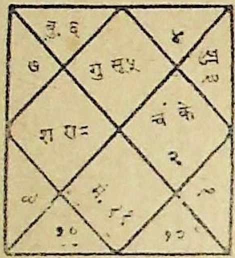

इन दिनों पहले रुई और शेयरों में तेजी का वातावरण बनेगा सोना चांदी अनाज में मन्दी । ति.६ से चांदी में तेजी हो । सुवर्ण अलसी गेहूं में भी काफी तेजी हो । गुड़ में मन्दी का ख्याल रक्खें ति० १० से रुई चांदी में मन्दी चले सट्टे के व्यापारियों को चाहिए कि यहां तेजी का ख्याल कुछ दिन के लिए छोड़ दें । अलसी एरण्ड का भाव बढ़े । घी तेल गुड़ खाण्ड में कुछ मजबूती रहेगी । विदेशों में युद्ध सङ्घर्ष हो ।

आ. ल.—ति. १ से ४ तक तथा ति. ८ से ३० तक वायु के साथ पंजाब बिहार यू० पी० में खंड वृष्टि के योग हैं ।

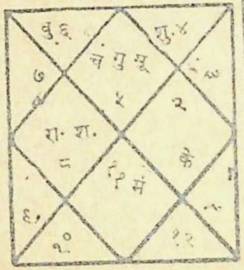

भाद्रपद कृष्ण ३० भौम इष्टम् ०।० के० दिनगणः ८८३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	३	७	७	१
१७	२६	१५	१८	२	३	९	९
४४	११	४	४१	१९	५५	४५	४५
२३	२३	५५	४६	२०	०	२०	२०
५८	११	४३	१३	५९	३	३	३
९	५८	५६	०	३९	२४	११	११
सौरः	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. २	पू.भा. ३	ह. २	पू.फा. २	पुन ४	अनु १	अनु २	कृ. ४

श. वि.–भादो कारी तीज में उत्तर दिशा प्रदोष । बादल लख सुख मानिये मिटे मिटाया दोष ॥
संग्रह करलो अन्न का रुका रहे षटमास । लाभ होय उस माल में कर लेना विश्वास ॥
भादव की दोयज दिना जो ना दीखे चन्द । ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

... सित. से २० सित. तक १९५६ ई०) दक्षिणायनम्, उत्तर-

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(५ सित. से २० सित. तक १९५६ ई०) दक्षिणायनम्, उत्तर-गोलः शरदृतुः ।

ग्रहदर्शन—गुरु ति. ११ को उदित होगा । बुध ति.१४ को पश्चिम में अस्त होगा । शनि सूर्यास्त बाद पश्चिम में, मं. ख-मध्य में, शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा ।

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ भाद्रपद शुक्लपक्षः ११															तारीखें			चन्द्र	स्टैण्डर्ड टाईम				सौरसूर्यस्पष्टः				
दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि. भाद्र.	अं. सित.	मु. मुहर्र.	संचारः	सू. उ.		सू. अ.		उदयकाले				
३१	२६	१	बु.	४१	८	पू. फा.	२१	८	सा.	५१	३८	कि.	१३	३८	२१	५	२८	क ३५।२९	६	८	६	४२	४	१८	४२	३३	पुष्य १ शुक्रः ११ ??जन्मो.श्री१०५ बघाटनरेशजी [गु.उ.]
३१	२२	२	गु.	३६	५७	उ. फा	१८	३१	शु.	४५	४०	बा.	९	२	२२	६	२९	कन्यायाम्	६	८	६	४०	४	१९	४०	४४	चन्द्रदर्शनं सूक्ष्मं उ.शृङ्गोन्नतिः, हस्त ३ बुधः १९।१२,मेला श्री*
३१	१७	३	शु.	३३	४०	ह.	१६	४४	शु.	४०	३१	तै.	५	१८	२३	७	१	तु.४६।२१	६	८	६	३९	४	२०	३८	५७	हरितालिका व्र., कलङ्क ४ (पत्थर ४) चन्द्रास्तौ रात्री रेल्वे८।९,()
३१	१२	४	श.	३१	२८	चि.	१५	५८	ब्र.	३६	७	व.	२	३४	२४	८	२	तुलायाम्.	६	९	६	३८	४	२१	३७	११	भ. २।३४ उ. ३१।२८ या पुष्य २ शुक्रः १९।४२ चं. इं. यु.
३१	७	५	र.	३०	२७	स्वा.	१६	२५	ऐ.	३२	४६	ब.	०	५७	२५	९	३	तुलायाम्.	६	९	६	३६	४	२२	३५	२८	ऋषि ५ *बाबा गोसाईं आणा कुराली चं.बु. यु.
३१	२	६	चं.	३०	४४	वि.	१८	४	वै.	३०	२४	कौ.	०	३५	२६	१०	४	वृ २।३९	६	१०	६	३५	४	२३	३३	४६	पू. फा. ३ गुरुः १।२३ सूर्यषष्ठी व्र. चं. शं., चं. रा. यु.
३०	५८	७	मं.	३२	२३	अनु.	२१	०	वि.	२९	३	ग.	१	३३	२७	११	५	वृश्चिके	६	११	६	३४	४	२४	३२	६	भ. ३२।२३ उ., पुण्य ३ शुक्रः ३४।४५ () सफरमु २.
३०	५३	८	बु.	३५	६	ज्ये.	२५	४	प्री.	२८	४०	बि.	३	४४	२८	१२	६	ध.२५।४	६	११	६	३२	४	२५	३०	३०	भ. ३।४४ या. श्रीदधीचि जयन्ती !!१२ मेला अम्बाला पटियाला
३०	४८	९	गु.	३८	५९	मू.	३०	१३	आ.	२९	१	वा.	७	२	२९	१३	७	धनुषि	६	१२	६	३१	४	२६	२८	५६	उ. फा. रविः ११।२१ वक्री बुधः ६।२ श्रीचन्द्रः ९ (उदासीन []
३०	४३	१०	शु.	४३	३५	पू.षा.	३६	११	सौ.	२९	५८	तै.	११	१७	३०	१४	८	म.५२।४७	६	१३	६	३०	४	२७	२७	२६	पुष्य ४ शुक्रः ४६।२२ []सम्प्रदाय महोत्सवः) शु.व. यु
३०	३८	११	श.	४८	४२	उ.षा.	४२	३७	शो	३१	२१	व.	१६	८	३१	१५	९	मकरे	६	१३	६	२८	४	२८	२५	५९	भ. १६।८ उ. ४८।४२ या. उदितो गुरुः २८।५८पश्चा ११व्र.??
३०	३४	१२	र.	५३	४९	श्र.	४९	६	अ.	३२	५३	व.	२१	१५	अ१	१६	१०	मकरे	६	१४	६	२७	४	२९	२४	३२	सं. कन्या अर्कः ३६।२० मु. ३० पुण्यं मध्याह्लोत्तरम्, श्रीवामन!!
३०	२९	१३	चं.	५८	३१	ध.	५५	११	सु.	३४	९	कौ.	२६	१०	२	१७	११	कु २२।८	६	१४	६	२६	५	०	२३	६	आश्ले. १ शुक्रः ५४।४४ पञ्चकप्रा. २२।८ प्रदोष व्र.
३०	२४	१४	मं.	६०	०	श.	६०	०	धृ.	३४	५९	ग.	३०	३०	३	१८	१२	कुम्भे	६	१४	६	२४	५	१	२१	४३	अनन्त१४व्र.मेलाछपार व बाबासोढल जालन्धर
३०	१९	१४	बु.	२	३०	श.	०	३९	शू.	३५	५	व.	२	३०	४	१९	१३	मी४८।५८	६	१४	६	२३	५	२	२०	२१	भ. २।३० उ. ३३।५७या. पश्चिमास्तो बुधः ५७।३३सत्यव्र.चं.मं. यु
३०	१४	१५	गु.	५	२४	पू.भा.	५	४	गं.	३४	१८	वि.	५	२४	५	२०	१४	मीने	६	१५	६	२२	५	३	१९	२	व. हस्त २ बुधः३।५५ प्रोष्ठपदी १५

भाद्रपद शुक्ल पक्ष ८ बुध इष्टम् ०।० दिनगणः ८९१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	३	७	७	१
२५	२४	१८	२०	१०	४	९	९
३०	३६	५८	२५	२६	२४	१९	१९
३०	३२	२६	३८	७	१५	५४	५४
५८	११	७	१२	६२	३	३	३
२४	४५	०	५७	२४	५९	११	११
[illegible]	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पु. ३	अनु १	अनु २	कृ. ४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

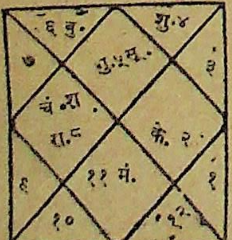

इस पक्ष में रुई, सूत, शण, रेशम, अनाज, चावल में तेजी रहे। ति. ९ से लोहा, घी, तेल सरसों एरण्ड, मघ, ज्वार, उड़द तेज हो। रुई में १५।२० टका की तेजी आकर बाद में शीघ्र ही मन्दी आजायेगी। चाँदी में घटाबढ़ी होकर करीब ३ टका की तेजी हो, शेयर भी तेज रहें। इन्हीं दिनों से २४ दिनों के अन्दर घी, खाण्ड, शक्कर, कपूर, तिल तथा तेल खास तेज होंगे। ति १२ से प्रत्येक प्रकार के अनाज के व्यापार में घटाबढ़ी चलकर मन्दी रहे।

भाद्रपद शुक्लपक्ष १५ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ८९९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	४	३	७	७	१
३	२३	१६	२२	१८	४	८	८
१९	३	४३	९	५४	५८	५४	५४
२	२९	१०	३	४३	११	२७	२७
५८	१०	४८	१२	६४	४	३	३
४१	५३	१५	५३	५०	३६	११	११
[illegible]	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अनु १	अनु २	कृ. ४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—ति. १० से १५ तक सर्वत्र वर्षा के योग हैं। पूर्वोत्तर में उत्तम वर्षा होगी। शकुन विचार—भादों सुदी जो पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल चन्दा ऊगसी जल्दी बेचो अनाज ॥ जो चन्दा निर्मल उगे, घन ना बिजली होय। गेहूँ जौ सञ्चय करो लाभ सदाया होय।

भा. शु. ११ रात्रि के समय मेघ की गर्जना हो तो टिड्डियों का उपद्रव होवे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहदर्शन—बुध ति. ३० को पूर्व में उदित होगा । सूर्यास्त बाद शनि पश्चिम में, मं. खमध्य की ओर जाता हुआ दीखेगा । सूर्योदय से पहिले शुक्र गुरु पूर्व में दीखेंगे ।

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	क्रान्ति	मि.	नक.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले	
३० ९	१	शु.	७ १५	उ.भा.	८ २२	वृ.	३२ ३४	कौ.	७ १५	६	२१	१५	मीने	६ १६	६ २०	५ ४ १७ ४६	आश्ले. २ शुक्रः ०।२५ पितृपक्षः
३० ४	२	श.	७ ४४	रे.	१० २३	ध्रु.	२९ ५१	ग.	७ ४४	७	२२	१६	मे. १०।२३	६ १७	६ १९	५ ५ १६ ३२	भ० ३७।१६ उ., सा. तुला भानुः ४६।५७ पञ्चकस. १०।२३
३० ०	३	र.	६ ५५	अ.	११ १०	व्या	२६ ६	वि.	६ ५५	८	२३	१७	मेषे	६ १७	६ १८	५ ६ १५ २१	भ० ६।५५ या. व हस्त१बुधः४७।२७, श्रीगणेश ४ व्र.,
२९ ५५	४	चं.	४ ५५	भ.	१० ४८	ह.	२१ २६	बा.	४ ५५	९	२४	१८	वृ.२५।२५	६ १८	६ १६	५ ७ १४ १	श्ले. ३ शुक्रः ४।१६
२९ ५०	५	मं.	१ ४८	कृ.	९ १७	व.	१५ ५४	त.	१ ४८	१०	२५	१९	वृषे	६ १९	६ १५	५ ८ १३ ४	भ. ५७।४८ उ, पू. फा. ४ गुरुः ३२।२१, चं. के. युतिः,
क्षयम्	६	मं.	५६ ०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	
२९ ४६	७	बु.	५२ ५७	रो.	६ ५९	सि.	९ ४५	वि.	२५ २२	११	२६	२०	मि३५।२४	६ २०	६ १३	५ ९ ११ ५९	भ. २५।२२ या. हस्ते रविः ४८।५२ व उ.फा. ४ बुधः ४७।११,* *सू. बु. यु.
२९ ४२	८	गु.	४७ ३०	मृ.	३ ५०	व्य.	५५/५५ ३३/५६	बा.	२० १३	१२	२७	२१	मिथुने	६ २१	६ १२	५ १० १० ५६	श्ले. ४ शुक्रः ६।१३,
२९ ३७	९	शु.	४१ ४२	आ.	०/५६ ३५/१०	प.	४७ ५८	तै.	१४ ३६	१३	२८	२२	क.४२।१०	६ २१	६ ११	५ ११ ९ ५५	सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्
२९ ३२	१०	श.	३५ ३७	पु.	५१ ५४	शि.	४० १२	व.	८ ३९	१४	२९	२३	कर्के	६ २२	६ १०	५ १२ ८ ५७	भ. ८।३९ उ. ३५।३७ या. चं. वरुण युतिः
२९ २८	११	र.	२९ ३२	श्ले.	४७ ४६	सि.	३२ २६	ब.	२ ३४	१५	३०	२४	सि४७।४६	६ २२	६ ९	५ १३ ८ १	व. उ. फा. ३ बुधः ९।४५ मघा १ सिंहे शुक्रः ६।२४, इन्दिरा*
२९ २३	१२	चं.	२३ ३८	म.	४३ ५३	सा.	२४ ४९	तै.	२३ ३८	१६	१अ	२५	सिंहे	६ २३	६ ८	५ १४ ७ ६	प्रदोष व्र॰, अक्तूबर १० ता. ३१ *११ व्र.चं. शु. यु
२९ १९	१३	मं.	१८ ९	पू. फा.	४० ३५	शु.	१७ २९	व.	१८ ९	१७	२	२६	कं.५४।५०	६ २४	६ ६	५ १५ ६ १४	भ. १८।९ उ. ४५।४० या. श्री गान्धि जयन्ती, चं. शु. यु.
२९ १५	१४	बु.	१३ ११	उ. फा.	३७ ३७	शु.	१० ४२	श.	१३ ११	१८	३	२७	कन्यायाम्	६ २४	६ ५	५ १६ ५ २५	मघा २ शुक्रः ४।४८ अज्ञातमृत तिथीनाम् श्राद्धम् चं.बु.यु.
२९ १०	३०	गु.	९ ३	ह.	३५ ४२	ब्र.	४/५६ ३१/२	ना.	९ ३	१९	४	२८	कन्यायाम्	६ २४	६ ४	५ १७ ४ ३९	पूर्वोदयो बुधः ०।३९ देवकार्ये अमा गच्छाया, चं. सू. यु.

आश्विन कृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ९०६

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	४	३	७	७	१
१०	२१	९	२३	२६	५	८	८
१०	५६	४४	३८	३३	३१	३२	३२
५६	१७	४६	३५	७	४४	१०	१०
५८	७	६६	१२	६६	५	३	३
५७	४५	२७	४१	२२	३	११	११
सौरः	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ह. १	पू.भा. १	उ.फा. ४	पू.फा. ४	श्ले. ३	अनु १	अनु २	कृ. ४
सौम्य	तीर	तीर	जल	क्रूर.	खण्ड	खण्ड	खण्ड

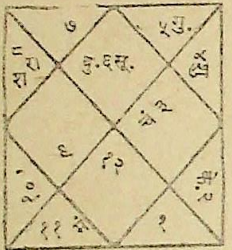

इस पक्ष में प्रजा में सुख शान्ति सुभिक्ष अनाज की उपज बहुत हो। कहीं-कहीं बालकों को रोग पीड़ा का भय हो, चाँदी के व्यापार में पहिले कुछ मन्दी आकर ति. ७ से तेजी रहेगी, साथ ही गेहूँ, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, हल्दी, घास, लकड़ी में तेजी का वातावरण रहेगा। ति. ९ से सुवर्ण लाल रंग की चीजें तेज हों। रुई में ८–१० दिन मन्दी रहकर पीछे तेजी। चाँदी में करीब ३ टका की मन्दी। अनाज तेज। पक्षान्त में प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं में विशेष घटाबढ़ी चलेगी व्यापारी सावधानी से काम करें।

आश्विन कृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ९१३

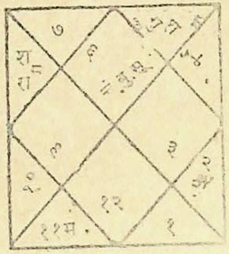

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	४	४	७	७	१
१७	२१	४	२५	४	६	८	८
४	१०	३२	६	२२	८	९	९
३९	९	५२	४८	१३	२६	५५	५५
५९	४	१५	१२	६७	५	३	३
१४	२३	२१	३१	५२	२९	११	११
सौरः	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ह. ३	पू.भा. १	उ.फा. ३	पू.फा. ४	म. २	अनु १	अनु २	कृ. ४
सौम्य	तीर	तीर	जल	क्रूर.	खण्ड	खण्ड	खण्ड

आकाश लक्षण—ति. १--२ एवं ४ से ११ तक तथा पक्षान्त में प्रबल वायु बिजली के साथ कहीं-कहीं वर्षा के योग पाये जाते हैं। यदि किसी किसी की श्राद्ध तिथि याद न हो तो उसका श्राद्ध एकादशी वा अमावस को करना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ आश्विन शुक्लपक्षः १२ ... अक्तू. तक १९५६ ई०) दक्षिणायनगोली, शरदृतुः

इ.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. (आ.)	अं. (अक्टू.)	मु (र.उ.)	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले		ग्रह दर्शन—शनि सुर्यास्त बाद पश्चिम में, मङ्गल खमध्य की ओर आता हुआ, शुक्र गुरु सूर्योदय से पहले पूर्व में दीखेंगे। बुध सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। ?? पट्टाभिषेके विजया १०
६ ५	१	शु.	५ ४६	चि.	३४ ४०	वै.	५८ २२	ब.	५ ४६	२०	५	२९	तु. ५।११	६ २५	६ ३	५ १८	३ ५४	मार्गी बुधः २६।५३ शारद नवरात्र्यारम्भः घटस्थापनम्, मातामह *
६ १	२	श.	३ ३८	स्वा.	३४ ४८	वि.	५० ४२	कौ.	३ ३८	२१	६	३०	तुलायाम्	६ २६	६ १	५ १९	३ १२	चन्द्रदर्शनम् उच्चशृङ्गोन्नतिः, मघा ३ शुक्रः १।२५ * श्राद्धम् चं.इं.यु.
५ ३	३	र.	२ ४१	वि.	३६ ८	प्री.	४७ ५८	ग.	२ ४१	२२	७	१	वृ. २०।४८	६ २७	६ ०	५ २०	२ ३२	भ. ३२।५१ उ., रविउलावल मु. ३, चं. श. रा. यु.
५ २	४	चं.	३ २	अनु.	३८ ४६	आ.	४६ १०	वि.	३ २	२३	८	२	वृश्चिके	६ २७	६ ०	५ २१	१ ५५	भ. ३।२ या. मघा ४ शुक्रः ५६।२६ () ३५।२०, प्रदोषव्र., श.रा.यु.
४७	५	मं.	४ ४५	ज्ये.	४२ ३५	सौ.	४५ २०	बा.	४ ४५	२४	९	३	ध. ४३।३५	६ २८	५ ५८	५ २२	१ १९	अनु २ शनिः ३९।१५ [] कोजागरीव्र.का.स्ना.प्रा. शरत्१५सत्यव्रतम्
४२	६	बु.	७ ३३	मू.	४७ ३१	शो.	४५ २५	तै.	७ ३३	२५	१०	४	धनुषि.	६ २९	५ ५७	५ २३	० ४५	चित्रा रविः १९।२५, मार्गी भौमः ५१।२६, सरस्वत्यावाहनम्
३७	७	गु.	११ ३०	पू.षा.	५३ १९	अ.	४६ १०	व.	११ ३०	२६	११	५	धनुषि.	६ २९	५ ५७	५ २४	० १४	भ. ११।३० उ. ४३।५१ या उ.फा. ४ बुधः १७।३६, उ.फा. १ गुरुः
३२	८	शु.	१६ १३	उ.षा.	५९ ४०	सु.	४७ २४	ब.	१६ १३	२७	१२	६	म. ६।५४	६ २९	५ ५६	५ २४	५९ ४५	श्रीदुर्गा ८ बलिदानम् मेला ज्वाला जी व तारादेवी
८ २८	९	श.	२१ २५	श्र.	६० ०	धृ.	४८ ४९	कौ.	२१ २५	२८	१३	७	मकरे	६ ३०	५ ५५	५ २५	५९ १८	विजयादशमी अपराजिता पुजा, मेला दशहरा, सरस्वती विसर्जनम्
८ २३	१०	र.	२६ ३९	श्र.	६ १२	शू.	५० ८	ग.	२६ ३९	२९	१४	८	कु. ३९।२०	६ ३०	५ ५३	५ २६	५८ ५४	भ.५९।३उ.हस्त१बुधः२२।५३,पू.फा.२शुक्रः४३।२३स्वा.१इन्द्रः(नेप–
२८ १९	११	चं.	३१ २७	ध.	१२ २८	गं.	५१ ०	वि.	३१ २७	३०	१५	९	कुम्भे	६ ३१	५ ५२	५ २७	५८ ३३	भ.३१।२७या पापांकुशा११व्र. —च्यून)१७।३५पं.प्रा.३९।२०??
२८ १४	१२	मं.	३५ ३२	श.	१८ ५	वृ.	५१ १७	व.	३ २९	३१	१६	१०	कुम्भे	६ ३२	५ ५०	५ २८	५८ १३	ह.२बुधः५४।१५,चं.मं.यु.३४।१२पूफा.१शु.५०।२५सरस्वतीपूजनम्
२८ ९	१३	बु.	३८ ३१	पू.भा.	२२ ४८	ध्रु.	५० ४२	कौ.	७ १	क१	१७	११	मी. ६।३७	६ ३३	५ ४८	५ २९	५७ ५५	सं. तुलायामर्कः २।६, मु. ३० पुण्यं १७।६ या., पू. फा ३ शुक्रः ()
२८ ५	१४	गु.	४० २७	उ.भा.	२६ २४	व्या.	४९ १३	ग.	९ २९	२	१८	१२	मीने	६ ३४	५ ४७	६ ०	५७ ३८	भ. ४०।२७ उ., पुष्य ४ वरुणः (हर्शल) ४१।४९
२८ ०	१५	शु.	४० ५९	रे.	२८ ४६	ह.	४६ ४१	वि.	१० ४३	३	१९	१३	मे. २८।४६	६ ३५	५ ४६	६ १	५७ २४	भ. १०।४३ या. हस्त ३ बुधः १०।६, पञ्चक समा. २८।४६, []

आश्विनशुक्ल ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ९२१

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	५	१०	५	४	४	७	७	१
	२४	२०	७	२६	१३	६	७	७
	५९	५३	१७	४५	३१	५३	४४	४४
	४५	२९	५३	१३	[illegible]	३७	२८	२९
	५९	१	६२	१२	६९	५	३	३
	३१	८	५३	५	१७	५४	११	११
क्रान्तिः		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
	चि	पूभ	उफ	उफ	पूफ	अनु	अनु	कृ.
	१	१	४	१	१	२	२	४
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

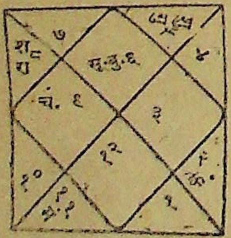

इस पक्ष में रुई पहिले मन्दी होकर पीछे १५-२० टका की तेजी हो चान्दी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो, सुवर्ण कुछ मन्दा, पाट हेसियन तेज। ति. ८ तक गेहूँ जौ चना तिल घी खाण्ड बिनौला अलसी में तेजी। ति. ६ को रुई के व्यापार में मन्दी का काम करने वालों को एक सप्ताह से कम ही दिनों में ही अच्छा लाभ होगा। ति. ८ से तेल मघ चान्दी तेज। ति. ७ के पहिले जो सौदे तेज चल रहे हों वे यहां मन्दे और जो सौदे मन्दे चल रहे हों वे यहां तेज होने लगेंगे। ति. १३ से तिल तैल तथा रक्तवर्ण के पदार्थ तथा मिर्च केसर तेज। जूट सन कोयला लकड़ी का भाव सस्ता रहे।

आकाशलक्षण—ति. ७ से ११ तक तथा ति. १३ से १५ तक कहीं २ बूंदा बांदी के योग हैं।

श० वि०—साते आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ॥१॥

आश्विन शुक्ल १५ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ९२८

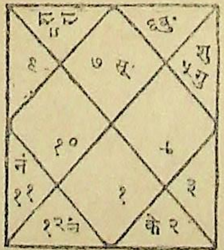

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	६	१०	५	४	४	७	७	१
	१	२१	१६	२८	२१	७	७	७
	५७	१६	२४	८	३८	३६	२२	२२
	२४	३३	१३	५६	५५	१०	१३	१३
	५९	६	६३	११	७०	६	३	३
	४६	७	५१	४७	१४	१९	११	११
क्रान्तिः		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
	चि.	पूभ	ह.	उफ	पूफ	अनु	अनु	कृ.
	३	१	२	१	३	२	२	४
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीसंवत् २०१३ शाकः १८७८ आश्विन कृष्णपक्षः१२

(२१ सित० से ४ अक्तू० तक १९५६ ई०) दक्षिणायनम् उत्तर गोलः, शरदृतुः ।

ग्रहदर्शन—बुध ति. ३० को पूर्व में उदित होगा । सूर्यास्त बाद शनि पश्चिम में, मं. खमध्य की ओर जाता हुआ दीखेगा । सूर्योदय से पहिले शुक्र गुरु पूर्व में दीखेंगे । ५८

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	तारीखें हि.	अ.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	स्टैण्डर्डटाइम सू. उ.	सू. अ.	सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले	
३० ९	१	शु.	७ १५	उ.भा.	८ २२	वृ.	३२ ३४	कौ.	७ १५	६	२१	१५	मीने	६ १६	६ २०	५ ४ १७ ४६	आश्ले. २ शुक्रः ०।२५ पितृपक्षः
३० ४	२	श.	७ ४४	रे.	१० २३	ध्रु.	२९ ५१	ग.	७ ४४	७	२२	१६	मे. १०।२३	६ १७	६ १९	५ ५ १६ ३२	भ० ३७।१९ उ., सा. तुला भानुः ४९।५७ पञ्चकस. १०।२३
३० ०	३	र.	६ ५५	अ.	११ १०	व्या.	२६ ६	वि.	६ ५५	८	२३	१७	मेषे	६ १७	६ १८	५ ६ १५ २१	भ० ६।५५ या. व हस्त १ बुधः ४७।२७, श्रीगणेश ४ व्र.,
२९ ५५	४	चं.	४ ५५	भ.	१० ४८	ह.	२१ २६	बा.	४ ५५	९	२४	१८	वृ. २५।२५	६ १८	६ १६	५ ७ १४ १	श्ले. ३ शुक्रः ४।१६
२९ ५०	५	मं.	१ ४८	कृ.	९ १७	व.	१५ ५४	त.	१ ४८	१०	२५	१९	वृषे	६ १९	६ १५	५ ८ १३ ४	भ. ५७।४८ उ, पू. फा. ४ गुरुः ३२।२१, चं. के. युतिः,
अवम	६	मं.	५६ ०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	
२९ ४६	७	बु.	५२ ५७	रो.	६ ५९	सि.	९ ४५	वि.	२५ २२	११	२६	२०	मि ३५।२४	६ २०	६ १३	५ ९ ११ ५९	भ. २५।२२ या. हस्ते रविः ४८।५२ व उ.फा. ४ बुधः ४७।११,*
२९ ४२	८	गु.	४७ ३०	मृ.	३ ५०	व्य.	[illegible]	बा.	२० १३	१२	२७	२१	मिथुने	६ २१	६ १२	५ १० १० ५६	श्ले. ४ शुक्रः ६।१३, *सू. बु. यु.
२९ ३७	९	शु.	४१ ४२	आ.	[illegible]	प.	४७ ५८	तै.	१४ ३६	१३	२८	२२	क. ४२।१०	६ २१	६ ११	५ ११ ९ ५५	सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्
२९ ३२	१०	श.	३५ ३७	पु.	५१ ५४	शि.	४० १२	व.	८ ३९	१४	२९	२३	कर्के	६ २२	६ १०	५ १२ ८ ५७	भ. ८।३९ उ. ३५।३७ या. चं. वरुण युतिः
२९ २८	११	र.	२९ ३२	श्ले.	४७ ४६	सि.	३२ २६	ब.	२ ३४	१५	३०	२४	सिं ४७।४६	६ २२	६ ९	५ १३ ८ १	व. उ. फा. ३ बुधः ९।४५ मघा १ सिंहे शुक्रः ६।२४, इन्दिरा*
२९ २३	१२	चं.	२३ ३८	म.	४३ ५३	सा.	२४ ४९	तै.	२३ ३८	१६	१अ	२५	सिंहे	६ २३	६ ८	५ १४ ७ ६	प्रदोष व्र', अक्तूबर १० ता. ३१ *११ व्र.चं. शु. यु
२९ १९	१३	मं.	१८ ९	पू. फा.	४० ३५	शु.	१७ २९	व.	१८ ९	१७	२	२६	कं. ५४।५०	६ २४	६ ६	५ १५ ६ १४	भ. १८।९ उ. ४५।४० या. श्री गान्धि जयन्ती, चं. गु. यु.
२९ १५	१४	बु.	१३ ११	उ. फा.	३७ ३७	शु.	१० ४२	श.	१३ ११	१८	३	२७	कन्यायाम्	६ २४	६ ५	५ १६ ५ २५	मघा २ शुक्रः ४।४८ अज्ञातमृत तिथीनाम् श्राद्धम् चं.बु.यु.
२९ १०	३०	गु.	९ ३	ह.	३५ ४२	ब्र.	[illegible]	ना.	९ ३	१९	४	२८	कन्यायाम्	६ २४	६ ४	५ १७ ४ ३९	पूर्वोदयो बुधः ०।३९ देवकार्ये अमा गच्छाया, चं. सू. यु.

आश्विन कृष्ण ८ गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ९०६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	४	३	७	७	१
१०	२१	९	२३	२६	५	८	८
१०	५६	४४	३८	३३	३१	३२	३२
५६	१७	४६	३५	७	४४	१०	१०
५८	७	६६	१२	६६	५	३	३
५७	४५	२७	४१	२२	३	११	११
सौरः	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ह. १	पू.भा. १	उ.फा. ४	पू.फा. ४	[illegible] ३	अनु १	अनु २	कृ. ४
सौम्य	क्रूर	क्रूर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

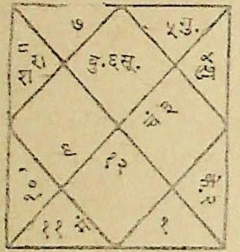

इस पक्ष में प्रजा में सुख शान्ति सुभिक्ष अनाज की उपज बहुत हो। कहीं-कहीं बालकों को रोग पीड़ा का भय हो, चाँदी के व्यापार में पहिले कुछ मन्दी आकर ति. ७ से तेजी रहेगी, साथ ही गेहूँ, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, हल्दी, घास, लकड़ी में तेजी का वातावरण रहेगा। ति. ९ से सुवर्ण लाल रंग की चीजें तेज हों। रुई में ८-१० दिन मन्दी रहकर पीछे तेजी। चाँदी में करीब ३ टका की मन्दी। अनाज तेज। पक्षान्त में प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं में विशेष घटाबढ़ी चलेगी व्यापारी सावधानी से काम करें।

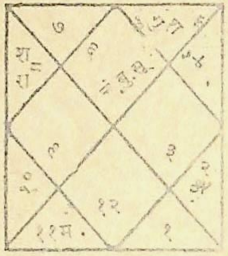

आश्विन कृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ९१३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	४	४	७	७	१
१७	२१	४	२५	४	६	८	८
४	१०	३२	६	२२	८	९	९
२९	९	५२	४८	१३	२६	५५	५५
५९	४	१५	१२	३७	५	३	३
१४	२३	२१	३१	५२	२९	११	११
सौरः	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ह. ३	पू.भा. १	उ.फा. ३	पू.फा. ४	म. २	अनु १	अनु २	कृ. ४
सौम्य	क्रूर	क्रूर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—ति. १--२ एवं ४ से ११ तक तथा पक्षान्त में प्रबल वायु बिजली के साथ कहीं-कहीं वर्षा के योग पाये जाते हैं। यदि किसी किसी की श्राद्ध तिथि याद न हो तो उसका श्राद्ध एकादशी वा अमावस को करना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ आश्विन शुक्लपक्षः १३ (... तू. से १९ अक्तू. तक १९५६ ई०) दक्षिणायनगोलौ, शरदृतुः

दि.मा.	ति.	वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	तारीखें हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	स्टैण्डर्ड टाइम सू.उ.	सू.अ.	सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले
२९ ५	१	शु.	५ ४६	चि.	३४ ४०	वै.	५४ २२	ब.	५ ४६	२०	५	२९	तु. ५।११	६ २५	६ ३	५ १८ ३ ५४
२९ १	२	श.	३ ३८	स्वा.	३४ ४८	वि.	५० ४२	कौ.	३ ३८	२१	६	३०	तुलायाम्	६ २६	६ १	५ १९ ३ १२
२८ ५७	३	र.	२ ४१	वि.	३६ ८	प्री.	४७ ५८	ग.	२ ४१	२२	७	१	वृ. २०।४८	६ २७	६ ०	५ २० २ ३२
२८ ५२	४	चं.	३ २	अनु.	३८ ४६	आ.	४६ १०	वि.	३ २	२३	८	२	वृश्चिके	६ २७	६ ०	५ २१ १ ५५
२८ ४७	५	मं.	४ ४५	ज्ये.	४२ ३५	सौ.	४५ २०	वा.	४ ४५	२४	९	३	ध. ४३।३५	६ २८	५ ५८	५ २२ १ १९
२८ ४२	६	बु.	७ ३३	मू.	४७ ३१	शो.	४५ २५	तै.	७ ३३	२५	१०	४	धनुषि.	६ २९	५ ५७	५ २३ ० ४५
२८ ३७	७	गु.	११ ३०	पू.षा.	५३ १९	अ.	४६ १०	व.	११ ३०	२६	११	५	धनुषि.	६ २९	५ ५७	५ २४ ० १४
२८ ३२	८	शु.	१६ १३	उ.षा.	५९ ४०	सु.	४७ २४	ब.	१६ १३	२७	१२	६	म. ६।५४	६ २९	५ ५६	५ २४ ५९ ४५
२८ २८	९	श.	२१ २५	श्र.	६० ०	धृ.	४८ ४९	कौ.	२१ २५	२८	१३	७	मकरे	६ ३०	५ ५५	५ २५ ५९ १८
२८ २३	१०	र.	२६ ३९	श्र.	६ १२	शू.	५० ८	ग.	२६ ३९	२९	१४	८	कुं ३९।२०	६ ३०	५ ५३	५ २६ ५८ ५४
२८ १९	११	चं.	३१ २७	ध.	१२ २८	गं.	५१ ०	वि.	३१ २७	३०	१५	९	कुम्भे	६ ३१	५ ५२	५ २७ ५८ ३३
२८ १४	१२	मं.	३५ ३२	श.	१८ ५	वृ.	५१ १७	ब.	३ २९	३१	१६	१०	कुम्भे	६ ३२	५ ५०	५ २८ ५८ १३
२८ ९	१३	बु.	३८ ३१	पू.भा.	२२ ४८	ध्रु.	५० ४२	कौ.	७ १	का.१	१७	११	मी. ६।३७	६ ३३	५ ४८	५ २९ ५७ ५५
२८ ५	१४	गु.	४० २७	उ.भा.	२६ २४	व्या.	४९ १३	ग.	९ २९	२	१८	१२	मीन	६ ३४	५ ४७	६ ० ५७ ३८
२८ ०	१५	शु.	४० ५९	रे.	२८ ४६	ह.	४६ ४१	वि.	१० ४३	३	१९	१३	मे. २८।४६	६ ३५	५ ४६	६ १ ५७ २४

ग्रह दर्शन—शनि सूर्यास्त बाद पश्चिम में, मङ्गल खमध्य की ओर आता हुआ, शुक्र गुरु सूर्योदय से पहले पूर्व में दीखेंगे। बुध सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। ?? पट्टाभिषेके विजया १०

मार्गी बुधः २९।५३ शारद नवरात्र्यारम्भः घटस्थापनम्, मातामह *
चन्द्रदर्शनम् उष्टृङ्गोन्नतिः, मघा ३ शुक्रः १।२५ * श्राद्धम् चं.इं.यु.
भ. ३२।५१ उ., रबिउलावल मु. ३, चं. श. रा. यु.
भ. ३।२ या. मघा ४ शुक्रः ५६।२६ () ३५।२०, प्रदोषव्र., श.रा.यु.
अनु २ शनिः ३९।१५ [] कोजागरीव्र.का.स्ना.प्रा. शरत्१५सत्यव्रतम्
चित्रा रविः १९।२५, मार्गी भौमः ५१।२६, सरस्वत्यावाहनम्
भ. ११।३० उ. ४३।५१ या उ.फा. ४ बुधः १७।३६, उ.फा. १ गुरुः
श्रीदुर्गा ८ बलिदानम् मेला ज्वाला जी व तारादेवी
विजयादशमी अपराजिता पूजा, मेला दशहरा, सरस्वती विसर्जनम्
भ.५९।३उ. हस्त१बुधः२२।५३, पू.फा. २शुक्रः४३।२३स्वा. १इन्द्रः(नेप-
भ.३१।२७या पापांकुशा११व्र. —च्यून)१७।३५पं.प्रा.३९।२०??
ह.२बुधः५४।१५, चं.मं.यु. ३४।१२पूफा.१शु.५०।२५सरस्वतीपूजनम्
सं. तुलायामर्कः २।६, मु. ३० पुण्यं १७।६ या., पू. फा ३ शुक्रः ()
भ. ४०।२७ उ., पुष्य ४ वरुणः (हर्शल) ४१।४९
भ. १०।४३ या. हस्त ३ बुधः १०।६, पञ्चक समा. २८।४६, []

आश्विनशुक्ल ८ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ९२१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	१०	५	४	४	७	७	१
२४	२०	७	२६	१३	६	७	७
५९	५३	१७	४५	३१	५३	४४	४४
४५	२९	५३	१३	२	३७	२८	२८
५९	१	६२	१२	६९	५	३	३
३१	८	५३	५	१७	५४	११	११
सौर	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
चि	पूभ	उफ	उफ	पूफ	अनु	अनु	कृ.
१	१	४	१	१	२	२	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

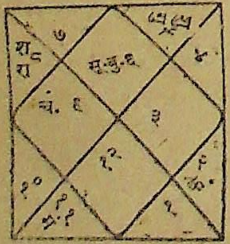

इस पक्ष में रूई पहिले मन्दी होकर पीछे १५-२० टका की तेजी हो चान्दी में घटावढ़ी होकर तेजी हो, सुवर्ण कुछ मन्दा, पाट हैसियन तेज। ति. ८ तक गेहूँ जौ चना तिल घी खाण्ड बिनौला अलसी में तेजी। ति. ६ को रूई के व्यापार में मन्दी का काम करने वालों को एक सप्ताह से कम ही दिनों में ही अच्छा लाभ होगा। ति. ८ से तेल मध चान्दी तेज। ति. ७ के पहिले जो सौदे तेज चल रहे हों वे यहां मन्दे और जो सौदे मन्दे चल रहे हों वे यहां तेज होने लगेंगे। ति. १३ से तिल तैल तथा रक्तवर्ण के पदार्थ तथा मिर्च केसर तेज। जूट सन कोयला लकड़ी का भाव सस्ता रहे।

आकाशलक्षण—ति. ७ से ११ तक तथा ति. १३ से १५ तक कहीं २ बूंदा बांदी के योग हैं।

श० वि०—सातें आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय ॥१॥

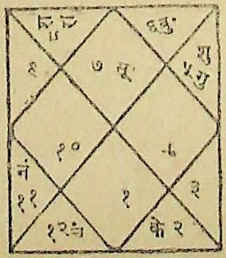

आश्विन शुक्ल १५ शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ९२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	५	४	४	७	७	१
१	२१	१६	२८	२१	७	७	७
५७	१६	२४	८	३८	३६	२२	२२
२४	३३	१३	५६	५५	१०	१३	१३
५९	६	९३	११	७०	६	३	३
४६	७	५१	४७	१४	१९	११	११
सौर	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चि.	पूभ	ह.	उफ	पूफ	अनु	अनु	कृ.
३	१	२	१	३	२	२	४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीसंवत् २०१३ शाकः १८७८ कार्तिककृष्णपक्षः १४																	तारीखें			चन्द्र	स्टैण्डर्ड टाइम				सौरसूर्यस्पष्टः			
दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
२७	५५	१	श	४०	११	अ.	२६	५०	व.	४३	१२	बा.	१०	३५	४	२०	१४	मेषे	६	३६	५	४५	६	२	५७	१३
२७	५०	२	र	३८	१६	भ.	२६	४४	सि.	३८	४१	तै.	९	१३	५	२१	१५	वृ.४४।२५	६	३७	५	४४	६	३	५७	५
२७	४५	३	चं	३५	१५	कृ.	२८	२६	व्य.	३३	२३	व.	६	४५	६	२२	१६	वृषे	६	३७	५	४३	६	४	५६	५९
२७	४१	४	मं	३१	१९	रो.	२६	२४	व.	२७	३७	ब.	३	१७	७	२३	१७	मि.५४।५५	६	३७	५	४२	६	५	५६	५५
२७	३६	५	बु	२६	३२	मृ.	२३	२७	प.	२०	३५	तै.	२६	३२	८	२४	१८	मिथुने	६	३८	५	४१	६	६	५६	५३
२७	३२	६	गु	२१	१०	आ.	१९	५१	शि.	१३	१८	व.	२१	१०	९	२५	१९	मिथुने	६	३९	५	४०	६	७	५६	५४
२७	२८	७	शु	१५	२६	पुन.	१५	५२	सि	[illegible]	[illegible]	ब.	१५	२६	१०	२६	२०	क. १।५२	६	४०	५	३९	६	८	५६	५७
२७	२४	८	श	९	२६	पु.	११	४२	शु.	५०	३	कौ.	९	२६	११	२७	२१	कर्के	६	४०	५	३८	६	९	५७	१
२७	२१	९	र	३	२७	श्ले.	७	२६	शु.	४२	१९	ग.	३	२७	१२	२८	२२	सि. ७।२६	६	४१	५	३७	६	१०	५७	७
अव	म	१०	र	५४	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	१७	११	चं	५२	१३	म.	[illegible]	[illegible]	ब्र.	३४	५१	ब.	२४	५५	१३	२९	२३	सिंहे	६	४२	५	३७	६	११	५७	१४
२७	१३	१२	मं	४७	२०	उ. फा	५६	५६	ऐं.	२७	४७	कौ.	१९	४६	१४	३०	२४	कं १४।९	६	४२	५	३६	६	१२	५७	२५
२७	९	१३	बु	४३	१८	ह.	५४	४९	वै.	२१	२१	ग.	१५	१९	१५	३१	२५	कन्यायाम्	६	४३	५	३५	६	१३	५७	३८
२७	५	१४	गु	४०	८	चि.	५३	३०	वि.	१५	३४	वि.	११	४३	१६	न१	२६	तु. २४।९	६	४४	५	३४	६	१४	५७	५४
२७	२	३०	शु	३८	४	स्वा.	५३	१९	प्री.	१०	३७	च.	९	६	१७	२	२७	तुलायाम्	६	४४	५	३३	६	१५	५८	११

(२० अक्तू. से २ नवं. तक १९५६ई०) दक्षिणायनगोलो शरदृतुः

ग्रहदर्शन—बुध ति. ४ को पूर्व में अस्त होगा। शनि सूर्यास्त बाद पश्चिम में मं. खमध्य की ओर आता हुआ दीखेगा। गु.शु. सूर्योदय से पहले पूर्व में दीखेगा।

पू.फा ४शुक्रः २६।१८ ❀रेलवे ८।० चं.के.यु.
ह.४बुधः १४।५६ :• चंद्रो.स्ना.नवं.११ता.३०चं.इं.यु.
भ.६।४५ उ.३५।१५या., करकचतुर्थी(कर्वा४) चन्द्रोदयोरात्री❀
स्वा. रविः४३।६,सा.वृश्चि.भानुः ८।३२, हेमन्ततुं प्रा. चि.१+
+बुधः १७।२१ उ.फा १ शुक्रः १६।३४ पूर्वास्तो बुधः ४६।५९
भ.२१।१० उ. ४८।१८या.,चि.२बुधः १८।२६, गु.शु.यु.
उ.फा२ कन्या५।५९ अहोई८ (सायङ्कालव्यापित्वात्) चं.व. यु.
चित्रा ३ तुला बुधः १८।२०
भ.३०।३२उ.५७।३७या.,उ.फा२ कं.गु.४१।३७,उ.फा३शु.५४।३१
×प्रदोषव्र. श्रीहनु. ज.दि. धन१३ यमायदीपदानम्
चि. ४ बुधः१७।९, रमा११व्र. स्मार्तानाम्
रमा११व्र. वैष्णवानाम् चं.शु., चं.गु.यु. ❀सारणम् चं.बु.,चं.र.यु.
भ.४३।१८उ., स्वा.१बुधः१६।३९,उ. फा४शुक्रः४२।१२ बु.इं.यु.×
भ.११।४३या.,अनु.१राहुःकृ.३के.१६।१,रूप१४, नरकहरा १४,∵
स्व.२बुधः१६।४८,श्रीमहाल.पूज.,दीपमाला शेषरात्रौ दारिद्रय.❀

कार्तिक कृष्ण पक्षः ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ९३६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	४	५	५	७	७	१
९	२२	२९	२१	१	८	६	६
५७	२२	२९	४१	३	२७	५६	५६
१	५६	१४	४	५९	२७	४६	४६
६०	११	१००	११	७१	६	३	३
४	५	४४	१२	१२	३२	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा	पू.भ	चि	उफ	उफ	अनु	अनु	कृ.
१	१	२	१	२	२	२	४
वायु	नीर	अग्नि	नीर	नीर	[illegible]	[illegible]	[illegible]

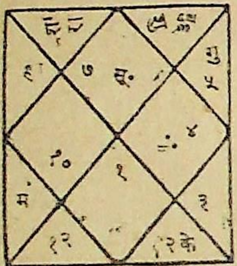

इस पक्ष में प्रजा कहीं रोग उपद्रवादि पीड़ित रहे। ति० ३ से २३ दिन में किसी महापुरुष को अपघात या महा भय हो। जौ गेहूँ आदि अनाज तथा अफीम के भाव में कुछ मन्दापन हो। ति० ५ से रुई में घटाबढ़ी अन्तिम रुख तेज चाँदी मन्दी और खाण्ड बिनौला सुपारी सरसों रेशम बार-दाना तेज हो। ति० ७ से गेहूँ चावल अलसी तेज, सोने में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे। ति० ९ से रुई घी का भाव तेज रहे। ति० १० के लगभग तिल उड़द चना घी के सञ्चय से भविष्य में लाभ रहे। इन दिनों कपास रुई का स्टाक करे तो ४ मास बाद लाभ। ति० १२ से मिल शेयर मशीनी चीजें तेज हो। हल्दी हींग सोंठ तेज रहे।

आकाश लक्षण—ति० २ से ४ तथा ति० ६ से ११ तक कहीं २ बादल चाल बूंदाबांदी हो।

शकुन विचार— कार्तिक बदी एकादशी वर्षा बादल होय।
आसाढ़मास बर्षा अधिक संशय करो न कोय।

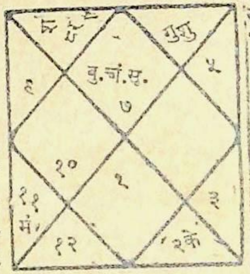

कार्तिक कृष्णपक्षः ३० शुक्र इष्टम् ०।० दिनगणः ९४२

सू.	मं	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	१०	६	५	५	७	७	१
१५	२३	९	०	८	९	६	६
५८	३८	३२	४७	१३	७	३७	३७
११	४६	६	१८	७	१०	४१	४१
६०	१४	९९	१०	७१	६	३	३
१७	४९	३६	४८	५८	४४	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अं.
स्वा	पू.भा	स्वा.	उफ	उफ	अनु	अनु	कृ.
३	२	१	२	४	२	१	३
वायु	नीर	वायु	नीर	नीर	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(३ नवं. से १८ नवं. तक १९५६ ई०) दक्षिणायन गोलो हेमन्ततुः

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ कार्तिक शुक्लपक्षः १५

= ३।२७ प्रबोधिनी ११, तुलसी विवाहभीष्म पं.आ.चातु.व्र.समा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ कार्तिक शुक्लपक्षः १५

(... तक १९५६ ई०)दक्षिणायन गोलो हेमन्ततु: = ३१।२७प्रबोधिनी ११,तुलसी विवाहभीष्म पं.आ.चातु.व्र.समा.

ग्रहदर्शन—बुध अस्त है । मं० सूर्यास्त बाद खमध्य की ओर आता दीखेगा । शु. गु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे । शनि ति. ८ को अस्त होगा । ∵ देव जयन्ती कार्ति.स्ना.समा. चं. के. यु.

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. क्रां.	अं. नवं.	मु. रवि.	चन्द्र संचारः	सू. उ.		सू. अ.		सौरसूर्यस्पष्ट: उदयकाले				
२६	५८	१	श.	३७	११	वि.	५४	२०	आ.	६	२६	कि.	७	३७	१८	३	२८	वृ ३६।५	६	४६	५	३२	६	१६	५८	३०	हस्त१शुक्रः२६।३अन्नकूटम्,गोवर्धनपूजा,वष्ट्रिकाकर्षणम्(रस्साकशी)
२६	५४	२	र.	३७	३८	अनु.	५६	३६	सौ.	३	२१	बा.	७	२४	१९	४	२६	वृश्चिके	६	४७	५	३१	६	१७	५८	५१	चन्द्रदर्शनम् उ.शृङ्गोन्नति, स्वा. ३ बुधः १९।१७ भाईदूज, कलम*
२६	५०	३	चं.	३९	२८	ज्ये.	६०	०	शो.	१	११	तै.	८	३३	२०	५	१	वृश्चिके	६	४८	५	३१	६	१८	५९	१४	रवि उलाखर मु. ४ * दवातपूजा, बलराज, चं.रा. चं.श.यु.
२६	४६	४	मं.	४२	२१	ज्ये.	०	१०	अ.	५६	५२	व.	१०	५४	२१	६	२	ध.०।१०	६	४९	५	३०	६	१९	५९	३९	भ. १०।५४ उ. ४२।२१ या, विशा. रविः ०।२१, स्वा. ४ बुधः ×
२६	४३	५	बु.	४६	२७	मू.	४	५३	धृ.	६०	०	ब.	१४	२४	२२	७	३		६	५०	५	२९	६	२१	०	६	[] प्रा. ५६।२३ गोप ८ (सायं गवां पूजाऽलङ्करणादि)
२६	३९	६	गु.	५१	१५	पू.षा.	१०	२४	धृ.	०	२१	कौ.	१८	५१	२३	८	४	म.२६।५८	६	५१	५	२८	६	२२	०	३४	विशा. १ बुधः २१।९ × १८।५३, हस्त २ शुक्रः १५।८
२६	३५	७	शु.	५६	२८	उ.षा.	१६	४१	शू.	१	२२	ग.	२३	५१	२४	९	५	मकरे	६	५१	५	२८	६	२३	१	३	भ. ५६।२८ उ., हस्त ३ शुक्रः १।११, अनु. ३ शनिः ४१।४०
२६	३१	८	श.	६०	०	श्र.	२३	१३	गं.	२	४३	वि.	२९	८	२५	१०	६	कु ५६।२३	६	५१	५	२७	६	२४	१	३३	भ. २९।८ या. विशा २ बुधः २४।० अस्तः शनिः ४३।४२ पञ्चक[]
२६	२७	८	र.	१	४९	ध.	२९	३४	वृ.	४	३	ब.	१	४९	२६	११	७	कुम्भे	६	५२	५	२७	६	२५	२	६	हस्त ४ शुक्रः ४६।३९ () परिक्रमा ९ सू. बु. यु.
२६	२४	९	चं.	६	४१	श.	३५	२३	ध्रु.	५	२	कौ.	६	४१	२७	१२	८	कुम्भे	६	५३	५	२६	६	२६	२	४२	विशा. ३ बुधः २७।१८, वक्रीवरुणः ०।० स्वर्णगर्भकूष्माण्डदानम्()
२६	२०	१०	मं.	१०	५१	पू.भा.	४०	२१	व्या	५	२९	ग.	१०	५१	२८	१३	९	मी२४।६	६	५४	५	२५	६	२७	३	१९	भ. ४२।२२ उ. चं.मं.यु. :: २ शुक्रः १५।४१ सत्यव्रतम्
२६	१६	११	बु.	१३	५३	उ. भा	४४	११	ह.	५	६	वि.	१३	५३	२९	१४	१०	मीने	६	५४	५	२४	६	२८	३	५७	भ. १३।५३ या. विशा. ४ वृश्चि. बुधः ३१।३५. चित्रा १ शुक्रः =
२६	१२	१२	गु.	१५	४९	रे.	४६	५१	व.	३	५३	बा.	१५	४९	म१	१५	११	मे.४६।५१	६	५५	५	२४	६	२९	४	३६	सं.वृश्चिकेऽर्कः ५४।४६ मु. ३० पुण्यं परदिने, पञ्च.स. ४६।५१!!
२६	८	१३	शु.	१६	२४	अ.	४८	१६	सि.	५८	२३	तै.	१६	२४	२	१६	१२	मेषे	६	५६	५	२४	७	०	५	१८	अनु. १ बुधः३७।२८,वैकुण्ठ१४व्र. !! श्रीनेहरूजंमो.प्रदो.व्र.सू.बु.यु.
२६	५	१४	श.	१५	४०	भ.	४८	२९	व.	५४	९	व.	१५	४०	३	१७	१३	मेषे	६	५८	५	२३	७	१	६	१	भ. १५।४० उ. ४४।४२ या, उ. फा. ३ गुरुः ३।२५ चित्रा ∵
२६	१	१५	र.	१३	४४	कृ.	४७	२९	प.	४९	३	ब.	१३	४४	४	१८	१४	वृ.३।१२	६	५९	५	२२	७	२	६	४७	अनु. २ बुधः४४।१ मेला श्रीपुष्करराज व रामतीर्थ श्रीगुरुनानक ∵

कार्तिक शुक्ल पक्ष ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ९५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	१०	६	५	५	७	७	१
२४	२५	२२	२	१७	१०	६	६
१	५५	४१	११	५१	२	१२	१२
३३	२१	६	११	०	८	१३	१३
६०	१९	९७	१०	७२	६	३	३
३०	३३	२९	२	३२	५८	११	११
सौरि:	मा.	मा.	मा.	मा	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
वि. २	पू.भा. २	वि. १	उ.फा. २	ह. ३	अनु ३	अनु १	कृ. ३
तुला	कुम्भ	तुला	कन्या	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	वृष

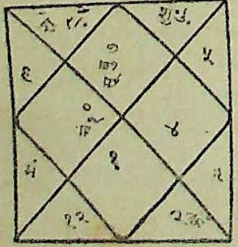

इस पक्ष में कहीं रोगभय कहीं सैनिक हलचल हो । रूई के भावों में घटा बढ़ी से पहिले मन्दी, पीछे तेजी हो । घी गुड़ तेल तिल अलसी सरसों में तेजी हो । तिः ४ से जौ चावल गेहूं मघ मसूर एरण्ड का भाव तेज रहे । तिः ८ से रूई शेयर सुवर्ण के भाव में मन्दी आवे और अनाज के भावों में तेजी ही रहे । अन्य वायदे सट्टे की चीजों का जो भाव पहिले हो कुछ दिन उस से विपरीत भाव रहे । तिः १३ से अनाज रस-कस के भावों में मन्दे का ध्यान रख कर व्यापार करना ठीक होगा । सन रेशम सूत का ध्यान तेजी में रखना ।

कार्तिक शुक्लपक्ष १५ रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ९५८

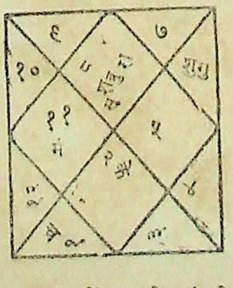

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	५	५	७	७	१
२	२८	५	३	२७	१०	५	५
६	४४	३०	२८	३४	५८	४६	४६
४७	४३	४०	५१	६	४	४६	४६
६०	२३	९४	९	७३	७	३	३
४६	१६	३०	१७	२०	१	११	११
सौरि:	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
वि. ४	पू.भा. ३	अनु १	उ.फा. ३	चि. २	अनु ३	अनु १	कृ. ३
वृश्चि	कुम्भ	वृश्चि	कन्या	कन्या	वृश्चि	वृश्चि	वृष

आकाश लक्षण—इस पक्ष में आकाश प्रायः निर्मल रहे तिः ६।७ तथा तिः १० से १५ तक कहीं २ सफेद रंग के बादल दीखें । समुद्र तटवर्ती देशों में बूंदा बांदी हो । शकुन-विचार—कार्तिक शुदि एकादशी वर्षा बादल होय । चार मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय ।। भाई दूज के दिन अपनी बहन के घर जाकर उसके हाथ से प्रेमपूर्वक भोजन करें और उसे यथाशक्ति अनेक प्रकार के दान देवें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

Pandit · Shyam Sunder Sharma ·

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः १६	तारीखें	चन्द्र	स्टैण्डर्डटाइम	सौरसूर्यस्पष्टः	(१९ नवं. से २ दिसं. १९५६ ई०) दक्षिणायन गोली, हेमन्ततुः ।

ग्रहदर्शन—बुध, शनि अस्त है । मं. सूर्यास्त बाद खमध्य की ओर आता हुआ दीखेगा । शु.गु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा ।

दि.मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. मा.	अं. रा.	मु. प.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले	
२५ ५७	१	चं.	१० ४९	रो.	४५ ३२	शि.	४३ ९	कौ.	१० ४९	५	१९	१५	वृषे	७ ०	५ २१	७ ३ ७ ३४	अनु. रवि: १२।१६ चित्रा ३ तुला. शुक्रः ५०।१८
२५ ५३	२	मं.	६ ५३	मृ.	४२ ४६	सि.	३६ ३४	ग.	६ ५३	६	२०	१६	मी१४।९	७ १	५ २१	७ ४ ८ २३	भ. ३४।३० उ. अनु. ३ बुधः ५०।३८, पातस्पर्शः ५३।५
२५ ४९	३	बु.	२ ८	आ.	३९ २१	स.	२९ २३	वि.	२ ८	७	२१	१७	मिथुने	७ २	५ २१	७ ५ ९ १५	भ. २१०८ या सा.धनु.भानुः ५५।१९ मीने भौमः ९।५६ श्रीगणेश+
अवम	४	बु.	५४ ४०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	+४ व्र. सू.रा.यु. पातमोक्षः ४०।७
२५ ४६	५	गु.	५१ ७	पुन.	३५ २६	शु.	२१ ५१	कौ.	२३ ५७	८	२२	१८	क.२१।२५	७ ३	५ २०	७ ६ १० ८	अनु. ४ बुधः ५८।३१ चित्रा ४ शुक्रः ४२।२५
२५ ४३	६	शु.	४५ १३	पु.	३९ १९	शु.	१४ ५	ग.	१८ १०	९	२३	१९	कर्के	७ ३	५ २०	७ ७ ११ ३	भ. ४५।१३ उ. चं. व. गु.
२५ ४०	७	श.	३९ १६	श्ले.	२७ ४	ब्र.	५८ १९	वि.	१२ १४	१०	२४	२०	सिं२७।४	७ ३	५ २०	७ ८ १२ ०	भ. १२।१४ या श्रीमहाकाल भैरव जयन्ती (अर्धरात्रव्यापित्वात्)
२५ ३९	८	र.	३३ ३३	म.	२३ ०	ऐं.	५० ४२	बा.	९ २४	११	२५	२१	सिंहे	७ ४	५ २०	७ ९ १२ ५७	ज्येष्ठा १ बुधः ६।२८ स्वा. १ शुक्रः २५।२६
२५ ३७	९	चं	२८ १४	पू.फा.	१९ १९	वि.	४३ २७	तै.	० ५३	१२	२६	२२	क. ३३।३२	७ ५	५ २०	७ १० १३ ५५	भ. ५५।५१ उ. चं गु. यु.
२५ ३५	१०	मं.	२३ २८	उ. फा.	१६ १०	प्री.	३६ ४३	वि.	२३ २८	१३	२७	२३	कन्यायाम्	७ ५	५ २०	७ ११ १४ ५५	भ. २३।२८ या. ज्येष्ठा २ बुधः १४।४४, सू. श. यु.
२५ ३४	११	बु.	१९ ३२	ह.	१३ ५०	आ.	३० ४२	ब.	१९ ३२	१४	२८	२४	तु.४३।३	७ ६	५ २०	७ १२ १५ ५७	उ. भा. भौमः ५६।७ स्वा. २ शुक्रः ८।१० उत्पन्ना ११ व्र.
२५ ३२	१२	गु.	१६ ३१	चि.	१२ १७	सौ.	२५ २३	तै.	१६ ३१	१५	२९	२५	तुलायाम	७ ७	५ २०	७ १३ १७ ०	ज्ये. ३ बुधः २३।२७ मल्ल १२, प्रदोषव्रतम्, चं.इं., चं.शु. युतिः
२५ ३०	१३	शु.	१४ ३४	स्वा.	११ ४९	शो.	२० ५४	व.	१४ ३६	१६	३०	२६	बृ.५७।२३	७ ७	५ २०	७ १४ १८ ४	भ. १४।३४ उ. ४४।१३ या स्वा. ३ शुक्रः ५०।३४
२५ २८	१४	श.	१३ ५२	वि.	१२ ३४	अ.	१७ २५	शा.	१३ ५२	१७	१८	२७	वृश्चिके	७ ८	५ २०	७ १५ १९ १०	ज्ये. ४ बुधः ३२।४९ मेला पुरमण्डल देविकास्नानम्, दिसं. १२ता.*
२५ २६	३०	र.	१४ २४	अनु.	१४ ३३	सु.	१४ ५५	ना.	१४ २४	१८	२	२८	वृश्चिके	७ ९	५ २०	७ १६ २० १६	ज्ये. रवि: १९।२६ सूर्यग्रहणम् *३१, चं.श.चं.रा.यु.

मार्गशीर्षकृष्णा ८ रवाविष्टम् दिनगणः ९६५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	७	५	६	७	७	१
९	१	१६	४	६	११	५	५
१२	३६	२९	३२	८	४७	२४	२४
५७	१९	५५	९	४५	३८	३०	३०
६०	२५	९३	८	७३	७	३	३
५७	५४	३७	३५	४२	९	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
अनु. २	पू.भा. ४	अनु. ४	उ.फा. ३	चि. ४	अनु. ३	अनु. १	कृ. ३

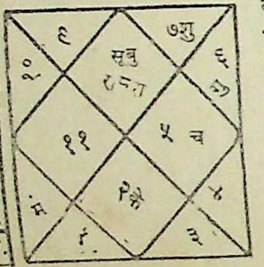

इस पक्ष में सुवर्ण में काफी मन्दी हो चाँदी में भी एक दो टका की मन्दी आवे चना आदि अनाज तथा ऊन धातु रस में तेजी होकर पीछे मन्दी हो । ज्वार बाजरा मूंगफली में घटाबढ़ी चले, जूट का भाव सम रहे । ति. ३ बुधवार को रुई का भाव घटे । पीछे फिर ३ दिन के अन्दर ही ८-१० टका की तेजी भी आवे चाँदी में कुछ मजबूती रहे । ति. ८ से अनाज और घृत के भाव में तेजी रहे । नारियल जायफल चन्दन लालमिर्च गुड़ शक्कर खाण्ड तेज हो। ति. १३ से पहिले रुई सूत घी तेल गुड़ खाण्ड गेहूँ चावल संग्रह करे तो अढ़ाई मास के अन्दर उत्तम लाभ मिले ।

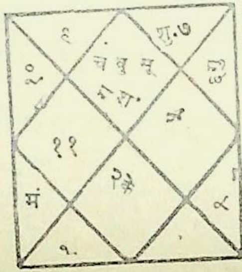

मार्गशीर्ष कृष्णा ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ९७२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	७	५	६	७	७	१
१६	४	२७	५	१४	१७	५	५
२०	४४	२१	२८	४५	३७	२	२
१६	८	५२	५७	३७	३०	१३	१३
६१	२८	९२	७	७४	७	३	३
६	५	१०	२९	३	६	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
अनु. ४	पू.भा. ४	ज्ये. ४	उ.फा. ३	स्वा. ३	अनु. ३	अनु. १	कृ. ३

आकाशलक्षण—ति. १ से ७ तक कहीं-कहीं बादलचाल बूंदा-बांदी के योग हैं। शीतका प्रभाव बढ़ने लगेगा ।

शकुनविचार—मगसिर की तिथि नवमी दिश ईशान । बायु चले बादर दिखे बरसा थोड़ो जान ॥ मार्ग-

श्रीसंवत् २०१३ शाकः १८७८ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः १५	तारीखें	चन्द्र	स्टैण्डर्डटाइम	सौरसूर्यस्पष्टः	(३ दिसं० से १७ दिसं तक १९५६ ई०) दक्षिणायनगोलो हेमन्ततुः ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्रीसंवत् २०१३ शाकः १८७८ मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः १७

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. मार्ग	अं. दिसं.	मु. ज्यं.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
२५	२५	१	चं.	१६	२१	ज्ये.	१७	५१	धृ.	१३	२९	ब.	१६	२१	१९	३	२९	ध.१७।५१	७	१०	५	२०	७	१७	२१	१३
२५	२३	२	मं.	१९	२५	मू.	२२	१४	शू.	१२	५२	कौ.	१९	२५	२०	४	१	धनुषि	७	११	५	२०	७	१८	२२	३२
२५	२१	३	बु.	२३	३८	पू. षा.	२७	३९	गं.	१३	६	ग.	२३	३८	२१	५	२	म.४४।१०	७	११	५	२०	७	१९	२३	४१
२५	१९	४	गु.	२८	३४	उ.षा	३३	४४	वृ.	१३	५७	वि.	२८	३४	२२	६	३	मकरे	७	११	५	२०	७	२०	२४	५१
२५	१८	५	शु.	३३	५८	श्र.	४०	१४	ध्रु.	१५	१३	व.	१	१६	२३	७	४	मकरे	७	१२	५	२०	७	२१	२६	२
२५	१६	६	श.	३९	२०	ध.	४६	३९	व्य.	१६	३३	कौ.	६	३९	२४	८	५	कुं १३।२६	७	१३	५	२०	७	२२	२७	१५
२५	१५	७	र.	४४	१६	श.	५२	३८	ह.	१७	३९	ग.	११	४८	२५	९	६	कुंभे	७	१४	५	२०	७	२३	२८	३०
२५	१३	८	चं.	४८	२५	पू.भा.	५७	५२	व.	१८	१८	वि.	१६	२०	२६	१०	७	मी ४१।३३	७	१४	५	२०	७	२४	२९	४६
२५	११	९	मं.	५१	३८	उ.भा.	६०	०	सि	१८	१२	बा.	२०	१	२७	११	८	मीने	७	१५	५	२०	७	२५	३१	२
२५	१०	१०	बु.	५३	३४	उ.भा.	१	५८	व्य.	१७	१५	तै.	२२	३६	२८	१२	९	मीने	७	१६	५	२०	७	२६	३२	१९
२५	८	११	गु.	५४	७	रे.	४	५९	व.	१५	१९	व.	२३	५०	२९	१३	१०	मे. ४।५९	७	१७	५	२०	७	२७	३३	३८
२५	७	१२	शु.	५३	२५	अ.	६	३९	प.	१२	२३	ब.	२३	४६	३०	१४	११	मेषे	७	१८	५	२०	७	२८	३४	५८
२५	५	१३	श.	५१	२७	भ.	७	९	शि.	८	२७	कौ	२२	२६	१	१५	१२	वृ २१।५९	७	१८	५	२०	७	२९	३६	१८
२५	३	१४	र.	४८	२६	कृ.	६	२८	सि.	३	५५	ग.	१९	५६	२	१६	१३	वृषे	७	१९	५	२०	८	०	३७	३९
२५	२	१५	चं.	४४	३१	रो.	४	४७	शु.	५१	३४	वि.	१६	२८	३	१७	१४	मि ३३।३०	७	२०	५	२१	८	१	३९	१

ग्रहदर्शन—बुध ति. ४ को पश्चिम में और शनि ति. १२ को पूर्व में उदय होगा । मं. सूर्यास्त बाद खमध्य की ओर आता दीखेगा । शु. गु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे । []सत्यव्रतम् श.रा.यु.

चन्द्रदर्शनम् सूक्ष्म उ.शृङ्गोन्नतिः मूल १ धनुः बुधः ४३।५ स्वा.*
जमादि उलावल मु. ५ * ४ शुक्रः ३२।४० चं. बु. यु.
भ. ५६।६ उ. मूल २ बुधः ५४।९ =शनिः १४।१८ मोक्षदा ११ व्र.नि.
भ. २८।३४ या विशा. १ शुक्रः १४।२९, व.पुष्य ३ वरुणः (हर्शल)≡
≡ ५४।२८, पश्चिमोदयो बुधः २३।५०
मूल ३ बुधः ६।१, विशा. २ शुक्रः ५५।५७, अनु ४ शनिः ०।९ ??
भ. ४४।१६ उ. ?? पञ्चक प्रा. १३।२६
भ. १६।२० या. मूल ४ बुधः १७।२० :: चं. के. यु.
विशा ३ शुक्रः ३७।१०, चं. मं. यु. × श्रीगीताजयन्ती
पू. षा. १ बुधः ३०।५६, उ. फा. ४ गुरुः २३।४८
भ. २३।५० उ. ५४।७ या., पञ्चकस. ४।५९, मोक्षदा ११ व्र. ×
पू.षा. २ बुधः ४६।५६ विशा. ४ वृश्चि. शुक्रः १८।१५, उदितः=
. मूलेधनुष्यर्कः २३।११ मु. ३० पुण्यं ७।११ उ., शनि प्रदोषव्र. ::
भ. ४८।२६ उ., अनु. १ शुक्रः ५९।१२ पिशाचमोचनश्राद्धम्
भ. १६।२८ या., पू.षा. ३ बुधः ५।१२, श्रीदत्तात्रेयजयन्ती[]

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ चन्द्रइष्टम् ०।० दिनगणः ९८०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	११	८	५	६	७	७	१
२४	८	९	६	२४	१३	४	४
२९	३७	३३	२४	३९	३४	३६	३६
४६	१३	५२	५१	२६	१	४६	४६
६१	३०	९०	६	७४	७	३	३
१९	१५	२८	२६	२७	०	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ज्ये. ३	उ.भा. २	मू. ३	उ.फा. ३	वि. २	अनु ४	अनु १	कृ. ३
[illegible]	सौम्य	क्रान्ति	नीर	चण्ड	चण्ड	चण्ड	चण्ड

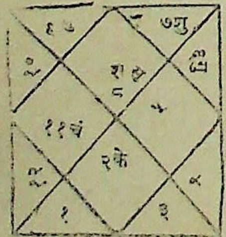

इस पक्ष में रूई खाण्ड मूंग मोठ चना गेहूं आदि अनाज में तेजी चौपाये पशु तेज । कहीं भूकम्प के झटकें की भी सम्भावना है । तिः ४ से रूई और शेयर के भाव में मन्दी और चान्दी के भाव में तेजी चले । अलसी में घटा बढ़ी हो । तिः १० से ३ दिन में बिनौला के भाव में तेजी आवे । तिः १२ से पशुओं को रोगभय अलसी सरसों मूंगफली मन्दी, लोहा जस्त सीसा रंग आदि काले पदार्थ घास लकड़ी तथा गुड़ खाण्ड में तेजी आवे ।

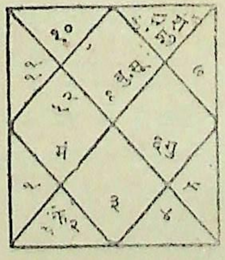

मार्गशीर्ष शुक्ल १५ चन्द्रइष्टम् ०।० दिनगणः ९८७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	८	५	७	७	७	१
१	१२	१९	७	३	१४	४	४
३९	१३	५२	६	२१	२२	१४	१४
१	३५	४२	३९	०	४७	३१	३१
६१	३१	८४	५	७४	६	३	३
२२	४९	२०	२०	३६	५५	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू १	उ.भा. ३	पू.षा. २	उ.फा. ४	अनु १	अनु ४	अनु १	कृ. ३
क्रान्ति	सौम्य	सौम्य	नीर	चण्ड	चण्ड	चण्ड	चण्ड

आकाशलक्षण—तिः २ से ६ तक तथा ति. ९ से १५ तक कहीं २ बूंदा बांदी के योग हैं । कई प्रदेशों में फसल को हानि पहुंचे ।

शकुन विचार

काले वर्ण के बादला, जिसमें बिजला होय । उत्तर दिशि जो होय तो वर्षा अच्छी जोय ॥
शुक्रवारी बादली रही शनिश्चर छाय । तो वर्षा होगी अधिक ऐसा योग बताय ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत २०१३ शाकः १८७८ पौष कृष्णपक्षः १८														तारीखें			चन्द्र	स्टैण्डर्ड टाइम		सौरसूर्यस्पष्टः
दि.मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. पौष	अं. दिसं.	मु. ज.उ.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदयकाले
२५ ०	१	म.	३६	३६	मृ.	५८	[illegible]	शु.	४४	३३	बा.	१२	५	४	१८	१५	मिथुन	७ २१	५ २१	८ २ ४० २३
२४ ५६	२	बु.	३४	२०	पुन.	५५	१४	अ.	३७	६	तै.	६	५६	५	१६	१६	क. ४१।१०	७ २१	५ २१	८ ३ ४१ ४५
२४ ५७	३	गु.	२८	३६	पु.	५१	७	ऐं.	२६	२०	व.	१	२६	६	२०	१७	कर्के	७ २२	५ २२	८ ४ ४३ ८
२४ ५६	४	शु.	२२	४४	श्ले.	४६	५५	वै.	२१	२८	बा.	२२	४४	७	२१	१८	सिं ४६।५५	७ २२	५ २२	८ ५ ४४ ३१
२४ ५४	५	श.	१६	५१	म.	४२	५०	वि.	१३	३४	तै.	१६	५१	८	२२	१६	सिंहे	७ २३	५ २२	८ ६ ४५ ५५
२४ ५६	६	र.	११	११	पू. फा.	३६	४	प्री.	[illegible]	[illegible]	व.	११	११	६	२३	२०	कं. ५३।१५	७ २४	५ २२	८ ७ ४७ १६
२४ ५७	७	चं.	५	५६	उ. फा.	३५	४६	सौ.	५१	२८	ब.	५	५६	१०	२४	२१	कन्यायाम्	७ २४	५ २३	८ ८ ४८ ४४
२४ ५६	८	मं.	१	१६	ह.	३३	१४	शो.	४५	६	कौ.	१	१६	११	२५	२२	कन्यायाम्	७ २४	५ २४	८ ६ ५० १०
अवम	६	मं	५६	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०।०	० ०	० ०	० ० ० ०
२५ ०	१०	बु.	५४	३३	चि.	३१	३२	अ.	३६	३४	व.	२५	५६	१२	२६	२३	तु. २।२३	७ २५	५ २५	८ १० ५१ ३७
२५ २	११	गु.	५२	४३	स्वा.	३०	५०	सु.	३४	४७	ब.	२३	३८	१३	२७	२४	तुलायाम्	७ २५	५ २६	८ ११ ५३ ४
२५ ४	१२	शु.	५२	८	वि.	३१	२१	धृ.	३०	५७	कौ.	२२	२५	१४	२८	२५	वृ १६।१२	७ २५	५ २७	८ १२ ५४ ३२
२५ ५	१३	श.	५२	४६	अनु.	३३	४	शू.	२८	७	ग.	२२	२८	१५	२६	२६	वृश्चिके	७ २६	५ २८	८ १३ ५५ ५६
२५ ७	१४	र.	५४	५६	ज्ये.	३६	५	ग.	२६	१६	वि.	२३	५२	१६	३०	२७	ध. ३६।५	७ २६	५ २६	८ १४ ५७ २५
२५ ६	३०	चं.	५८	५	मू.	४०	१२	वृ.	२५	२३	च.	२६	३०	१७	३१	२८	धनुषि	७ २६	५ ३०	८ १५ ५८ ५१

(१८ दिसं. से ३१ दिसं. तक १६५६ ई०) दक्षिणायनगोलो हेमन्ततुंः

ग्रहदर्शन--सूर्यास्त बाद बुध, पश्चिम में और भौम, खमध्य में दीखेगा। गुरु पश्चिम रात्रि में खमध्य की ओर आता हुआ दीखेगा। शु.श. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे।

पू. षा. ४ बुधः ३०।५६ अनु. २ शुक्रः ४०।१

भ. १।२६ उ. २८।३६ या श्रीगणेश ४ व्र. चं. व. युति.

सा. मकरे भानुः २०।१६ उत्तरायणं शिशिरर्तुं प्रा.

उ. षा. १ बुधः ७।५७, अनु. ३ शुक्रः २०।४१

भ. ११।११ उ. ३८।३३ या.

उ. षा. २ मकरे बुधः ५६।४५, चं. गु. यु.

रेवत्यां भौमः ११।२६, अनु. ४ शुक्रः १।११

भ. २५।५६ उ. ५४।३३ या. शु. श. चं इं. युतिः

ज्ये. १ शुक्रः ४१।२६, सफला ११ व्र. स्मा. वै., मेला बाबा*

पू. षा. रविः २४।५२ सफला ११व्र. नि., चं. रा. यु.

भ. ५२।४६उ.,उ.षा. ३बुधः२३।२६,शनिप्रदोष व्र., चं.शं.चं.गु.यु.

भ. २३।५२ या., ज्ये. २ शुक्रः २१।४३ *हरवल्लभ जालन्धर

सोमवती ३०, चं. सू. यु.

पौषकृष्ण ८ भौम इष्टम् ०।० दिनगणः ६६५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	६	५	७	७	७	१
६	१६	०	७	१३	१५	३	३
५०	३३	०	४५	१८	१७	४६	४६
१०	४१	१७	४	३२	३२	४	४
६१	३३	५६	४	७४	६	३	३
२६	१	२७	१	५१	३२	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मू. ३	उ.भा. ४	पू.षा. २	पू.फा. ४	अनु ३	अनु ४	अनु १	३
दीप्त	सौम्य	क्रूर	क्रूर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

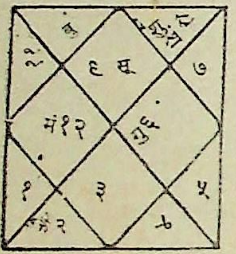

इस पक्ष में शक्कर खाण्ड गुड़ तेल घी नमक चांदी बिनौला जूट में तेजी रहेगी। ति. ६ से अलसी सरसों एरण्ड में तेजी रहे। रुई में मन्दी आकर फिर ४ दिनों के अन्दर ही ८-१० टका की तेजी आवे। चांदी का रुख मन्दा, अनाज घी में मन्दी रहे, ति. ११ से सुवर्ण का भाव मन्दा रहे, ति. १२ से तिल-तैल हल्दी, ऊन, चांदी, गेहूं, बिनौला चावल, चना, खाण्ड आदि में तेजी रहे।

आकाश लक्षण–आकाश साफ रहेगा, कहीं-कहीं खेतियों को हानि पहुंचे। ति १ से ५ तक तथा ति १२ से ३० तक कहीं-कहीं कुछ मामूली वर्षा के योग हैं। शकुन विचार – पौ. कृ. ८ को जो पूर्व दिशा में बादल हों और गर्जना भी सुनाई दे तो आगे तृण और अनाज तेज होवेगा। तेरस, चौदश मावसपौष वदी में जान। तीन दिनों में गर्भ हो श्रावण वर्षा मान। चतुर्दशी व अमावस के दिन जिस देश में प्रातः सूर्योदय बादलों में से हो तो वहां पदार्थों के भावों की स्थिरता होगी।

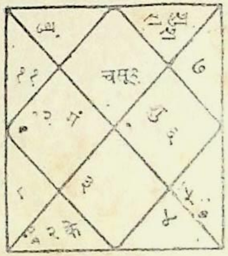

पौषकृष्ण ३० चन्द्रइष्टम् ०।० दिनगणः १००१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	६	५	७	७	७	१
१५	१६	३	८	२०	१५	३	३
५८	५४	५५	६	४७	५६	२६	२६
५१	१२	२३	२३	४७	१७	५६	५६
६१	३४	१०	२	७४	६	३	३
२६	०	४८	५५	५५	२१	११	११
सौरः	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ४	रे. १	पू.षा. ३	पू.फा. ४	ज्ये. २	अनु ४	अनु १	कृ. ३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(१ जन. से १६ जन. तक १६५७ ई०) उत्तरायणं,दक्षिणगोलः

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ पौष शुक्लपक्षः १६

दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		तारीखें हिं. पौष	अं. जन.	मु. जमा.	चन्द्र सञ्चारः	स्टैण्डर्डटाइम सू. उ.		सू. अ.		सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले			
२५	११	१	मं.	६०	०	.प.	४५	२५	ध्रु.	२५	२३	कि.	३०	१४	१८	ज१	२९	धनुषि	७	२६	५	३०	८	१७	०	१७
२५	१२	१	बु.	२	२३	उ.षा.	५१	२४	व्या	२६	४	व.	२	२३	१९	२	३०	म. १।५५	७	२६	५	३१	८	१८	१	४३
२५	१४	२	गु.	७	२४	श्र.	५७	५५	ह	२७	१२	कौ.	७	२४	२०	३	१	मकरे	७	२६	५	३२	८	१९	३	८
२५	१५	३	शु.	१२	५२	ध.	६०	०	व	२८	३४	ग.	१२	५२	२१	४	२	कुं ३१।११	७	२७	५	३३	८	२०	४	३३
२५	१७	४	श.	१८	१६	ध.	४	२७	सि.	२९	४८	वि.	१८	१६	२२	५	३	कुम्भे	७	२७	५	३३	८	२१	५	५८
२५	१९	५	र.	२३	७	श.	१०	३४	व्य	३०	३७	बा.	२३	७	२३	६	४	मी ५९।४०	७	२७	५	३४	८	२२	७	२४
२५	२०	६	चं.	२७	१४	पू.भा.	१६	२	व.	३०	४८	तैं.	२७	१४	२४	७	५	मीने	७	२७	५	३५	८	२३	८	४९
२५	२२	७	मं.	३०	१०	उ.भा.	२०	२७	प	३०	९	व.	३०	१०	२५	८	६	मीने	७	२७	५	३६	८	२४	१०	१४
२५	२४	८	बु.	३२	१	रे.	२३	४५	शि.	२८	३८	वि.	१	५	२६	९	७	मे. २३।४५	७	२८	५	३६	८	२५	११	३९
२५	२५	९	गु.	३२	३१	अ.	२५	४७	सि.	२६	१	बा.	२	१६	२७	१०	८	मेषे	७	२८	५	३७	८	२६	१३	४
२५	२७	१०	शु.	३१	४१	भ.	२६	३७	सा.	२२	२८	तैं.	२	६	२८	११	९	वृ. ४१।३१	७	२८	५	३८	८	२७	१४	२८
२५	२८	११	श.	२९	३९	कृ.	२६	१२	शु	१७	५४	व.	०	४०	२९	१२	१०	वृषे	७	२८	५	३९	८	२८	१५	५२
२५	३०	१२	र.	२६	३४	रो.	२४	४१	शु	१२	३१	बा.	२६	३४	म१	१३	११	मि ५३।३२	७	२८	५	३९	८	२९	१७	१५
२५	३२	१३	च.	२२	३५	मृ.	२२	२४	ब्र.	५६	३५	तैं.	२२	३५	२	१४	१२	मिथुने	७	२८	५	४०	९	०	१८	३८
२५	३३	१४	मं.	१७	४६	आ.	१९	१५	वै.	५२	१५	व.	१७	४६	३	१५	१३	मिथुने	७	२८	५	४१	९	१	२०	०
२५	३५	१५	बु.	१२	२८	पुन.	१५	३७	वि.	४४	३५	ब.	१२	२८	४	१६	१४	क. ११।३१	७	२८	५	४२	९	२	२१	२१

(१ जन. से १६ जन. तक १९५७ ई०) उत्तरायणं, दक्षिणगोलः शिशिरर्तुः । × व.पू.षा.३बुधः१८।३९ ∵ १।५६ सु.बु.यु.

ग्रहदर्शन—बुध ति. ३ को पश्चिम में अस्त होगा । मंगल सूर्यास्त बाद खमध्य में और गुरु पश्चिम रात्रि में खमध्य की ओर आता दीखेगा । शु. श. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे ।

वक्री बुधः १०।० जन. १ ता. ३१ सन् १९५७ ई०
चन्द्रदर्शनम् उत्तरशृङ्गोन्नतिः ज्ये. ३ शुक्रः १।५४
व.उ.षा. २ बुधः ५०।४० विशा. ४ राहुः कृत्ति २ केतुः ८।१०*
भ. ४५।३४उ., ज्ये. ४ शुक्रः ४२।० पश्चिमास्तो बुधः १।५३ ??
भ. १८।१६ या., * जमादिउलाखर मु. ६
ज्ये. १ शनिः ५८।५२ ?? पञ्चक प्रा. ३१।११
मू. १ धनुः शुक्रः २२।१ :: चं.व.यु.माघस्ना.व्र.नियमाद्यारम्भ
भ. ३०।१० उ., व. उ.षा.१ धनुषि बुधः २।२२, जन्मदिन +
भ. १।५ या. पञ्चक स. २३।४५ चं.म.यु.
उ.षा. रविः २६।१९ व.पू.षा. ४ बुधः ३६।८ मू. २ शुक्रः ∵
चं.के. युतिः + सिक्खगुरु श्रीगोविन्दसिंह जी
भ. ०।४० उ. २९।३९ या., मू. ३ शुक्रः ४१।४८ पुत्रदा ()
सं. मकरेऽर्कः ४१।४७, मु. ३० पुण्यंपरदिने (मध्याह्नं यावत्) ×
सोम प्रदोषव्र. () ११ व्र., लोहड़ीमहोत्सवः,(पंजाबप्रान्ते)
भ. १७।४६ उ. ४५।७ या., मू. ४ शुक्रः २१।४० सत्यव्रतम्
व.पू.षा२बुधः३३।३८,वक्रीगुरुः ३८।११ पूर्वोदयो बुधः ३३।७ ::

पौष शुक्ल ८ बुध इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०१०

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	८	११	८	५	८	७	७	१
	२५	२५	२८	८	२	१६	३	३
	११	५	५१	२५	२	५२	१	१
	३९	५३	५८	५५	३१	२३	२२	२२
	६१	३४	८३	१	७५	६	३	३
	२५	५९	५५	१७	४	३	११	११
सौरि:		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]		रे. ३	उ.षा १	[illegible]	मू. १	ज्ये १	वि. ४	कृ. २
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

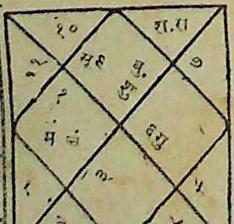

इस पक्ष में रुई में १५-२० टका की तेजी होकर बाद में ति. ३ से उतनी ही मन्दी होगी । चाँदी में घटा-बढ़ी होकर अन्त में २-४ की तेजी हो । शेयर भी तेज । २४ दिन में कपूर गुड़ खाण्ड शक्कर तिल एरण्ड बिनौला मूँगफली गेहूँ जौ चना आदि अनाज तथा पाट हेसियन मन्दे । ति. ६ से १३ दिन में उड़द मच चावल गुड़ कपास सरसों अलसी घी चना अरहर तेज । जूट शण मिर्च किर्याना खोया आदि मन्दे हों ।

आकाश लक्षण—ति. ३ से ८ तक ति. १० से १३ तक पूर्वोत्तर में वर्षा के योग हैं । कड़ाके की ठंड से दुर्बल वृद्धों को कष्ट होगा।

श. वि.—पौष सु. चौदश बिना बिजली का घनघोर । शुभ वर्षा आषाढ़ में बोलें दादुर मोर ॥ ति. ७।८।९ को जल वर्षे तो आगामी चौमासा उत्तम रहे । यदि ति. १३ को जल बरसे तो गेहूँ आगे तेज हो, रोकने में लाभ होवेगा ।

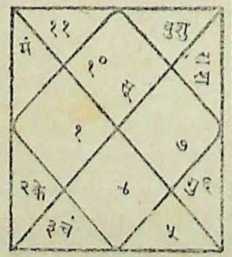

पौषशुक्ल १५ बुध इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०१७

	सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
	९	११	८	५	८	७	७	१
	२	२९	२०	८	१०	१७	२	२
	२१	१२	३०	३०	४७	३३	३९	३९
	२१	३१	५४	५६	५७	२९	६	६
	६१	३५	५५	०	७५	५	३	३
	२१	३९	८	२	३	३८	११	११
सौरि:		मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]		रे. ४	पू.पा. ३	[illegible]	मू. ४	ज्ये १	वि. ४	कृ. २
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ शाकः १८७८ माघकृष्णपक्षः २० | (१७ जन. से ३० जन. तक १९५७ ई०) उत्तरायणगंदक्षिणगो गोलः, शिशरर्तुः

ग्रह दर्शन—म. सूर्यास्त बाद खमध्य में, गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में और शु.बु.श. सूर्योदय से पहले पूर्व में दीखेंगे।

दि.मा.	ति.	वा.	घ.प.	न.	घ.प.	यो.	घ.प.	क.	घ.प.	तारीखें हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चारः	स्टैण्डर्ड टाइम सू.उ.	सू.अ.	सौरसूर्यस्पष्टः उदय काले	
२५ ३७	१	शु.	६ ४८	पु.	११ २८	प्री.	३६ ४५	कौ.	६ ४८	५	१७	१५	कर्के	७ २८	५ ४२	९ ३ २२ ४१	अश्वि. मेषे भौमः १९।५९।
२५ ३८	२	शु.	० ५५	श्ले.	७ २३	आ.	२८ ५०	ग.	० ५५	६	१८	१६	सिं ७।२३	७ २७	५ ४३	९ ४ २३ ५९	भ. २७।५९ उ. ५५।३ या. पू.षा १ शुक्रः १।३२
प्रथम	३	शु.	५४ ८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	×चन्द्रोदयोरात्रौ घं० ९।३०
२५ ४०	४	श.	४९ २६	म.	[illegible]	सौ.	२१ ३	ब.	२२ १४	७	१९	१७	सिंहे	७ २७	५ ४४	९ ५ २५ १६	सा. कुम्भे भानुः २९।७, श्री गणेशजन्म ४, (सङ्कष्टहारिणी), ×
२५ ४३	५	र.	४४ १४	उ.फा.	५६ २	शो.	१३ ३२	कौ.	१६ ५८	८	२०	१८	कं १३।१५	७ २७	५ ४४	९ ६ २६ ३३	अभि. प्रवृत्तौ रविः १२।१० पू.षा २ शुक्रः ४१।२५, चं. गु. यु.
२५ ४६	६	चं.	३९ ३९	ह.	५३ १९	प.	[illegible]	ग.	११ ५६	९	२१	१९	कन्यायाम्	७ २७	५ ४५	९ ७ २७ ४९	भ. ३९।३९ उ.,मार्गी बुधः ३७।३६, बु. गु. यु.
२५ ४९	७	म.	३५ ५६	चि.	५१ २९	सु.	५४ ६	वि.	७ ४७	१०	२२	२०	तु. २२।२४	७ २७	५ ४६	९ ८ २९ ५	भ. ७।४७ या. अनन्त श्री जगद्गुरुरामानन्दाचार्य जयन्ती
२५ ५३	८	बु.	३३ ९	स्वा.	५० ३०	धृ.	४९ ६	बा.	४ ३२	११	२३	२१	तुलायाम्	७ २७	५ ४७	९ ९ ३० २०	श्रवणे रविः २९।४, पू.षा ३ शुक्रः २२।१८, चं. ह. यु.
२५ ५७	९	गु.	३१ २८	वि.	५० ४३	गं.	४४ ५८	तै.	२ १८	१२	२४	२२	वृ. ३५।४०	७ २६	५ ४८	९ १० ३१ ३४	अभि. निवृत्तौ रविः २१।२० चं. रा. यु.
२६ १	१०	शु.	३१ ०	अनु.	५२ १०	वृ.	४१ ४९	व.	१ २४	१३	२५	२३	वृश्चिके	७ २५	५ ४९	९ ११ ३२ ४६	भ. १।२४ उ., ३१।० या.
२६ ५	११	श.	३१ ५०	ज्ये.	५४ ५३	ध्रु.	३९ ४०	ब.	१ २५	१४	२६	२४	ध. ५४।५३	७ २५	५ ५०	९ १२ ३३ ५७	पू.षा ४ शुक्रः १।११ षट्तिला ११ व्र., चं. श. यु.
२६ ८	१२	र.	३४ ६	मू.	५८ ८	व्या.	३८ ३४	कौ.	२ ५८	१५	२७	२५	धनुषि.	७ २४	५ ५१	९ १३ ३५ ७	पू.षा ३ बुधः ३४।१७
२६ १२	१३	चं.	३७ २३	पू.षा.	६० ०	ह.	३८ २१	ग.	५ ४४	१६	२८	२६	धनुषि.	७ २४	५ ५२	९ १४ ३६ १६	भ. ३७।२३ उ., उ.षा१शुक्रः ४।१६, सोमप्रदोष व्रतम्, चं. बु. यु.
२६ १६	१४	मं.	४१ ४३	पू.षा.	३ ५२	व.	३८ ५१	वि.	९ ३४	१७	२९	२७	म. २०।१९	७ २३	५ ५२	९ १५ ३७ २४	भ. ९।३४ या, चं. शु. यु.
२६ २०	३०	बु.	४६ ४९	उ.षा.	९ ४२	सि.	३९ ५२	न.	१४ १७	१८	३०	२८	मकरे	७ २२	५ ५३	९ १६ ३८ ३०	युगादि मौनी ३०, प्रयागस्नाने महत्फलम्, चं. सू. यु.

माघकृष्ण ८ बुध इष्टम् ०।० के दिनगणः १०२४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	८	५	८	७	७	१
९	३	१७	८	१९	१८	२	२
३०	२२	५९	२६	३३	११	१६	१६
२०	२७	१	४४	२१	३८	५१	५१
६१	२६	१४	१	७५	५	३	३
१५	१२	५७	२२	४	१२	११	११
मौढ्य	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ	अ.	अ.
सौर ४उ.षा	वायु २श्रवि	सौम्य २पू.भा	सौर ४उ.फा	सौम्य २पू.भा	वायु ४ज्ये.	[illegible] ४ज्ये.	[illegible] कृ. २

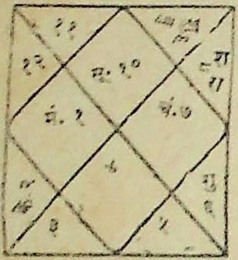

इस पक्ष में प्रजा शीत रोग निमोनिया खांसी से पीड़ित हो। तिल ज्वार ऊन कपास में तेजी हो। रत्नों के भाव घटें। चांदी में पहिले मन्दी पीछे करीब २ टका की तेजी हो। गेहूं मकई में कुछ मन्दी हो, ति. ३ से रुई के भाव में नरमाई होकर पीछे ८-१० टका की तेजी आवे घी का भाव मन्दा हो। ति. ८ से अलसी में १-२ की तेजी। १४ दिन में गेहूं जौ चावल चांदी मच सुपारी लौंग शक्कर के भाव में तेजी हो। ति. १३ से रुई में १५-२० की घटाबढ़ी हो। अलसी एरण्ड रसकस में मन्दी चले।

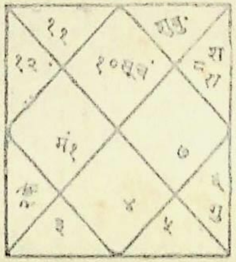

माघ कृष्ण ३० बुध इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०३१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	८	५	८	७	७	१
१६	७	२१	८	२८	१८	१	१
३८	३८	४२	१२	१८	४६	५४	५४
३०	४०	४२	२६	३८	५५	३६	३६
६१	३६	४६	२	७५	४	३	३
९	३८	५२	४५	१	४५	११	११
मौढ्य	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
सौर २श्र.	३श्रवि	पू.भा	पू.भा	पू.भा	१ज्ये.	४ज्ये.	कृ. २

आकाशलक्षण—ति. १ से २ तथा ति. ४ से १२ तक उत्तर भारत में वर्षा बहुत जगह हो जायेगी। फसल को लाभ पहुँचेगा।

घा०वि०—माघ बदी जो पंचमी बादल होवे जान। वर्षा कुछ होवे नहीं भादों वर्षा जान।
माघबदी जो ६ को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

(३१ जन. से १४ फर्व. तक १९५७ ई०) उत्तरायणं

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीसंवत् २०१३ शाकः १८७८ माघशुक्लपक्षः २१ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाइम | सौरसूर्यस्पष्टः

(३१ जन. से १४ फर्व. तक १९५७ ई०) उत्तरायणं दक्षिणगोल:शिशिरर्तुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
२६	२४	१	गु	५२	१५	श्र.	१६	७	व्य.	४१	१४	कि	१९	३२	१९	३१	२९	कु.४९।२४	७	२१	५	५४	९	१७	३९	३५
२६	२७	२	शु	५७	३५	ध.	२२	४१	व.	४२	३५	बा.	२४	५५	२०	१फ	३०	कुम्भे	७	२१	५	५६	९	१८	४०	३८
२६	३१	३	श	६०	०	श.	२८	५०	प	४३	३४	तै	२९	५७	२१	२	१	कुम्भे	७	२१	५	५७	९	१९	४१	४०
२६	३५	३	र	२	२०	पू.भा.	३४	३५	शि.	४४	४	ग.	२	२०	२२	३	२	मी.१८।९	७	२०	५	५८	९	२०	४२	४०
२६	३९	४	चं	६	२२	उ.भा	३९	१७	सि.	४३	४२	वि.	६	२२	२३	४	३	मीने	७	१९	५	५९	९	२१	४३	३९
२६	४३	५	मं	९	१०	रे.	४२	५३	सा.	४२	३२	व.	९	१०	२४	५	४	मे.४२।५३	७	१९	५	५९	९	२२	४४	३७
२६	४६	६	बु	१०	५३	अ.	४५	१३	शु	४०	१९	त	१०	५३	२५	६	५	मेषे	७	१९	६	०	९	२३	४५	३४
२६	५०	७	बु	११	१२	भ.	४६	१८	शु.	३७	५	व.	११	१२	२६	७	६	मेषे	७	१८	६	१	९	२४	४६	३०
२६	५४	८	गु	१०	१७	कृ.	४६	९	ब्र.	३२	५२	ब.	१०	१७	२७	८	७	वृ.१।१६	७	१७	६	२	९	२५	४७	२४
२६	५८	९	श	८	७	रो	४४	५५	ऐं.	२७	४८	कौ.	८	७	२८	९	८	वृषे	७	१६	६	२	९	२६	४८	१६
२७	२	१०	र	४	५४	मृ.	४२	५०	वै.	२१	५६	ग.	४	५४	२९	१०	९	मि.१३।५३	७	१५	६	३	९	२७	४९	६
२७	५	११	च	०	४९	आ.	३९	५२	वि.	१५	२१	बि.	०	४९	३०	११	१०	मिथुने	७	१५	६	४	९	२८	४९	५६
अवम		१२	च	५५	१०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	९	१३	मं	५०	३६	पुन.	३६	२०	प्री.	८	१५	कौ.	२३	१७	१	१२	११	क.२२।१३	७	१४	६	५	९	२९	५०	२५
२७	१३	१४	[illegible]	[illegible]	५१	पु.	३२	२४	आ.	[illegible]	[illegible]	ग.	१७	४३	२	१३	१२	कर्के	७	१३	६	५	१०	०	५१	३३
२७	१७	१५	गु	३८	५६	श्ले	२८	१६	शो.	४५	१०	वि.	११	५३	३	१४	१३	सि २८।१६	७	१२	६	६	१०	१	५२	१९

ग्रहदर्शन—बु शु.श. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे। मं० सूर्यास्त बाद खमध्य में और गु. पूर्व रात्रि में पूर्व में दीखेगा।

पू.षा. ४ बुधः ५२।३२ उ.षा. २मकरेशुक्रः२१।५ पं.प्रा.४९।२४❀

चन्द्रदर्शनम् किञ्चिन्मात्रंदक्षिणंशृङ्गमुन्नतम् फर्वरी २ ता. २८

वक्रीइन्द्रः (नेपच्यून) २०।० रज्जव मु. ७ ❀श्रीवल्लभजयन्ती

भ. ३४।२१ उ., उ.षा. ३ शुक्रः १।२

भ. ६।२२ या. उ.षा. १ बुधः १०।४९

धनि. रविः ३४।५० उ.षा. ४ शुक्रः ४१।२ पञ्चकसमा. ×

चं.मं. युतिः पातस्पर्शः ४०।४१ मोक्षः५९।२९

भ.११।१२उ. ४०।४४या. उ.षा.२ मकरे बुधः १०।४६ रथ७+

भरि.भौमः१६।५५ श्रव.१ शुक्रः२१।२, भीष्म८(भीष्मायजल ??

उ.षा. ३ बुधः ५७।३ × ४२।५३ वसन्तपञ्चमी

भ. ३२।५१ उ. + अरुणोदय स्नाने महत्फलम्मन्वादिः

भ. ०।४९ या. श्रवण २ शुक्रः १।५ जया ११ व्रतम्

() ३०।५० भौमः प्रदोषव्रतम् ?? दानम्) चं.के.यु.

स.कुम्भेऽर्कः ९।२४ मु. ४५ पुण्यं ९।२४ या. उ.षा ४ बुधः ()

भ. ४४।५१ उ. श्रव. ३ शुक्रः ४१।११ चं.व.यु.

भ. ११।५३या. श्रव,१बुधः५९।१२ सत्यव्रतम् माघस्नानसमाप्तिः

माघ शुक्ल ८ शुक्र इष्टम् ०।० के दिनगणः १०४०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	९	५	९	७	७	१
२५	१३	०	७	९	१९	१	१
४७	९	५७	४१	३३	२६	२६	२६
२४	३५	३५	५०	४२	३६	०	०
६०	३६	७२	४	७४	३	३	३
५४	५६	४	१३	५९	५९	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ध.	अश्वि.	उषा.	उफ	उप	ज्ये	वि.	कृ.
१	[illegible]	२	४	४	१	४	२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में चावल अनाज में तेजी रहे, पक्षान्त में मन्दी चांदी में १-२ की तेजी हो और रुई में भी चलती हुई घटावढ़ी के बाद ३०-४० की तेजी आवे। उड़दतिल घी गुड़ सोना जवाहिरात तेज हों। ति. ८ से गुड़ शक्कर अनाज तथा सोना चाँदी में मन्दी का वातावरण बनेगा। शिल्प वस्तुयें तोरिया तांबा पित्तल लोह वस्तु तेज रहें। ति. १० से २४ दिन में किसी पूर्वीय प्रान्त में उत्पात हो, सवारी की दुर्घटना से हानि के योग हों, सो यन्त्रचालक सावधान रहें। यहाँ माघ शुदी ३ शनिवारी है, इसलिये कहीं अशान्ति हो।

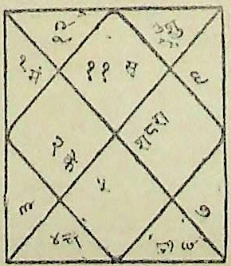

माघ शुक्ल १५ गुराविष्टम् ०।० के दिननगणः १०४६

सू.	म	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	९	५	९	७	७	१
१	१६	८	७	१७	१९	१	१
५२	५१	३९	१४	३	४९	६	६
१९	१३	१८	०	३०	५६	५७	५७
६०	३७	८१	५	७४	३	३	३
४६	७	४८	९	५६	३८	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ	उ.	उ.	उ.	उ.	अ	अं.
ध	भ.	उषा.	उफ	श्र.	ज्ये.	वि,	कृ.
३	२	४	४	३	१	४	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाशलक्षण—ति० २ ५ तथा ति० ८ से १० तक तथा पक्षान्त में भी कहीं २ वर्षा के योग हैं।

शकुनविचार—

माघ सुदी सप्तमी बादल बिजली होय।
पूर्व उत्तर वायु चले संवत अच्छा होय।

माघ उजाली दूज वा तीज रखो जल धार।
चमके दामिनी जानिय चौमासा भयकार।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ फाल्गुण कृष्णपक्षः २२ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरसूर्य स्पष्टः | [illegible] ता १ मार्च १९५७ई०) उत्तरायण, दक्षिण गोलः शिशिरर्तुः

दि. मा.	ति.	वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. फा.	अं. फ़.	मु. र.	सञ्चारः	सू. उ.	सू. अ.	उदय काले	
२७ २१	१	शु.	३३ ३	म.	२४ ८	ध.	३७ २६	बा.	५ ५९	४	१५	१४	सिंहे	७ ११	६ ७	१० २ ५३ ४	ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तिवाद पश्चिम में गुरु पूर्वरात्रि में पूर्व में श. पश्चिमरात्रि में खमध्य की ओर आता हुआ और बुध सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा । शुक्र ति. १० को पूर्व में अस्त होगा ।
२७ २४	२	श.	२७ २७	पू. फा.	२० १२	सु.	२९ ५३	तै.	० १५	५	१६	१५	कं. ३४।१९	७ ११	६ ८	१० ३ ५३ ४६	भ. ५४-५१उ., श्रव. ४शुक्रः २१।२२. ज्ये.२ शनिः५०।४१
२७ २८	३	र.	२२ १५	उ.फा.	१६ ४२	धृ.	२२ ४१	व.	२२ १५	६	१७	१६	कन्यायाम्	७ १०	६ ८	१० ४ ५४ २५	भ. २२।१५ या., श्रव. २ बुधः२२।२४ श्रीगणेश४ व्र, चं. गु. यु.
२७ ३२	४	चं.	१७ ४३	ह.	१३ ४९	शू.	१६ १	बा.	१७ ४३	७	१८	१७	तु. ४२।४९	७ ९	६ ९	१० ५ ५५ ३	शत. रविः४४।३०,सा. मे ने भानुः ९।५९,वसंततु प्रा. पातस्पर्शः ×
२७ ३६	५	मं.	१४ १	चि.	११ ४९	गं.	१० २	तै.	१४ १	८	१९	१८	तुलायाम्	७ ८	६ १०	१० ६ ५५ ३९	श्रव.३बुधः४०।५१,ध. १ शुक्रः१।३७,चं.इं.यु. × ३७।८मोक्षः५१।३१
२७ ४१	६	बु.	११ १६	स्वा.	१० ४०	वृ.	४ ४९	व.	११ १६	९	२०	१९	वृ. ५५।३८	७ ७	६ ११	१० ७ ५६ १४	भ. ११।१६ उ., ४०।२८ या. व.उ.फा. ३गुरुः १०।१३ चं.रा..यु
२७ ४६	७	गु.	९ ४०	वि.	१० ३७	ध्रु.	०/५७ २४/५	व.	९ ४०	१०	२१	२०	वृश्चिके	७ ६	६ १२	१० ८ ५६ ४७	श्रव.४बुधः५५।४४ धनि. २शुक्रः ४१।५८. श्रीसीता जन्म ८
२७ ५१	८	शु.	९ १५	अनु.	११ ४६	ह.	५४ ३७	कौ.	९ १५	११	२२	२१	वृश्चिके	७ ५	६ १३	१० ९ ५७ १८	चं. श. युतिः अर्धरात्रव्यापित्वात्)
२७ ५६	९	श.	१० ९	ज्ये.	१४ १३	व.	५३ १६	ग.	१० ९	१२	२३	२२	ध. १४।१३	७ ३	६ १४	१० १० ५७ ४६	भ. ४१।१७ उ.
२८ १	१०	र.	१२ २५	मू.	१७ ५६	सि.	५२ ४५	वि.	१२ २५	३	२४	२३	धनुषि	७ २	६ १४	१० ११ ५८ १२	भ. १२।२५ या, धनि. १बुधः७।२५ धनि. ३कुम्भे शुक्रः२२।२१*
२८ ६	११	चं.	१५ ४५	पू. षा.	२२ ४३	व्य	५३ ६	बा.	१५ ४५	१४	२५	२४	म. ३९।९	७ १	६ १४	१० १२ ५८ ३५	विजया ११ व्र. *पूर्वास्तः शुक्रः ३०।२२ [पू. अ. शु.]
२८ ११	१२	मं.	२० ९	उ. षा.	२८ २७	व.	५४ ३	तै.	२० ९	१५	२६	२५	मकरे	७ ०	६ १५	१० १३ ५८ ५६	धनि. २बुधः १६।२, भौमप्रदोषव्र.
२८ १६	१३	बु.	२५ १४	श्र.	३४ ४८	प.	५५ २५	व.	२५ १४	१६	२७	२६	मकरे	६ ५९	६ १६	१० १४ ५९ १६	भ २५।१४उ.५७।५५या. धनि. ४शुक्रः २।४० श्रीमहाशिवरात्रिव्र.
२८ २१	१४	गु.	३० ३६	ध.	४१ २२	शि.	५६ ५१	श.	३० ३६	१७	२८	२७	कु. ८।५	६ ५८	६ १७	१० १५ ५९ ३५	धनि.३कुम्भेबुधः२१।८,पंचकप्रा.८।५मेलाशिव१४, चं.बु , चं.शु.यु.
२८ २६	३०	शु.	३५ ५३	श.	४७ ४६	सि.	५८ २	च.	३ १४	१८	१म	२८	कुम्भे	६ ५५	६ १८	१० १६ ५९ ५२	क्रु.भौमः४२।५१,शत.१शुक्रः४२।५२, मार्च ३ ता. ३१,चं.सू.यु.

फाल्गुण कृष्णपक्ष ८ शुक्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०५४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	९	५	९	७	७	१
९	२१	२०	६	२७	२०	०	०
५७	४९	६	२८	२	१६	४१	४१
१८	४५	२२	५६	३०	२४	३१	४१
६०	३७	६०	६	७४	२	३	३
३१	३६	३८	१५	४९	५४	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श. १	भ. ३	कृ. ४	उ.फा. ३	ध. ४	ज्ये. ४	वि. ४	कृ. ४
जल	ताम्र	स्वर्ण	लौह	स्वर्ण	ताम्र	ताम्र	ताम्र

इन दिनों में कहीं यवन देश में उपद्र जनहानि और घोड़ा आदि पशुओं को पीड़ा हो अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण दूषित रहेगा । गुड़ अलसी चना सूत कपड़ा एरण्ड सरसों तिल तेल हल्दी कर्याना का भाव तेज रहे । ति. ५ से चांदी चावल मोट उड़द में भी तेजी का प्रसङ्ग बने । ति. १० से रुई चांदी तथा अनाज में मन्दी अलसी तथा शेयरों के भाव में तेजी रहे. ति. १४ से २० दिन में रुई में मन्दी का झटका आवे गेहूँ में तेजी । फा. कृ. षष्टी को स्वाती का होना आगामी दुर्भिक्ष का सूचक है तथा किसी राजपुरुष को शारीरिक तथा मानसिक सङ्कट ग्रस्त भी होना पड़ेगा । आ. ल.—ति. १ से ४ तक तथा ति. १० से १४ तक पंजाब तथा पर्वतीयप्रदेशों में कहीं २ बूंदाबांदी तथा वादल चाल होगी ।

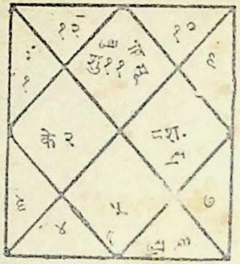

फाल्गुण कृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०६१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	१०	५	१०	७	७	१
१६	२६	१	५	५	२०	०	०
५९	१३	२	४२	४६	३४	१९	१९
५२	१०	५२	२४	३०	३२	१६	१६
६०	३७	९८	७	७४	२	३	३
१७	३४	३	२	५३	११	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
श. ४	भ. ४	कृ. ३	उ.फा. ३	ध. ४	ज्ये. २	वि. ४	कृ. २
ताम्र	ताम्र	स्वर्ण	लौह	स्वर्ण	ताम्र	ताम्र	ताम्र

श. वि—फाल्गुण वदी तीज को जान । दीखे पवन मेघ प्रमान ।। असोज शुदि में वर्शा होय । रातदिन वर्षे मन मोय । फाल्गुण कारी दूज दिन निर्मल रहे अकाश । श्रावण भादों जल बहु सुधर जाय चोमास

फाल्गुणकृष्णपक्ष में [illegible] होता है ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ फाल्गुनशुक्लपक्षः [illegible] (२ मा. से १६ मा. तक १९५७ई०) उत्तरायणं, द. गो. वसंततुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. फाल्गु.	अ. माघ	मु. माला.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
२८	३०	१	श.	४०	३८	पू. भा	५३	३४	सा.	५८	४७	कि.	८	१५	१९	२	२९	मी. ३७।७	६	५३	६	१९	१०	१८	०	५
२८	३५	२	र.	४४	२८	उ. भा.	५८	३१	शु.	५८	४८	बा.	१२	३३	२०	३	३०	मीने	६	५२	६	२०	१०	१९	०	१७
२८	४०	३	चं.	४७	९	रे.	६०	०	शु.	५७	५३	तै.	१५	४८	२१	४	१	मीने	६	५१	६	२१	१०	२०	०	२७
२८	४५	४	मं.	४८	३८	रे.	२	२१	ब्र.	५६	४	व.	१७	५३	२२	५	२	मे. २।२१	६	४९	६	२१	१०	२१	०	३५
२८	५०	५	बु.	४८	५०	अ.	४	५९	ऐं.	५३	१४	ब.	१८	४४	२३	६	३	मेषे	६	४८	६	२२	१०	२२	०	४०
२८	५५	६	गु.	४७	४५	भ.	६	२०	वै.	४९	२१	कौ.	१८	१७	२४	७	४	वृ. २१।२२	६	४७	६	२३	१०	२३	०	४३
२९	०	७	शु.	४५	२६	कृ.	६	२९	वि.	४४	३५	ग.	१६	३५	२५	८	५	वृषे	६	४६	६	२४	१०	२४	०	४०
२९	५	८	श.	४२	४	रो.	५	२६	प्री.	३८	५९	वि.	१३	४५	२६	९	६	मि३४।२८	६	४४	६	२४	१०	२५	०	३६
२९	१०	९	र.	३७	५३	मृ.	३	३१	आ.	३२	४६	बा.	९	५८	२७	१०	७	मिथुने	६	४३	६	२५	१०	२६	०	२६
२९	१५	१०	चं.	३२	५५	आ.	[illegible]	५८	सौ.	२५	५४	तै.	५	२४	२८	११	८	क. ४३।१०	६	४३	६	२५	१०	२७	०	१०
२९	२०	११	मं.	२७	२७	पु.	५३	२७	शो.	१८	३४	व.	०	११	२९	१२	९	कर्के	६	४२	६	२६	१०	१७	५९	५१
२९	२५	१२	बु.	२१	३७	श्ले.	४९	२१	अ.	१०	५८	बा.	२१	३७	३०	१३	१०	सि४९।२१	६	४१	६	२७	१०	२८	५९	४४
२९	३०	१३	गु.	१५	३७	म.	४५	१०	सु.	[illegible]	२८	तै.	१५	३७	१चै	१४	११	सिंहे	६	३९	६	२७	१०	२९	५९	३२
२९	३५	१४	शु.	९	४२	पू. फा.	४१	११	धृ.	४७	५३	व.	९	४२	२	१५	१२	कं. ५५।१७	६	३८	६	२८	११	०	५९	१६
२९	४०	१५	श.	४	५	उ. फा.	३७	३४	ग.	४०	३७	ब.	४	५	३	१६	१३	कन्यायाम्	६	३८	६	२९	११	१	५९	१०

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्त बाद खमध्य में, गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में और श. पश्चिम रात्रि में खमध्य की ओर आता हुआ दीखेगा। शु. अस्त है। बु. ति. ४ को होगा।

घनि ४ बुधः २३।४१

चन्द्रदर्शनम् दक्षिणशृङ्गोन्नति पू.भा.रविः ५६।३३

शत १ बुधः २३।४९, शत २शु. २३।१४, सावान मु. ८

भ. १७।५३ उ. ४८।३८ या., व.पुष्य२ वरुणः (हर्शल) ५६। ,[

शत. २ बुधः २१।२७ [पूर्वास्तोबुधः २५।२, पञ्च. समा.२।२१

वृषे भौमः२।८, शत.३ शु. ३।४७, वि. ३ तु. रा., कृ. १ मे. के.*

भ. ४५।२६ उ., शत ३ बुधः १६।१८ *४।५, चं.के., चं.मं.यु.

भ. १३।४५ या., शत ४ शुक्रः ४४।३१, होलाष्टकारम्भः

शत ४ बुधः ६।२८

बु. शु. युतिः ※शुक्रः ६।२१ होलिकादहनं (भद्रोत्तरम्)सत्यव्र.

भ. ०।११ उ. २७।३७ या., पू.भा. १ बुधः १।३ पू. भा. १ शु.×

पू.भा.२बुधः ५१।२ प्रदोषव्रतम् ×२५।२७,आमला११व्र.चं.व.यु.

सं. मीनेऽर्कः ०।२८ मु. ३० पुण्यं १६।२८ या.

भ. ६।४२ उ. ३६।५३ या., पू.भा. ३ बुधः ३६।५२ पू.भा. २※

होला १ मेला श्री आनन्दपुर साहिब, चं. गु. यु.

फाल्गुन शुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० क. दिनगणः १०६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१०	५	१०	७	६	०
२५	१	१४	४	१५	२०	२९	२९
०	१३	३६	४४	४४	४९	५३	५३
३६	५४	४९	१८	३७	२५	५१	५१
५९	३७	१०६	७	७४	१	३	३
५९	३८	१७	३४	३८	२९	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	कृ. २	श. ३	उ.फा ३	श. ३	ज्ये. २	वि. ३	कृ. १
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

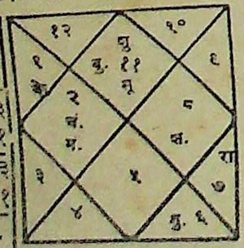

इस पक्ष मे रुई के भाव मे घटाबढ़ी होकर मन्दा हो, पश्चात् में तेजी। गेहूँ चना मोठ मूंग चावल बाजरा मन्दा रहे। ति. ४ से सुवर्ण में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे। ति. ६ से उड़द तिल गुड़ गेहूँ अलसी के भाव कुछ तेज, चंदन वस्त्र भी तेज रहें। ति. ११ से ति.१३ तक रुई १०।१५ टका तेज हो। ति.१५ की शाम को रुई का भाव घटेगा। वहां खरीद करने से तीन दिन के अन्दर १०टका की तेजी होकर लाभ हो। सिन्ध कराची आदि में प्रजा में विरोध, राज पीड़ा मध्यम वर्ग आर्थिक समस्या से चिन्तित रहे। आकाश लक्षण—ति.२ से ७ तथा ९ से १३ तक पूर्वोत्तरीय भारत में कहीं कहीं वर्षा हो वायु का भी जोर रहेगा। वृक्षों को हानि पहुँचे। श.वि.—फाल्गुन सुदी सप्तमी जो वर्षा महाघन छाय। पांचम नव असोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जवर्षा होय। धान्यं सातवे मास में निश्चय महंगा होय॥ फा० शु० १५ को शाम के वक्त भद्रा रहित समय में होली का पूजन और हवन करना चाहिए। होलीदाह के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं ईशान की वायु राजा प्रजा के लिए शुभ है। नैर्ऋतु की वायु दुर्भिक्ष, आग्नेय की अग्निभय, वायव्यकी अधिक वायु, ऊपर की भयप्रद और चारों ओर की युद्ध आदि से नाशकारी होती है।

फाल्गुन शुक्ल १५ शनाविष्टम ०।० के. दिनगणः १०७६

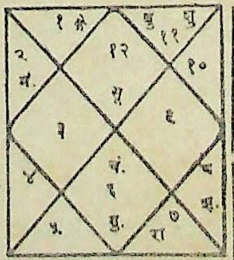

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	१०	५	१०	७	६	०
१	५	२७	३	२४	२०	२९	२९
५९	३७	२४	५०	२६	५७	३१	३१
१०	३३	४	१३	३७	३२	३७	३७
५९	३७	११५	७	७४	०	३	३
५४	४२	१५	४४	३६	४६	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	कृ. ३	पू.भा ३	उ.फा ३	पू.भा २	ज्ये. २	वि. ३	कृ. १
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाक: १८७८ फाल्गुण कृष्णपक्षः २२ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरसूर्य स्पष्टः

(१५ फव. स १ माच १९५७ई०) उत्तरायण, दक्षिण गोलः. शिशिरर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तबाद पश्चिम में गुरु पूर्वरात्रि में पूर्व में श. पश्चिमरात्रि में खमध्य की ओर आता हुआ और बुध सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। शुक्र ति. १० को पूर्व में अस्त होगा।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ह. फा.	अ. फ़र.	मु. रम.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले				
२७	२१	१	शु.	३३	३	म.	२४	८	प्र.	३७	२६	बा.	५	५९	४	१५	१४	सिंहे	७	११	६	७	१०	२	५३	४	
२७	२४	२	श.	२७	२७	पू. फा.	२०	१२	सु.	२९	५३	तै.	०	१५	५	१६	१५	कं.३४।१९	७	११	६	८	१०	३	५३	४६	भ. ५४-५१उ., श्रव. ४शुक्रः २१।२२. ज्ये.२ शनिः५०।४१
२७	२८	३	र.	२२	१५	उ.फा.	१६	४२	धृ.	२२	४१	वि.	२२	१५	६	१७	१६	कन्यायाम्	७	१०	६	८	१०	४	५४	२५	भ. २२।१५ या., श्रव. २ बुधः२२।२४ श्रीगणेश४ व्र, चं. गु. यु.
२७	३२	४	चं.	१७	४३	ह.	१३	४९	शू.	१६	१	बा.	१७	४३	७	१८	१७	तु.४२।४९	७	९	६	९	१०	५	५५	३	शत.रविः४४।३०,सा. मं ने भानुः ९।५९,वसंततु प्रा. पातस्पर्शः ×
२७	३६	५	मं.	१४	१	चि.	११	४९	गं.	१०	२	तै.	१४	१	८	१९	१८	तुलायाम्	७	८	६	१०	१०	६	५५	३९	श्रव.३बुधः४०।५१,ध. १ शुक्रः१।३७,चं.इं.यु. × ३७।८मोक्षः५१।३१
२७	४१	६	बु.	११	१६	स्वा.	१०	४०	वृ.	४	४९	व.	११	१६	९	२०	१९	वृ.५५।३८	७	७	६	११	१०	७	५६	१४	भ. ११।१६ उ., ४०।२८ या. व.उ.फा. ३गुरुः १०।१३ चं.रा..यु
२७	४६	७	गु.	९	४०	वि.	१०	३७	ध्रु.	०/५७	२४/१	ब.	९	४०	१०	२१	२०	वृश्चिके	७	६	६	१२	१०	८	५६	४७	श्रव.४बुधः५५।४४ धनि. २शुक्रः ४१।५८. श्रीसीता जन्म ८
२७	५१	८	शु.	९	१५	अनु.	११	४६	ह.	५४	३७	कौ.	९	१५	११	२२	२१	वृश्चिके	७	५	६	१३	१०	९	५७	१८	चं. श. युतिः अर्धरात्रव्यापित्वात्)
२७	५६	९	श.	१०	९	ज्ये.	१४	१३	व.	५३	१६	ग.	१०	९	१२	२३	२२	ध.१४।१३	७	३	६	१४	१०	१०	५७	४६	भ. ४१।१७ उ.
२८	१	१०	र.	१२	२५	मू.	१७	५६	सि.	५२	४५	वि.	१२	२५	३	२४	२३	धनुषि	७	२	६	१४	१०	११	५८	१२	भ. १२।२५ या, धनि. १बुधः७।२५ धनि. ३कुम्भे शुक्रः२२।२१*
२८	६	११	चं.	१५	४५	पू. षा.	२२	४३	व्य.	५३	६	बा.	१५	४५	१४	२५	२४	म.३९।९	७	१	६	१४	१०	१२	५८	३५	विजया ११ व्र. *पूर्वास्तः शुक्रः ३०।२२ [पू. अ. शु.]
२८	११	१२	मं.	२०	९	उ. षा.	२८	२७	व.	५४	३	तै.	२०	९	१५	२६	२५	मकरे	७	०	६	१५	१०	१३	५८	५६	धनि. २बुधः १६।२, भौमप्रदोषव्र.
२८	१६	१३	बु.	२५	१४	श्र.	३४	४८	प.	५५	२५	व.	२५	१४	१६	२७	२६	मकरे	६	५९	६	१६	१०	१४	५९	१६	भ २५।१४उ.५७।५५या. धनि. ४शुक्रः २।४० श्रीमहाशिवरात्रिव्र.
२८	२१	१४	गु.	३०	३६	ध.	४१	२२	शि.	५६	५१	श.	३०	३६	१७	२८	२७	कु. ८।५	६	५८	६	१७	१०	१५	५९	३५	धनि.३कुम्भेबुधः२१।८,पंचकप्रा.८।५मेलाशिव१४, चं.बु, चं.शु.यु.
२८	२६	३०	शु.	३५	५३	श.	४७	४६	सि.	५८	२	च.	३	१४	१८	१म	२८	कुम्भे	६	५५	६	१८	१०	१६	५९	५२	कृ.भौमः४२।५१,शत.१शुक्रः४२।५२, मार्च ३ ता. ३१,चं.सू.यु.

फाल्गुण कृष्णपक्ष ८ शुक्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०५४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	९	५	९	७	७	१
९	२१	२०	६	२७	२०	०	०
५७	४९	६	२८	२	१६	४१	४१
१८	४५	२२	५६	३०	२४	३१	४१
६०	३७	६०	६	७४	२	३	३
३१	३६	३८	१५	४९	५४	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श. १	भ. ३	श्र. ४	३उ.फा	ध. २	ज्ये. २	वि. ४	कृ. २
जल	वायु	क्रमु.	नीर	क्रमु.	वायु	वायु	वायु

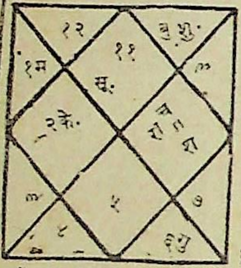

इन दिनों में कहीं यवन देश में उपद्र जनहानि और घोड़ा आदि पशुओं को पीड़ा हो अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण दूषित रहेगा। गुड़ अलसी चना सूत कपड़ा एरण्ड सरसों तिल तेल हल्दी कर्याना का भाव तेज रहे। ति. ५ से चांदी चावल मोट उड़द में भी तेजी का प्रसङ्ग बने। ति. १० से रुई चांदी तथा अनाज में मन्दी अलसी तथा शेयरों के भाव में तेजी रहे. ति. १४ से २० दिन में रुई में मन्दी का झटका आवे गेहूँ में तेजी। फा. कृ. षष्टी को स्वाती का होना आगामी दुर्भिक्ष का सूचक है तथा किसी राजपुरुष को शारीरिक तथा मानसिक सङ्कट ग्रस्त भी होना पड़ेगा। आ. ल.—ति. १ से ४ तक तथा ति. १० से १४ तक पंजाब तथा पर्वतीयप्रदेशों में कहीं २ बूंदाबांदी तथा बादल चाल होगी।

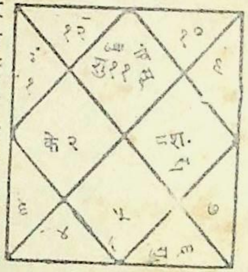

फाल्गुण कृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०६१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	१०	५	१०	७	७	१
१६	२६	१	५	५	२०	०	०
५९	१३	२	४२	४६	३४	१९	१९
५२	१०	५२	२४	३०	३२	१६	१६
६०	३७	६८	७	७४	२	३	३
१७	३४	३	२	५३	११	११	११
सौरः	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
श. ४	भ. ४	ध. ३	पू.भा. ३	ध. ४	ज्ये. २	वि. ४	कृ. २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श. वि—फाल्गुण वदी तीज को जान। दीखे पवन मेघ प्रमान॥ असोज शुदि में वर्षा होय। रातदिन वर्षे मन मोय। फाल्गुण कारी दूज दिन निर्मल रहे प्रकाश। श्रावण भादों जल बहु सुधर जाय चोमास

फाल्गुणकृष्णपक्ष में शिवरात्रि का व्रत अवश्य करना चाहिये. इससे मनुष्य का कल्याण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ फाल्गुनशुक्ल पक्षः २३ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरः स्पष्टःसूर्यः | (२ मा. से १६ मा. तक १९५७ई०) उत्तरायणं, द. गो. बसंततुः

दि. मा.		ति. वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. फाल्गु.	अं. माघ	मु. फाला.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले				ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्त बाद खमध्य में, गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में और श. पश्चिम रात्रि में खमध्य की ओर आता हुआ दीखेगा। शु. अस्त है। बु. ति. ४ को होगा।
२८	३०	१ श.	४०	३८	पू. भा	५३	३४	सा.	५८	४७	कि.	८	१५	१९	२	२९	मी. ३७।७	६	५३	६	१९	१०	१८	०	५	धनि ४ बुधः २३।४१
२८	३५	२ र.	४४	२८	उ. भा.	५८	३१	शु.	५८	४८	बा.	१२	३३	२०	३	३०	मीने	६	५२	६	२०	१०	१९	०	१७	चन्द्रदर्शनम् दक्षिणशृङ्गोन्नति पू.भा.रविः ५९।३३
२८	४०	३ चं.	४७	९	रे.	६०	०	शु.	५७	५३	तै.	१५	४८	२१	४	१	मीने	६	५१	६	२१	१०	२०	०	२७	शत १ बुधः २३।४९, शत २शु. २३।१४, सावान मु. ८
२८	४५	४ मं.	४८	३८	रे.	२	२१	ब्र.	५६	४	व.	१७	५३	२२	५	२	मे. २।२१	६	४९	६	२१	१०	२१	०	३५	भ. १७।५३ उ. ४८।३८ या., व.पुष्य२ वरुणः (हर्शल) ५९। ,[
२८	५०	५ बु.	४८	५०	अ.	४	५९	ऐं.	५३	१४	ब.	१८	४४	२३	६	३	मेषे	६	४८	६	२२	१०	२२	०	४०	शत. २ बुधः २१।२७ [पूर्वास्तोबुधः २५।२, पञ्च. समा.२।२१
२८	५५	६ गु.	४७	४५	भ.	६	२०	वै.	४९	२१	कौ.	१८	१७	२४	७	४	वृ. २१।२२	६	४७	६	२३	१०	२३	०	४३	वृषे भौमः२।८, शत.३ शु. ३।४७, वि. ३ तु. रा., कृ. १ मे. के.*
२९	०	७ शु.	४५	२६	कृ.	६	२९	वि.	४४	३५	ग.	१६	३५	२५	८	५	वृषे	६	४६	६	२४	१०	२४	०	४०	ग. ४५।२६ उ., शत ३ बुधः १६।१८ *८।५, चं.के., चं.मं.यु.
२९	५	८ श.	४२	४	रो.	५	२६	प्री.	३८	५९	वि.	१३	४५	२६	९	६	मि३४।२८	६	४४	६	२४	१०	२५	०	३६	भ. १३।४५ या., शत ४ शुक्रः ४४।३१, होलाष्टकारम्भः
२९	१०	९ र.	३७	५३	मृ.	३	३१	आ.	३२	४६	बा.	९	५८	२७	१०	७	मिथुने	६	४३	६	२५	१०	२६	०	२६	शत ४ बुधः ९।२८
२९	१५	१० चं.	३२	५५	आ.	५७	४८	सौ.	२५	५४	तै.	५	२४	२८	११	८	क. ४३।१०	६	४३	६	२५	१०	२७	०	१०	बु. शु. युतिः *शुक्रः ६।२१ होलिकादहनं (भद्रोत्तरम्)सत्यव्र.
२९	२०	११ मं.	२७	२७	पु.	५३	२७	शो.	१८	३४	व.	०	११	२९	१२	९	कर्के	६	४२	६	२६	१०	१७	५९	५१	भ. ०।११ उ. २७।३७ या., पू.भा. १ बुधः १।३ पू. भा. १ शु.×
२९	२५	१२ बु.	२१	३७	श्ले.	४९	२१	अ.	१०	५८	बा.	२१	३७	३०	१३	१०	सि४९।२१	६	४१	६	२७	१०	२८	५९	४४	पू.भा.२बुधः ५१।२ प्रदोषव्रतम् ×२५।२७,आमला११व्र.चं.व.यु.
२९	३०	१३ गु.	१५	३७	म.	४५	१०	सु.	४४	२८	तै.	१५	३७	१ चै	१४	११	सिंहे	६	३९	६	२७	१०	२९	५९	३२	सं. मीनेऽर्कः ०।२८ मु. ३० पुण्यं १६।२८ या.
२९	३५	१४ शु.	९	४२	पू. फा.	४१	११	धृ.	४७	५३	व.	९	४२	२	१५	१२	कं. ५५।१७	६	३८	६	२८	११	०	५९	१६	भ. ९।४२ उ. ३६।५३ या., पू.भा. ३ बुधः ३६।५२ पू.भा. २*
२९	४०	१५ श.	४	५	उ. फा.	३७	३४	ग.	४०	३७	ब.	४	५	३	१६	१३	कन्यायाम्	६	३८	६	२९	११	१	५९	१०	होला १ मेला श्री आनन्दपुर साहिब, चं. गु. यु.

फाल्गुन शुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० क. दिनगणः १०६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१०	५	१०	७	६	०
२५	१	१४	४	१५	२०	२९	२९
०	१३	३६	४४	४४	४९	५३	५३
३९	५४	४९	१८	३७	२५	५१	५१
५९	३७	१०६	७	७४	१	३	३
५९	३८	१७	३४	३८	२६	११	११
सौरि	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	कृ.	श.	उ.फा	श	ज्ये.	वि.	कृ.
	२	३	३	३	२	३	१

इस पक्ष में रुई के भाव में घटाबढ़ी होकर मन्दा हो,पश्चात् में तेजी। गेहूँ चना मोठ मूंग चावल बाजरा मन्दा रहे। ति. ४ से सुवर्ण में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे। ति. ६ से उड़द तिल गुड़ गेहूँ अलसी के भाव कुछ तेज, चंदन वस्त्र भी तेज रहें। ति. ११ से ति.१३ तक रुई १०।१५ टका तेज हो। ति.१५ की शाम को रुई का भाव घटेगा। वहाँ खरीद करने से तीन दिन के अन्दर १०टका की तेजी होकर लाभ हो। सिन्ध कराची आदि में प्रजा में विरोध, राज पीड़ा मध्यम वर्ग आर्थिक समस्या से चिन्तित रहे। आकाश लक्षण–ति.२ से ७ तथा ९ से १३ तक पूर्वोत्तरीय भारत में कहीं कहीं वर्षा हो वायु का भी जोर रहेगा। वृक्षों को हानि पहुँचे। श.वि.—फाल्गुन सुदी सप्तमी जो वर्षा महाघन छाय। पांचम नव असोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जवर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय मंहगा होय॥ फा० शु० १५ को शाम के वक्त भद्रा रहित समय में होली का पूजन और हवन करना चाहिए। होलीदाह के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं ईशान की वायु राजा प्रजा के लिए शुभ है। नैर्ऋतु की वायु दुर्भिक्ष, आग्नेय की अग्निभय, वायव्य की अधिक वायु, ऊपर की भयप्रद और चारों ओर की युद्ध आदि से नाशकारी होती है।

फाल्गुन शुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० के. दिनगणः १०७६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	१०	५	१०	७	६	०
१	५	२७	३	२४	२०	२९	२९
५९	३७	२४	५०	२६	५७	३१	३१
१०	३३	४	१३	३७	३२	३७	३७
५९	३७	११५	७	७४	०	३	३
५४	४२	१५	४४	३६	४६	११	११
सौरि	मा.	मा.	व.	मा.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ४	कृ.	पू.भा	उ.फा	पू.भा	ज्ये.	वि.	कृ.
	३	३	३	२	२	३	१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ फाल्गुण कृष्णपक्षः २२ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरसूर्य स्पष्टः | (१५ फव. स १ माच १९५७ई०) उत्तरायणं, दक्षिण गोल:. शिशिरर्तु:

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्तवाद पश्चिम में गुरु पूर्वरात्रि में पूर्व में श. पश्चिमरात्रि में खमध्य की ओर आता हुआ और बुध सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा । शुक्र ति. १० को पूर्व में अस्त होगा ।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	ह. फा.	अ. कृ.	मु. रु.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले				
२७	२१	१	शु.	३३	३	म.	२४	८	अ.	३७	२६	बा.	५	५९	४	१५	१४	सिंहे	७	११	६	७	१०	२	५३	४	
२७	२४	२	श.	२७	२७	पू. फा.	२०	१२	सु.	२९	५३	तै.	०	१५	५	१६	१५	कं.३४।१९	७	११	६	८	१०	३	५३	४६	भ. ५४-५१उ., श्रव. ४शुक्र: २१।२२. ज्ये.२ शनि:५०।४१
२७	२८	३	र.	२२	१५	उ.फा.	१९	४२	धृ.	२२	४१	वि.	२२	१५	६	१७	१६	कन्यायाम्	७	१०	६	८	१०	४	५४	२५	भ. २२।१५ या., श्रव. २ बुध:२२।२४ श्रीगणेश४ व्र, चं. गु. यु.
२७	३२	४	चं.	१७	४३	ह.	१३	४९	शू.	१६	१	बा.	१७	४३	७	१८	१७	तु.४२।४९	७	९	६	९	१०	५	५५	३	शत.रवि:४४।३०,सा. मं ने भानु: ९।५९,वसंततु प्रा. पातस्पर्श: ×
२७	३६	५	मं.	१४	१	चि.	११	४९	गं.	१०	२	तै.	१४	१	८	१९	१८	तुलायाम्	७	८	६	१०	१०	६	५५	३९	श्रव.३बुध:४०।५१,ध. १ शुक्र:१।३७,चं.इं.यु. × ३७।८मोक्ष:५१।३१
२७	४१	६	बु.	११	१६	स्वा.	१०	४०	वृ.	४	४९	व.	११	१६	९	२०	१९	वृ.५५।३८	७	७	६	११	१०	७	५६	१४	भ. ११।१६ उ., ४०।२८ या. व.उ.फा. ३गुरु: १०।१३ चं.रा..यु
२७	४६	७	गु.	९	४०	वि.	१०	३७	ध्रु.	०/५७	२४/५	व.	९	४०	१०	२१	२०	वृश्चिके	७	६	६	१२	१०	८	५६	४७	श्रव.४बुध:५५।४४ धनि. २शुक्र: ४१।५८. श्रीसीता जन्म ८
२७	५१	८	शु.	९	१५	अनु.	११	४९	ह.	५४	३७	कौ.	९	१५	११	२२	२१	वृश्चिके	७	५	६	१३	१०	९	५७	१८	चं. श. युति: अर्धरात्रव्यापित्वात्)
२७	५६	९	श.	१०	९	ज्ये.	१४	१३	व.	५३	१९	ग.	१०	९	१२	२३	२२	ध.१४।१३	७	३	६	१४	१०	१०	५७	४६	भ. ४१।१७ उ.
२८	१	१०	र.	१२	२५	मू.	१७	५९	सि.	५२	४५	वि.	१२	२५	३	२४	२३	धनुषि	७	२	६	१४	१०	११	५८	१२	भ. १२।२५ या, धनि. १बुध:७।२५ धनि. ३कुम्भे शुक्र:२२।२१*
२८	६	११	चं.	१५	४५	पू. षा.	२२	४३	व्य	५३	६	बा.	१५	४५	१४	२५	२४	म.३९।९	७	१	६	१४	१०	१२	५८	३५	विजया ११ व्र. *पूर्वारिक्त: शुक्र: ३०।२२ [पू. अ. शु.]
२८	११	१२	मं.	२०	९	उ. षा.	२८	२७	व.	५४	३	तै	२०	९	१५	२६	२५	मकरे	७	०	६	१५	१०	१३	५८	५६	धनि. २बुध: १९।२, भौमप्रदोषव्र.
२८	१६	१३	बु.	२५	१४	श्र.	३४	४८	प.	५५	२५	व.	२५	१४	१६	२७	२६	मकरे	६	५९	६	१६	१०	१४	५९	१६	भ २५।१४उ.५७।५५या. धनि. ४शुक्र: २।४० श्रीमहाशिवरात्रिव्र.
२८	२१	१४	गु.	३०	३६	ध.	४१	२२	शि.	५६	५१	श.	३०	३६	१७	२८	२७	कु. ८।५	६	५८	६	१७	१०	१५	५९	३५	धनि.३कुम्भेबुध:२१।८,पंचकप्रा.८।५मेलाशिव१४, चं.बु, चं.शु.यु.
२८	२६	३०	शु.	३५	५३	श.	४७	४६	सि.	५८	२	च.	३	१४	१८	१म	२८	कुम्भे	६	५५	६	१८	१०	१६	५९	५२	क्रु भौम:४२।५१,शत.१शुक्र:४२।५२, मार्च ३ ता. ३१,चं.सू.यु.

फाल्गुण कृष्णपक्ष ८ शुक्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०५४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	९	५	९	७	७	१
९	२१	२०	६	२७	२०	०	०
५७	४९	६	२८	२	१६	४१	४१
१८	४५	२२	५६	३०	२४	३१	४१
६०	३७	६०	६	७४	२	३	३
३१	३६	३८	१५	४९	५४	११	११
सौर	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श. १	भ. ३	श. ४	उ.फा. ३	ध. १	ज्ये. १	वि. ४	कृ. १
जल	कण्ठ	कुक्षि	शीर्ष	कुक्षि	जानु	कण्ठ	कण्ठ

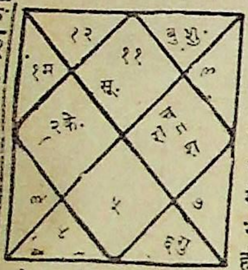

इन दिनों में कहीं यवन देश में उपद्र जनहानि और घोड़ा आदि पशुओं को पीड़ा हो अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण दूषित्र रहेगा । गुड़ अलसी चना सूत कपड़ा एरण्ड सरसों तिल तेल हल्दी कर्याना का भाव तेज रहे । ति. ५ से चांदी चावल मोट उड़द में भी तेजी का प्रसङ्ग बने । ति. १० से रुई चांदी तथा अनाज में मन्दी अलसी तथा शेयरों के भाव में तेजी रहे. ति. १४ से २० दिन में रुई में मन्दी का झटका आवे गेहूँ में तेजी । फा. कृ. षष्टी को स्वाती का होना आगामी दुर्भिक्ष का सूचक है तथा किसी राजपुरुष को शारीरिक तथा मानसिक सङ्कट ग्रस्त भी होना पड़ेगा । आ. ल.—ति. १ से ४ तक तथा ति. १० से १४ तक पंजाब तथा पर्वतीयप्रदेशों में कहीं २ बूंदाबांदी तथा बादल चाल होगी ।

श. वि—फाल्गुण वदी तीज को जान । दीखे पवन मेघ प्रमान ।। असोज शुदि में वर्षा होय । रातदिन वर्षे मन मोय । फाल्गुण कारी दूज दिन निर्मल रहे अकाश । श्रावण भादों जल बहु सुधर जाय चोमास

फाल्गुणकृष्णपक्ष में शिवरात्रि का व्रत अवश्य करना [illegible] होता है ।

फाल्गुण कृष्ण ३० शुक्र इष्टम् ०।० के. दिनगणः १०६१

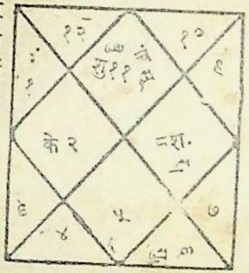

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	०	१०	५	१०	७	७	१
१६	२६	१	५	५	२०	०	०
५९	१३	२	४२	४६	३४	१९	१९
५२	१०	५२	२४	३०	३२	१६	१६
६०	३७	९८	७	७४	२	३	३
१७	३४	३	२	५३	११	११	११
सौर	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
श. ४	भ. ४	श. ३	उ.फा. ३	ध. ४	ज्ये. २	वि. ४	कृ. २
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री सं० २०१३ शाकः १८७८ फाल्गुणशुक्ल पक्षः २३ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्ड टाईम | सौरः स्पष्टःसूर्यः | (२ मा. से १६ मा. तक १९५७ई०) उत्तरायणं, द. गो. वसंततुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. फाल्गु.	अं. मार्च	मु. शाबा.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
२८	३०	१	श.	४०	३८	पू. भा	५३	३४	सा.	५८	४७	कि.	८	१५	१९	२	२९	मी. ३७।७	६	५३	६	१९	१०	१८	०	५
२८	३५	२	र.	४४	२८	उ. भा.	५८	३१	शु.	५८	४८	बा.	१२	३३	२०	३	३०	मीने	६	५२	६	२०	१०	१९	०	१७
२८	४०	३	चं.	४७	९	रे.	६०	०	शु.	५७	५३	तै.	१५	४८	२१	४	१	मीने	६	५१	६	२१	१०	२०	०	२७
२८	४५	४	मं.	४८	३८	रे.	२	२१	ब्र.	५६	४	व.	१७	५३	२२	५	२	मे. २।२१	६	४९	६	२१	१०	२१	०	३५
२८	५०	५	बु.	४८	५०	अ.	४	५९	ऐं.	५३	१४	ब.	१८	४४	२३	६	३	मेषे	६	४८	६	२२	१०	२२	०	४०
२८	५५	६	गु.	४७	४५	भ.	६	२०	वै.	४९	२१	कौ.	१८	१७	२४	७	४	वृ. २१।२२	६	४७	६	२३	१०	२३	०	४३
२९	०	७	शु.	४५	२६	कृ.	६	२९	वि.	४४	३५	ग.	१६	३५	२५	८	५	वृषे	६	४६	६	२४	१०	२४	०	४०
२९	५	८	श.	४२	४	रो.	५	२६	प्री.	३८	५९	वि.	१३	४५	२६	९	६	मि ३४।२८	६	४४	६	२४	१०	२५	०	३६
२९	१०	९	र.	३७	५३	मृ.	३	३१	आ.	३२	४६	बा.	९	५८	२७	१०	७	मिथुने	६	४३	६	२५	१०	२६	०	२६
२९	१५	१०	चं.	३२	५५	आ.	०/५७	४५/५८	सौ.	२५	५४	तै.	५	२४	२८	११	८	क. ४३।१०	६	४३	६	२५	१०	२७	०	१०
२९	२०	११	मं.	२७	२७	पु.	५३	२७	शो.	१८	३४	व.	०	११	२९	१२	९	कर्के	६	४२	६	२६	१०	१७	५९	५१
२९	२५	१२	बु.	२१	३७	श्ले.	४९	२१	अ.	१०	५८	बा.	२१	३७	३०	१३	१०	सि ४९।२१	६	४१	६	२७	१०	२८	५९	४४
२९	३०	१३	गु.	१५	३७	म.	४५	१०	सु.	५५	३३	तै.	१५	३७	१ चै	१४	११	सिंहे	६	३९	६	२७	१०	२९	५९	३२
२९	३५	१४	शु.	९	४२	पू. फा.	४१	११	धृ.	४७	५३	व.	९	४२	२	१५	१२	कं. ५५।१७	६	३८	६	२८	११	०	५९	१६
२९	४०	१५	श.	४	५	उ. फा.	३७	३४	ग.	४०	३७	व.	४	५	३	१६	१३	कन्यायाम्	६	३८	६	२९	११	१	५९	१०

ग्रहदर्शन—मं. सूर्यास्त बाद खमध्य में, गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में औ श. पश्चिम रात्रि में खमध्य की ओर आता हुआ दीखेगा। शु. अस्त है। बु. ति. ४ को होगा।

धनि ४ बुधः २३।४१
चन्द्रदर्शनम् दक्षिणशृङ्गोन्नति पू.भा.रविः ५६।३३
शत १ बुधः २३।४६, शत २शु. २३।१४, सावान मु. ८
भ. १७।५३ उ. ४८।३८ या., व.पुष्य२ वरुणः (हर्शल) ५६। ,[
शत. २ बुधः २१।२७ [पूर्वास्तोबुधः २५।२, पञ्च. समा.२।२१
वृषे भौमः२।८, शत.३ शु. ३।४७, वि. ३ तु. रा., कृ. १ मे. के.*
भ. ४५।२६ उ., शत ३ बुधः १६।१८ *।४।५, चं.के., चं.मं.यु.
भ. १३।४५ या., शत ४ शुक्रः ४४।३१, होलाष्टकारम्भः
शत ४ बुधः ९।२८
बु. शु. युतिः *शुक्रः ६।२१ होलिकादहनं (भद्रोत्तरम्)सत्यव्र.
भ. ०।११ उ. २७।३७ या., पू.भा. १ बुधः १।३ पू. भा. १ शु.×
पू.भा.२बुधः ५।१।२ प्रदोषव्रतम् ×२५।२७,आमला११व्र.चं.व.यु.
सं. मीनेऽर्कः ०।२८ मु. ३० पुण्यं १६।२८ या.
भ. ९।४२ उ. ३६।५३ या., पू.भा. ३ बुधः ३६।५२ पू.भा. २*
होला १ मेला श्री आनन्दपुर साहिव, चं. गु. यु.

फाल्गुन शुक्ल ८ शनाविष्टम् ०।० क. दिनगणः १०६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१०	५	१०	७	६	०
२५	१	१४	४	१५	२०	२९	२९
०	१३	३६	४४	४४	४९	५३	५३
३६	५४	४९	१८	३७	२५	५१	५१
५९	३७	१०६	७	७४	१	३	३
५९	३८	१७	३४	३८	२६	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
न. भा. चं.	कृ.	श.	उ.फा	श	ज्ये.	वि.	कृ.
	२	३	३	३	२	३	१
नीर	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस पक्ष में रुई के भाव में घटाबढ़ी होकर मन्दी हो,पक्षान्त में तेजी। गेहूँ चना मोठ मूंग चावल बाजरा मन्दा रहे। ति. ४ से सुवर्ण में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे। ति. ६ से उड़द तिल गुड़ गेहूँ अलसी के भाव कुछ तेज, चंदन वस्त्र भी तेज रहें। ति. ११ से ति.१३ तक रुई १०।१५ टका तेज हो। ति.१५ की शाम को रुई का भाव घटेगा। वहाँ खरीद करने से तीन दिन के अन्दर १०टका की तेजी होकर लाभ हो। सिन्ध कराची आदि में प्रजा में विरोध, राज पीड़ा मध्यम वर्ग आर्थिक समस्या से चिन्तित रहे। आकाश लक्षण—ति.२ से ७ तथा ९ से १३ तक पूर्वोत्तरीय भारत में कहीं कहीं वर्षा हो वायु का भी जोर रहेगा। वृक्षों को हानि पहुँचे। श.वि.—फाल्गुन सुदी सप्तमी जो वर्षा महाधन छाय। पांचम नव असोज सुदी जल थल एक कराय॥ फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जेवर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय महंगा होय॥ फा० शु० १५ को शाम के वक्त भद्रा रहित समय में होली का पूजन और हवन करना चाहिए। होलीदाह के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं ईशान की वायु राजा प्रजा के लिए शुभ है। नैऋत्य की वायु दुर्भिक्ष, आग्नेय की अग्निभय, वायव्य की अधिक वायु, ऊपर की भयप्रद और चारों ओर की युद्ध आदि से नाशकारी होती है।

फाल्गुन शुक्ल १५ शनाविष्टम् ०।० के. दिनगणः १०७६

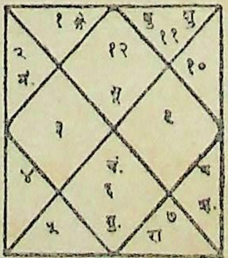

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	१०	५	१०	७	६	०
१	५	२७	३	२४	२०	२९	२९
५९	३७	२४	५०	२६	५७	३१	३१
१०	३३	४	१३	३७	३२	३७	३७
५९	३७	११५	७	७४	०	३	३
५४	४२	१५	४४	३६	४६	११	११
क्रान्ति	मा.	मा.	व.	मा.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
न. भा. चं.	कृ.	पू.भा	उ.फा	पू.भा	ज्ये.	वि.	कृ.
	३	३	३	२	२	३	१
नीर	[illegible]	नीर	नीर	नीर	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

संवत् २०१३ शाकः १८७८ चैत्र कृष्णपक्षः २४ | तारीखें | चन्द्र | स्टैण्डर्डटाइम | सौरःस्पष्टःसूर्यः | (१७ मार्च से ३१ मा. तक १९५७ई.) उत्तरायणगोली, वसन्तर्तुः

दि.मा.		ति.	वा.	घ. प.		न.	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		हि. चैत्र	अं. मार्च	मु. माघा.	सञ्चारः	सू. उ.		सू. अ.		उदय काले			
अवम		१	श.	५४	४८	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	४५	२	र.	५४	२०	ह.	३४	३३	वृ.	३३	५०	तै.	२६	३६	४	१७	१४	कन्यायाम्	६	३७	६	३०	११	२	५९	७
२९	५०	३	चं.	५०	३४	चि.	३२	२२	ध्रु.	२७	४३	व.	२२	२७	५	१८	१५	तु. ३।२७	६	३५	६	३०	११	३	५९	५
२९	५५	४	मं.	४७	४८	स्वा.	३०	५८	व्या	२२	१८	ब.	१९	११	६	१६	१६	तुलायाम्	६	३५	६	३१	११	४	५९	३
३०	०	५	बु.	४६	१०	वि.	३०	३९	ह.	१७	४४	कौ.	१६	५९	७	२०	१७	वृ. १५।४४	६	३३	६	३२	११	५	५८	५०
३०	४	६	गु.	४५	४८	अनु.	३१	३५	व.	१४	६	ग.	१५	५९	८	२१	१८	वृश्चिके	६	३१	६	३२	११	६	५८	२२
३०	९	७	शु.	४६	३९	ज्ये.	३३	४४	सि.	११	२९	वि	१६	१३	९	२२	१९	ध. ३३।४४	६	३०	६	३३	११	७	५७	५४
३०	१४	८	श.	४८	५४	मू.	३७	१२	व्य.	९	५१	बा.	१७	४६	१०	२३	२०	धनुषि	६	३०	६	३४	११	८	५७	२४
३०	१८	९	र.	५२	१५	पू.षा.	४१	४७	वर.	९	११	तै.	२०	३४	११	२४	२१	म. ५८।१०	६	२९	६	३५	११	९	५६	५१
३०	२३	१०	चं.	५६	३४	उ. षा.	४७	१९	प.	९	२५	व.	२४	२४	१२	२५	२२	मकरे	६	२७	६	३५	११	१०	५६	१७
३०	२८	११	मं.	६०	०	श्र.	५३	३४	शि.	१०	१७	ब.	२९	५	१३	२६	२३	मकरे	६	२५	६	३७	११	११	५५	४३
३०	३२	११	बु.	१	३६	ध.	६०	०	सि.	११	३९	बा.	१	३६	१४	२७	२४	कुं २६।५१	६	२३	६	३७	११	१२	५५	२
३०	३७	१२	गु.	६	५५	ध.	०	८	सा.	१३	१०	तै.	६	५५	१५	२८	२५	कुम्भे	६	२२	६	३८	११	१३	५४	१९
३०	४२	१३	शु.	१२	४	शत.	६	३६	शु.	१४	३१	व.	१२	४	१६	२९	२६	मी ५६।१०	६	२१	६	३९	११	१४	५३	३४
३०	४६	१४	श.	१६	४१	पू. भा.	१२	४२	शु.	१५	२८	श.	१६	४१	१७	३०	२७	मीने	६	२०	६	४०	११	१५	५२	४७
३०	५०	३०	र.	२०	२७	उ. भा.	१७	५६	ब्र.	१५	४३	ना.	२०	२७	१८	३१	२८	मीने	६	१८	६	४०	११	१६	५२	०

ग्रहदर्शन—बु. शु. अस्त है। सूर्यास्त बाद मं. पश्चिम में गु. पूर्व में और श. पूर्व रात्रि में पूर्व में दीखेगा।

() चं. शु. युतिः,
उ. भा. रविः २०।५४ पू. भा. ४ मीने बुधः २१।१ पू.भा. ३ शुक्रः*
भ. २२।२७ उ. ५०।३४ या, चं. इं. यु. *४७।७
उ. भा. १ बुधः ३।४६ व.उ. फा. २ गुरुः ५५।२५ श्री गणेश ४व्र०
सा. मेषे भानुः ६।२१, उ. भा. २ बुधः ४५।४, पू. भा. ४ मीने [
भ. ४५।४८ उ., चं. श. यु., मेला श्री शीतला कुराली
भ. १६।१३ या, रोहि. भौमः ५७।४० उ. भा. ३ बुधः २५।१, []
उ. भा. १ शुक्रः ९।५, वक्री शनिः २०।० [] श्री शीतला ८
उ. भा. ४ बुधः ३।४७, [शुक्रः २८।३, चं. रा. सू. बु. शु.
भ. २४।२४ उ.,५६।३४ या, रे. १ बुधः ४१।४९, उ.भा, २शुक्रः ×
पाप मोचिनी ११ व्रतं स्मार्तानाम् ×५०।१६
रेव. २ बुधः १९।५ पञ्चक प्रा.२६।५१,पापमोचिनी ११व्रतं वैष्णवम्
रेव. ३ बुधः ५५।३९ उ. भा. ३ शुक्रः ३१।३५, प्रदोष व्रतम्
भ.१२।४ उ.४४।२२ या वारुणीपर्वः६।३६या गङ्गास्नाने महत्फलम्
रेव ४ बुधः ३१।४१, रेवत्यां रविः ४७।५० मेला पृदथूक (पिहोवा)
उ. भा. ४ शुक्रः १३।० मन्वादिः, चान्द्र संवत्सर समाप्तिः चं. सू.,)

चैत्र कृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० के० दिनगणः १०८३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	११	५	११	७	६	०
८	१०	११	२	३	२१	२९	२९
५७	१	१०	५६	८	०	९	९
२४	२८	३६	३१	५०	३८	२२	२२
५९	३७	१२१	७	७४	०	३	३
३०	४३	३८	३५	३६	१	११	११
मार्गी	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा	रो.	उ.भा	उ.फा	पू.भा	ज्ये.	वि.	कृ.
२	१	३	२	४	२	३	१
सौम्य	वायु	सौम्य	नीर	नीर	वायु	चण्ड	चण्ड

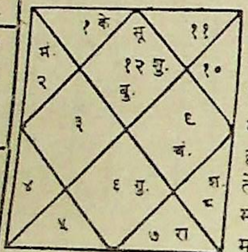

इस पक्ष में माल का स्टाक करने से हानि रहे।

गुड़, शक्कर तेज रहकर मन्दा हो। जो व्यापारी माल को खरीद थोड़ी तेजी आने पर शीघ्र फरोखत करते रहेंगे वह कुछ लाभ में रहेंगे। ति. ५ से रुई, गेहूं बिनौला में मन्दी रहे। चाँदी में तेजी का झटका आवेगा। वहां बेचने से लाभ हो। ति.८ से शीशा कलई में तेजी। चावल घृत तेल अलसी सरसों में तेजी रहेगी। सुवर्ण में मन्दी रहे। पूर्वीय भारत में रोग या उपद्रव से मनुष्यों में चिन्ता घबराहट से कष्ट हो।

चैत्र कृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० के० दिनगणः १०९१

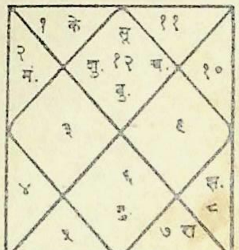

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
११	१	११	५	११	७	६	०
१६	१५	२७	१	१३	२०	२८	२८
५२	३	३८	५६	३	५८	४३	४३
०	७	५५	१०	५४	१३	५६	५६
५९	३७	१२४	७	७४	०	३	३
१३	३७	५०	४४	२०	१७	११	११
मार्गी	मा.	मा.	ब.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रे.	रो.	रे.	उ.फा	उभा.	ज्ये.	वि.	कृ.
१	२	४	२	३	२	३	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आ. ल.–ति. २ से ८ तक तथा १२ से ३० तक कहीं २ वर्षा, ओले का भय हो, वायु का प्रकोप हो। श. वि.–चैत्र वदी प्रतिपदा शनिवार को गर्जे मेघ अपार, श्रावण भादवके विषे अनावृष्टि निरधार। चौथ पञ्चमीं चैत्रवदि, वर्षे और चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय॥ चैत्र कृष्ण १"को आम्रमग्र्यं वसन्तस्य माकन्दकुसुमन्तव। सचन्दनं पिवाम्यद्य सर्व कामार्थ सिद्धयं" इस मन्त्र से आम की मञ्जरी खाने और चाण्डाल स्पर्श करने का बड़ा माहात्म्य है [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वसन्तस्य माकन्दकुसुमन्तव । सवन्दन पिवाम्यद्य सर्व कामार्थ सिद्धये' इस मन्त्र से आम की मञ्जरी खाने और चाण्डाल स्पर्श करने का बड़ा महिमा

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्र) स्पष्टार्कोदयकाले दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ७३८, चक्र ४, अयनांशाः २३।१३।२१ (दिनद्वयमध्यान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वाः	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
चैत्र शुक्लपक्षः	१	गु	११।२८।५१।२५	६। ४।५३।४६	०। ५।२४।२२	३।२८।१६।२६	१।१४।३७।२९	७। ८।४८।३६	७।१७।२६।२२	३। ४।५२।५४	६। ६। ६।२६
	३	शु.	११।२९।५०।१९	६। ५।३१।४९	०। ७।३२।१७	३।२८।१५।२१	१।१५।३६।३९	७। ८।४५।३८	७।१७।२३।१२	३। ४।५३।१३	६। ६। ४।५३
	४	श.	०। ०।४९।१०	६। ६। ९।४९	०। ९।३८।१६	३।२८।१४।३७	१।१६।३५।४३	७। ८।४२।३८	७।१७।२०। १	३। ४।५३।३८	६। ६। ३।१७
	५	र.	०। १।४७।५७	६। ६।४७।४७	०।११।४२।२१	३।२८।१४। ३	१।१७।३४।१३	७। ८।३९।३४	७।१७।१६।५१	३। ४।५४। ७	६। ६। १।३८
	६	चं.	०। २।४६।४२	६। ७।२५।४१	०।१३।४४।३१	३।२८।१३।४१	१।१८।३१। ७	७। ८।३६।२७	७।१७।१३।४०	३। ४।५४।४४	६। ५।५९।५९
	७	मं.	०। ३।४५।२४	६। ८। ३।३४	०।१५।४४।४७	३।२८।१३।३०	१।१९।२७।५७	७। ८।३३।१६	७।१७।१०।३०	३। ४।५५।२२	६। ५।५८।२०
	८	बु.	०। ४।४४। २	६। ८।४१।२५	०।१७।४३। ८	३।२८।१३।२९	१।२०।२४।११	७। ८।३०। २	७।१७। ७।१९	३। ४।५६। ४	६। ५।५६।४१
	९	गु.	०। ५।४२।३८	६। ९।१९।१४	०।१९।३९।३५	३।२८।१३।३८	१।२१।१९।५१	७। ८।२६।४४	७।१७। ४। ९	३। ४।५६।४८	६। ५।५५। २
	१०	शु.	०। ६।४१।१०	६। ९।५७। ०	०।२१।३४। ८	३।२८।१३।५९	१।२२।१४।५६	७। ८।२३।२४	७।१७। ०।५८	३। ४।५७।३६	६। ५।५३।२४
	११	श.	०। ७।३९।४०	६।१०।३४।४५	०।२३।२४।११	३।२८।१४।३१	१।२३। ९।२६	७। ८।२०। ०	७।१६।५७।४८	३। ४।५८।२५	६। ५।५१।४५
	१२	र.	०। ८।३८। ६	६।११।१२।२७	०।२५।१०।२२	३।२८।१५।१३	१।२४। ३।२२	७। ८।१६।३२	७।१६।५४।३७	३। ४।५९।१८	६। ५।५०। ७
	१३	चं.	०। ९।३६।३०	६।११।५०। ७	०।२६।५२।४१	३।२८।१६। ५	१।२४।५६।४२	७। ८।१३। ०	७।१६।५१।२६	३। ५। ०।१३	६। ५।४८।२९
	१४	मं.	०।१०।३४।५०	६।१२।२७।४३	०।२८।३१। ८	३।२८।१७। ९	१।२५।४९।२७	७। ८। ९।२५	७।१६।४८।१६	३। ५। १।१२	६। ५।४६।५१
	१५	बु.	०।११।३३। ८	६।१३। ५।१८	१। ०। ५।४४	३।२८।१८।२४	१।२६।४१।३४	७। ८। ५।५६	७।१६।४५। ५	३। ५। २।१२	६। ५।४५।१३
वैशाख कृष्णपक्षः	१	गु.	०।१२।३१।२२	६।१३।४२।५१	१। १।३६।२८	३।२८।१९।४९	१।२७।३३।१२	७। ८। २। ४	७।१६।४१।५५	३। ५। ३।१६	६। ५।४३।३५
	२	शु.	०।१३।२९।३४	६।१४।२०।२८	१। ३। ३।२०	३।२८।२१।२४	१।२८।२४।१३	७। ७।५८।१८	७।१६।३८।४४	३। ५। ४।२२	६। ५।४२।५७
	३	श.	०।१४।२७।४३	६।१४।५७।५०	१। ४।२६।२०	३।२८।२३।११	१।२९।१४।३८	७। ७।५४।३०	७।१६।३५।३४	३। ५। ५।३१	६। ५।४०।१९
	४	र.	०।१५।२६। ०	६।१५।३५।१३	१। ५।४५। ९	३।२८।२५।२४	२। ०। ४।४७	७। ७।५०।२८	७।१६।३२।२३	३। ५। ६।४३	६। ५।३८।४२
	५	चं.	०।१६।२४।१४	६।१६।१२।२८	१। ६।५९।१६	३।२८।२७।३८	२। ०।५३।५३	७। ७।४६।२६	७।१६।२९।१२	३। ५। ७।५७	६। ५।३७। ६
	६	मं.	०।१७।२२।२६	६।१६।४९।३७	१। ८। ८।४१	३।२८।३०। २	२। १।४१।५७	७। ७।४२।२२	७।१६।२६। २	३। ५। ९।१३	६। ५।३५।३०
	७	बु.	०।१८।२०।३६	६।१७।२६।३८	१। ९।१३।२६	३।२८।३२।३७	२। २।२८।५७	७। ७।३८।१६	७।१६।२२।५१	३। ५।१०।३१	६। ५।३३।५५
	८	गु.	०।१९।१८।४५	६।१८। ३।३३	१।१०।१३।३८	३।२८।३५।२१	२। ३।१४।५५	७। ७।३४। ९	७।१६।१९।४०	३। ५।१२। २	६। ५।३२।२०
	९	शु.	०।२०।१६।५२	६।१८।४०।२०	१।११। ८।५०	३।२८।३८।१६	२। ३।५९।४९	७। ७।३०। ०	७।१६।१६।२९	३। ५।१३।२९	६। ५।३०।४६
	१०	श.	०।२१।१४।५७	६।१९।१७। १	१।११।५९।३०	३।२८।४१।२१	२। ४।४३।४१	७। ७।२५।४८	७।१६।१३।१८	३। ५।१५। ०	६। ५।२९।१२
	११	र.	०।२२।१३। १	६।१९।५३।३५	१।१२।४५।२९	३।२८।४४।३८	२। ५।२६।३०	७। ७।२१।३६	७।१६।१०। ७	३। ५।१६।३४	६। ५।२७।४०
	१२	चं.	०।२३।११। ३	६।२०।३०। ३	१।१३।२६।१८	३।२८।४८। ४	२। ६। ८।१२	७। ७।१७।२२	७।१६। ६।५७	३। ५।१८।११	६। ५।२६। ७
	१३	मं.	०।२४। ९। ३	६।२१। ६।२३	१।१४। १।३६	३।२८।५१।४०	२। ६।४८।५९	७। ७।१३। ७	७।१६। ३।४६	३। ५।१९।५१	६। ५।२४।३५
	१४	बु.	०।२५। ७। १	६।२१।४२।३७	१।१४।३१।२४	३।२८।५५।२६	२। ७।२८। ४	७। ७। ८।५०	७।१६। ०।३६	३। ५।२१।३५	६। ५।२३। ३
	३०	ग.	०।२६। ४।५८	६।२२।१८।४४	१।१४।५५।४३	३।२८।५९।३२	२। ८। ७।१७	७। ७। ४।३२	७।१५।५७।२५	३। ५।२३।२१	६। ५।२२।३३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केवलाहर्गणः ७६७, अयनांशाः २३।१३।२६ (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
वैशाख शुक्लपक्षः	१	शु.	०।२७। २।५४	९।२२।५४।४४	११।१५।१४।३२	३।२९। ३।२९	२। ८।४४।५२	७। ७। ०।१२	७।१५।५४।१५	३। ५।२५।११	६। ५।२०। २
	२	श.	०।२८। ०।४७	९।२३।३०।३७	११।१५।२७।५२	३।२९। ७।४६	२। ९।२१।२३	७। ६।५५।५१	७।१५।५१। ४	३। ५।२७। ३	६। ५।१८।३३
	३	र.	०।२८।५८।३८	९।२४। ६।२४	११।१५।३५।४२	३।२९।१२।१३	२। ९।५६।५२	७। ६।५१।२८	७।१५।४७।५३	३। ५।२८।५९	६। ५।१७। ४
	४	चं.	०।२९।५६।२८	९।२४।४२। ४	११।१५।३८। २	३।२९।१६।५२	२।१०।३१।१९	७। ६।४७। २	७।१५।४४।४३	३। ५। ३।५८	६। ५।१५।३६
	५	मं.	१। ०।५४।१८	९।२५।१७।५४	११।१५।३४।३९	३।२९।२१।३६	२।११। ३। ८	७। ६।४२।३०	७।१५।४१।३२	३। ५।३२।५६	६। ५।१४। ७
	७	बु.	१। १।५२। ६	९।२५।५३।३४	११।१५।२७।३६	३।२९।२६।२९	२।११।३३।२३	७। ६।३७।५९	७।१५।३८।२१	३। ५।३४।५६	६। ५।१२।३९
	८	गु.	१। २।४९।५४	९।२६।२९। २	११।१५।१६।५३	३।२९।३१।३०	२।१२। २। ४	७। ६।३३।२८	७।१५।३५।११	३। ५।३६।५८	६। ५।११।१३
	९	शु.	१। ३।४७।४१	९।२७। ४।२०	११।१५। २।२८	३।२९।३६।४१	२।१२।२८।५२	७। ६।२८।५९	७।१५।३२। ०	३। ५।३९। ४	६। ५। ९।४७
	१०	श.	१। ४।४५।२६	९।२७।३९।२८	११।१४।४४।२३	३।२९।४१।५९	२।१२।५४। ८	७। ६।२४।२९	७।१५।२८।४९	३। ५।४१।१२	६। ५। ८।२३
	११	र.	१। ५।४३। ९	९।२८।१४।२४	११।१४।२२।३६	३।२९।४७।२७	२।१३।१७।४७	७: ६।२०। १	७।१५।२५।३९	३। ५।४३।२४	६। ५। ७। १
	१२	चं.	१। ६।४०।५०	९।२८।४९।१०	११।१३।५७। ९	३।२९।५३। ३	२।१३।४०। ८	७। ६।१५।३३	७।१५।२२।२८	३। ५।४५।३८	६। ५। ५।३९
	१३	मं.	१। ७।३८।३१	९।२९।२३।४६	११।१३।२८। १	३।२९।५८।४८	२।१४। ०। ७	७। ६।११। ६	७।१५।१९।१७	३। ५।४७।५६	६। ५। ४।१९
	१४	बु.	१। ८।३६।१०	९।२९।५८।११	११।१२।५६।४५	४। ०। ४।४१	२।१४।१८।५७	७। ६। ६।३८	७।१५।१६। ६	३। ५।५०।१९	६। ५। ३। ०
	१५	गु.	१। ९।३३।४८	१०। ०।३२।२४	११।१२।२५।२९	४। ०।१०।४४	२।१४।३६। ७	७। ६। २।१२	७।१५।१२।५५	३। ५।५२।४२	६। ५। १।४३
ज्येष्ठ कृष्णपक्षः	१	शु.	११।१०।३१।२४	१०। १। ६।२७	११।११।५४।१३	४। ०।१६।५५	२।१४।५१।३९	७। ५।५७।४६	७।१५। ९।४४	३। ५।५५। ७	६। ५। ०।२८
	२	श.	११।११।२८।५९	१०। १।४०।१८	११।११।२२।५५	४। ०।२३।१९	२।१५। ५।३२	७। ५।५३।२१	७।१५। ६।३३	३। ५।५७।३४	६। ४।५९।१३
	३	र.	११।१२।२६।३२	१०। २।१३।५९	११।१०।५१।३६	४। ०।२९।४३	२।१५।१७।४८	७। ५।४८।५६	७।१५। ३।२३	३। ६। ०। ९	६। ४।५८। ०
	४	चं.	११।१३।२४। ४	१०। २।४७।२८	११।१०।२०।१७	४। ०।३६।२०	२।१५।२८।२३	७। ५।४४।३२	७।१५। ०।१२	३। ६। २।४४	६। ४।५६।४९
	५	मं.	११।१४।२१।३५	१०। ३।२०।४७	११। ९।४८।५७	४। ०।४३। ७	२।१५।३७।२०	७। ५।४०। ८	७।१४।५७। १	३। ६। ५।२१	६। ४।५५।३८
	६	बु.	११।१५।१९। ५	१०। ३।५३।५६	११। ९।१७।३५	४। ०।५०। २	२।१५।४४।३८	७। ५।३५।४६	७।१४।५३।५१	३। ६। ७।५९	६। ४।५४।२९
	६	गु.	११।१६।१६।३६	१०। ४।२७।२०	११। ८।४८।५५	४। ०।५७। ४	२।१५।४७।१०	७। ५।३१।२०	७।१४।५०।४०	३। ६।१०।३९	६। ४।५३।१८
	७	शु.	११।१७।१४। ६	१०। ५। ०।२७	११। ८।२३।३१	४। १। ४।१४	२।१५। ।	७। ५।२६।५८	७।१४।४७।२९	३। ६।१३।२१	६। ४।५२। ८
	८	श.	११।१८।११।३५	१०। ५।३३।२०	११। ८। १।२१	४। १।११।३२	२।१५।४५।१६	७। ५।२२।३८	७।१४।४४।१८	३। ६।१६। ५	६। ४।५०।५८
	९	र.	११।१९। ९। ३	१०। ६। ५।५८	११। ७।४२।२५	४। १।१८।५९	२।१५।४८।५१	७। ५।१८।२१	७।१४।४१। ८	३। ६।१८।५०	६। ४।४९।५७
	१०	चं.	११।२०। ६।३०	१०। ६।३८।२१	११। ७।२६।४४	४। १।२६।३४	२।१५।३४। ८	७। ५।१४। ६	७।१४।३७।५७	३। ६।२१।३८	६। ४।४८।५०
	११	मं.	११।२१। ३।५६	१०। ७।१०।२९	११। ७।१४।१७	४। १।३४।१८	२।१५।२५। ६	७। ५। ९।५४	७।१४।३४।४६	३। ६।२४।२७	६। ४।४७।५२
	१२	बु.	११।२२। १।२०	१०। ७।४२।२१	११। ७। ५। ४	४। १।४२।१०	२।१५।१३।४४	७। ५। ५।४४	७।१४।३१।३६	३। ६।२७।१८	६। ४।४६।५४
	१३	गु.	११।२२।५८।४४	१०। ८।१३।५९	११। ६।५९। ६	४। १।५०।१०	२।१५। ०। ४	७। ५। १।३७	७।१४।२८।२५	३। ६।३०।११	६। ४।४५।५४
	३०	शु.	११।२३।५६। ७	१०। ८।४५।१८	११। ६।५८। ४	४। १।५८।१३	२।१४।४४। ५	७। ४।५७।३२	७।१४।२५।१४	३। ६।३३। [illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ७६६, अयनांशाः २३।१४।१० (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति०	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
ज्येष्ठ शुक्लपक्षः	१	श.	१।२४।५३।२९	१०। ९।१६।२९	१। ७। १।३५	४। २। ६।२२	२।१४।२५।४७	७। ४।५३।२९	७।१४।२२। ४	३। ६।३६। ३	६। ४।४४। २
	२	र.	१।२५।५०।५१	१०। ९।४७।१८	१। ७। ९।३८	४। २।१४।३९	२।१४। ५।११	७। ४।४९।२९	७।१४।१८।५३	३। ६।३९। २	६। ४।४३। ९
	३	चं.	१।२६।४८।११	१०।१०।१७।५८	१। ७।२२।१६	४। २।२३। ३	२।१३।४२।१५	७। ४।४५।३३	७।१४।१५।४२	३। ६।४२। २	६। ४।४२।१७
	४	मं.	१।२७।४५।३१	१०।१०।४८।२१	१। ७।३९।२८	४। २।३१।३४	२।१३।१७। १	७। ४।४१।३८	७।१४।१२।३१	३। ६।४५। ४	६। ४।४१।२६
	५	बु.	१।२८।४२।४९	१०।११।१८।२७	१। ८। १।११	४। २।४०।१२	२।१२।४९।२७	७। ४।३७।४७	७।१४। ९।२१	३। ६।४८। ९	६। ४।४०।३८
	६	गु.	१।२९।४०। ७	१०।११।४८।१९	१। ८।२७।३०	४। २।४८।५८	२।१२।१९।३५	७। ४।३३।५८	७।१४। ६।१०	३। ६।५१।१६	६। ४।३९।५२
	७	शु.	२। ०।३७।२३	१०।१२।१७।५६	१। ८।५८।१९	४। २।५७।५०	२।११।४७।२४	७। ४।३०।११	७।१४। २।५९	३। ६।५४।२५	६। ४।३९। ७
	८	श.	२। १।३४।४१	१०।१२।४७।१३	१। ९।२९।३८	४। ३। ६। ९	२।११।११। ०	७। ४।२६।२५	७।१३।५९।४८	३। ६।५७।३१	६। ४।३८।२४
	९	र.	२। २।३१।५८	१०।१३।१६।११	१।१०। ४।४७	४। ३।१५।५३	२।१०।३४।४६	७। ४।२२।४२	७।१३।५६।३७	३। ७। ०।३८	६। ४।३७।४१
	१०	चं.	२। ३।२९।१५	१०।१३।४४।५१	१।१०।४६।४६	४। ३।२५। ३	२। ९।५८।४०	७। ४।१९। ३	७।१३।५३।२७	३। ७। ३।४७	६। ४।३७। ०
	११	मं.	२। ४।२६।३१	१०।१४।१३।१२	१।११।३४।३४	४। ३।३४।१९	२। ९।२२।४२	७। ४।१५।२८	७।१३।५०।१६	३। ७। ६।५७	६। ४।३६।२३
	१२	बु.	२। ५।२३।४७	१०।१४।४१।१४	१।१२।२८।२७	४। ३।४३।४०	२। ८।४६।५३	७। ४।११।५५	७।१३।४७। ५	३। ७।१०। ९	६। ४।३५।४६
	१३	गु.	२। ६।२१। २	१०।१५। ८।५५	१।१३।२७।३९	४। ३।५३। ७	२। ८।११।१२	७। ४। ८।३०	७।१३।४३।५४	३। ७।१३।२२	६। ४।३५।११
	१४	शु.	२। ७।१८।१७	१०।१५।३६।१८	१।१४।३२।४१	४। ४। २।४०	२। ७।३५।३६	७। ४। ५। ७	७।१३।४०।४३	३। ७।१६।३७	६। ४।३४।३८
	१५	श.	२। ८।१५।३२	१०।१६। ३।२२	१।१५।४४। २	४। ४।१२।१८	२। ७। ०।१४	७। ४। १।४८	७।१३।३७।३३	३। ७।१९।५५	६ ४।३४। ५
आषाढ कृष्णपक्षः	१	र.	२। ९।१२।४६	१०।१६।३०। ७	१।१६।५३।४९	४। ४।२२। २	२। ६।२४।५९	७। ३।५८।३३	७।१३।३४।२२	३। ७।२३।१३	६। ४।३३।३४
	२	चं.	२।१०।१०। ०	१०।१६।५६।३३	१।१८। ६।४५	४। ४।३१।५१	२। ५।४९।४९	७। ३।५५।२३	७।१३।३१।११	३। ७।२६।३३	६। ४।३३। ५
	३	मं.	२।११। ७।१४	१०।१७।२२।३९	१।१९।२३।१९	४। ४।४१।४०	२। ५।१४।४९	७। ३।५२।१७	७।१३।२८। ०	३। ७।२९।५५	६। ४।३२।३८
	४	बु.	२।१२। ४।२७	१०।१७।४८।२६	१।२०।४३।२३	४। ४।५१।४७	२। ४।३९।५८	७। ३।४९।१४	७।१३।२४।४९	३। ७।३३।१९	६। ४।३२।१३
	५	गु.	२।१३। १।४०	१०।१८।१३।५४	१।२२। ६।५५	४। ५। १।५३	२। ४। ५।१४	७। ३।४६।१५	७।१३।२१।३९	३। ७।३६।४४	६। ४।३१।४९
	६	शु.	२।१३।५८।५२	१०।१८।३९। ३	१।२३।३३।५५	४। ५।१२। ५	२। ३।३०।३९	७। ३।४३।२१	७।१३।१८।२८	३। ७।४०।११	६। ४।३१।२७
	७	श.	२।१४।५६। ४	१०।१९। ३।५२	१।२५। ४।२५	४। ५।२२।२३	२। २।५६।१२	७। ३।४०।३१	७।१३।१५।१७	३। ७।४३।४०	६। ४।३१। ७
	८	र.	२।१५।५३।१७	१०।१९।२८।२३	१।२६।३८।२४	४। ५।३२।४६	२। २।२२।५४	७। ३।३७।४४	७।१३।१२। ६	३। ७।४७।१०	६। ४।३०।४७
	९	चं.	२।१६।५०।२९	१०।१९।५२। ९	१।२८।१५।५२	४। ५।४३।१०	२। १।५४।१९	७। ३।३५। २	७।१३। ८।५५	३। ७।५०।४२	६। ४।३०।३२
	१०	मं.	२।१७।४७।४२	१०।२०।१५।२२	१।२९।५५। ३	४। ५।५३।४०	२। १।२८।५२	७। ३।३२।२६	७।१३। ५।४५	३। ७।५४।१४	६। ४।३०।२०
	११	बु.	२।१८।४४।५५	१०।२०।३८।११	२। १।३७।५८	४। ६। ४।१४	२। १। ५।३५	७। ३।२९।५६	७।१३। २।३४	३। ७।५७।४६	६। ४।३०।१०
	१२	गु.	२।१९।४२। ८	१०।२१। ०।३३	२। ३।२३।५६	४। ६।१४।५३	२। ०।४४।२७	७। ३।२७।३०	७।१२।५९।२३	३। ८। १।१८	६। ४।३०। १
	१३	शु.	२।२०।३९।२१	१०।२१।२२।२८	२। ५।१२।५७	४। ६।२५।३६	२। ०।२५।२८	७। ३।२५।११	७।१२।५६।१२	३। ८। ४।५१	६। ४।२९।५५
	१४	श.	२।२१।३६।३४	१०।२१।४३।५६	२। ७। ५। १	४। ६।३६।२४	२। ०। ८।३८	७। ३।२२।५६	७।१२।५३। १	३। ८। ८।२४	६। ४।२९।५०
	३०	र.	२।२२।३३।४७	१०।२२। ४।५६	२। ९। ०। ९	४। ६।४७।१८	२।२९।५३।५६	७। ३।२०।४७	७।१२।४९।५१	३। ८।११।५७	६। ४।२९।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ८२६, अयनांशाः २३।१४।५ (दिनद्वयमहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आषाढ शुक्लपक्षः	१	चं.	२।२३।३१। १	१०।२२।२५।३०	२।१०।५८।१९	४। ६।५८।१६	१।२९।४१।२४	७। ३।१८।४३	७।१२।४६।४०	३। ८।१५।३२	६। ४।२९।४६
	३	मं.	२।२४।२८।१४	१०।२२।४५।३६	२।१२।५९।५३	४। ७।.९।१८	१।२९।३१। २	७। ३।१६।४४	७।१२।४३।२९	३। ८।१९। ७	६। ४।२९।४७
	४	बु.	२।२५।२५।२८	१०।२३। ५।१६	२।१५। २।४२	४। ७।२०।२५	१।२९।२२।४७	७। ३।१४।५२	७।१२। ४।१८	३। ८।२२।४२	६। ४।२९।५०
	५	गु.	२।२६।२२।४२	१०।२३।२४।२८	२।१७। ६।४७	४। ७।३१।३६	१।२९।१६।४२	७। ३।१३। ४	७।१२।३७। ७	३। ८।२६।१७	६। ४।२९।५५
	६	शु.	२।२७।१९।५६	१०।२३।४३।१३	२।१९।१२। ७	४। ७।४२।५१	१।२९।१२।४५	७। ३।११।२२	७।१२।३३।५७	३। ८।२९।५४	६। ४।३०। १
	७	श.	२।२८।१७।१०	१०।२४। १।३१	२।२१।१८।४२	४। ७।५४। ९	१।२९।१०।५७	७। ३। ९।४५	७।१२।३०।४६	३। ८।३३।३१	६। ४।३०।१०
	८	र.	२।२९।१४।२४	१०।२४।१९।२२	२।२३।२६।३२	४। ८। ५।३३	१।२९।११।१९	७। ३। ८।१४	७।१२।२७।३५	३। ८।३७। ८	६। ४।३०।२०
	९	चं.	३। ०।११।३८	१०।२४।३६।४५	२।२५।३५।२८	४। ८।१७। १	१।२९।१३।४९	७। ३। ६।४९	७।१२।२४।२४	३। ८।४०।४५	६। ४।३०।३२
	१०	मं.	३। १। ८।५३	१०।२४।५३।४२	२।२७।४५।५८	४। ८।२८।३४	१।२९।१८।२९	७। ३। ५।२८	७।१२।२१।१४	३। ८।४४।२४	६। ४।३०।४७
	११	बु.	३। २। ६। ९	१०।२५।१०।१४	२।२९।५६।१०	४। ८।४०।११	१।२९।२७।३६	७। ३। ४।१०	७।१२।१८। ३	३। ८।४८। ६	६। ४।३१।४४
	१२	गु.	३। ३। ३।२५	१०।२५।२६। ५	३।.२। ५।१९	४। ८।५१।५१	१।२९।३८।२७	७। ३। २।५९	७।१२।१४।५२	३। ८।५१।४८	६। ४।३१।२२
	१३	शु.	३। ४। ०।४२	१०।२५।४१।१८	३। ४।१३।२६	४। ९। ३।३३	१।२९।५१। ०	७। ३। १।५४	७।१२।११।४१	३। ८।५५।३०	६। ४।३१।४२
	१४	श.	३। ४।५८। ०	१०।२५।५५।५२	३। ६।२०।३१	४। ९।१५।२०	२। ०। ५।१७	७। ३। ०।५४	७।१२। ८।३०	३। ८।५९।१२	६। ४।३२। ४
	१५	र.	३। ५।५५।१८	१०।२६। ९।४८	३। ८।२६।३४	४। ९।२७। ८	२। ०।२१।१६	७। ३। ०। ०	७।१२। ५।१८	३। ९। २।५४	६। ४।३२।२९

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
श्रावण कृष्णपक्षः	१	चं.	३। ६।५२।३७	१०।२६।२३। ९	३।१०।३१।३५	४। ९।३८।५९	२। ०।३८।५९	७। २।५९।११	७ १२। २। ७	३। ९। २।३६	६। ४।३२।५४
	२	मं.	३। ७।४९।५६	१०।२६।३५।५१	३।१२।३५।३४	४। ९।५०।५२	२। ०।५८।२४	७। २।५८।२८	७।११।५८।५७	३। ९।१०।१८	६। ४।३३।२१
	३	बु.	३। ८।४७।१६	१०।२६।४७।५६	३।१४।३८।३१	४।१०। २।४९	२। १।१९।३४	७। २।५७।५०	७।११।५५।४६	३। ९।१३।५९	६। ४।३३।५०
	३	गु.	३। ९।४४।३७	१०।२६।५९।२३	३।१६।३९।३१	४।१०।१४।४८	२। १।४२।३०	७। २।५७।१७	७।११।५२।३६	३। ९।१७।४०	६। ४।३४।२१
	४	शु.	३।१०।४१।५९	१०।२७।१०।११	३।१८।३८।५७	४।१०।२६।५०	२। २। ७। ८	७। २।५६।५३	७।११।४९।२५	३। ९।२१।२२	६। ४।३४।५३
	५	श.	३।११।३९।२१	१०।२७।२०।२१	३।२०।३६।५१	४।१०।३८।५४	२। २।३३।२८	७। २।५६।३१	७।११।४६।१४	३। ९।२५। ४	६। ४।३५।२७
	६	र.	३।१२।३६।४४	१०।२७।२९।५४	३।२२।३३।११	४।१०।५१। २	२। ३। १।३०	७। २।५६।१६	७।११।४३। ३	३। ९।२८।४६	६। ४।३६। ४
	७	चं.	३।१३।३४। ७	१०।२७।३८।५०	३।२४।२८। ०	४।११। ३।११	२। ३।३१।१४	७। २।५६। ७	७।११।३९।५२	३। ९।३२।२८	६। ४।३६।४३
	८	मं.	३।१४।३१।३१	१०।२७।४७। ७	३।२६।२१।१५	४।११।१५।२४	२। ४। २।४०	७। २।५६। ३	७।११।३६।४१	३। ९।३६।१०	६। ४।३७।२३
	९	बु.	३।१५।२८।५५	१०।२७।५४।४६	३।२८।१२।५८	४।११।२७।३९	२। ४।३५।४८	७। २।५६। ५	७।११।३३।३०	३। ९।३९।५२	६। ४।३८। ५
	११	गु.	३।१६।२६।२०	१०।२८। १।४८	४। ०। ३। ७	४।११।३९।५८	२। ५।१०।३७	७। २।५६।१३	७।११।३०।१९	३। ९।४३।३४	६। ४।३८।४९
	१२	शु.	३।१७।२३।४६	१०।२८। ८।११	४। १५।१५१	४।११।५२।१८	२। ५।४६।४०	७। २।५६।२९	७।११।२७। ८	३। ९।४७।११	६। ४।३९।३३
	१३	श.	३।१८।२१।१४	१०।२८।१३।५६	४। ३।३९। ३	४।१२। ४।४१	२। ६।२३।४०	७। २।५६।५०	७।११।२३।५७	३। ९।५०।४८	६। ४।४०।२५
	१४	र.	३।१९।१८।४२	१०।२८।१९। ३	४। ५।२४।४३	४।१२।१७। ६	२। ७। १।३६	७। २।५७।१७	७।११।२०।४६	३। ९।५४।२५	६। ४।४१।१७
	३०	चं.	३।२०।१६।१२	१०।२८।२३।३२	४। ७। ८।५३	४।१२।२९।३३	२। ७।४०।३१	७। २।५७।५०	७।११।१७।३६	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतव्यहर्गणः ८५५, अयनांशः २३।१४।१० (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मास	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
श्रावण शुक्लपक्षः	१	मं.	३।२१।१३।४४	१०।२८।२७।२१	४। ८।५१।५०	४।१२।४२। २	२। ८।२०।२४	७। २।५८।२८	७।११।१४।२५	३।१०। १।३७	६। ४।४३। १
	२	बु.	३।२२।११।१६	१०।२८।३०।३०	४।१०।३२।५५	४।१२।५४।३२	२। ९। १।१०	७। २।५९।१२	७।११।११।१४	३।१०। ५।१२	६। ४।४३।५७
	३	गु.	३।२३। ८।५०	१०।२८।३३। १	४।१२।१२।२८	४।१३। ७। ४	२। ९।४३। ९	७। ३। ०। २	७।११। ८। ३	३।१०। ८।४७	६। ४।४४।५५
	४	शु.	३।२४। ६।२५	१०।२८।३४।५२	४।१३।५०।१०	४।१३।१९।३७	२।१०।२५।३७	७। ३। ०।५८	७।११। ४।५२	३।१०।१२।२२	६। ४।४५।५४
	५	श.	३।२५। ४। १	१०।२८।३६। ५	४।१५।२६।३९	४।१३।३२।१२	२।११। ९।१५	७। ३। १।५९	७।११। १।४१	३।१०।१५।५८	६। ४।४६।५६
	६	र.	३।२६। १।३७	१०।२८।३६।३८	४।१७। १।३८	४।१३।४४।४९	२।११।५३।५१	७। ३। ३। ६	७।१०।५८।३१	३।१०।१९।३३	६। ४।४७।५९
	७	चं.	३।२६।५९।१४	१०।२८।३६।३३	४।१८।३५। ५	४।१३।५७।२८	२।१२।३९।२३	७। ३। ४।१९	७।१०।५५।२०	३।१०।२३। ८	६। ४।४९। ४
	८	मं.	३।२७।५६।५२	१०।२८।३५।४८	४।२०। ७। १	४।१४।१०। ९	२।१३।२५।५३	७। ३। ५।३८	७।१०।५२। ९	३।१०।२६।४२	६। ४।५०।११
	९	बु.	३।२८।५४।३१	१०।२८।३४।२५	४।२१।३७।२५	४।१४।२२।५२	२।१४।१३।१९	७। ३। ७। ३	७।१०।४८।५८	३।१०।३०।१७	६। ४।५१।२०
	१०	गु.	३।२९।५२।११	१०।२८।३२।२२	४।२३। ९।१८	४।१४।३५।३७	२।१५। १।४३	७। ३। ७।३२	७।१०।४५।४८	३।१०।३३।५१	६। ४।५२।३१
	११	शु.	४। ०।४९।५१	१०।२८।२९।४१	४।२४।३३।३९	४।१४।४८।२४	२।१५।५१। ३	७। ३।१०। ७	७।१०।४२।३७	३।१०।३७।२५	६। ४।५३।४४
	१२	श.	४। १।४७।३५	१०।२८।२६।२०	४।२५।५९।३१	४।१५। १।१२	२।१६।४१।२०	७। ३।११।४९	७।१०।३९।२६	३।१०।४०।५९	६। ४।५४।५८
	१३	र.	४। २।४५।२१	१०।२८।२२। ४	४।२७।२३।२१	४।१५।१४। ८	२।१७।३२।१४	७। ३।१३।४१	७।१०।३६।१५	३।१०।४४।३०	६। ४।५६।११
	१४	चं.	४। ३।४३। ७	१०।२८।१७।२२	४।२८।४५।२०	४।१५।२७। ४	२।१८।२३।४०	७। ३।१५।३६	७।१०।३३। ४	३।१०।४८। ०	६। ४।५७।२६
	१५	मं.	४। ४।४०।५५	१०।२८।१२।१२	५। ०। ५।२९	४।१५।४०। ०	२।१९।१५।३८	७। ३।१७।२७	७।१०।२९।५३	३।१०।५१।२८	६। ४।५८।४३
भाद्रपद कृष्णपक्षः	१	बु.	४। ५।३८।४५	१०।२८। ६।३४	५। १।२३।४९	४।१५।५२।५६	२।२०। ८। ८	७। ३।१९।४२	७।१०।२६।४२	३।१०।५४।५४	६। ५। ०। १
	२	गु.	४। ६।३६।३७	१०।२८। ०।२८	५। २।३९।१९	४।१६। ५।५३	२।२१। १।१०	७। ३।२१।५३	७।१०।२३।३१	३।१०।५८।१९	६। ५। १।२१
	३	शु.	४। ७।३४।२९	१०।२७।५३।५६	५। ३।५४।५८	४।१६।१८।५०	२।२१।५४।४४	७। ३।२४। ८	७।१०।२०।२०	३।११। १।४२	६। ५। २।४२
	४	श.	४। ८।३२।२३	१०।२७।४६।५६	५। ५। ७।४७	४।१६।३१।४७	२।२२।४८।५०	७। ३।२६।२९	७।१०।१७।१०	३।११। ५। ३	६। ५। ४। ५
	५	र.	४। ९।३०।१८	१०।२७।३९।२९	५। ६।१८।४७	४।१६।४४।४६	२।२३।४३।३०	७। ३।२८।५५	७।१०।१३।५९	३।११। ८।२४	६। ५। ५।३१
	६	चं	४।१०।२८।१६	१०।२७।३१।३४	५। ७।२७।२५	४।१६।५७।४५	२।२४।३८।४१	७। ३।३१।२६	७।१०।१०।४८	३।११।११।४५	६। ५। ६।५८
	७	मं.	४।११।२६।१४	१०।२७।२३।१२	५। ८।३३।३१	४।१७।१०।४४	२।२५।३४।२४	७। ३।३४। २	७।१०। ७।३७	३।११।१५। २	६। ५। ८।२६
	८	बु.	४।१२।२४।१४	१०।२७।१४।२२	५। ९।३७। ५	४।१७।२३।४३	२।२६।३०।३९	७। ३।३६।४४	७।१०। ४।२६	३।११।१८।१७	६। ५। ९।५६
	९	गु.	४।१३।२२।१५	१०।२७। ५। ६	५।१०।३८। ६	४।१७।३६।४२	२।२७।२७।२८	७। ३।३९।३२	७।१०। १।१५	३।११।२१।२८	६। ५।११।२७
	१०	शु.	४।१४।२०।१८	१०।२६।५५।२१	५।११।३६।३५	४।१७।४९।४२	२।२८।२४।४८	७। ३।४२।२६	७। ९।५८। ४	३।११।२४।३८	६। ५।१३। ०
	११	श.	४।१५।१८।२२	१०।२६।४५।१०	५।१२।३२।३१	४।१८। २।४२	२।२९।२२।४०	७। ३।४५।२४	७। ९।५४।५३	३।११।२७।४८	६। ५।१४।३४
	१२	र.	४।१६।१६।२८	१०।२६।३४।३१	५।१३।२५।५५	४।१८।१५।४२	३। ०।२१। ४	७। ३।४८।२९	७। ९।५१।४२	३।११।३०।५८	६। ५।१६।१०
	१४	चं.	४।१७।१४।३५	१०।२६।२३।२४	५।१४।१६।४८	४।१८।२८।४४	३। १।२०। २	७। ३।५१।४०	७। ९।४८।३१	३।११।३४। ८	६। ५।१७।४९
	३०	मं.	४।१८।१२।४६	१०।२६।११।२३	५।१५। ४।५५	४।१८।४१।४६	३। २।१९।२०	७। ३।५५। ०	७। ९।४५।२०	३।११।३७।१८	६। ५।१९।२९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवद् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ८८४, अयनांशाः २३।१४।१४ (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
भाद्रपद शुक्लपक्षः	१	बु.	४।१९।१०।५८	१०।२५।५९।२५	५।१५।४८।५१	४।१८।५४।४६	३। ३।१८।५९	७। ३।५८।२४	७। ९।४२।१०	३।११।४०।२६	६। ५।२२।१०
	२	गु.	४।२०। ९।१२	१०।२५।४७।३१	५।१६।२८।३७	४।१९। ७।४६	३। ४।१८।५८	७। ४। १।५२	७। ९।३८।५९	३।११।४३।३२	६। ५।२२।५१
	३	शु.	४।२१। ७।२८	१०।२५।३५।३९	५।१७। ४।१२	४।१९।२०।४६	३। ५।१९।१८	७। ४। ५।२६	७। ९।३५।४८	३।११।४६।३५	६। ५।२४।३५
	४	श.	४।२२। ५।४५	१०।२५।२३।४९	५।१७।३५।३८	४।१९।३३।४६	३। ६।१९।५८	७। ४। ९। ३	७। ९।३२।३७	३।११।४९।३६	६। ५।२६।१९
	५	र.	४।२३। ४। ४	१०।२५।११।५९	५।१८। २।५१	४।१९।४६।४४	३। ७।२०।५९	७। ४।१२।४४	७। ९।२९।२६	३।११।५२।३६	६। ५।२८। ४
	६	चं.	४।२४। २।२५	१०।२५। ०। ९	५।१८।२५।५५	४।१९।५९।४२	३। ८।२२।२०	७। ४।१६।२९	७। ९।२६।१५	३।११।५५।३४	६। ५।२९।४९
	७	मं.	४।२५। ०।४७	१०।२४।४८।१८	५।१८।४४।४६	४।२०।१२।४०	३। ९।२४। ४	७। ४।२०।२०	७। ९।२३। ५	३।११।५८।३०	६। ५।३१।३७
	८	बु.	४।२५।५९।११	१०।२४।३६।३२	५।१८।५८।२६	४।२०।२५।३८	३।१०।२६। ७	७। ४।२४।१५	७। ९।१९।५४	३।१२। १।२४	६। ५।३३।२५
	९	गु.	४।२६।५७।३६	१०।२४।२४।४७	५।१९। ५।२६	४।२०।३८।३५	३।११।२८।३१	७। ४।२८।१४	७। ९।१६।४३	३।१२। ४।१६	६। ५।३५।१५
	१०	शु.	४।२७।५६। ३	१०।२४।१३। ४	५।१९। ५।४६	४।२०।५१।३२	३।१२।३१।१५	७। ४।३२।१७	७। ९।१३।३२	३।१२। ७। ६	६। ५।३७। ५
	११	श.	४।२८।५४।३२	१०।२४। १।२१	५।१८।५९।२८	४।२१। ४।२८	३।१३।३४।२०	७। ४।३६।२४	७। ९।१०।२१	३।१२। ९।५५	६। ५।३८।५७
	१२	र.	४।२९।५३। २	१०।२३।४९।४१	५।१८।४६।३०	४।२१।१७।२४	३।१४।३७।४५	७। ४।४०।३६	७। ९। ७।११	३।१२।१२।३७	६। ५।४०।५०
	१३	चं.	५। ०।५१।३४	१०।२३।३८। १	५।१८।२६।५२	४।२१।३०।१९	३।१५।४१।३१	७। ४।४४।५२	७। ९। ४। ०	३।१२।१५।२६	६। ५।४२।४३
	१४	मं.	५। १।५०। ८	१०।२३।२६।२३	५।१८। ०।३४	४।२१।४३।१४	३।१६।४५।३७	७। ४।४९।१२	७। ९। ०।४९	३।१२।१८।१३	६। ५।४४।३८
	१४	बु.	५। २।४८।४३	१०।२३।१४।४६	५।१७।२७।३६	४।२१।५६।१०	३।१७।५०। ६	७। ४।५३।३८	७। ८।५७।३८	३।१२।२०।४९	६। ५।४६।३४
	१५	गु.	५। ३।४७।२३	१०।२३। ३।२९	५।१६।४३।१०	४।२२। ९। ३	३।१८।५४।४३	७। ४।५८।११	७। ८।५४।२७	३।१२।२३।३०	६। ५।४८।३३
आश्विन कृष्णपक्षः	१	शु.	५। ४।४६। ५	१०।२२।५२।३६	५।१५।५४।५५	४।२२।२१।५६	३।१९।५९।३३	७। ५। २।४७	७। ८।५१।१६	३।१२।२६। ७	६। ५।५०।३३
	२	श.	५। ५।४४।४९	१०।२२।४२। ७	५।१५। २।५०	४।२२।३४।४७	३।२१। ४।३५	७। ५। ७।२७	७। ८।४८। ५	३।१२।२८।४२	६। ५।५२।३३
	३	र.	५। ६।४३।३४	१०।२२।३२। २	५।१४। ६।५४	४।२२।४७।३५	३।२२। ९।५२	७। ५।१२।११	७। ८।४४।५४	३।१२।३१।१३	६। ५।५४।३५
	४	चं.	५। ७।४२।२२	१०।२२।२२।२५	५।१३। ७।३८	४।२३। ०।२२	३।२३।१५।२०	७। ५।१६।५८	७। ८।४१।४३	३।१२।३३।४३	६। ५।५६।३६
	५	मं.	५। ८।४१।११	१०।२२।१३।१६	५।१२। ३।३१	४।२३।१३। ८	३।२४।२१। ३	७। ५।२१।४९	७। ८।३८।३२	३।१२।३६। ९	६। ५।५८।३९
	७	बु.	५। ९।४०। २	१०।२२। ४।३३	५।१०।५६। ४	४।२३।२५।५२	३।२५।२६।५८	७। ५।२६।४४	७। ८।३५।२१	३।१२।३८।३३	६। ६। ०।४२
	८	गु.	५।१०।३८।५६	१०।२१।५६।१७	५। ९।४४।४६	४।२३।३८।३५	३।२६।३३। ७	७। ५।३१।४४	७। ८।३२।१०	३।१२।४०।५५	६। ६। २।४६
	९	शु.	५।११।३७।५१	१०।२१।४८।३२	५। ८।३८।१९	४।२३।५१।१६	३।२७।३९।२९	७। ५।३६।४७	७। ८।२८।५९	३।१२।४३।१५	६। ६। ४।५०
	१०	श.	५।१२।३६।४८	१०।२१।४१।१०	५। ७।३९। ९	४।२४। ३।५५	३।२८।४६। ४	७। ५।४१।५४	७। ८।२५।४९	३।१२।४५।३१	६। ६। ६।५५
	११	र.	५।१३।३५।४७	१०।२१।३४। ९	५। ६।४७।१५	४।२४।१६।३२	३।२९।५२।५१	७। ५।४७। ५	७। ८।२२।३८	३।१२।४७।४५	६। ६। ९। ०
	१२	चं.	५।१४।३४।४८	१०।२१।२७।३२	५। ६। २।३८	४।२४।२९। ९	४। ०।५९।५६	७। ५।५२।१९	७। ८।१९।२७	३।१२।४९।५५	६। ६।११। ७
	१३	मं.	५।१५।३३।५१	१०।२१।२१। १	५। ५।२५।२६	४।२४।४१।४४	४। २। ७। ९	७। ५।५७।३८	७। ८।१६।१६	३।१२।५२। २	६। ६।१३।१४
	१४	बु.	५।१६।३२।५६	१०।२१।१५।२८	५। ४।५५।३३	४।२४।५४।१७	४। ३।१५।३५	७। ६। ३। ०	७। ८।१३। ६	३।१२।५४। ७	६। ६।१५।२१
	३०	गु.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः ६१४ अयनांशाः २३।१४।१६ (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति०	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आश्विन शुक्लपक्षः	१	शु.	५।१८।३१।१२	१०।२१। ५।४६	५। ४।१७।३१	४।२५।१९।१९	४। ५।३०। ५	७। ६।१३।५५	७। ८। ६।४४	३।१२।५८।१२	६। ६।१९।३७
	२	श.	५।१९।३०।२५	१०।२१। १।५४	५। ४।१५।२६	४।२५।३१।४४	४। ६।३८।२३	७। ६।१९।२५	७। ८। ३।३३	३।१३। ०।१५	६। ६।२१।४७
	३	र.	५।२०।२९।३९	१०।२०।५८।४५	६। ४।२२।३९	४।२५।४४। ५	४। ७।४६।४९	७। ६।२४।५८	७। ८। ०।२२	३।१३। २।१४	६। ६।२३।५८
	४	चं.	५।२१।२८।५५	१०।२०।५६।१८	५। ४।३९। ८	४।२५।५६।२४	४। ८।५५।२३	७। ६।३०।३५	७। ७।५७।११	३।१३। ४। ९	६। ६।२६। ९
	५	मं.	५।२२।२८।१३	१०।२०।५४।३४	५। ५। ४।५५	४।२६। ८।४०	४।१०। ४। ५	७। ६।३६।१५	७। ७।५४। ०	३।१३। ५।५९	६। ६।२८।२०
	६	बु.	५।२३।२७।३३	१०।२०।५३।३३	५। ५।३९।५७	४।२६।२०।५५	४।११।१२।५६	७। ६।४१।५९	७। ७।५०।४९	३।१३। ७।४५	६। ६।३०।३२
	७	गु.	५।२४।२६।५५	१०।२०।५३।१५	५। ६।२४।१७	४।२६।३३। ५	४।१२।२१।५५	७। ६।४७।४७	७। ७।४७।३९	३।१३। ९।२६	६। ६।३२।४४
	८	शु.	५।२५।२६।१९	१०।२०।५३।३९	५। ७।१७।५३	४।२६।४५।१३	४।१३।३१। २	७। ६।५३।३७	७। ७।४४।२८	३।१३।११। ३	६। ६।३४।५६
	९	श.	५।२६।२५।४४	१०।२०।५४।४७	५। ८।२०।४६	४।२६।५७।१८	४।१४।४०।१९	७। ६।५९।३१	७। ७।४१।१७	३।१३।१२।३६	६। ६।३७। ८
	१०	र.	५।२७।२५।१२	१०।२०।५६।३७	५। ९।३१।५२	४।२७। ९।२२	४।१५।४९।४३	७। ७। ५।२९	७। ७।३८। ७	३।१३।१४। ४	६। ६।३९।२१
	११	चं.	५।२८।२४।४१	१०।२०।५९।११	५।१०।४६।४५	४।२७।२१।२२	४।१६।५९।१६	७। ७।११।३०	७। ७।३४।५६	३।१३।१५।२८	६। ६।४१।३४
	१२	मं.	५।२९।२४।१२	१०।२१। २।२७	५।१२। ५।२६	४।२७।३३।२०	४।१८। ८।५७	७। ७।१७।३५	७। ७।३१।४५	३।१३।१६।४८	६। ६।४३।४७
	१३	बु.	६। ०।२३।४५	१०।२१। ६।२६	५।१३।२७।५४	४।२७।४५।१४	४।१९।१८।४७	७। ७।२३।४३	७। ७।२८।३५	३।१३।१८। ३	६। ६।४६। ०
	१४	गु.	६। १।२३।२०	१०।२१।११। ८	५।१४।५४।१७	४।२७।५७। ८	४।२०।२८।४७	७। ७।२९।५५	७। ७।२५।२४	३।१३।१९।१४	६। ६।४८।१४
	१५	शु.	६। २।२२।५७	१०।२१।१६।३३	५।१६।२४।१३	४।२८। ८।५६	४।२१।३८।५५	७। ७।३६।१०	७। ७।२२।१३	३।१३।२०।२०	६। ६।५०।२८
कार्तिक कृष्णपक्षः	१	श.	६। ३।२२।३५	१०।२१।२२।४०	५।१७।५८। ४	४।२८।२०।४३	४।२२।४९। ९	७। ७।४२।२९	७। ७।१९। २	३।१३।२१।२२	६। ६।५२।४२
	२	र.	६। ४।२२।१६	१०।२१।२९।३१	५।१९।३५।४२	४।२८।३२।२८	४।२३।५९।३१	७। ७।४८।५०	७। ७।१५।५२	३।१३।२२।२९	६। ६।५४।५८
	३	चं.	६। ५।२२। ३	१०।२१।३६।३३	५।२१।१३।१९	४।२८।४४। २	४।२५। ९।५४	७। ७।५५।१२	७। ७।१२।४१	३।१३।२३।३९	६। ६।५७।१५
	४	मं.	६। ६।२१।५२	१०।२१।४४।५०	५।२२।५१।२८	४।२८।५५।३४	४।२६।२०।२९	७। ८। १।३५	७। ७। ९।३०	३।१३।२४।५५	६। ६।५९।३०
	५	बु.	६। ७।२१।४२	१०।२१।५३। ७	५।२४।३०। ७	४।२९। ७। २	४।२७।३१।१२	७। ८। ८। ०	७। ७। ६।१९	३।१३।२६। ७	६। ७। १।४५
	६	गु.	६। ८।२१।३३	१०।२२। २।३८	५।२६। ९।१८	४।२९।१८।२८	४।२८।४१।५९	७। ८।१४।२८	७। ७। ३। ८	३।१३।२७।१५	६। ७। ४। ०
	७	शु.	६। ९।२१।२६	१०।२२।१२।२९	५।२७।४९। ०	४।२९।२९।४८	४।२९।५२।५५	७। ८।२०।५७	७। ६।५९।५७	३।१३।२८।२०	६। ७। ६।१५
	८	श.	६।१०।२१।२०	१०।२२।२२।५६	५।२९।२९।१४	४।२९।४१। ४	५। १। ३।५६	७। ८।२७।२७	७। ६।५६।४६	३।१३।२९।२१	६। ७। ८।३०
	९	र.	६।११।२१।१६	१०।२२।३४। १	६। १। ९।५८	४।२९।५२।१६	५। २।१५।११	७। ८।३३।५९	७। ६।५३।३५	३।१३।३०।१८	६। ७।१०।४४
	११	चं.	६।१२।२१।१४	१०।२२।४५।४३	६। २।५१।१४	५। ०। ३।२५	५। ३।२६।३१	७। ८।४०।३४	७। ६।५०।२४	३।१३।३१।१२	६। ७।१२।५८
	१२	मं.	६।१३।२१।१५	१०।२२।५८। ३	६। ४।३३।५०	५। ०।१४।३०	५। ४।३७।५८	७। ८।४७।११	७। ६।४७।१३	३।१३।३२। २	६। ७।१५।१३
	१३	बु.	६।१४।२१।१६	१०।२३।११। ०	६। ६।१२।१०	५। ०।२५।३०	५। ५।४९।३३	७। ८।५३।४९	७। ६।४४। २	३।१३।३२।४८	६। ७।१७।२७
	१४	गु.	६।१५।२१।१९	१०।२३।२४।३५	६। ७।५२।१६	५। ०।३६।२६	५। ७। १।१६	७। ९। ०।२९	७। ६।४०।५१	३।१३।३३।३०	६। ७।१९।४१
	३०	शु.	६।१६।२१।२४	१०।२३।३८।४६	६। ९।३२। ६	५। ०।४७।१८	५। ८।१३। ७	७। ९। ७।१०	७। ६।३७।४१	३।१३।३४। ९	६। ७।२१।५४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यदहर्गणः ६४३ अयनांशाः २३।१४।२२ (दिनद्वयमध्यान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
कार्तिक शुक्लपक्षः	१	श.	६।१७।२१।३१	१०।२३।५३।३५	६।११।११।४२	५। ०।५८। ६	५। ९।२५। ५	७। ९।१३।५४	७। ६।३४।३०	३।१३।३४।४५	६। ७।२४। ८
	२	र.	६।१८।२१।४०	१०।२४। ९। २	६।१२।५१। २	५। १। ८।५०	५।१०।३७।११	७। ९।२०।३९	७। ६।३१।१९	३।१३।३५।१६	६। ७।२६।२१
	३	चं.	६।१९।२१।५०	१०।२४।२५। ७	६।१४।३०। ८	५। १।१९।३०	५।११।४९।२५	७। ९।२७।२६	७। ६।२८। ८	३।१३।३५।४३	६। ७।२८।३४
	४	मं.	६।२०।२२। १	१०।२४।४१।४९	६।१६। ९। ०	५। १।३०। ७	५।१३। १।४८	७। ९।३४।१६	७। ६।२४।५७	३।१३।३६। ७	६। ७।३०।४७
	५	बु.	६।२१।२२।१६	१०।२४।५९।३१	६।१७।४७।२२	५। १।४०।३१	५।१४।१३।५८	७। ९।४१।१३	७। ६।२१।४६	३।१३।३६।२६	६। ७।३३। १
	६	गु.	६।२२।२२।३४	१०।२५।१७।४०	६।१९।२५।२९	५। १।५०।५०	५।१५।२६।१३	७। ९।४८।११	७। ६।१८।३५	३।१३।३६।४१	६। ७।३५।१२
	७	शु.	६।२३।२२।५४	१०।२५।३६।१७	६।२१। ३।२४	५। २। १। ३	५।१६।३८।३४	७। ९।५५। ९	७। ६।१५।२४	३।१३।३६।५२	६। ७।३७।२३
	८	श.	६।२४।२३।१५	१०।२५।५५।२१	६।२२।४१। ६	५। २।११।११	५।१७।५१। ०	७।१०। २। ८	७। ६।१२।१३	३।१३।३७। १	६। ७।३९।३३
	८	र.	६।२५।२३।३६	१०।२६।१४।५४	६।२४।१८।३५	५। २।२१।१३	५।१९। ३।३२	७।१०। ९। ६	७। ६। ९। २	३।१३।३७। ६	६। ७।४१।४४
	९	चं.	६।२६।२३।५८	१०।२६।३४।५४	६।२५।५५।५१	५। २।३१।१०	५।२०।१६।१०	७।१०।१६। ५	७। ६। ५।५१	३।१३।३७। ७	६। ७।४३।५२
	१०	मं.	६।२७।२४।२३	१०।२६।५५।२२	६।२७।३२।५३	५। २।४१। १	५।२१।२८।५४	७।१०।२३। ३	७। ६। २।४१	३।१३।३७। ६	६। ७।४६। ०
	११	बु.	६।२८।२४।५०	१०।२७।१६।१९	६।२९। ९।४३	५। २।५०।४६	५।२२।४१।४६	७।१०।३०। ४	७। ५।५९।३०	३।१३।३७। १	६। ७।४८। ७
	१२	गु.	६।२९।२५।१८	१०।२७।३७।४३	७। ०।४५।१५	५। ३। ०।२६	५।२३।५४।४२	७।१०।३७। २	७। ५।५६।१९	३।१३।३६।५३	६। ७।५०।१५
	१३	शु.	७। ०।२५।४९	१०।२७।५९।३५	७। २।२०।३५	५। ३।१०। ०	५।२५। ७।४४	७।१०।४४। २	७। ५।५३। ८	३।१३।३६।४१	६। ७।५२।२१
	१४	श.	७। १।२६।२१	१०।२८।२१।५५	७। ३।५५।४३	५। ३।१९।२८	५।२६।२०।५२	७।१०।५१। २	७। ५।४९।५७	३।१३।३६।२७	६। ७।५४।२७
	१५	र.	७। २।२६।५३	१०।२८।४४।४३	७। ५।३०।४०	५। ३।२८।५१	५।२७।३४। ६	७।१०।५८। ४	७। ५।४६।४६	३।१३।३६। ९	६। ७।५६।३१
मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः	१	चं.	७। ३।२७।२७	१०।२९। ७।५९	७। ७। ५।१०	५। ३।३८। ८	५।२७।४७।२६	७।११। ५। ५	७। ५।४३।३५	३।१३।३५।४७	६। ७।५८।३६
	२	मं.	७। ४।२८। ३	१०।२९।३१।४३	७। ७।३९।५४	५। ३।४७।२०	६। ०। ०।५२	७।११।१२। ६	७। ५।४०।२४	३।१३।३५।२३	६। ८। ०।३९
	३	बु.	७। ५।२८।४१	१०।२९।५५।५५	७।१०।१४।२६	५। ४।५६।२१	६। १।१४।२४	७।११।१९। ७	७। ५।३७।१३	३।१३।३४।५५	६। ७। २।४२
	५	गु.	७। ६।२९।२०	११। ०।२०।३५	७।११।४८।१८	५। ४। ५।२८	६। २।२८। १	७।११।२६।१०	७। ५।३४। २	३।१३।३४।२३	६। ८। ४।४४
	६	शु.	७। ७।३०। ३	११। ०।४५।३१	७।१३।२२।१९	५। ४।१४।३१	६। ३।४१।३३	७।११।३३।२०	७। ५।३०।५१	३।१३।३३।४८	६। ८। ६।४५
	७	श.	७। ८।३०।४६	११। १।१०।४६	७।१४।५६।११	५। ४।२३।२४	६। ४।५५। ८	७।११।४०।२९	७। ५।२७।४१	३।१३।३३। २	६। ८। ८।४४
	८	र.	७। ९।३१।३१	११। १।३६।१९	७।१६।२९।५५	५। ४।३२। ९	६। ६। ८।४५	७।११।४७।३८	७। ५।२४।३०	३।१३।३२।१८	६। ८।१०।४३
	९	चं.	७।१०।३२।१७	११। २। २।१३	७।१८। ३।३२	५। ४।४०।४४	६। ७।२२।२७	७।११।५४।४७	७। ५।२१।१९	३।१३।३१।३०	६। ८।१२।४०
	१०	मं.	७।११।३३। ४	११। २।२८।२४	७।१९।३७। २	५। ४।४९।१०	६। ८।३६।११	७।१२। १।५६	७। ५।१८। ८	३।१३।३०।४१	६। ८।१४।३७
	११	बु.	७।१२।३३।५२	११। २।५४।५४	७।२१।१०।२३	५। ४।५७।२६	६। ९।४९।५८	७।१२। ९। ३	७। ५।१४।५७	३।१३।२९।४८	६। ८।१६।३२
	१२	गु.	७।१३।३४।४१	११। ३।२१।४४	७।२२।४३।३७	५। ५। ५।३२	६।११। ३।४९	७।१२।१६।१०	७। ५।११।४६	३।१३।२८।५३	६। ८।१८।२७
	१३	शु.	७।१४।३५।३१	११। ३।४८।५४	७।२४।१६।४४	५। ५।१३।३०	६।१२।१७।४२	७।१२।२३।१७	७। ५। ८।३५	३।१३।२७।५४	६। ८।२०।२०
	१४	श.	७।१५।३६।२२	११। ४।१६।२१	७।२५।४९।४६	५। ५।२१।१८	६।१३।३१।३८	७।१२।३०।२४	७। ५। ५।२४	३।१३।२६।५३	६। ८।२२।१३
	३०	र.	७।१६।३७।१४	११। ४।४४।[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः १७३ अयनांशाः २३।१४।२६ (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वाः	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः	१	चं.	७।१७।३८। ६	११। ५।१२।१३	७।२८।५४। २	५। ५।३६।२६	६।१५।५९।४०	७।१२।४४।३६	७। ४।५९। २	३।१३।२४।४३	६। ८।२५।५५
	२	मं.	७।१८।३९। १	११। ५।४०।३७	८। ०।२५।५५	५। ५।४३।४६	६।१७।१३।४५	७।१२।५१।४१	७। ४।५५।५१	३।१३।२३।३४	६। ८।२७।४४
	३	बु.	७।१९।३९।५६	११। ६। ९।२०	८। १।५७।३३	५। ५।५०।५६	६।१८।२७।५३	७।१२।५८।४६	७। ४।५२।४०	३।१३।२२।२३	६। ८।२९।३३
	४	गु.	७।२०।४०।५२	११। ६।३८।२२	८। ३।२८।५४	५। ५।५७।५७	६।१९।४२। ५	७।१३। ५।५०	७। ४।४९।२९	३।१३।२१। ९	६। ८।३१।२०
	५	शु.	७।२१।४१।४९	११। ७। ७।४२	८। ४।५९।५९	५। ६। ४।४८	६।२०।५६।१९	७।१३।१२।५४	७। ४।४६।१८	३।१३।१९।५३	६। ८।३३। ७
	६	श.	७।२२।४२।४७	११। ७।३७।२३	८। ६।३०।४७	५। ६।११।३१	६।२२।१०।३७	७।१३।१९।५९	७। ४।४३। ७	३।१३।१८।३२	६। ८।३४।५२
	७	र.	७।२३।४३।४६	११। ८। ७।१२	८। ८। २।४२	५। ६।१८।१५	६।२३।२५। १	७।१३।२७। १	७। ४।३९।५६	३।१३।१७। ८	६। ८।३६।३६
	८	चं.	७।२४।४४।४७	११। ८।३७।१३	८। ९।३३।५२	५। ६।२४।५१	६।२४।३९।२६	७।१३।३४। १	७। ४।३६।४६	३।१३।१५।४०	६। ८।३८।१८
	९	मं.	७।२५।४५।५०	११। ९। ७।२८	८।११। ४।२०	५। ६।३१।१७	६।२५।५३।५३	७।१३।४१। १	७। ४।३३।३५	३।१३।१४।१०	६। ८।३९।५८
	१०	बु.	७।२६।४६।५४	११। ९।३७।५५	८।१२।३४। ५	५। ६।३७।३४	६।२७। ८।२०	७।१३।४८। ०	७। ४।३०।२४	३।१३।१२।३७	६। ८।४१।३८
	११	गु.	७।२७।४७।५८	११।१०। ८।३७	८।१४। ३। ९	५। ६।४३।४२	६।२८।२२।५०	७।१३।५५। ०	७। ४।२७।१४	३।१३।११। २	६। ८।४३।१५
	१२	शु.	७।२८।४९। ३	११।१०।३९।३१	८।१५।३३।२८	५। ६।४९।३९	६।२९।३७।२०	७।१४। १।५७	७। ४।२४। ३	३।१३। ९।२४	६। ८।४४।५२
	१३	श.	७।२९।५०। ७	११।११।१०।३९	८।१६।५९। ५	५। ६।५५।२८	७। ०।५१।५२	७।१४। ८।५४	७। ४।२०।५२	३।१३। ७।४४	६। ८।४६।२७
	१४	र.	८। ०।५१।११	११।११।४२। ०	८।१८।२५।५९	५। ७। १। ८	७। २। ६।२५	७।१४।१५।५०	७। ४।१७।४२	३।१३। ६। ०	६। ८।४८। ०
	१५	चं.	८। १।५२।१६	११।१२।१३।३५	८।१९।५२।४२	५। ७। ६।३९	७। ३।२१। ०	७।१४।२२।४७	७। ४।१४।३१	३।१३। ४।१४	६। ८।४९।३४
पौष कृष्णपक्षः	१	मं.	८। २।५३।२२	११।१२।४५।२४	८।२१।१७। २	५। ७।११।५९	७। ४।३५।३६	७।१४।२९।४२	७। ४।११।२०	३।१३। २।२५	६। ८।५१। २
	२	बु.	८। ३।५४।३०	११।१३।१७।२५	८।२२।३८।५८	५। ७।१७।११	७। ५।५०।१४	७।१४।३६।३७	७। ४। ८। ९	३।१३। ०।३४	६। ८।५२।२८
	३	गु.	८। ४।५५।३९	११।१३।४९।३९	८।२३।५८।३०	५। ७।२२।१४	७। ७। ४।५२	७।१४।४३।३०	७। ४। ४।५८	३।१२।५८।३९	६। ८।५३।५८
	४	शु.	८। ५।५६।४८	११।१४।२२। ७	८।२५।१५।२९	५। ७।२७। ८	७। ८।१९।३२	७।१४।५०।२४	७। ४। १।४७	३।१२।५६।४३	६। ८।५५।२४
	५	श.	८। ६।५७।५७	११।१४।५४।४८	८।२६।३०।२४	५। ७।३१।५१	७। ९।३४।१४	७।१४।५७।१६	७। ३।५८।३६	३।१२।५४।४३	२। ८।५६।४८
	६	र.	८। ७।५९। ७	११।१५।२७।४३	८।२७।४२।४९	५। ७।३६।२६	७।१०।४८।५८	७।१५। ४। ८	७। ३।५५।२५	३।१२।५२।४१	६। ८।५८।१०
	७	चं.	८। ९। ०।१८	११।१६। ०।५०	८।२८।५२।४४	५। ७।४०।५२	७।१२। ३।४३	७।१५।१०।५९	७। ३।५२।१५	३।१२।५०।३५	६। ८।५९।३१
	८	मं.	८।१०। १।२७	११।१६।३३।४१	९। ०। ०।१७	५। ७।४५। ४	७।१३।१८।३२	७।१५।१७।३२	७। ३।४९। ४	३।१२।४८।३८	६। ९। ०।५०
	१०	बु.	८।११। २।३६	११।१७। ६।४२	९। ०।५९।४४	५। ७।४९। ५	७।१४।३३।२३	७।१५।२४। ४	७। ३।४५।५३	३।१२।४६।३८	६। ९। २। ६
	११	गु.	८।१२। ३।४५	११।१७।३९।५३	९। १।५१। ५	५। ७।५२।५४	७।१५।४८।१४	७।१५।३०।३४	७। ३।४२।४२	३।१२।४४।३६	६। ९। ३।२०
	१२	शु.	८।१३। ४।५४	११।१८।१३।१३	९। २।३४।१९	५। ७।५६।३३	७।१७। ३। ६	७।१५।३७। ३	७। ३।३९।३१	३।१२।४२।३१	६। ९। ४।३३
	१३	श.	८।१४। ६। ३	११।१८।४६।४२	९। ३। ९।२७	५। ८। ०। १	७।१८।१७।५९	७।१५।४३।२९	७। ३।३६।२०	३।१२।४०।२६	६। ९। ५।४५
	१४	र.	८।१५। ७।१३	११।१९।२०।२२	९। ३।३६।२८	५। ८। ३।१७	७।१९।३२।५३	७।१५।४९।५४	७। ३।३३। ९	३।१२।३८।१४	६। ९। ६।५४
	३०	चं.	८।१६। ८।२२	११।१९।५४।१०	९। ३।५५।२३	५। ८। ६।२३	७।२०।४७।४७	७।१५।५६।१७	७। ३।२९।५९	३।१२।३६। ०	६। ९। ८। १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः १००२ अयनांशाः २३।१४।३१ (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
पौष शुक्लपक्षः	१	मं.	८।१७। ९।३२	११।२०।२८।१२	९। ४। ६।११	५। ८। ९।१८	७।२२। २।४२	७।१६। २।३८	७। ३।२६।४८	३।१२।३३।४७	६। ९। ९। ७
	१	बु.	८।१८।१०।४२	११।२१। २।२१	९। ३।५८।२८	५। ८।१२। २	७।२३।१७।३८	७।१६। ८।५७	७। ३।२३।३७	३।१२।३१।३०	६। ९।१०।१२
	२	गु.	८।१९।११।५१	११।२१।३६।३९	९। ३।४१।४४	५। ८।१४।३४	७।२४।३२।३५	७।१६।१५।१५	७। ३।२०।२६	३।१२।२९।१०	६। ९।११।१४
	३	शु.	८।२०।१३। ०	११।२२।११। ७	९। ३।१६। ०	५। ८।१६।५६	७।२५।४७।३२	७।१६।२१।३१	७। ३।१७।१६	३।१२।२६।४८	६। ९।१२।१४
	४	श.	८।२१।१४।१०	११।२२।४५।४५	९। २।४१।१३	५। ८।१९। ५	७।२७। २।३०	७।१६।२७।४५	७। ३।१४। ५	३।१२।२४।२३	६। ९।१३।१३
	५	र.	८।२२।१५।१९	११।२३।२०।३२	९। १।५७।२६	५। ८।२१। ५	७।२८।१७।२९	७।१६।३३।५७	७। ३।१०।५४	३।१२।२१।५६	६। ९।१४।१०
	६	चं.	८।२३।१६।२९	११।२३।५५।२९	९। १। ४।३८	५। ८।२२।५२	७।२९।३२।२९	७।१६।४०। ७	७। ३। ७।४३	३।१२।१९।२६	६। ९।१५। ६
	७	मं.	८।२४।१७।३९	११।२४।३०।३६	९। ०। २।४८	५। ८।२४।२९	८। ०।४७।२९	७।१६।४६।१५	७। ३। ४।३२	३।१२।१६।५४	६। ९।१६। ०
	८	बु.	८।२५।१८।५०	११।२५। ५।५३	८।२८।५१।५८	५। ८।२५।५५	८। २। २।३१	७।१६।५२।२३	७। ३। १।२२	३।१२।१४।१७	६। ९।१६।५२
	९	गु.	८।२६।२०। ०	११।२५।४०।५२	८।२७।२८। ३	५। ८।२७।१२	८। ३।१७।३५	७।१६।५८।२६	७। २।५८।११	३।१२।११।४७	६। ९।१७।४०
	१०	शु.	८।२७।२१।१०	११।२६।१५।५५	८।२६। ८।१५	५। ८।२८।१७	८। ४।३२।३९	७।१७। ४।२६	७। २।५५। ०	३।१२। ९।१७	६। ९।१८।२६
	११	श.	८।२८।२२।१९	११।२६।५१। ४	८।२४।५२।३३	५। ८।२९।१२	८। ५।४७।४३	७।१७।१०।२२	७। २।५१।४९	३।१२। ६।४७	६। ९।१९।१०
	१२	र.	८।२९।२३।२७	११।२७।२६।१८	८।२३।४०।५९	५। ८।२९।५५	८। ७। २।४६	७।१७।१६।१४	७। २।४८।३८	३।१२। ४।१४	६। ९।१९।५३
	१३	चं.	९। ०।२४।३५	११।२८। १।३७	८।२२।३३।३०	५। ८।३०।२६	८। ८।१७।५०	७।१७।२२। ३	७। २।४५।२८	३।१२। १।४२	६। ९।२०।३४
	१४	मं.	९। १।२५।४२	११।२८।३७। १	८।२१।३०। ९	५। ८।३०।४७	८। ९।३२।५३	७।१७।२७।४८	७। २।४२।१७	३।११।५९। ९	६। ९।२१।१२
	१५	बु.	९। २।२६।४८	११।२९।१२।३१	८।२०।३०।५४	५। ८।३०।५६	८।१०।४७।५७	७।१७।३३।२९	७। २।३९। ६	३।११।५६।३९	६। ९।२१।४८

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
माघ कृष्णपक्षः	१	गु.	९। ३।२७।५४	११।२९।४८। ७	८।१९।३५।४६	५। ८।३०।५४	८।१२। ३। ०	७।१७।३९। ७	७। २।३५।५५	३।११।५४। ०	६। ९।२२।२३
	२	शु.	९। ४।२९। ०	०। ०।२३।४८	८।१८।५६।२५	५। ८।३०।४०	८।१३।१८। ४	७।१७।४४।४१	७। २।३२।४४	३।११।५१।२५	६। ९।२२।५६
	४	श.	९। ५।३०। ४	०। ०।५९।३३	८।१८।२७।५९	५। ८।३०।१६	८।१४।३३। ७	७।१७।५०।१२	७। २।२९।३४	३।११।४८।४९	६। ९।२३।२६
	५	र.	९। ६।३१। ८	०। १।३५।२४	८।१८। ७।२५	५। ८।२९।४०	८।१५।४८।११	७।१७।५५।३९	७। २।२६।२३	३।११।४६।१३	६। ९।२३।५४
	६	चं.	९। ७।३२।११	०। २।११।२०	८।१७।५५।४४	५। ८।२८।५३	८।१७। ३।१४	७।१८। १। २	७। २।२३।१३	३।११।४३।३४	६। ९।२४।२१
	७	मं.	९। ८।३३।१४	०। २।४७।२१	८।१७।५२।५६	५। ८।२७।५४	८।१८।१८।१८	७।१८। ६।२२	७। २।२०। २	३।११।४०।५६	६। ९।२४।४५
	८	बु.	९। ९।३४।१६	०। ३।२३।२७	८।१७।५९। १	५। ८।२६।४४	८।१९।३३।२१	७।१८।११।३८	७। २।१६।५१	३।११।३८।१७	६। ९।२५। ८
	९	गु.	९।१०।३५।१७	०। ३।५९।३९	८।१८।१३।५८	५। ८।२५।२२	८।२०।४८।२५	७।१८।१६।५०	७। २।१३।४१	३।११।३५।३८	६। ९।२५।२९
	१०	शु.	९।११।३६।१८	०। ४।३५।५६	८।१८।३७।४८	५। ८।२३।४९	८।२२। ३।२९	७।१८।२१।५८	७। २।१०।३०	३।११।३२।५६	६। ९।२५।४८
	११	श.	९।१२।३७।१९	०। ५।१२।२५	८।१९। ९।११	५। ८।२१।५२	८।२३।१८।३१	७।१८।२७। ७	७। २। ७।१९	३।११।३०।१५	६। ९।२६। ४
	१२	र.	९।१३।३८।१९	०। ५।४८।५६	८।१९।३८।५२	५। ८।१९।४६	८।२४।३३।३३	७।१८।३२।१२	७। २। ४। ८	३।११।२७।३६	६। ९।२६।१८
	१३	चं.	९।१४।३९।१०	०। ६।२५।२९	८।२०।१५।५१	५। ८।१७।३१	८।२५।४८।३५	७।१८।३७।११	७। २। ०।५८	३।११।२४।५७	६। ९।२६।३०
	१४	मं.	९।१५।४०। ५	०। ७। २। ३	८।२०।५७। ७	५। ८।१५। ४	८।२७। ३।३६	७।१८।४२। ६	७। १।५७।४७	३।११।२२।२०	६। ९।२६।४०
	३०	बु.	९।१६।४०।५९	०। ७।३८।४०	८।२१।४२।४२	५। ८।१२।२९	८।२८।१८।३८	७।१८।४९। ५	७। १।५४।३६	३।११।१९।४२	६। ९।२६।४८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टाग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः १०३२, अयनांशाः २३।१४।२१ (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
माघ शुक्लपक्षः	१	गु.	९।१७।४१।५२	०। ८।१५।१८	८।२२।३२।३४	५।८। ९।४४	८।२९।३३।३९	७।१८।५१।४०	७।१।५१।२६	३।११।१७। ६	६।९।२६।५४
	२	शु.	९।१८।४२।४३	०। ८।५१।५८	८।२३।२६।४४	५।८। ६।४९	९। ०।४८।४०	७।१८।५६।१९	७।१।४८।१५	३।११।१४।३०	६।९।२६।५८
	३	श.	९।१९।४३।३४	०। ९।२८।४१	८।२४।२५।१२	५।८। ३।४३	९। २। ३।४०	७।१९। ०।५४	७।१।४५। ४	३।११।११।५६	६।९।२७। ०
	३	र.	९।२०।४४।२४	०।१०। ५।२५	८।२५।२५।५०	५।८। ०।२८	९। ३।१८।४२	७।१९। ५।२३	७।१।४१।५४	३।११। ९।२०	६।९।२६।५९
	४	चं.	९।२१।४५।१३	०।१०।४२।११	८।२६।२८।२३	५।७।५७। ४	९। ४।३३।४२	७।१९। ९।४८	७।१।३८।४३	३।११। ६।४७	६।९।२६।५७
	५	मं.	९।२२।४६। ०	०।११।१८।५९	८।२७।३२।५७	५।७।५३।३०	९। ५।४८।४२	७।१९।१४। ७	७।१।३५।३२	३।११। ४।१४	६।९।२६।५३
	६	बु.	९।२३।४६।४७	०।११।५५।४९	८।२८।३९।११	५।७।४९।४६	९। ७। ३।४२	७।१९।१८।२२	७।१।३२।२१	३।११। १।४२	६।९।२६।४८
	७	गु.	९।२४।४७।३३	०।१२।३२।४१	८।२९।४७।२५	५।७।४५।५३	९। ८।१८।४३	७।१९।२२।३१	७।१।२९।११	३।१०।५९। ९	६।९।२६।४१
	८	शु.	९।२५।४८।१७	०।१३। ९।३५	९। ०।५७।३५	५।७।४१।५०	९। ९।३३।४२	७।१९।२६।३६	७।१।२६। ०	३।१०।५६।३९	६।९।२६।३१
	९	श.	९।२६।४९। १	०।१३।४६।३१	९। २। ९।३९	५।७।३७।३७	९।१०।४८।४१	७।१९।३०।३५	७।१।२२।५०	३।१०।५४। ९	६।९।२६।१९
	१०	र.	९।२७।४९।४४	०।१४।२३।२८	९। ३।२३।३८	५।७।३३।१४	९।१२। ३।४०	७।१९।३४।३०	७।१।१९।३९	३।१०।५१।४०	६।९।२६। ६
	११	चं.	९।२८।५०।२५	०।१५। ०।१९	९। ४।४०।४९	५।७।२८।३८	९।१३।१८।३९	७।१९।३८।३०	७।१।१६।२९	३।१०।४९। ६	६।९।२५।४८
	१३	मं.	९।२९।५१। ३	०।१५।३७।१३	९। ५।५९। ९	५।७।२३।५४	९।१४।३३।३६	७।१९।४२।२४	७।१।१३।१८	३।१०।४६।३४	६।९।२५।२९
	१४	बु.	१०। ०।५१।३९	०।१६।१४।११	९। ७।१८।३९	५।७।१९। २	९।१५।४८।३३	७।१९।४६।१२	७।१।१०। ७	३।१०।४४। ४	६।९।२५। ८
	१५	गु.	१०। १।५२।१३	०।१६।५१।१३	९। ८।३९।१८	५।७।१४। ०	९।१७। ३।३०	७।१९।४९।५६	७।१। ६।५७	३।१०।४१।३७	६।९।२४।४५
फाल्गुन कृष्णपक्षः	१	शु.	१०। २।५२।४६	०।१७।२८।२०	९।१०। १। ६	५।७। ८।५१	९।१८।१८।२६	७।१९।५३।३४	७।१। ३।४६	३।१०।३९।१२	६।९।२४।१९
	२	श.	१०। ३।५३।१७	०।१८। ५।२९	९।११।२४। ३	५।७। ३।३४	९।१९।३३।२०	७।१९।५७। ६	७।१। ०।३५	३।१०।३६।५०	६।९।२३।५३
	३	र.	१०। ४।५३।४८	०।१८।४२।४२	९।१२।४८।१०	५।६।५८। ९	९।२०।४८।१४	७।२०। ०।३२	७।०।५७।२४	३।१०।३४।३०	६।९।२३।२५
	४	चं.	१०। ५।५४।१८	०।१९।१९।५९	९।१४।१३।२६	५।६।५२।३४	९।२२। ३। ७	७।२०। ३।५४	७।०।५४।१४	३।१०।३२।१३	६।९।२२।५५
	५	मं.	१०। ६।५४।४६	०।१९।५७।२०	९।१५।४०।१४	५।६।४६।५१	९।२३।१७।५९	७।२०। ७।१०	७।०।५१। ३	३।१०।२९।५८	६।९।२२।२२
	६	बु.	१०। ७।५५।१२	०।२०।३४।४४	९।१७। ८। ०	५।६।४१। १	९।२४।३२।५१	७।२०।१०।२०	७।०।४७।५२	३।१०।२७।४६	६।९।२१।४८
	७	गु.	१०। ८।५५।३७	०।२१।१२।१२	९।१८।३६।४२	५।६।३५। ३	९।२५।४७।४१	७।२०।१३।२४	७।०।४४।४२	३।१०।२५।३६	६।९।२१।१२
	८	शु.	१०। ९।५६। १	०।२१।४९।४५	९।२०। ६।२२	५।६।२८।५६	९।२७। २।३०	७।२०।१६।२४	७।०।४१।३१	३।१०।२३।२९	६।९।२०।३५
	९	श.	१०।१०।५६।२३	०।२२।२७।२१	९।२१।३७। ०	५।६।२२।४१	९।२८।१७।१९	७।२०।१९।१८	७।०।३८।२१	३।१०।२१।२४	६।९।१९।५५
	१०	र.	१०।११।५६।४४	०।२३। ५। ०	९।२३। ८।३४	५।६।१६।१७	९।२९।३२। ७	७।२०।२२। ६	७।०।३५।१०	३।१०।१९।२२	६।९।१९।१४
	११	चं.	१०।१२।५७। ३	०।२३।४२।४३	९।२४।४१। ६	५।६। ९।४५	१०। ०।४६।५५	७।२०।२४।४८	७।०।३१।५९	३।१०।१७।२२	६।९।१८।३१
	१२	मं.	१०।१३।५७।२२	०।२४।२०।३१	९।२६।१४।३५	५।६। ३। ४	१०। २। १।४१	७।२०।२७।२५	७।०।२८।४८	३।१०।१५।२५	६।९।१७।४६
	१३	बु.	१०।१४।५७।३७	०।२४।५८। ४	९।२७।४९।४२	५।५।५६।१४	१०। ३।१६।४०	७।२०।२९।५४	७।०।२५।३७	३।१०।१३।१९	६।९।१७। १
	१४	गु.	१०।१५।५७।५०	०।२५।३५।३७	९।२९।२५।४८	५।५।४९।२१	१०। ४।३१।३६	७।२०।३२।१६	७।०।२२।२७	३।१०।११।१६	६।९।१६।१४
	३०	शु.	१०।१६।५८। १	०।२६।१३।१०	१०। १। २।५२	५।५।४२।२४	१०। ५।४६।३०	७।२०।३४।३२	७।०।१९।१६	३।१०। ९।१५	६।९।१५।२५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दैनिकाः स्पष्टाग्रहाः

मासारम्भे केतक्यहर्गणः १०६२, अयनांशाः २३।१४।४० (दिनद्वयग्रहान्तरं सूक्ष्मगतिः)

मास	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
फाल्गुन शुक्लपक्षः	१	श.	१०।१७।५८।१०	०।२६।५०।४४	१०। २।४०।५५	५।५।३५।२२	१०। ७। १।२३	७।२०।३६।४३	७। ०।१६। ६	३।१०। ७।१८	६।६।१४।३३
	२	र.	१०।१८।५८।१७	०।२७।२८।१८	१०। ४।१६।५६	५।५।२८।१६	१०। ८।१६।१३	७।२०।३८।४८	७। ०।१२।५५	३।१०। ५।२२	६।६।१३।४०
	३	चं.	१०।१६।५८।२२	०।२८। ५।५३	१०। ५।५६।५६	५।५।२१। ७	१०। ६।३१। २	७।२०।४०।४८	७। ०। ६।४५	३।१०। ३।३०	६।६।१२।४६
	४	मं.	१०।२०।५८।२५	०।२८।४३।२८	१०। ७।४०।५४	५।५।१३।५४	१०।१०।४५।४६	७।२०।४२।४२	७। ०। ६।३४	३।१०। १।४०	६।६।११।५०
	५	बु.	१०।२१।५८।२६	०।२६।२१। ४	१०। ६।२२।५२	५।५। ६।३६	१०।१२। ०।३४	७।२०।४४।३१	७। ०। ३।२४	३। ६।५६।५३	६।६।१०।५२
	६	गु.	१०।२२।५८।२६	०।२६।५८।४०	१०।११। ६।४३	५।४।५६।१४	१०।१३।१५।१७	७।२०।४६।१५	७। ०। ०।१३	३। ६।५८। ६	६।६। ६।५२
	७	शु.	१०।२३।५८।२४	१। ०।३६।१७	१०।१२।५१।२२	५।४।५१।४८	१०।१४।२६।५८	७।२०।४७।५३	६।२६।५७। ३	३। ६।५६।२७	६।६। ८।५१
	८	श.	१०।२४।५८।२०	१। १।१३।५४	१०।१४।३६।४६	५।४।४४।१८	१०।१५।४४।३७	७।२०।४६।२५	६।२६।५३।५१	३। ६।५४।५०	६।६। ७।४८
	९	र.	१०।२५।५८।१४	१। १।५१।३२	१०।१६।२३। ६	५।४।३६।४४	१०।१६।५६।१५	७।२०।५०।५१	६।२६।५०।४१	३। ६।५३।१२	६।६। ६।४३
	१०	चं.	१०।२६।५८। ६	१। २।२६।११	१०।१८।१०।११	५।४।२६। ६	१०।१८।१३।५१	७।२०।५२।१२	६।२६।४७।३०	३। ६।५१।३८	६।६। ५।३७
	११	मं.	१०।२७।५७।५६	१। ३। ६।४६	१०।१६।५८। ६	५।४।२१।२४	१०।१६।२८।२४	७।२०।५३।२७	६।२६।४४।२०	३। ६।५०। ७	६।६। ४।२६
	१२	बु.	१०।२८।५७।४४	१। ३।४४।२७	१०।२१।४६।४६	५।४।१३।३८	१०।२०।४२।५५	७।२०।५४।३६	६।२६।४१। ६	३। ६।४८।३८	६।६। ३।१६
	१३	गु.	१०।२६।५७।३२	१। ४।२२। ८	१०।२३।३६।२२	५।४। ५।४६	१०।२१।५७।२५	७।२०।५५।४१	६।२६।३७।५६	३। ६।४७।१३	६।६। २। ६
	१४	शु.	११। ०।५७।१८	१। ४।५६।५१	१०।२५।२६।४५	५।३।५७।५६	१०।२३।१२। ६	७।२०।५६।४०	६।२६।३४।४८	३। ६।४५।५४	६।६। ०।५४
	१५	श.	११। १।५७। १	१। ५।३७।३३	१०।२७।२४। ४	५।३।५०।१३	१०।२४।२६।४६	७।२०।५७।३२	६।२६।३१।३७	३। ६।४४।३८	६।८।५६।४२
चैत्र कृष्ण पक्षः	२	र.	११। २।५६।४२	१। ६।१५।१५	१०।२६।१६।१६	५।३।४२।२६	१०।२५।४१।२४	७।२०।५८।१८	६।२६।२८।२६	३। ६।४३।२४	६।८।५८।२८
	३	चं	११। ३।५६।२१	१। ६।५२।५७	११। १।१५।२६	५।३।३४।४६	१०।२६।५६। १	७।२०।५८।५८	६।२६।२५।१५	३। ६।४२।१२	६।८।५७।१२
	४	मं.	११। ४।५५।५८	१। ७।३०।३६	११। ३।१२।३५	५।३।२७। ४	१०।२८।१०।३६	७।२०।५६।३२	६।२६।२२। ४	३। ६।४१। ३	६।८।५५।५५
	५	बु.	११। ५।५५।३३	१। ८। ८।२१	११। ५।१०।३८	५।३।१६।२५	१०।२६।२५।१०	७।२०।५६।५८	६।२६।१८।५४	३। ६।३६।५६	६।८।५४।३८
	६	गु.	११। ६।५५। ६	१। ८।४६। ३	११। ७। ६।३७	५।३।११।४६	११। ०।३६।४२	७।२१। ०।१८	६।२६।१५।४३	३। ६।३८।५१	६।८।५३।१६
	७	शु.	११। ७।५४।३६	१। ६।२३।४६	११। ६। ६।३२	५।३। ४। ८	११। १।५४।१४	७।२१। ०।३२	६।२६।१२।३५	३। ६।३७।४८	६।८।५१।५८
	८	श.	११। ८।५४। ५	१।१०। १।२८	११।११।१०।३६	५।२।५६।३१	११। ३। ८।४४	७।२१। ०।३८	६।२६। ६।२२	३। ६।३६।४७	६।८।५०।३७
	९	र.	११। ६।५३।३१	१।१०।३६।११	११।१३।१२।१४	५।२।४८।५६	११। ४।२३।१२	७।२१। ०।३६	६।२६। ६।११	३। ६।३५।५०	६।८।४६।१५
	१०	चं.	११।१०।५२।५५	१।११।१६।५४	११।१५।१४।२६	५।२।४१।२३	११। ५।३७।३६	७।२१। ०।३४	६।२६। ३। ०	३। ६।३४।५५	६।८।४७।५१
	११	मं.	११।११।५२।१७	१।११।५४।३७	११।१७।१७।१३	५।२।३३।५०	११। ६।५२। ५	७।२१। ०।२२	६।२८।५६।५०	३। ६।३४। २	६।८।४६।२६
	११	बु.	११।१२।५१।३८	१।१२।३२।२०	११।१६।२०।३४	५।२।२६।१६	११। ८। ६।२६	७।२१। ० ।४	६।२८।५६।३६	३। ६।३३।१२	६।८।४५। ०
	१२	गु.	११।१३।५०।५५	१।१३।१०। ३	११।२१।२४।३०	५।२।१८।५०	११। ६।२०।५२	७।२०।५६।३६	६।२८।५३।२८	३। ६।३२।२४	६।८।४३।३३
	१३	शु.	११।१४।५०।१०	१।१३।४७।४६	११।२३।२६। १	५।२।११।२१	११।१०।३५।१३	७।२०।५६। ८	६।२८।५०।१७	३। ६।३१।३८	६।८।४२। ४
	१४	श.	११।१५।४६।२३	१।१४।२५।३०	११।२५।३४। ५	५।२। ३।५४	११।११।४६।३४	७।२०।५८।३०	६।२८।४७। ६	३। ६।३०।५४	६।८।४०।३४
	३०	र.	११।१६।४८।३१	१।१५। ३। ७	११।२७।३८।५५	५।१।५६।१०	११।१३। ३।५४	७।२०।५८।१३	६।२८।४३।५६	३। ६।३०।४७	६।८।३८।५३

वैशाख शुक्लपक्षः

चैत्र शुक्लपक्षः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoF-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
चैत्र शुक्लपक्षः	१	बृ.	०।१०।२०।१२	०।१२।३५।१३	०।१४।५१।४७	०।१७। ३। ७	०।१९।२६।२८	०।२१।४३।४८
	३	शु.	०।२४। १। ९	०।२६।१८।२९	०।२८।३७।३४	१। ०।५६।५९	१। ३।१६।२४	१। ५।३५।४९
	४	श.	१। ७।५५।१४	१।१०।१४।४९	१।१२।३५।४२	१।१४।५६।४५	१।१७।१७।४९	१।१९।३८।५२
	५	र.	१।२१।५९।५५	२।२४।२१।४०	१।२६।४३।५८	१।२९। ६।१७	२। १।२८।३५	२। ३।५०।५४
	६	चं.	२। ६।१३।१२	२। ८।३६। ५	२।१०।५९। ६	२।१३।२२। ८	२।१५।४५। ९	२।१८। ८।११
	७	मं.	२।२०।३१।१८	२।२२।५४।३७	२।२५।१७।५७	२।२७।४१।१६	३। ०। ४।३६	३। २।२७।५५
	८	बु.	३। ४।५१। ०	३। ७।१३।५६	३। ९।३६।५३	३।११।५९।४९	३।१४।२२।४६	३।१६।४५।४१
	९	गु.	३।१९। ७।४४	३।२१।२९।४७	३।२३।५१।५०	३।२६।१३।५४	३।२८।३५।५७	४। ०।५७।२९
	१०	शु.	४। ३।१८।१४	४। ५।३९। ०	४। ७।५९।४६	४।१०।२०।३२	४।१२।४१।१७	४।१५। ०।४२
	११	श.	४।१७।१९।३५	४।१९।३८।२८	४।२१।५७।२१	४।२४।१६।१५	४।२६।३५। ८	४।२८।५२।११
	१२	र.	५। १। ९।१०	५। ३।२६। ९	५। ५।४३। ८	५। ८। ०। ७	५।१०।१६।४९	५।१२।३३।२३
	१३	चं.	५।१४।४५।५७	५।१७। ०।३१	५।१९।१५। ५	५।२१।२९।३९	५।२३।४३।४४	५।२५।५५।३८
	१४	मं.	५।२८। ७।३२	६। ०।१९।२६	६। २।३१।२९	६। ४।४३।१५	६। ६।५४।५२	६। ९। ४। ४
	१५	बु.	६।११।१३।१७	६।१३।२२।३०	६।१५।३१।४२	६।१७।४०।५४	६।१९।५०। ७	६।२१।५९।५५
वैशाख कृष्णपक्षः	१	गु.	६।२४। ३।३२	६।२६।१०। ९	६।२८।१६।४६	७। ०।२३।२३	७। २।३०। ०	७। ४।३५।१८
	२	शु.	७। ६।३९।४५	७। ८।४४।१२	७।१०।४८।३९	७।१२।५३। ६	७।१४।५७।३३	७।१७। १।३७
	३	श.	७।१९। ३।५८	७।२१। ६।१९	७।२३। ८।४१	७।२५।११। २	७।२७।१३।२३	७।२९।१५।४४
	४	र.	८। १।१७।१६	८। ३।१८।१९	८। ५।१९।२३	८। ७।२०।२६	८। ९।२१।३०	८।११।२२।३३
	५	चं.	८।१३।२३।३६	८। ५।२३।४७	८।१७।२३।५८	८।१९।२४। ९	८।२१।२४।२०	८।२३।२४।३१
	६	मं.	८।२५।२४।४२	८।२७।२४।५३	८।२९।२५। ९	९। १।२५।२५	९। ३।२५।४१	९। ५।२५।५८
	७	बु.	९। ७।२६।१४	९। ९।२६।३१	९।११।२७।१८	९।१३।२८।१६	९।१५।२९।१४	९।१७।३०।१२
	८	गु.	९।१९।३१।१०	९।२१।३२। ८	९।२३।३३।१५	९।२५।३५।३८	९।२७।३८। १	९।२९।४०।२४
	९	शु.	१०। १।४२।४७	१०। ३।४५।१०	१०। ५।४७।३३	१०। ७।५१। ७	१०। ९।५५।३२	१०।११।५९।५७
	१०	श.	१०।१४। ४।२२	१०।१६। ८।४७	१०।१८।१३।१२	१०।२०।१७।५६	१०।२२।२४।३३	१०।२४।३१।१०
	११	र.	१०।२६।३७।४७	१०।२८।४४।२४	११। ०।५१। १	११। २।५७।३८	११। ५। ६।२३	११। ७।१५।३५
	१२	चं.	११। ९।२४।४८	११।११।३४। ०	११।१३।४३।१३	११।१५।५२।२५	११।१८। ३।१७	११।२०।१५। ९
	१३	मं.	११।२२।२७। १	११।२४।३८।५३	११।२६।५०।४५	११।२९। २।३७	०। १।१६। ०	०। ३।३०।३१
	१४	बु.	०। ५।४५। ४	०। ७।५९।३४	०।१०।१४। ६	०।१२।२८।३८	०।१४।४४।३२	०।१७। १।१४
	३०	गु.	०।१९।१७।५७	०।२१।३४।४०	०।२३।५१।२३	०।२६। ८। ५	०।२८।२६।३३	१। ०।४५।२१
वैशाख शुक्लपक्षः	१	शु.	१। ३। ४।२९	१। ५।२३।२८	१। ७।४२।२६	१।१०। १।२४	१।१२।२२। ९	१।१४।४३।५५
	२	श.	१।१७। ३।४१	१।१९।२४।२६	१।२१।४५।१२	१।२४। ६।२६	१।२६।२८।३४	१।२८।५०।४२
	३	र.	२। १।१२।५०	२। ३।३४।५९	२। ५।५७। ७	२। ८।१९।४९	२।१०।४२।४५	२।१३। ५।४२
	४	चं.	२।१५।२८।३८	२।१७।५१।३५	२।२०।१४।३३	२।२२।३७।५७	२।२५। १।१२	२।२७।२४।२६
	५	मं.	२।२९।४७।४१	३। २।१०।५५	३। ४।२३।५२	३। ६।४६।५१	३। ९। ९।५०	३।११।३२।४९
	७	बु.	३।१३।५५।४८	३।१६।१८।४७	३।१८।५१।१४	३।२१।१३।३७	३।२३।३६। १	३।२५।५८।२४
	८	गु.	३।२८।२०।४८	४। ०।४२।४७	४। ३। ३।५०	४। ५।२४।५३	४। ७।४५।५६	४।१०। ७। ०
	९	शु.	४।१२।२८। ३	४।१४।४८। ६	४।१७। ७।३३	४।१९।२७। ०	४।२१।४६।२७	४।२४। ५।५५
	१०	श.	४।२६।२५।२२	४।२८।४२।५९	५। १। ०।२४	५। ३।१७।४९	५। ५।३५।१४	५। ७।५२।३९
	११	र.	५।१०। ९।५४	५।१२।२४।५९	५।१४।४०। ५	५।१६।५५।११	५।१९।१०।१७	५।२१।२५।२२
	१२	चं.	५।२३।४०। ५	५।२५।५५।३२	५।२८। ४।५९	६। ०।१७।२६	६। २।२९।५३	६। ४।४२।२०
	१३	मं.	६। ६।५४।३०	६। ९। ४।१७	६।११।१४। ५	६।१३।२३।५३	६।१५।३३।४०	६।१७।४३।२७
	१४	बु.	६।१९।५३।१५	६।२२। ०।३९	६।२४। ७।५२	६।२६।१५। ५	६।२८।२२।१८	७। ०।२९।३१
	१५	गु.	७। २।३६।४४	७। ४।३३।२७	७। ६।३७।२३	७। ८।४२।१९	७।१०।४७।१५	७।१२।५२।११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
ज्येष्ठ कृष्णपक्षः	१	शु.	७।१४।५७। ७	७।१७।११।२५	७।१९।१३।५०	७।२१।१६।१५	७।२३।१८।४०	७।२५।२१।
	२	श.	७।२७।२३।३०	७।२९।२५।५५	८। १।२७।३४	८। ३।२८।५४	८। ५।३०।१४	८। ७।३१।३
	३	र.	८। ९।३२।५४	८।११।३४।१४	८।१३।३५।२६	८।१५।३५।४४	८।१७।३६। २	८।१९।३६।२
	४	चं.	८।२१।३६।३८	८।२३।३६।५६	८।२५।३७।१४	८।२७।३७।२९	८।२९।३७।४०	९। १।३७।५
	५	मं.	९। ३।३८। २	९। ५।३८।१३	९। ७।३८।२४	९। ९।३८।३५	९।११।३९।१५	९।१३।४०।
	६	बु.	९।१५।४०।४९	९।१७।४१।३६	९।१९।४२।२३	९।२१।४३।१०	९।२३।४४।१२	९।२५।४६।१
	६	गु.	९।२७।४८।१७	९।२९।५०।२०	१०। १।५२।२३	१०। ३।५४।२५	१०। ५।५६।२८	१०। ७।५९।
	७	शु.	१०।१०। ३।४०	१०।१२। ७।३६	१०।१४।११।३२	१०।१६।१५।२८	१०।१८।१९।२४	१०।२०।२३।
	८	श.	१०।२२।२९।४५	१०।२४।३५।४६	१०।२६।४१।४७	१०।२८।४७।४८	११। ०।५३।४९	११। ३।५९।
	९	र.	११। ५। ८। ७	११। ७।१६।५०	११। ९।२५।३३	११।११।३४।१७	११।१३।४३। ०	११।१५।५१।
	१०	चं.	११।१८। २। ६	११।२०।१३।२७	११।२२।२४।४९	११।२४।३६।११	११।२६।४७।३३	११।२८।५८।
	११	मं.	०। १।११।३९	०। ३।२५।३४	०। ५।३९।३०	०। ७।५३।२५	०।१०। ७।२१	०।१२।२१।
	१२	बु.	०।१४।३६।३८	०।१६।५३। ४	०।१९। ९।३१	०।२१।२५।५७	०।२३।४२।२४	०।२५।५८।
	१३	गु.	०।२८।१६।४१	१। ०।३५। ८	१। २।५३।३५	१। ५।१२। २	१। ७।३०।२९	१। ९।४८।
	३०	शु.	१।१२। ९।१६	१।१४।२९।४६	१।१६।५०।१७	१।१९।१०।४८	१।२१।३१।१९	१।२३।५७।
ज्येष्ठ शुक्लपक्षः	१	श.	१।२६।१३।५९	१।२८।३५।५०	२। ०।५७।४७	२। ३।१९।३१	२। ५।४१।२२	२। ८। ३।
	२	र.	२।१०।२६।३६	२।१२।४९।२५	२।१५।१२।१४	२।१७।३५। ३	२।१९।५७।५२	२।२२।२१।
	३	चं.	२।२४।४४।३०	२।२७। ७।५०	२।२९।३१। ९	३। १।५४।२९	३। ४।१७।४५	३। ६।४०।
	४	मं.	३। ९। ४। ३	३।११।२७।१२	३।१३।५०।२१	३।१६।१३।३०	३।१८।३६।२५	३।२०।५८।
	५	बु.	३।२३।२१।३२	३।२५।४४। ५	३।२८। ६।३९	४। ०।२९। ०	४। २।५०।२८	४। ५।११।
	६	गु.	४। ७।३३।२४	४। ९।५४।५२	४।१२।१६।२०	४।१४।३६।५६	४।१६।५६।५०	४।१९।१६।
	७	शु.	४।२१।३६।३८	४।२३।५६।३२	४।२६।१६।२६	४।२८।३४।३५	५। ०।५२।२१	५। ३।१०।
	८	श.	५। ५।२७।५४	५। ७।४५।४१	५।१०। ३।२४	५।१२।१९। ६	५।१४।३४।४९	५।१६।५०।
	९	र.	५।१९। ६।१४	५।२१।२१।५६	५।२३।३७।१९	५।२५।५०।२८	५।२८। ३।३७	६। ०।१६।
	१०	चं.	६। २।२९।५५	६। ४।४३। ४	६। ६।५५।५२	६। ९। ६।१८	६।११।१६।४४	६।१३।२७।
	११	मं.	६।१५।३७।३६	६।१७।४८। २	६।१९।५८।२८	६।२२। ६।१८	६।२४।१४। ५	६।२६।२१।
	१२	बु.	६।२८।२९।४१	७। ०।३७।२८	७। २।४५।१६	७। ४।५१।१९	७। ६।५६।४२	७। ९। २।
	१३	गु.	७।११। ७।२९	७।१३।१२।५३	७।१५।१८।१७	७।१७।२२।५४	७।१९।२६। २	७।२१।२९।
	१४	शु.	७।२३।३२।१९	७।२५।३५।२८	७।२७।३८।३६	७।२९।४१।४५	८। १।४३।३९	८। ३।४५।
	१५	श.	८। ५।४७। ३	८। ७।४८।४५	८। ९।५०।२८	८।११।५२।१०	८।१३।५३।३२	८।१५।५४।
आषाढ़ कृष्णपक्षः	१	र.	८।१७।५४।३३	८।१९।५५। ४	८।२१।५५।३५	८।२३।५६। ५	८।२५।५६।३६	८।२७।५६।
	२	चं.	८।२९।५६।५६	९। १।५७। १	९। ३।५७। ६	९। ५।५७।१२	९। ७।५७।१७	९। ९।५७।
	३	मं.	९।११।५८।२०	९।१३।५९। ०	९।१५।५९।४०	९।१८। ०।२०	९।२०। १। ०	९।२२। १।
	४	बु.	९।२४। २।२५	९।२६। ३।१२	९।२८। ५। ०	१०। ०। ६।४८	१०। २। ८।३६	१०। ४।१०।
	५	गु.	१०। ६।१२।१०	१०। ८।१६।१८	१०।१०।१९।४५	१०।१२।२३।१२	१०।१४।२६।४०	१०।१६।३०।
	६	शु.	१०।१८।३३।३५	१०।२०।३७। ७	१०।२२।४२।४०	१०।२४।४८।१३	१०।२६।५३।४६	१०।२८।५९।
	७	श.	११। १। ४।५३	११। ३।१०।२६	११। ५।१८।५७	११। ७।२७। ५	११। ९।३५।१३	११।११।४३।
	८	र.	११।१३।५१।३०	११।१५।५९।३८	११।१८। ९।३८	११।२०।२०।२९	११।२२।३१।२१	११।२४।४२।
	९	चं.	११।२६।५३। ४	११।२९। ३।५५	०। १।१६।१६	०। ३।२९।४०	०। ५।४३। ५	०। ७।५६।
	१०	मं.	०।१०। ९।५४	०।१२।२३।१८	०।१४।३८।११	०।१६।५४। ९	०।१९।१०। ८	०।२१।२६।
	११	बु.	०।२३।४२। ५	०।२५।५८। ३	०।२८।१४।४९	१। ०।३२।५२	१। २।५०।५५	१। ५। ८।
	१२	गु.	१। ७।२७। १	१। ९।४५। ४	१।१२। ५।३८	१।१४।२५।४४	१।१६।४५।५०	१।१९। ५।
	१३	शु.	१।२१।२६। ३	१।२३।४६।२७	१।२६। ८। ७	१।२८।२९।४८	२। ०।५१।२८	२। ३।१३।
	१४	श.	२। ५।३४।५०	२। ७।५७। १	२।१०।१९।३९	२।१२।४२।१८	२।१५। ४।५७	२।१७।२७।
	१५	र.	२।१९।५०।१४	२।२२।१३।२७	२।२४।३६।४१	२।२६।५९।५६	२।२९।२३।१०	३। १।४६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः

मास	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
आषाढ़ शुक्लपक्षः	१	चं.	३। ४। ९।४३	३। ६।३३। ७	३। ८।५६।३२	३।११।१९।५७	३।१३।४३।२२	३।१६। ६।४६
	३	सं.	३।१८।२९।४२	३।२०।५२।२८	३।२३।१५।१४	३।२५।३८। १	३।२८। ०।४७	४। ०।२३।२४
	४	बु.	४। २।४५।१२	४। ५। ७। ०	४। ७।२८।४९	४। ९।५०।३७	४।१२।१२।२५	४।१४।३३।२५
	५	गु.	४।१६।५३।४१	४।१९।१३।५७	४।२१।३४।१३	४।२३।५४।२९	४।२६।१४।४५	४।२८।३३।२४
	६	शु.	५। ०।५१।४१	५। ३। ९।५८	५। ५।२८।१५	५। ७।४६।३३	५।१०। ४।४६	५।१२।२१। ३
	७	श.	५।१४।३७।२०	५।१६।५३।३७	५।१९। ९।५४	५।२१।२६।११	५।२३।४२। ४	५।२५।५५।४८
	८	र.	५।२८। ९।३३	६। ०।२३।१७	६। २।३७। २	६। ४।५०।४६	६। ७। ४। ३	६। ९।१५।१४
	९	चं.	६।११।२६।२५	६।१३।३७।३६	६।१५।४८।४७	६।१७।५९।५८	६।२०।१०।५५	६।२२।१९।१९
	१०	मं.	६।२४।२७।४४	६।२६।३६। ९	६।२८।४४।३४	७। ०।५२।५८	७। ३। १।२३	७। ५। ७।४०
	११	बु.	७। ७।१३।३५	७। ९।१९।३०	७।११।२५।२५	७।१३।३१।२०	७।१५।३७।१५	७।१७।४२। २
	१२	गु.	७।१९।४५।४०	७।२१।४९।१९	७।२३।५२।५८	७।२५।५६।३७	७।२८। ०।१५	८। ०। ३।५२
	१३	शु.	८। २। ५।५३	८। ४। ७।५४	८। ६। ९।५५	८। ८।११।५६	८।१०।१३।५७	८।१२।१५।५८
	१४	श.	८।१४।१७।२२	८।१६।१८। ७	८।१८।१८।५२	८।२०।१९।३७	८।२२।२०।२३	८।२४।२१। ८
	१५	र.	८।२६।२१।५३	८।२८।२२।११	९। ०।२२।२३	९। २।२२।३६	९। ४।२२।४८	९। ६।२३। १
श्रावण कृष्णपक्षः	१	चं.	९। ८।२३।१३	९।१०।२३।३०	९।१२।२३।५९	९।१४।२४।२८	९।१६।२४।५७	९।१८।२५।२६
	२	मं.	९।२०।२५।५५	९।२२।२६।२४	९।२४।२७।२४	९।२६।२८।४९	९।२८।३०।१५	१०। ०।३१।४०
	३	बु.	१०। २।३३। ६	१०। ४।३४।३१	१०। ६।३५।५७	१०। ८।३६।५६	१०।१०।३९।५८	१०।१२।४३। १
	३	गु.	१०।१४।४६। ४	१०।१६।४९। ७	१०।१८।५२।१०	१०।२०।५८।१३	१०।२३। ३।२४	१०।२५। ८।३६
	४	शु.	१०।२७।१३।४८	१०।२९।१९। ०	११। १।२४।११	११। ३।२९।३४	११। ५।३७। ३	११। ७।४४।३२
	५	श.	११। ९।५२। २	११।११।५९।३१	११।१४। ७। ०	११।१६।१४।३०	११।१८।२४। ७	११।२०।३४।१६
	६	र.	११।२२।४४।२५	११।२४।५४।३४	११।२७। ४।४३	११।२९।१४।५२	०। १।२६।४८	०। ३।३९।३९
	७	चं.	०। ५।५२।३०	०। ८। ५।२१	०।१०।१८।१२	०।१२।३१। ३	०।१४।४५।२६	०।१७। ०।३८
	८	मं.	०।१९।१५।५१	०।२१।३१। ४	०।२३।४६।१७	०।२६। १।२९	०।२८।१८।२९	१। ०।३६।१३
	९	बु.	१। २।५३।५७	१। ५।११।४१	१। ७।२९।२५	१। ९।४७। ९	१।१२। १।४०	१।१४।२६।२१
	११	गु.	१।१६।४६। ३	१।१९। ५।४५	१।२१।२५।२७	१।२३।४५।२७	१।२६। १।५०	१।२८।२८।१३
	१२	शु.	२। ०।४९।३६	२। ३।१०।५९	२। ५।३२।२२	२। ७।५४।२१	२।१०।१६।५२	२।१२।३९।२३
	१३	श.	२।१५। १।५४	२।१७।२४।२५	२।१९।४६।५६	२।२२।१०। ०	२।२४।३३। ७	२।२६।५६।१४
	१४	र.	२।२९।१९।२१	३। १।४२।२८	३। ४। ५।४७	३। ६।२९।३७	३। ८।५३।२८	३।११।१७।१८
	३०	चं.	३।१३।४१। ९	३।१६। ४।५९	३।१८।२७।५८	३।२०।५०।३९	३।२३।१३।२०	३।२५।३६। [illegible]
श्रावण शुक्लपक्षः	१	मं.	३।२७।५८।४३	४। ०।२१।१९	४। २।४३।२७	४। ५। ५।३५	४। ७।२७।४३	४। ९।४९।५२
	२	बु.	४।१२।१२। ०	४।१४।३४।१४	४।१६।५४।५५	४।१९।१५।३६	४।२१।३६।१७	४।२३।५६।५८
	३	गु.	४।२६।१७।३९	४।२८।३५।५३	५। ०।५४।३९	५। ३।१३।२५	५। ५।३२।११	५। ७।५०।४७
	४	शु.	५।१०। ९।३५	५।१२।२६।२७	५।१४।४३।१९	५।१७। ०।११	५।१९।१७। ३	५।२१।३३।५५
	५	श.	५।२३।५०।१५	५।२६। ४।४२	५।२८।१९। ९	६। ०।३३।३६	६। २।४८। ४	६। ५। २।३१
	६	र.	६। ७।१६।१४	६। ९।२७।५९	६।११।३९।४५	६।१३।५१।३०	६।१६। ३।१६	६।१८।१५। १
	७	चं.	६।२०।२६।१५	६।२२।३५।१९	६।२४।४४।२३	६।२६।५३।२७	६।२९। २।३१	७। १।११।२५
	८	मं.	७। ३।२०।३८	७। ५।२७। ५	७। ७।३३।३२	७। ९।३९।५९	७।११।४६।२६	७।१३।५२।५३
	९	बु,	७।१५।५९।२०	७।१८। ४।१९	७।२०। ८।३६	७।२२।१२।५३	७।२४।१७।११	७।२६।२१।२८
	१०	गु.	७।२८।२५।४५	८। ०।२९।३४	८। २।३१।५३	८। ४।३४।१३	८। ६।३६।३२	८। ८।३८।५२
	११	शु.	८।१०।४१।११	८।१२।४३।३१	८।१४।४४।५७	८।१६।४६। ०	८।१८।४७। ४	८।२०।४८। ७
	१२	श.	८।२२।४९।११	८।२४।५०।१४	८।२६।५१।१४	८।२८।५१।३०	९। ०।५१।४६	९। २।५२। २
	१३	र.	९। ४।५२।१९	९। ६।५२।३५	९। ८।५२।५२	९।१०।५३।११	९।१२।५३।३६	९।१४।५४। २
	१४	चं.	९।१६।५४।२७	९।१८।५४।५२	९।२०।५५।१७	९।२२।५५।४३	९।२४।५६।४६	९।२६।५७।५८
	१५	मं.	९।२८।५९।११	१०। १। ०।२३	१०। ३। १।३६	१०। ५। २।४९	१०। ७। ४।१९	१०। ९। ६।५५

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
भाद्रपद कृष्णपक्षः	१	बु.	१०।११। ६।३१	१०।१३।१२। ८	१०।१५।१४।४४	१०।१७।१७।२०	१०।१९।१९।५७	१०।२१।२४।
	२	गु.	१०।२३।२८।४४	१०।२५।३३।२९	१०।२७।३८।१३	१०।२९।४२।५८	११। १।४७।४२	११। ३।५२।
	३	शु.	११। ५।५९।५२	११। ८। ६।४५	११।१०।१३।३८	११।१२।२०।३१	११।१४।२७।२४	११।१६।३४।
	४	श.	११।१८।४३।४७	११।२०।५३।२४	११।२३। ३। २	११।२५।१२।३९	११।२७।२२।१६	११।२९।३१।
	५	र.	०। १४।३।३०	०। ३।५५।३७	०। ६। ७।४४	०। ८।१९।५१	०।१०।३१।५९	०।१२।४४।
	६	चं.	०।१४।५८।११	०।१७।१३। ०	०।१९।२७।५०	०।२१।४२।४०	०।२३।५७।३०	०।२६ १२।
	७	मं.	०।२८।२९। ९	१। ०।४६।२७	१। ३। ३।४५	१। ५।२१। ३	१। ७।३८।२१	१। ९।५५।
	८	बु.	१।१२।१४।१४	१।१४।३३।२६	१।१६।५२।३९	१।१९।११।५२	१।२१।३१। ५	१।२३।५१।
	९	गु.	१।२६।१२।१३	१।२८।३३।११	२। ०।५४। ९	२। ३।१५। ७	२। ५।३६। ५	२। ७।५७।
	१०	शु.	२।१०।२०।१०	२।१२।४२।३१	२।१५। ४।५२	२।१७।२७।१३	२।१९।४९।३४	२।२२।१२।
	११	श.	२।२४।३५।५४	२।२६।५९। ७	२।२९।२२।१९	३। १।४५।३२	३। ४। ८।४७	३। ६।३२।
	१२	र.	३। ८।५५।४६	३।११।१९।१६	३।१३।४२।४६	३।१६। ६।१५	३।१८।२९।२९	३।२०।५२।
	१४	चं.	३।२३।१५।४३	३।२५।३८।५०	३।२८। १।५७	४। ०।२४।५६	४। २।४७।२२	४। ५। ९।
	३०	मं.	४। ७।३२।१४	४। ९।५४।४०	४।१२।१७। ६	४।१४।३८।४५	४।१६।५९।४८	४।१९।२०।
भाद्रपद शुक्लपक्षः	१	बु.	४।२१।४१।५४	४।२४। २।५८	४।२६।२४। १	४।२८।४३।३७	५। १। ३। २	५। ३।२२।
	२	गु.	५। ५।४१।५२	५। ८। १।१७	५।१०।२०।२३	५।१२।३७।४८	५।१४।५५।१३	५।१७।१२।
	३	शु.	५।१९।३०। ३	५।२१।४७।२८	५।२४। ४। ७	५।२६।१९।१०	५।२८।३४।१४	६। ०।४९।
	४	श.	६। ३। ४।२१	६। ५।१९।२४	६। ७।३३।२३	६। ९।४५।४३	६।११।५८। ४	६।१४।१०।
	५	र.	६।१६।२२।४५	६।१८।३५। ५	६।२०।४६।३०	६।२२।५६।१६	६।२५। ६। २	६।२७।१५।
	६	चं.	६।२९।२५।३४	७। १।३५।२०	७। ३।४४।३५	७। ५।५१।४२	७। ७।५८।४९	७।१०। ५।
	७	मं.	७।१२।१३। ३	७।१४।२०।१०	७।१६।२७।१७	७।१८।३२।२२	७।२०।३७।१४	७।२२।४२।
	८	बु.	७।२४।४६।५८	७।२६।५१।५०	७।२८।५६।४३	८। १। ०।३४	८। ३। ३।२१	८। ५। ६।
	९	गु.	८। ७। ८।५७	८। ९।११।४५	८।११।१४।३२	८।१३।१७।२०	८।१५।१८।३९	८।१७।१९।
	१०	शु.	८।१९।२१।१२	८।२१।२२।२८	८।२३।२३।४५	८।२५।२५। १	८।२७।२५।५८	८।२९।२६।
	११	श.	९। १।२६।४८	९। ३।२७।१३	९। ५।२७।३८	९। ७।२८। ४	९। ९।२८।२९	९।११।२८।
	१२	र.	९।१३।२९।१०	९।१५।२९।३०	९।१७।२९।४९	९।१९।३०। ९	९।२१।३०।२८	९।२३।३०।
	१३	चं.	९।२५।३१।५७	९।२७।३३। १	९।२९।३४। ४	१०। १।३५। ७	१०। ३।३६।११	१०। ५।३७।
	१४	मं.	१०। ७।३८।५१	१०। ९।४१। २	१०।११।४३।१४	१०।१३।४५।२६	१०।१५।४७।३८	१०।१७।४९।
	१४	बु.	१०।१९।५२। १	१०।२१।५६। ७	१०।२४। ०।१८	१०।२६। ४।३०	१०।२८। ८।४१	११। ०।१२।
	१५	गु.	११। २।१७। ४	११। ४।२२।२३	११। ६।२८।५०	११। ८।३५।१७	११।१०।४१।४४	११।१२।४८।
आश्विन कृष्णपक्षः	१	शु.	११।१४।५४।३८	११।१७। १। ४	११।१९।१०। ३	११।२१।१९। ३	११।२३।२८। ३	११।२५।३७।
	२	श.	११।२७।४६। २	११।२९।५५। २	०। २। ६।३४	०। ४।१८।११	०। ६।२९।४८	०। ८।४१।
	३	र.	०।१०।५३। २	०।१३। ४।३९	०।१५।१८।३०	०।१७।३२।३९	०।१९।४६।४८	०।२२। ०।
	४	चं.	०।२४।१५। ६	०।२६।२९।१५	०।२८।४५।५१	१। १। २।३८	१। ३।१९।२५	१। ५।३६।
	५	मं.	१। ७।५३। ०	१।१०। ९।५६	१।१२।२८।३४	१।१४ ४७।१३	१।१७। ५।५२	१।१९।२४।
	७	बु.	१।२१।४३। ९	१।२४। २।२७	१।२६।२३।१०	१।२८।४३।५३	२। १। ४।३६	२। ३।२५।
	८	गु.	२। ५।४६। २	२। ८। ७।३३	२।१०।२९।३१	२।१२।५१।२९	२।१५।१३।२७	२।१७।३५।
	९	शु.	२।१९।५७।२४	२।२२।२०।१६	२।२४।४३।१०	२।२७। ६। ४	२।२९।२८।५८	३। १।५१।
	१०	श.	३। ४।१५। १	३। ६।३८।३३	३। ९। २। ६	३।११।२५।३८	३।१३।४९।११	३।१६।११।
	११	श.	३।१८।३५।५९	३।२०।५९।११	३।२३।२२।२४	३।२५।४५।३६	३।२८। ८।४९	४। ०।३१।
	१२	र.	४। २।५४।२४	४। ५।१६।५७	४। ७।३९।३१	४।१०। २। ४	४।१२।२४।३८	४।१४।४९।
	१३	चं.	४।१७। ७।२४	४।१९।२८।२९	४।२१।४९।३५	४।२४।१०।४०	४।२६।३१।४६	४।२८।५२।
	१४	मं.	५। १।१२।२१	५। ३।३२।३७	५। ५।५२।५३	५। ८।१३। ९	५।१०।३२।५०	५।१२।५०।
	३०	बु.	५।१५। ८।१८	५।१७।२६। २	५।१९।४३।४६	५।२२। १।३०	५।२४।१८।२०	५।२६।३४।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्र) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टादिनिकरचन्द्रः

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
आश्विन शुक्लपक्षः	१	शु.	५।२८।४९।४०	६। १। ५।२०	६। ३।२१। ०	६। ५।३६।४०	६। ७।५०।५७	६।१०। ३।५९
	२	श.	६।१२।१७। १	६।१४।३०। ३	६।१६।४३। ६	६।१८।५६। ८	६।२१। ७।५०	६।२३।१८।१६
	३	र.	६।२५।२८।४२	६।२७।३९। ८	६।२९।४९।३४	७। २। ०। ०	७। ४। ९।२३	७। ६।१७। ६
	४	चं.	७। ८।२४।५०	७।१०।३२।३३	७।१२।४०।१७	७।१४।४८। ०	७।१६।५५।२८	७।१९। ०।४९
	५	मं.	७।२१। ६।११	७।२३।११।३२	७।२५।१६।५४	७।२७।२२।१५	७।२९।२७।३७	८। १।३१।२२
	६	बु.	८। ३।३४।३४	८। ५।३७।४६	८। ७।४०।५९	८। ९।४४।११	८।११।४७।२३	८।१३।५०।११
	७	गु.	८।१५।५१।४५	८।१७।५३।२०	८।१९।५४।५५	८।२१।५६।३०	८।२३।५८। ४	८।२५।५९।३९
	८	शु.	८।२८। ०।३५	९। ०। १। ९	९। २। १।३५	९। ४। २। ९	९। ६। २।४३	९। ८। ३।१८
	९	श.	९।१०। ४। ०	९।१२। ४।१४	९।१४। ४।२९	९।१६। ४।४३	९।१८। ४।५८	९।२०। ५।१२
	१०	र.	९।२२। ५।२६	९।२४। ५।५२	९।२६। ६।३५	९।२८। ७।१९	१०। ०। ८। २	१०। २। ८।४६
	११	चं.	१०। ४। ९।२९	१०। ६।१०।१३	१०। ८।११।५१	१०।१०।१३।४६	१०।१२।१५।४१	१०।१४।१७।३६
	१२	मं.	१०।१६।१९।३१	१०।१८।२१।२६	१०।२०।२३।४२	१०।२२।२७।१९	१०।२४।३०।५६	१०।२६।३४।३३
	१३	बु.	१०।२८।३८।१०	११। ०।४१।४७	११। २।४५।२४	११। ४।५०।३४	११। ६।५६।२१	११। ९। २। ८
	१४	गु.	११।११। ७।५५	११।१३।१३।४२	११।१५।१९।२९	११।१७।२६।११	११।१९।३४।२७	११।२१।४२।४३
	१५	शु.	११।२३।५१। ०	११।२५।५९।१६	११।२८। ७।३२	०। ०।१६। ९	०। २।२७। ९	०। ४।३८। ९
कार्तिक कृष्णपक्षः	१	श.	०। ६।४९। ९	०। ९। ०।१०	०।११।११।१०	०।१३।२२।१४	०।१५।३५।४७	०।१७।४९।२०
	२	र.	०।२०। २।५३	०।२२।१६।२६	०।२४।३०। ०	०।२६।४३।३८	०।२८।५६।४८	१। १।१५।५८
	३	चं.	१। ३।३२। ८	१। ५।४८।१९	१। ८। ४।२९	१।१०।२०।५७	१।१२।३९। ४	१।१४।५७।१२
	४	मं.	१।१७।१५।२०	१।१९।३३।२८	१।२१।५१।३६	१।२४।१०।२९	१।२६।३०।४२	१।२८।५०।५६
	५	बु.	२। १।११। ९	२। ३।३१।२२	३। ५।५१।३५	२। ८।१२।५४	२।१०।३४।४४	२।१२।५६।३५
	६	गु.	२।१५।१८।२६	१०।१७।४०।१७	२।२०। २। ९	२।२२।२४।५८	२।२४।४७।४७	२।२७।१०।३६
	७	शु.	२।२९।३३।२५	३। १।५६।१४	३। ४।१९।१३	३। ६।४२।२९	३। ९। ५।४६	३।११।२९। ३
	८	श.	३।१३।५२।१९	३।१६।१५।३६	३।१८।३९। २	३।२१। २।२६	३।२३।२५।५१	३।२५।४९।१६
	९	र.	३।२८।१२।४१	४। ०।३५।५७	४। २।५८।४८	४। ५।२२।३९	४। ७।४४।३०	४।१०। ७।२२
	११	चं.	४।१२।३०।१३	४।१४।५२।२६	४।१७।१४।१४	४।१९।३६। २	४।२१।५७।५०	४।२४।१९।३८
	१२	मं.	४।२६।४१।२४	४।२९। १।४०	५। १।२२।५६	५। ३।४२।१२	५। ६। २।२८	५। ८।२२।४४
	१३	बु.	५।१०।४२।२३	५।१३। ०।३५	५।१५।१८।४८	५।१७।३७। ०	५।१९।५५।१३	५।२२।१३।२५
	१४	गु.	५।२४।३०।४०	५।२६।४६।५९	५।२९। ३।१९	६। १।१९।३८	६। ३।३५।५८	६। ५।५२।१७
	३०	शु.	६। ८। ६।५६	६।१०।२०।४०	६।१२।३४।२५	६।१४।४८। ९	६।१७। १।५४	६।१९।१५।३८
कार्तिक शुक्लपक्षः	१	श.	६।२१।२७।३८	६।२३।३८।४४	६।२५।४९।५१	६।२८। ०।५८	७। ०।१२। ४	७। २।२३।११
	२	र.	७। ४।३२।४५	७। ६।४१। ७	७। ८।४९।३०	७।१०।५७।५२	७।१३। ६।१५	७।१५।१४।३७
	३	चं.	७।१७।२२।११	७।१९।२८। ६	७।२१।३४। १	७।२३।३९।५६	७।२५।४५।५१	७।२७।५१।४६
	४	मं.	७।२९।५७।४१	८। २। १।३४	८। ४। ५।११	८। ६। ८।४८	८। ८।१२।२५	८।१०।१६। २
	५	बु.	८।१२।१९।३९	८।१४।२२।२९	८।१६।२४।३५	८।१८।२६।४२	८।२०।२८।४८	८।२२।३०।५५
	६	गु.	८।२४।३३। १	८।२६।३५। ८	८।२८।३५।५२	९। ०।३६।३३	९। २।३७।१५	९। ४।३७।५६
	७	शु.	९। ६।३८।३८	९। ८।३९।१९	९।१०।३९।५३	९।१२।४०। ७	९।१४।४०।२२	९।१६।४०।३६
	८	श.	९।१८।४०।५१	९।२०।४१। ५	९।२२।४१।२०	९।२४।४१।४७	९।२६।४२।२१	९।२८।४२।५५
	८	र.	१०। ०।४२।२९	१०। २।४४। ४	१०। ४।४४।३८	१०। ६।४५।१६	१०। ८।४६।४८	१०।१०।४८।२०
	९	चं.	१०।१२।४९।५२	१०।१४।५१।२४	१०।१६।५२।५६	१०।१८।५४।२८	१०।२०।५६।५१	१०।२२।५९।५९
	१०	मं.	१०।२५। ३। ८	१०।२७। ६।१६	१०।२९। ९।२५	११। १।१२।३३	११। ३।१५।४२	११। ५।२०।५६
	११	बु.	११। ७।२६।१५	११। ९।३१।३५	११।११।३६।५४	११।१३।४२।१४	११।१५।४७।३३	११।१७।५४।१५
	१२	गु.	११।२०। १।५४	११।२२। ९।३४	११।२४।१७।१४	११।२६।२४।५४	११।२८।३२।३३	०। ०।४१। २
	१३	शु.	०। २।५१।१७	०। ५। १।३३	०। ७।११।४८	०। ९।२२। ४	०।११।३२।१९	०।१३।४३। ३
	१४	श.	०।१५।५६। ०	०।१८। ८।५८	०।२०।२१।५६	०।२२।३४।५४	०।२४।४७।५१	०।२७। १।१३
	१५	र.	०।२९।१६।४१	१। १।३२।१०	१। ३।४७।३९	१। ६। ३। ८	१। ८।१८।३६	१।१०।३४।४१

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः	१	चं.	१।१२।५२।३०	१।१५।१०।१८	१।१७।२८। ७	१।१९।४५।५६	१।२२। ३।४५	१।२४।२२।२८
	२	मं.	१।२६।४२।१४	१।२९। २। १	२। १।२१।४७	२। ३।४१।३४	२। ६। १।२०	२। ८।२२।१
	३	बु.	२।१०।४३।३९	२।१३। ५। २	२।१५।२६।२५	२।१७।४७।४८	२।२०। ९।१६	२।२२।३१।५
	५	गु.	२।२४।५४।३३	२।२७।१७।१२	२।२९।३९।५१	३। २। २।२९	३। ४।२५।२२	३। ६।४८।३
	६	शु.	३। ९।११।४०	३।११।३४।४९	३।१३।५७।५८	३।१६।२१। ७	३।१८।४४।३६	३।२१। ८
	७	श.	३।२३।३१।३५	३।२५।५५। ५	३।२८।१८।३५	४। ०।४१।५७	४। ३। ४।५८	४। ५।२८
	८	र.	४। ७।५१। १	४।१०।१४। ३	४।१२।३७। ४	४।१४।५९।२६	४।१७।२१।२९	४।१९।४३।३
	९	चं.	४।२२। ५।३५	४।२४।२७।३९	४।२६।४९।३७	४।२९।१०।२०	५। १।३१। ३	५। ३।५१।४
	१०	मं.	५। ६।१२।३०	५। ८।३३।१३	५।१०।५३।१०	५।१३।११।५३	५।१५।३०।३७	५।१७।४९।२
	११	बु.	५।२०। ८। ५	५।२२।२६।४८	५।२४।४४।२४	५।२७। १।१६	५।२९।१८। ८	६। १।३५।
	१२	गु.	६। ३।५१।५२	६। ६। ८।४४	६। ८।२३।४२	६।१०।३८। ४	६।१२।५२।२७	६।१५। ६।५
	१३	शु.	६।१७।२१।१३	६।१९।३५।३५	६।२१।४७।४६	६।२३।५९।२७	६।२६।११। ८	६।२८।२२।४
	१४	श.	७। ०।३४।२१	७। २।४६।१२	७। ४।५५।५६	७। ७। ५। ०	७। ९।१४। ४	७।११।२३।
	३०	र.	७।१३।३२।१२	७।१५।४१।१६	७।१७।४८।५२	७।१९।५५।१४	७।२२। १।३७	७।२४। ८।
मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः	१	चं.	७।२६।१४।२२	७।२८।२०।४५	८। ०।२६।४३	८। २।३०।५८	८। ४।३५।१३	८। ६।३९।२
	२	मं.	८। ८।४३।४४	८।१०।४७।५९	८।१२।५२।१५	८।१४।५४।५८	८।१६।५७।१५	८।१८।५९।३
	३	बु.	८।२१। १।५०	८।२३। ४। ८	८।२५। ६।२५	८।२७। ८।२७	८।२९। ९।३०	९। १।१०।३
	४	गु.	९। ३।११।३८	९। ५।१२।४१	९। ७।१३।४५	९। ९।१४।४८	९।११।१५।२३	९।१३।१५।४
	५	शु.	९।१५।१५।५९	९।१७।१६।१७	९।१९।१६।३५	९।२१।१६।५३	९।२३।१७।११	९।२५।१७।३
	६	श.	९।२७।१८। ६	९।२९।१८।३३	१०। १।१९। ०	१०। ३।१९।२७	१०। ५।१९।५४	१०। ७।२०।३
	७	र.	१०। ९।२१।५१	१०।११।२३। ६	१०।१३।२४।२१	१०।१५।२५।३५	१०।१७।२६।५०	१०।१९।२८।
	८	चं.	१०।२१।३०।२१	१०।२३।३२।५९	१०।२५।३५।३७	१०।२७।३८।१५	१०।२९।४०।५३	११। १।४३।३
	९	मं.	११। ३।४६।३७	११। ५।५१।२५	११। ७।५६।१३	११।१०। १। १	११।१२। ५।५०	११।१४।१०।२
	१०	बु.	११।१६।१५।२६	११।१८।२१।५९	११।२०।२८।५३	११।२२।३५।५०	११।२४।४२।४७	११।२६।४९।४
	११	गु.	११।२८।५६।४१	०। १। ५। ५	०। ३।१४।४८	०। ५।२४।३२	०। ७।३४।१६	०। ९।४४।
	१२	शु.	०।११।५३।४३	०।१४। ४।१८	०।१६।१६।३१	०।१८।२८।४५	०।२०।४०।५९	०।२२।५३।१
	१३	श.	०।२५। ५।२६	०।२७।१८।२६	०।२९।३३।१८	१। १।४८।१०	१। ४। ३। २	१। ६।१७।५
	१४	र.	१। ८।३२।४७	१।१०।४८।२८	१।१३। ५।३९	१।१५।२२।५०	१।१७।४०। १	१।१९।५७।१
	१५	चं.	१।२२।१४।२३	१।२४।३२।३९	१।२६।५१।५४	१।२९।११। ९	२। १।३०।२४	२। ३।४९।३
पौष कृष्णपक्षः	१	मं.	२। ६। ८।५४	२। ८।२९।३१	२।१०।५०।३१	२।१३।११।३२	२।१५।३२।३३	२।१७।५३।३
	२	बु.	२।२०।१४।४२	२।२२।३७। ०	२।२४।५९।१९	२।२७।२१।३७	२।२९।४३।५६	३। २। ६।१
	३	गु.	३। ४।२८।२४	३। ६।५१।३३	३। ९।१४।४२	३।११।३७।५१	३।१४। १। ०	३।१६।२४।
	४	शु.	३।१८।४७।२१	३।२१।१०।४३	३।२३।३४। ५	३।२५।५७।२७	३।२८।२०।५०	४। ०।४४।
	५	श.	४। ३। ७।११	४। ५।३०।१५	४। ७।५३।१९	४।१०।१६।२३	४।१२।३९।२७	४।१५। १।५
	६	र.	४।१७।२४।१२	४।१९।४६।२८	४।२२। ८।४४	४।२४।३०।५९	४।२६।५३।१०	४।२९।१४।
	७	चं.	५। १।३५। ६	५। ३।५६। ४	५। ६।१७। २	५। ८।३८। ०	५।१०।५८।१७	५।१३।१७।३
	८	मं.	५।१५।३६।५७	५।१७।५६।१७	५।२०।१५।३७	५।२२।३४।५७	५।२४।५२।५१	५।२७।१०।
	१०	बु.	५।२९।२७।१७	६। १।४४।३१	६। ४। १।४४	६। ६।१८।५८	६। ८।३४।१३	६।१०।४९।
	११	गु.	६।१३। ४। २	६।१५।१८।५६	६।१७।३३।५१	६।१९।४८।४५	६।२२। १।११	६।२४।१३।२
	१२	शु.	६।२६।२५।३४	६।२८।३७।४५	७। ०।४९।५७	७। ३। २। ८	७। ५।१२। ८	७। ७।२१।४
	१३	श.	७। ९।३१।२३	७।११।४१। ०	७।१३।५०।३८	७।१६। ०।१५	७।१८। ८। १	७।२०।१४।५
	१४	र.	७।२२।२१।५५	७।२४।२८।५२	७।२६।३५।४९	७।२८।४२।४६	८। ०।४८।५२	८। २।५३।३
	३०	चं.	८। ४।५८।२४	८। ७। ३।१०	८। ९। ७।५७	८।११।१२।४३	८।१३।१७।२९	८।१५।२०।१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh,Delhi Collection

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्र) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः

मास.	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
पौष शुक्लपक्षः	१	मं.	८।१७।२२।५३	८।१९।२५।३३	८।२१।२८।१३	८।२३।३०।५३	८।२५।३३।३३	८।२७।३५।३४
	१	बु.	८।२९।३६।४८	९। १।३८। ३	९। ३।३९।१८	९। ५।४०।३३	९। ७।४१।४७	९। ९।४३। २
	२	गु.	९।११।४३।२६	९।१३।४३।४२	९।१५।४३।५८	९।१७।४४।१४	९।१९।४४।३१	९।२१।४४।४७
	३	शु.	९।२३।४५। ३	९।२५।४५।१७	९।२७।४५।३२	९।२९।४५।४६	१०। १।४६। १	१०। ३।४६।१५
	४	श.	१०। ५।४६।३०	१०। ७।४७। ९	१०। ९।४८। ९	१०।११।४९। ९	१०।१३।५०। ९	१०।१५।५१। ९
	५	र.	१०।१७।५२। ९	१०।१९।५३। ९	१०।२१।५५।१६	१०।२३।५७।२७	१०।२५।५९।३९	१०।२८। १।५०
	६	चं.	११। ०। ४। २	११। २। ६।१३	११। ४। ९।१६	११। ६।१३।२७	११। ८।१७।३९	११।१०।२१।५०
	७	मं.	११।१२।२६। २	११।१४।३०।१३	११।१६।३४।२५	११।१८।४०।४२	११।२०।४७। ४	११।२२।५३।२७
	८	बु.	११।२४।५९।५०	११।२७। ६।१३	११।२९।१२।३५	०। १।२०।३६	०। ३।२९।३३	०। ५।३८।३१
	९	गु.	०। ७।४७।२९ -	०। ९।५६।२७	०।१२। ५।२४	०।१४।१५।२७	०।१६।५६।५७	०।१८।३८।२८
	१०	शु.	०।२०।४९।५८	०।२३। १।२९	०।२५।१२।५९	०।२७।२५।२६	०।२९।३९।४०	१। १।५३।५६
	११	श.	१। ४। ८।१२	१। ६।२२।२८	१। ८।३६।४४	१।१०।५१।५९	१।१३। ८।४६	१।१५।२५।३३
	१२	र.	१।१७।४२।२०	१।१९।५९। ८	१।२२।१५।५५	१।२४।३३।४२	१।२६।५२।१८	१।२९।१०।५५
	१३	चं.	२। १।२९।३१	२। ३।४८। ८	२। ६। ६।४४	२। ८।२६।५७	२।१०।४७।४०	२।१३। ८।२३
	१४	मं.	२।१५।२९। ६	२।१७।४९।४९	२।२०।१०।३९	२।२२।३२।३४	२।२४।५४।३०	२।२७।१६।२६
	१५	बु.	२।२९।३८।२२	३। २। ०।१७	३। ४।२२।३६	३। ६।४५।२५	३। ९। ८।१४	३।११।३१। ३
माघ कृष्णपक्षः	१	गु.	३।१३।५३।५२	३।१६।१६।४१	३।१८।४०। ४	३।२१। ३।३३	३।२३।२७। ३	३।२५।५०।३३
	२	शु.	३।२८।१४। २	४। ०।३७।२६	४। ३। ०।३०	४। ५।२३।३४	४। ७।४६।३८	४।१०। ९।४३
	४	श.	४।१२।३२।४७	४।१४।५५।२९	४।१७।१८। ०	४।१९।४०।३१	४।२२। ३। २	४।२४।२५।३३
	५	र.	४।२६।४८। १	४।२९। ९।२१	५। १।३०।४२	५। ३।५२। २	५। ६।१३।२३	५। ८।३४।४३
	६	चं.	५।१०।५५।२४	५।१३।१५। ३	५।१५।३४।४२	५।१७।५४।२१	५।२०।१४। १	५।२२।३३।४०
	७	मं.	५।२४।५३।५५	५।२७। ९।२७	५।२९।२६।५९	६। १।४४।३२	६। ४। २। ४	६। ६।१९।३६
	८	बु.	६। ८।३५।२७	६।१०।५१। ०	६।१३। ६।३४	६।१५।२२। ७	६।१७।३७।४१	६।१९।५३।१४
	९	गु.	६।२२। ६।१२	६।२४।१९। ३	६।२६।३१।५४	६।२८।४४।४५	७। ०।५७।३६	७। ३।१०।२७
	१०	शु.	७। ५।२०।५१	७। ७।३१। २	७। ९।४१।१३	७।११।५१।२५	७।१४। १।३६	७।१६।११।४७
	११	श.	७।१८।१९।५४	७।२०।२७।२७	७।२२।३५। १	७।२४।४२।३४	७।२६।५०। ७	७।२८।५७।४१
	१२	र.	८। १। ४।४३	८। ३।११।१२	८। ५।१७।४१	८। ७।२४।१०	८। ९।३०।३९	८।११।३७। ८
	१३	चं.	८।१३।४२।४३	८।१५।४८।२५	८।१७।४६। ७	८।१९।४७।४९	८।२१।४९।३२	८।२३।५१।१४
	१४	मं.	८।२५।५२।५६	८।२७।५४।३२	८।२९।५६। ३	९। १।५७।३४	९। ३।५९। ५	९। ६। ०।३५
	३०	बु.	९। ८। २। ७	९।१०। ३।३७	९।१२। ४। ४	९।१४। ४।२१	९।१६। ४।५८	९।१८। ५।२६
माघ शुक्लपक्षः	१	गु.	९।२०। ५।५२	९।२२। ६।१९	९।२४। ६।४०	९।२६। ६।५१	९।२८। ७। २	१०। ०। ७।१३
	२	शु.	१०। २। ७।२४	१०। ४। ७।३५	१०। ६। ७।४६	१०। ८। ८।२९	१०।१०। ९।२५	१०।१२।१०।२१
	३	श.	११।१४।११।१७	१०।१६।१२।१३	१०।१८।१३।१०	१०।२०।१४।१२	१०।२२।१५।५२	१०।२४।१७।३३
	३	र.	१०।२६।१९।१३	१०।२८।२०।५४	११। ०।२२।३४	११। २।२४।१५	११। ४।२६।५९	११। ६।३०।३७
	४	चं.	११। ८।३४।१६	११।१०।३७।५५	११।१२।४१।३४	११।१४।४५।१२	११।१६।४९। १	११।१८।५४।४८
	५	मं.	११।२१। ०।३५	११।२३। ६।२२	११।२५।१२। ९	११।२७।१७।५६	११।२९।२३।४३	०। १।३१।२०
	६	बु.	०। ३।३६।४०	०। ५।४८। १	०। ७।५६।२१	०।१०। ४।४२	०।१२।१३। २	०।१४।२२।३१
	७	गु.	०।१६।३३।३७	०।१८।४४।३५	०।२०।५५।३४	०।२३। ६।३२	०।२५।१७।३०	०।२७।२९।२७
	८	शु.	०।२९।४३। ७	१। १।५६।४७	१। ४।१०।२७	१। ६।२४। ७	१। ८।३७।४७	१।१०।५२।३५
	९	श.	१।१३। ८।३२	१।१५।२४।४०	१।१७।४०।४८	१।१९।५६।५५	१।२२।१३। २	१।२४।३०।१३
	१०	र.	१।२६।४८।२०	१।२९। ६।२८	२। १।२४।३५	२। ३।४२।४२	२। ६। ०।४०	२। ८।२०।३२
	११	चं.	२।१०।४०।४८	२।१३। १। ४	२।१५।२१।२०	२।१७।४१।३६	२।२०। १।५३	२।२२।२३।३३
	१३	मं.	२।२४।४५।१४	२।२७। ६।५५	२।२९।२८।३६	३। १।५०।१६	३। ४।१२।१९	३। ६।३५। ०
	१४	बु.	३। ८।५७।४१	३।११।२०।२२	३।१३।४३। ३	३।१६। ५।४५	३।१८।२८।५०	३।२०।५२। २
	१५	गु.	३।२३।१५।१५	३।२५।३८।२७	३।२८। १।४०	४। ०।२४।४९	४। २।४८। १	४। ५।११।१३

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री संवत् २०१३ रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टम् ०।०	इष्टम् १०।०	इष्टम् २०।०	इष्टम् ३०।०	इष्टम् ४०।०	इष्टम् ५०।०
फाल्गुन कृष्णपक्षः	२	बु.	४। ७।३४।२५	४। ९।५७।३७	४।१२।२०।५०	४।१४।४३।४३	४।१७। ६।२४	४।१९।२९।
	३	श.	४।२१।५१।४६	४।२४।१४।२७	४।२६।३७। ९	४।२८।५८।४६	५। १।२०।२१	५। ३।४१।५
	४	र.	५। ६। ३।२२	५। ८।२५। ८	५।१०।४६।१३	५।१३। ६।१७	५।१५।२६।२१	५।१७।४६।२
	५	चं.	५।२०। ६।३०	५।२२।२६।३४	५।२४।४५।१७	५।२७। ३।१२	५।२९।२१। ८	६। १।३९।
	६	मं.	६। ३।५७। ०	६। ६।१४।५५	६। ८।३१।१५	६।१०।४७।११	६।१३। ३। ८	६।१५।१९।
	७	बु.	६।१७।३५। ०	६।१९।५०।५७	६।२२। ४।३३	६।२४।१७।५९	६।२६।३१।२६	६।२८।४४।५
	८	गु.	७। ०।५८।१९	७। ३।११।४६	७। ५।२२।४६	७। ७।३३।३५	७। ९।४४।२५	७।११।५५।१
	९	शु.	७।१४। ६। ४	७।१६।१६।५३	७।१८।२५।२८	७।२०।३३।३४	७।२२।४१।४०	७।२४।४९।४
	१०	श.	७।२६।५७।५३	७।२९। ५।५९	८। १।१२।३७	८। ३।१८।१०	७। ५।२३।४३	८। ७।२९।१
	११	र.	८। ९।३४।५०	८।११।४०।२३	८।१३।४५।३१	८।१५।४९। ०	८।१७।५२।२९	८।१९।५५।५
	११	चं.	८।२१।५९।२८	८।२४। २।५७	८।२६। ६।२६	८।२८। ८।३८	९। ०।१०।२०	९। २।१२।
	१२	मं.	९। ४।१३।४५	९। ६।१५।२७	९। ८।१७। ९	९।१०।१८।४१	९।१२।१९।१५	९।१४।१९।४
	१३	बु.	९।१६।२०।२४	९।१८।२०।५८	९।२०।२१।३२	९।२२।२२। ६	९।२४।२२।३०	९ ।२६।२२।४
	१४	गु.	९।२८।२२।५२	१०। ०।२३। ३	१०। २।२३।१४	१०। ४।२३।२५	१०। ६।२३।३६	१०। ८।२४।
	३०	शु.	१०।१०।२४।३०	१०।१२।२४।५९	१०।१४।२५।२८	१०।१६।२५।५७	१०।१८।२६।२६	१०।२०।२७।
फाल्गुन शुक्लपक्षः	१	श.	१०।२२।२८।४३	१०।२४।३०।१८	१०।२६।३१।५३	१०।२८।३३।२८	११। ०।३५। २	११। २।३६।३
	२	र.	११। ४।३९।१४	११। ६।४२।२४	११। ८।४५।३४	११।१०।४८।४४	११।१२।५१।५४	११।१४।५५।
	३	चं.	११।१६।५८।३२	११।१९। ३।५४	११।२१। ९।१४	११।२३।१४।३३	११।२५।१९।५३	११।२७।२५।१
	४	मं.	११।२९।३०।३२	०। १।३७।४२	०। ३।४५।२५	०। ५।५३। ९	०। ८। ०।५२	०।१०। ८।३
	५	बु.	०।१२।१६।१९	०।१४।२५।२५	०।१६।३५।४९	०।१८।४६।१३	०।२०।५६।३७	०।२३। ७।
	६	गु.	०।२५।१७।२५	०।२७।२८।४६	०।२९।४१।४६	१। १।५४।४६	१। ४। ७।४६	१। ६।२०।४
	७	शु.	१। ८।३३।४६	१।१०।४७।४३	१।१३। ३।२५	१।१५।१९। ८	१।१७।३४।५०	१।१९।५०।३
	८	श.	१।२२। ६।१५	१।२४।२२।५४	१।२६।४०।३८	१।२८।५८।२२	२। १।१६। ६	२। ३।३३।५
	९	र.	२। ५।५१।३४	२। ८।१०।३७	२।१०।३०।२३	२।१२।५०।४०	२।१५। ९।५७	२।१७।२९।४
	१०	चं.	२।१९।४९।३०	२।२२।१०।५१	२।२४।३२।१९	२।२६।५३।४७	२।२९।१५।१५	३। १।३६।४
	११	मं.	३। ३।५८।२८	३। ६।२०।५६	३। ८।४३।२५	३।११। ५।५३	३।१३।२८।२२	३।१५।५०।५
	१२	बु.	३।१८।१३।४४	३।२०।३६।५१	३।२२।५९।५८	३।२५।२३। ५	३।२७।४६।१२	४। ०। ९।१
	१३	गु.	४। २।३२।३७	४। ४।५५।५०	४। ७।१९।१६	४। ९।४२।३६	४।१२। ५।५५	४।१४।२९।
	१४	शु.	४।१६।५२।५१	४।१९।१६।४०	४।२१।३७।२९	४।२४। ०।१८	४।२६।२३। ७	४।२८।४५।
	१५	श.	५। १। ९।५९	५। ३।२८।५२	५। ५।५०।४६	५। ८।१२।३९	५।१०।३४।१०	५।१२।५४।३
चैत्र कृष्णपक्षः	२	र.	५।१५।१४।५७	५।१७।३५।२०	५।१९।५५।४४	५।२२।१६। ७	५।२४।३५।२५	५।२६।५३।४
	३	चं.	५।२९।१२। ९	६। १।३०।३१	६। ३।४८।५३	६। ६। ७।१५	६। ८।२४।१३	६।१०।४०।४
	४	मं.	६।१२।५७।१५	६।१५।१३।४६	६।१७।३०।१७	६।१९।४६।४८	६।२२। १। ५	६।२४।१५।
	५	बु.	६।२६।२९।१०	६।२८।४३।१२	७। ०।५७।१५	७। ३।११।१७	७। ५।२२।४५	७। ७।३४।
	६	गु.	७। ९।४५।१९	७।११।५६।३६	७।१४। ७।५४	७।१६।१९।११	७।१८।२८। ०	७।२०।३७।
	७	शु.	७।२२।४५।४६	७।२४।५४।२९	७।२७। ३।१३	७।२९।११।५६	८। १।१८।५९	८। ३।२५।
	८	श.	८। ५।३२। ५	८। ७।३७। ८	८। ९।४३।११	८।११।४९।१४	८।१३।५४।४१	८।१५।५८।३
	९	र.	८।१८। २।२५	८।२०। ६।१८	८।२२।१०।१०	८।२४।१४। २	८।२६।१७।५५	८।२८।२०।१
	१०	चं.	९। ०।२२।२२	९। २।२४।२७	९। ४।२६।३१	९। ६।२८।३६	९। ८।३०।४०	९।१०।३२।२
	११	मं.	९।१२।३३। ९	९।१४।३३।५४	९।१६।३४।४०	९।१८।३५।२५	९।२०।३६।१०	९।२२।३६।५
	११	बु.	९।२४।३७।१९	९।२६।३७।३०	९।२८।३७।४१	१०। ०।३७।५२	१०। २।३८। ३	१०। ४।३८।१
	१२	गु.	१०। ६।३८।२५	१०। ८।३८।४५	१०।१०।३९। ६	१०।१२।३९।२७	१०।१४।३९।४९	१०।१६।४०।१
	१३	शु.	१०।१८।४०।३२	१०।२०।४१। २	१०।२२।४२।१०	१०।२४।४३।१२	१०।२६।४४।१४	१०।२८।४५।१
	१४	श.	११। ०।४६।१७	११। २।४७।१८	११। ४।४९।३१	११। ६।५२। ९	११। ८।५४।४७	११।१०।५७।२
	३०	र.	११।१३। ०। ३	११।१५। २।४१	११।१७। ५।४९	११।१९।१०।४५	११।२१।१५।४१	११।२३।२०।३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

घण्टात्मक स्पष्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घट्यादिक इष्ट निकालने की रीति

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले हो तो जन्म प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घन्टे मिन्टों को घटाकर जो मिन्ट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि न के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों के ड़ी पल बनाकर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयात् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ े से पीछे अर्द्धोदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने ण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बनाकर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घड़ी द्वारा अभीष्ट दिन को अपने ग्राम का सूर्योदय पहिले मिला कर ट कर रखें, या दूसरे दिन मिला लें, फिर जितने घन्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घड़ी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता । इसमें स्टेन्डर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट—१ घड़ी में २४ मिनट, एक मिनट में २॥ पल और एक सैकिण्ड में २॥ विपल होते हैं।

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन

यदि किसी स्थान पर अंग्रेजी घड़ी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिए कि सूक्ष्मेष्ट ज्ञानार्थ आर्यभटोक्तद्वादशांगुलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतला नीचे से मोटा गोलाकार) से इष्टकाल साधन करे—परद्युमानं दिनमानवर्जितं नगघ्नमक्षाप्तमहस्तु मध्यभा। भावार्थ—परमदिनमान (स्वदेशीय सब दिनमानों से बड़ा दिनमान) जो सूर्य की सायन कर्क संक्रांति के दिन होता है, उसमें से इष्ट दिनमान को हीन करे, शेष को सात गुणा करे फिर ५ से भाग दें जो लब्ध मिले सो इष्ट दिन में उसी देश की मध्यभा (मध्याह्न छाया) होती है, अर्थात् बारह अंगुल के शंकु की छाया होती है। द्युमध्यभोना दशयुङ् निजेष्टभा शराहताह-र्मितिमुद्धरेत्सदा। क्रमान्मतापूर्वपराद्यु खण्डयोर्द्ध योग्वाप्ता गतगम्यनाडिका॥ जिस समय का इष्टकाल जानना हो उस समय शंकु की अंगुल द्व्यंगुलात्मक छाया (इष्टभा) को दश १० में युक्त करें फिर इस योग में पूर्व सिद्ध मध्यभा को घटा दें, जो शेष बचे वह भाजक (जिस का भाग देना है) होता है, अपने घटी पलात्मक दिनमान को पाँच गुणा कर देने पर भाज्य (जिस अंक में भाग देना है) होता है, भाज्य में भाजक का भाग देकर दो फल लाना जो फल आवे वह घटी पलात्मक इष्टकाल आता है। परन्तु इसमें यह स्मरण रखें कि यदि मध्याह्न से पहले नापा हो तो इतने घटी पल गत और मध्याह्न से पीछे नापा हो तो, इतने घटी पल शेष दिन है ऐसा जानना।

शुक्रोपासित मृतसञ्जीवनी मन्त्रः

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गोदेवस्य धीमहि सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं धियोयोनः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

स्वरशास्त्र का चमत्कार

(१) प्रातः जागते समय जिस नथने से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ को देखकर श्वास अन्दर खींचे, पुनः देखें, भगवान् को स्मरण कर हाथ चूमे। चलते श्वास वाली ओर का पाद प्रथम पृथ्वी पर रखें। सदैव ऐसा ही करें। सदा सफलता व प्रसन्नता प्राप्त होगी, सभी दुःख दूर होंगे। (२) दिन को बायाँ और रात को दायाँ स्वर चलाया करें। भोजन करने के बाद आधा घण्टा बाईं करवट लेटें, पाखाना करते और नहाते समय दायां स्वर चलाया करें। जल पीने के बाद दाईं करवट लेटें और पेशाब करते समय बायां स्वर चलाया करें। रोग पास न फटकने पायेंगे। (३) जिस से कार्य लेना हो उसे चलते श्वास की ओर रख कर बातचीत करें, काम निकल आयेगा। (४) पीड़ा आरम्भ होते समय जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द कर दें, दूसरा स्वर चलायें, पीड़ा भाग जायगी। (५) शत्रु, रूठे मित्र या क्रोधित अफसर के पास जाने से पहले शनैः शनैः श्वास अन्दर खेंच कर नाभी में ठहरायें, उस पुरुष की मूर्ति नाभि में देखें फिर शनैः शनैः श्वास बाहर निकालें, नाभि में बैठी उसकी मूर्ति का ध्यान फिर धरें, श्वास अन्दर खेंचते हुए उस रूठे पुरुष के विचार मन में लिए उसके पास जायें, उसे बन्द नथने की ओर करके बातचीत करें, इच्छाएँ पूर्ण होंगी। (६) रोग सरदी से हो तो दायां और गर्मी से हो तो बायां स्वर चलाने से आराम होगा। (७) शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को दायां स्वर चलते समय दृढ़ निश्चयपूर्वक पत्र लिखें अवश्य आशा पूर्ण होगी। (८) रात के पिछले पहर पुरुष का दायां और स्त्री का बायां स्वर चलते समय भोग हो तो स्त्री-पुरुष में अटूट प्रेम बढ़े व स्वास्थ्य ठीक रहे। (९) दोनों नथने चलते समय सर्व कार्य छोड़ ईश्वराराधन से इच्छाएँ पूर्ण होंगी।

अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थमंगलादीनां मन्त्राः॥

मङ्गलामन्त्रः ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	पिंगलामन्त्रः ॐ ग्लौं पिंगले वीरकारिणीप्रसादे फट्स्वाहा	धान्यामन्त्रः ॐ श्रीं धनदे धन्ये स्वाहा	भ्रामरीमन्त्र ॐ भ्रामरिजगतामधीशरि भ्रामरि क्लीं स्वाहा
भद्रिका मन्त्रः ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय	उल्कामन्त्रः ॐ उल्के मम रोगंनाशय जंभयस्वाहा	सिद्धामन्त्र ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय	संकटामन्त्र ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा

प्रहरवशात् भूकम्पफलज्ञानाय चक्र

दिन प्र. प्रहर	दिन द्वि. प्रहर	दिन तृ. प्रहर	दिन च. प्रहर	रात्री प्र० प्रहर	रात्री द्वि० प्रहर	रात्री तृ० प्रहर	रात्री च० प्रहर
राजा मृत्यु	मन्त्रीभय	पशुभय	अन्नका नाश	अन्नवृद्धि	राज्यभय	प्रजापीड़ा	राजयुद्ध

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ तेजी मन्दी निकालने की ध्रुवा।

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ६४	मङ्गल ८०६
बुध ७०२	बृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुवा		२०८५

अथ तिथि ध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपद ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी ३५७
पंचमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोदशी ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	अमावस्या १६६

अथ नक्षत्र ध्रुवा ॥ ३ ॥

अश्वि १७६	भरणी ६८३	कृत्ति ३७०	रोहि० ७७५	मृग ६८२	आर्द्रा १४६	पुन ५४०
पुष्य ६३४	अश्ले १७०	मघा ७३	पू. फा. ८५	उ. फा. १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा ७३४	अनु ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू.षा. ६१४	उ. षा. ६२३
अभि ६८३	श्रव ६५७	धनि ५००	शत० ५६४	पू. भा. ३३६	उ.भा. १८३	रेवती ७२०

अथ मास ध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशा० ६३	ज्येष्ठ ६५
आषा ६७	श्राव ६९	भाद्र ७१
आश्वि ७३	कार्ति ५१	मार्ग ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गु ६५

[अथ] सूर्य राशि ध्रुवा ॥५॥

[मे]ष	वृष	मिथुन
[...]२०	७६२	५१०
कर्क	सिंह	कन्या
[...]१८	८३०	२६०
[तु]ला	वृश्चिक	धनु
[...]०३	७११	२२४
[म]कर	कुम्भ	मीन
[...]५४	२७०	५८६

अथ देश तथा ग्रामों की ध्रुवा ॥ ६ ॥

कलकत्ता २४७	नागपुर १६६	आसाम ७६१	इटावा ८६०
हरद्वार २७२	बीकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १६८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगून १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थों की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चाँदी ७६०	ताम्बा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कांसा २४९	पत्थर १६३	मोती १४२
रूई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हैसियन ७३८	सुता १०३	तमाखू २४०	सुपारी २५२	लाह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड़ २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान ७१२	गेहूँ २३२	मूंग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसो ८५८	राहर ३३३	नीमक ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३२	बैल १६२	महिषी ६१२	भेड़ा ६१८	हाथी ८३०	घोड़ा ८३५

अथ तेजी-मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १	चन्द्र २	भौम ३
तेज	अतिमन्द	तेज
राहु ४	बृहस्पति ५	शनि ६
अतितेज	मन्द	तेज
बुध ७	केतु ८	शुक्र ९
सम	तेज	तेज

॥ अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति ॥

जिस देश की जिस वस्तु की,, जिस दिन तेजी मन्दी निकालना हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवाओं का योग (जोड़) कर नौ ९ का भाग देकर शेष से जिस दिन का विचारना है उस दिन से शेष तुल्य कोष्ठ में ८ आठवें चक्रमें देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेना।

उदाहरण —जैसे कलकत्ता में चैत्र सुदी १ गुरुवार को अश्विनी नक्षत्र में चान्दी की तेजी मन्दी जाननी है तो कलकत्ते की ध्रुवा २४७ चैत्र की ६१ प्रतिपदा की ६१० गुरुवार की ७१३ अश्विनी नक्षत्र की ध्रुवा १७६ और चान्दी की ७६० सूर्य मीन राशि का ध्रुवा ५८६ है। इन सब का जोड़ ३१५३ है। इसमें नौ का भाग देने से शेष ३ बचा, अतः आठवें चक्र में देखा तो गुरु से तीसरा कोष्ठ तेजी मन्दी चक्र में बुध हुआ। इसका फल वहीं पर सम लिखा। विशेष प्रकार तेजी मन्दी जानना हो तो हमारा ग्रन्थ "अर्घमार्तण्ड" (मूल्य १०) देखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्वशुभकार्यों के लिए वर्जित काल— जन्ममास, जन्मतिथि, जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्ध याम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां, परिघयोग का आधा भाग, शूल योग के आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदि की ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पल का पापग्रह, नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन, उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४।८।१२ वां चन्द्रमा तथा पापग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित है। सब शुभ कार्यों के लिए साधारणत: शुभमुहूर्त—अपने जन्म लग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हों, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभ कार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है।

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान — इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा; व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन, संन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिये ॥ सीमन्तजातकार्दानि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है। गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन और वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पटविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥ द्वादशचन्द्रप्रशंसा-गर्भाधान जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषांबलम्
नृप	सर्वस-		विद्या-	विवाहे			पापकर्मणि	क्रूर	एतत्
दर्शने	त्कार्ये	संग्रामे	भ्यासे	चोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां		कृत्ये	कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः—

वधबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत् ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्म विष्ट्यां तु सिद्ध्यति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥ **आवश्यके परिहारः**— दिवापरार्द्धजा विष्टिः पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
प.	आ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी ५ कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्लाशुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) ॥ एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरुसूर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ **आवश्यके परिहारः**— मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगा गोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि (मकरगतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहो प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। **अपवादः**—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीच स्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ **अन्यच्च**—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे दिनत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे)।

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ **ताराऽपवादः**— पर्याये प्रथमे वर्ज्याः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो वह शास्त्र सम्मत शुभ मुहूर्त में करे तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद सिद्ध होता है।

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। **शुभ नक्षत्र**—तीनों उत्तरा. मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। **शुभलग्न**—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से समरात्रि हो॥

चित्रा पुन. पुष्य. अश्विनी गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिये अशुभ काल

भद्रा, ४,६,८,९,१४,१५,३० तिथियां, संक्रांति का दिन; संध्याकाल; मंगल, रवि, शनिवार; रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; जेष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४,८,१२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५,९,१ लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५,१,१५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६,११,१ तिथियों के आदि की एक घड़ी; निधनतारा; जन्म नक्षत्र, मूल,भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयका लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्दबल देखना चाहिये, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १,२,३,५,७,१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १,४, ५,७,९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३,६,११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं॥

सीमन्तसंस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है॥

[illegible]—[illegible]धान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिये।

मेधाजननासंस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिला के "ॐभूस्त्वयि दधामि, ॐभुवस्त्वयि दधामि, ॐस्वस्त्वयि दधामि, ॐभूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु घृत चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. सृ. हों, तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कहीगई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्रवार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जल पूजन न करना चाहिये।

जातकर्म और नामकर्मका मुहूर्त—संक्रांति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में, जन्मकाल से ११ वें या १२ वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को, मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६ ७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम होता है॥

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. मू. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम, शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजनपूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करावें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

भूम्युपवेशनमुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी [illegible] में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनीकटिसूत्रबांध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्र:— रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयु:प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त—जन्म मास से ६, ८, १० या १२ वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें में कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं ॥

कर्णवेध का मुहूर्त—चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन या ६वें, ७वें ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुभ हो, १, ४,५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, तुला वृष धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के करने से मनुष्य के हार्निया(अंत्रवृद्धि)जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त—कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डन का मुहूर्त—गर्भाधानकाल से या जन्म काल से विषम अर्थात् ३ रे. ५वें,७वें, वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन छोड़कर, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये ॥

मुण्डन कर्म में विशेष—स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो—"यथाकुल-धर्मंव:" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त—मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिये शुभ हैं। वर्जित काल—शनि, रवि, भौमवार हजामत से नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४ ८, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के लिए, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है ॥

विशेषफल—यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ,ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है ॥ किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भांड़ इत्यादि वह किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं ॥ वर्णभेद से क्षौर का वार—ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त—जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र०स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें ॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त—उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२, तिथियों में मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले ० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ॥

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त—सू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० अश्ले० म०, तीनोंपूर्वा० भ० कृ० वि० आर्द्रा उ० षा० शत० नक्षत्र शुभ हैं ॥

सीने पिरोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त—अश्वि० पु० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध० चन्द्र वृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं ॥

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त— यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति(सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जिनेर्वा इति पारस्करमन्वादीना मते विकल्प:)ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसकेबाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३उत्तरा रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मू.मृ.रे.चि. अनु.तीनों पूर्वा आर्द्रा वेधरहिता इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. च. बु. (बुधस्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल२।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जसे आषाढ़शुक्ल १०, ज्येष्ठशुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोगबाण को छोड़ कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८वें स्थान में चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ है। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथमें	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटी के म. ध्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा.	पूफा.	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मय	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	बानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्र साधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले.	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य.	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु.	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	बानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गज दंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्र लघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दुल	४	आश्ले.	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पू. भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	मंचक	२	चि.	चित्रा	१६
उ. भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढा

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनिनाडी गण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं॥

मेलापक सारणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र बर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (—) और जहां अधिक समझा गया वहां धनका चिह्न (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक वा चिह्न नहीं हैं वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे बर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहाँ मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुण में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ी दोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिलें तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्—द्व्यर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्मम-र्थाङ्कके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत्॥

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा-विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ कन्या के नक्षत्र से बर का नक्षत्र दूसरा हो तो बर का नाशक है, ग्रहमैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेलापक सारिणी

कन्यायाः	वरस्य	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।॥	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।॥	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।॥	ह १	चि ॥	चि ॥	स्वा १	वि ।॥	वि ।	अ १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।॥	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।॥	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२८ / ३	३३ / ०	२७॥	१७॥ / ४	२३॥ / -४	२२॥ / -४	२५॥	१६॥ / ३	१७॥ / ३	२२॥ / ३	३०॥	२७	२० / +५	२४ / ५+	१४॥ / ३५	९॥ / ३६	१०॥ / २३६	१२॥ / ६	२२	२८ / -२	२२	१८॥ / -६	२४॥ / -६	१३ / ३६	१२॥ / ३५	२४॥ / +५	२३ / ५+	२०	२६	२०	१९॥	१४॥ / ३	१५॥ / ३	१४॥ / ३४	२३॥ / ६+	२६ / ४+
	भ १	३३	२८ / ३	२८ / ०१	१८ / ०४१	२६॥ / -४	१४॥ / ३४	१७॥ / ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ / ३	२४॥ / १	१९ / -१५	१७ / ३५	२८ / ५+	१९ / ६	१०॥ / ६	३॥ / १३६	१३ / १३	२८	२१ / -५	१८॥ / -१६	१७॥ / ३६	१९॥ / १६	१९॥ / -१५	१७॥ / ३५	२५॥ / ५+	२७॥	२६	१० / १२३	९॥ / १३२	१९॥ / -१	२३ / -२	२२॥ / २४+	१६॥ / ३४	२५॥ / ४+
	कृ ।	२६॥	२८ / १	२८ / ३	१८ / ३४	१० / ०१४४	१६॥ / ४	१९॥	१९॥ / १	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ / ३	१५॥ / ३५	१९ / १५	२० / १५	१५ / १६	१४ / ६	१७॥ / ६	२७	१४ / ३	१९ / ३	१६॥ / ३६	१९॥ / -६	२५॥ / -६	२५ / ५+	१९ / १२५	१९॥ / ३१५	१३॥ / १३	१३॥ / २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ / ९	१७॥ / १४	१९॥ / १४	२०॥ / ३४
वृष	कृ ।॥	१९ / ४	१९ / १४	१९ / ३४	२८ / ३	१८॥ / १३	२६॥	१७ / ४+	१७ / १४	१७ / ४+	२१	२३	१९ / ३	१९ / ३	२१ / १	२२ / १	२० / १५	१८ / ५+	२३ / ५+	२२ / -६	९ / ३६	१४ / ३६	२१॥ / ३	२४॥	३०॥	२२ / ६	१५ / १२६	७ / १३६	१२ / १३५	१०॥ / ३५२	२४॥ / +५	२९	३०	२३ / १	२० / १	२२ / १	१३ / ३
	रो १	२३॥ / -४	२३॥ / -४	१९ / ३४१	२० / ३१	२८ / ३	३६ / ०	२६॥ / ०४	२३ / ४+	२२ / ४+	२६	२७	१२ / ३१	१०॥ / ३१	२४॥	२७	२५॥ / ५+	२५॥ / ५+	१८॥ / -१५	१७॥ / -१६	१५ / ३६	८ / ३१६	१४॥ / ३१	२९॥	२३॥ / १	१३॥ / १६	१९॥ / ६	१४ / ३६२	१६ / ३५२	१८ / ३५	१९ / -१५	२४॥ / -१	२४ / -१	२९	२६	२७	१९ / ३
	मृ ॥	२३॥ / -४	१४॥ / ३६	१८॥ / -४	२७॥	३५	२८ / ३	१८॥ / ३४	२३॥ / ०४	२२॥ / ४+	२६	१९ / ३	२१	१९॥	१५॥ / ३	२४॥	२३ / ५+	२५॥ / ५+	११॥ / ३५	१०॥ / ३६	२४॥ / -६	१७ / -६	२३॥	२१॥ / ३	२४॥	१४॥ / ६	१०॥ / ३६	१६॥ / २६	२१॥ / २५+	२६ / ५+	१२ / ३५	१७॥ / ३	२६॥	२८	२५	१८ / ३	२७
मिथुन	मृ ॥	२६॥	१७॥ / ३	२१॥	१९ / +४	२६॥ / ४+	१९॥ / ३४	२८ / ३	३३ / ०	३१॥	१८॥ / -४	११॥ / ३०	१३॥ / ४	२२॥	१८॥ / ३	२७॥	३१॥	३४	२० / ३	१३ / ३५	२७ / +५	१९॥ / ५+	१३ / ६	१३ / ३६	१४ / ६	२३	१९ / ३	२५ / २+	१९॥ / -२६	२४ / -६	१० / ३६	१२ / ३५	२१ / ५+	२२॥ / ५+	२४	१७ / ३	२६
	आ १	१८॥ / ३	२०॥	२१॥ / १	१९ / +१४	२४ / -४	२५॥ / ४+	३४	२८ / ३	२५ / ३०	१२ / ०३४	२०॥ / -४	१२॥ / १६	२१॥ / १	२७॥	२०॥ / ३	२४॥ / ३	२४॥ / ३	२७ / १	२० / -१५	२७ / ५+	२० / १५	१३॥ / १६	१० / २६	५ / ११२२	१५ / १३	२८	२७	२१॥ / -६	२२॥ / -६	१७ / -१६	१९ / १५+	१२ / १३५	१७ / ३५	१८॥ / ३	२६	२६
	पुन ।॥	१८॥ / ३	२५॥	२१॥	१९ / ४+	२२ / ४+	२२ / ०+	३१॥	२४ / ३	२८ / ३	१४ / -३४	२१ / ४०	१५॥ / -४	२१॥ / +२	२५॥ / +२	१९॥ / ३	२३॥ / ३	२४॥ / ३	२६॥	१९॥ / ५+	२७ / ५+	२१ / ५+	१४॥ / ६	२०॥ / २६	६ / ३६	१४ / २	२७	२७	२१॥ / -६	२२॥ / -६	१६॥ / -६	१८॥ / +५	१३ / ३५	१६ / ३५	१७॥ / ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	२१॥ / ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ / ३	१० / ३४	१३ / ३४	२८ / १	३४ / ०	२८॥	१६॥ / +२४	२०॥ / २४	१४॥ / ३४	१६॥ / ३	१७॥ / ३	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ / ५+	२५ / ५+	१०॥ / ३५	७॥ / ३६	२०॥ / -२	२०॥ / -६	२६	२७	२१	१२ / ६	५॥ / ३६	९॥ / ३६	१६ / ३५	२५ / ५+	२४॥ / १+
	पु १	२९॥	२०॥ / ३	२६॥	२३	२५	१८ / ३	१०॥ / ३४	१८॥ / ४	२४ / ४	३४	२८ / ३	२९ / ०	१८॥ / +४	१४॥ / ३४	२३॥ / ४+	२५॥	२५॥	१९॥ / ३	१९ / ३	२५	२०॥	१९ / -५	१७ / ३५	२० / -५	१७॥ / ६	१२॥ / २३६	२०॥ / ६	२६	२७ / -२	१३ / ३	४ / ३६	१३ / ६	१७॥ / ६	२६ / ५+	१८ / ३५	२६ / ५+
	श्ले १	२५	२३ / १	२१॥ / ३	१८ / ३	१९ / ३१	२९	१९॥ / ४	१९॥ / १४	१३ / ४	२७॥	२८	२८ / ३	१५ / ०१४२	१५॥ / १४२	१७॥ / १४	१९॥ / १	१९॥	२४॥	२८	११ / ३	१६ / ३	१४॥ / ३५	१९ / -५	२५ / -५	२२॥ / ६	१५॥ / १६	७॥ / ३१६	१३ / १३	१३ / १	२६	१७ / ६	१८ / ६	११ / १६	१७॥ / १५	२० / १५	१२ / ३५
सिंह	म १	१९ / +५	१९ / १५	१५॥ / ३५	१६॥ / ३	२॥ / ३१	१७॥	२०॥	२७॥ / १	१९॥ / -२	१६ / +२४	१८॥ / ४+	१६ / ३४२	२० / ३	३० / ०१	२६॥ / १	१४॥ / १४	१४॥ / ४	१९॥ / ४	२३॥	१०॥ / ३	१५॥ / ३	२४॥ / ३	२४॥	३२	२४ / -५	१९ / १५	८॥ / १३५	३॥ / ३१६	४॥ / ३६	१७॥ / ६	२३॥	२४॥	१७॥ / १	१७॥ / १६	१८॥ / १६	१२ / ३६
	पूफा १	२५ / ५+	१७ / ३५	१९ / -१५	२० / १	२३॥	१५॥ / ३	१८॥ / ३	२६॥	२५॥ / -२	२२॥ / +२४	१६॥ / ३४	१६॥ / -११८	३० / -१	२८ / ३	३४ / ०	२४ / ०४	२०॥ / ४+	९॥ / १३४	९॥ / १३	२४॥	१७॥ / १	२३॥ / -१	२२॥ / १	२४॥ / -१	२० / १५+	१७ / ३५	२४ / ५+	१९ / ६	१८॥ / ६	५॥ / १३६	५॥ / १३	१०॥ / १	२३॥	२३॥ / -६	१६॥ / ३६	२४॥ / -६
	उफा ।	२५॥ / ३५	२५ / ५+	२० / -१५	२१ / १	२६	२६॥	२७॥	१९॥ / ३	१०॥ / ३	१४॥ / ३०	२५॥ / ४+	१८॥ / -१४	२६॥ / -१	३४	२८ / ३	१६ / ३४	१५ / ०३४	१२॥ / १४२	१६॥ / १२	२५॥	१६॥ / १२	२२॥ / -१२	३०॥	१६॥ / १३	९॥ / १३५	२५ / ५+	२५ / ५+	२० / ६	२० / ६	११॥ / १६	१७॥ / १	१०॥ / १३	१५॥ / ३	१५॥ / ३६	२६॥ / -६	२४॥ / ६-
कन्या	उफा ।॥	११ / ३६	२६ / ६	१६ / १६	२०॥ / +१५	२५॥ / ५+	२४ / ५+	३१॥	२१॥ / १	२३॥ / ३	१७॥ / ३	२७॥	२०॥ / १	१५॥ / १४	२३ / ४+	१७ / ३४	२८ / ३	२७ / ३०	२४॥ / १२+	१६॥ / १२४	२५॥ / ४+	१६॥ / १२४	१८ / १२	२१	१२ / १३	१४ / १३	२९॥	२९॥	२४ / +५	२४ / ५+	१५॥ / +१५	१६॥ / -१६	९॥ / ३१६	१४॥ / ३६	१७ / ३	२८	२६
	ह १	११ / २३६	१८॥ / ६	२९ / ५	२०॥ / +५	२३॥ / ५+	२४॥ / ५+	३०	२८॥ / ३	२३॥ / ३	१८॥ / ३	२६॥	२१॥	१६ / +४	२०॥ / ४+	१५ / ३४	२६ / ३	२८ / ३	२८ / ०	२० / ०४	२६॥ / ४+	१८॥ / ४+	२०	२१	१३॥ / ३	१४ / ३	२७	२८॥	२३ / ५+	२४ / ५+	१८ / ५+	१६ / -६	१०॥ / ३६२	१३॥ / ३६	१६ / ३	२६	२६
	चि ॥	१२॥ / ६	४॥ / १३६	१८॥ / ६	२३ / ५+	१८॥ / ३५	१०॥ / ३५	१८ / ३	२२ / १	२४॥	१९॥	११॥ / ३	२५॥	२०॥ / +४	६॥ / १३४	१३॥ / १२४	२४॥ / १२	२७	२८ / ३	२८ / ३	१९ / ३४	१२ / ०४	२५॥ / ४+	२७	३१	२५	२७	१२ / १३	२१ / १	१५॥ / १५	१७ / ५+	१५ / ३५	३६ / ३६	४ / -६	१६॥ / १६	१२ / १	१० / १३२	१६

विशेष द्रष्टव्य – रोहिण्यार्द्रामघेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम् । अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥ बीजे शके च्या सौम्ये एकराशीश्वरे यदि । नाडीदोषो न वक्तव्यः सर्वथा यत्नतो बुधैः ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मेलापक सारिणी

कन्याराशि	वरराशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ॥	मृ ॥	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।	चि ॥	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ॥	ध ॥	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
तुला	चि ॥	२२	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४	२० ३४	२८ ३	२७ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १३६०	१२ ६
	स्वा १	२९ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ २५	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२८	२३ ३	१२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ .४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१९ ६	११ ३६
	वि ।।।	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१८॥ ५+	२० १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ६+	२६ ४+	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ ०१	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	४ ३६
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३५	१९॥ ३	१३॥ १३	२१॥	११ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	१९॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२२॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२९॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१९ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१९॥ ४	१४॥ ४	१९ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	९॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	१९॥ ३५	१९ १५	२५ ५+	१९॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१९॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	२६
	पूषा १	२५॥ +५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१९ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२९॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ २+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ".+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१९ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १४	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२९॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।।।	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१९॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० :	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१९॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१७ ५+	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२९॥	३३॥ ३
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२३	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५.	१७ +५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ +४	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ ३५	६॥ ३६	१३ २	१९ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	१०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५+	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३.	२९ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।।।	१७॥ ३	२४॥ २+	१९॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ २	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२२॥ +४	२२॥ ४+	१८॥ -१४	२० -१	१९ १३	२८ ३	१६ ३४	२२ ०४	१९॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१९ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१९ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	१४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	३६ ५	१९ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६	१९ ६	१२॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२२॥ ३	२९॥	२९॥	२९॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ४+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३५	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	१९	१२ ६	१० ३६	४ ३६	१०॥ ३५	२६ ५+	२१ ५+	२६	२८॥	२०॥ :	२३॥ १	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२९॥ +२	३३	२८ ३

बिना मेल के विवाह —अयोजिता सन्धिलब्धा क्रीता स्नेहादिनार्पिता । स्वयमेवागता कन्या नवास्ता शुद्धिमर्हति । धनसंपद्वक्षुषो यस्मिन वरे यस्या च योषिति । तस्योवो बायत ... वान्यत्रित्वाद्विचिन्तयेत

ग्रहमेलापकविचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न ... पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा

१४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का ...

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भकूटअपवादविचार—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो, और कन्या की जन्म कुण्डली में उन्ही स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय, तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्तिं विधाय दारद्वयोगजायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शील-स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिये।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अति दुर्बल, लम्बी व पतली, झगड़ालू, अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना, और कुण्डली मिलन के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्न पूर्वक वर्जित करने चाहिये—(१) दारिद्रय, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का आभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३ रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठ कर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा, (गुड़ बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े-"तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते हचरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥ यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. प. स्वा. श्र. पूर्वा. ३, अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चहिये।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता हैं। अतः रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्व सम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धि प्रवदन्ति संन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः॥ द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। "वसिष्ठः—दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिये। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो बधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिये, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और व र के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—(आगे देखो पृष्ठ ९६)।

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्युदायका
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कठ्यां	३	साधनादर्थः
चरणे	४	साधनाद्वित्तः

मन्त्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. अश्वि. का. मार्ग. भा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सिंह. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हों तब मन्त्र-दीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सतीर्थ पर, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये॥

अनुष्ठानारम्भमुहूर्तम्—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. माघ. फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) र. सो. बु. शु. अ. रो. मृ. पुन. पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रे वा) चन्द्रतारानुकूलेः; गुरुशुक्रके उदय में शुभ लग्न से १२ वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्नगण्डान्त—कर्कसिंह की वृश्चिक धनु की और मीन मेष के आदि अन्त की आधी आधी घटी लग्नगण्डात होता है। यह भी जन्म में भयप्रद होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

(९५ पृष्ठ का शेष) "राश्यभिधानकल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिये ; बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्यायाः नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिसमें अनेक दोष रह जाते हैं । नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता । एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारणी आदि देखकर बदलना चाहिये ।

अथ विवाहमास—विवाहशुद्धौ - मीनार्कञ्च बिना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम् । वर्ज्योऽर्कों धनुषश्चान्त्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे ॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः । तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र ॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम् । तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया ॥२॥

अथ जन्ममासादिषुनिषेध—सब से बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है । द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं । अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः । तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च ॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घरमें दो शुभ काम करना मना है,परन्तु अतिआवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़ कर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावे । इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़ कर कार्य को करें ।

अथ ज्येष्ठ विचार—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है, अत्यावश्यकता में कृत्तिकासूर्य को छोड़ कर दानादि पूर्वक करे ।

षट् मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छै मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो । पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के विवाह के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहिले करले और मङ्गल कार्य के पीछे अमङ्गल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे । वर्ष पल्टने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले । वहां छः मास का विचार नहीं हैं ।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुँकुमपत्रिका) आने पर, विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास, भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास, कुल वालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे । अति संकट में ३० दिन के बाद शांति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे ।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं । उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं । यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है । यदि रवि गुरु पूज्य हों तो मध्यम है । यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना । इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु०सू०चं०) शुद्धि प्रथम देखें ॥ "अत्यावश्यकुदीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु" (बृह०) । तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः । आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्यांगिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्या मुनयो वदन्ति । द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहाः ॥ (मु० प्र० सा०) ।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरु :—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—१।२।५।७।९
नेष्टरविः —४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्रः १२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

{ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है ।}

कन्यावरयोः तैलादिलापने (वन्न) दिनसंख्या

राशि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	५

अथविवाहे तिथिवार नक्षत्राणि—
रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्दवरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहिततिथिषु शुभम् ॥

अथ विवाहांग कृत्यारम्भमुहूर्तः— वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्द हाथ दलना पीसना कूटना मंगल-कलशादि स्थापन करना घर लीपना आंगन सफाई भूषण गढाना वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना गणेशादि पूजन नान्दीश्राद्ध मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है ।

विवाहमुहूर्त में दश दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है । इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुए हैं । इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं । उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१ लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बंधुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षय	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फ. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ; इत्यादि सब जानें ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उषा	उभा.	र.
श्ले	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ
पुन	आ	मृ	आ	मृ	अ	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	चित्रा	पूफा
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा

सूर्याधिष्ठित नक्षत्र

विवाहित हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं शु. श. रा. के- की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की विशेष करके वर्जित है।

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	[illegible]	[illegible]	मू.	[illegible]	उफा.	
अभि.	उषा.	[illegible]	[illegible]	उभा.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। वह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मू.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये	ध	पू भा.	उ भा.	अ	कृ	मू.	पुन	उ फा	ह	अ. न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गताशाः राशौ	प्रति ५ कर्म अर्कस्य वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः	वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ रात्रौ	त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे सदैव	वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे दिवा	त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे रात्रौ	वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे संध्ययोः	वर्ज्यम्

७ एकार्गलदोषः

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिध, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८व १०वे १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह	म०	ध०	वृश्चि०	मी०	कु०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थल क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

१० दग्धा तिथिदोषः

९	२	४	६	५	१०	सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रांतियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रांतिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे बांगर) जांगले (फरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ उपग्रहर्क्षे कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवधस्थान) कलिंग वंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितंभम् ॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वैः(उज्जैन प्रान्त)च लत्ताभं त्यजेत् विद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे(बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त)। मास दग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।

विशेष परिहारः—चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः ॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्र क्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः) ॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितियस्तृतीयकम् । तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमः ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वसिष्ठः) ॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च । शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च । भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ जामित्रपरिहारः—(व्यवहार समुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालयेचन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे । हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम् । मुहूर्तचिन्तामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तयुं दयास्तदोषाः । नश्यन्ति चन्द्रार्क बलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
च. पाप	०	०	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	०	०	श.	त्याज्याः
चं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.		चं.		विद्धभञ्च			गोधूली त्याज्याः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जागुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः बादरायणः—मासशून्यायह्वास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता॥

कर्तरीदोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न। भौमेस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमौऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणः सह। अपवादांतरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी॥ अब्दायनर्तु मासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपो यदा केन्द्र लग्नादेकादशालये॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः॥ स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३		स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविंशोपकाधिकम्
६	३	६	२	२	२	६	६	३		
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	१।।	१।।		विंशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचार-लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्य्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग माघ फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टि गोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्ये. आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. आश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोष:—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादिजातीनां विवाहमुहूर्त:—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्य निषिद्ध। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुःप्राप्त्ये शौनकाद्याः॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भंग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः॥

वधूप्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५,७,९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांग शुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम् विवाह के बाद आषाढ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु वा शुक्रवार को २,३,६,७या १२वीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है । शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है ।

विशेष—द्विरागमे षोडशवासरान्तरे एकादशाहे समवासरेषु । नचात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वार शुद्धयादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तबतक शुक्र अन्धा होता है ।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्य पात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेत तण्डुल पूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम् । महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथमस्त्री संगम मुहूर्त—रजोदर्शनान्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभ वार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़ कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे आदर सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती । अपवाद में एक दो हो सकती हैं । प्रभु कृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है उसे समझना चाहिये । उन का दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशुओं में भी घोड़े हाथी सांड भैंस आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं ।

नववध्वा पाककर्ममुहूर्त—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. वि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते) , रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, २ । ५ । ८ । ११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धन. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्या रहित तिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजत-दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

चूड़ीचक्रम्—सूर्यनक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ३ शुभ । ४ शुभ । ७ अशुभ । २ अशुभ । १ शुभ । २ शुभ । १ अशुभ । गुरुशुक्रोदय में शुभ ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालेन समर्पितम् । निन्द्येऽपि धिष्ण्य वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ॥

भूषणघटन मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध श. उत्तरा. ३ रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षय रहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम् ॥

दूकान खोलने का मुहूर्त—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४ । ९ । १४ । ३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मङ्गलवार को छोड़ कर अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्नों में २ । १० । ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३ । ६ में पापग्रह हों, ८।१२ वाँ स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है ॥

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्त:— पूर्वा. ३. भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु चं. बृ. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्य प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त:—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दूकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋर्त	सन्मुख	बायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त— अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्तामार-हिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभ ग्रहे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोर्निमैत्र्यां सत्यां शुभः ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त—अश्वि. रो. मू. पुन. पु. उत्तरा ३. ह. चि. अनु. श्र.रे.एषु. भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू, चं. बु. बृ.शु. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्ट रहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्य प्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल – मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मँगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुध वार को धन न देना चाहिये । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३. वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है ।

श्री काशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य, पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ।

वस्तुखरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है ।

वस्तु बेचने के नक्षत्र—पूफा.पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फी सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं । इसी कारण खरीदने बेचने के नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को । लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहाँ तक सच है । सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्तः—४।९।१४ तिथि हो, मं' श. हो, कृ. आर्द्रा, भ. अ. श्ले. म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार—

ग्रामभात् बासकर्तुं नक्षत्रं यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिये। ३२ हाथ लम्बे चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है। और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिये शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अङ्क शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को आठ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ विचार

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बना कर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनवाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा ३॥ साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धननाश हो और जो हाड, राख बाल निकलें तो मकान बनानेवालेको व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्तः—वैशा. श्रा मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. बृ. शु. श. वारों में रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पावे	४	शून्यमसत्
पृ पावे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः—पुष्य. उ. ३. रो म. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि. अ चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रान्ति मिति दिन पाँचवें सप्तम नवमें जोय। दश इक्कीस चौबीस में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९ १२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार।

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्रविचारः।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेशे मुहूर्तः—

माघ-फाल्गुन- वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिक-मासयोः॥ (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, च. बृ. श. इन वारों में २। ५। ८। ११ लग्नों में अत्यावश्यके ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों, १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, ४था ८वाँ स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शङ्खध्वनि मङ्गलगान के साथ दम्पति को गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. और मार्गशीर्ष, फा. मास में शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

गृहारम्भ गृहारम्भ में वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना । | शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में नक्षत्र गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष वृष	मि. क. सिंह	कर्क तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्य	म. कु. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खातदिशा ज्ञानं	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्
सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्
सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १६वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है । यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है ।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम् । **सूर्यभात्तडागचक्रम्**

ईशान ३ क्षारजल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने ३ सुजल	ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तमजल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षि. ३ निर्जल	उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल	वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृत जल

गणनाक्रमः—मध्य पूर्व आग्नेय-दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम् ॥

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह'संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः । गणना-क्रमः—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्ये वारिवाहः ।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान अ. भ. कृ. मध्यजल	पूर्व पुन. पु. श्ले. जलाभाव	आग्नेय म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	मध्य रो. मृ. आर्द्रा. शीघ्रजलम्	दक्षिण ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र. ध. श. क्षारजलम्	पश्चिम मू. पूषा. उषा अमृतजलम्	नैर्ऋत्य वि. अनु. ज्ये. बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्तः

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे ।
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेप्यापञ्चमीदिने ॥
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः ।
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि० रो० मृ० पुष्य० ह० चि० स्वा० अनु० श्र० ध० श० उत्तरा ३. रे० एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि रहितकाले, कर्तुं सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।६।५।२।११ स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषेण लग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्य स्त्रियां हरिः । कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः । यस्य देवस्य यत्तिथि वार नक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः—श्र० ध० मृ० मू० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु० रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्निसत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ॥

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण हानि कारक, शेष २ वचने पर पाताल में धन हानि करता है । तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी । इसके बाद आहुतिचक्र जरूर देखिये ।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा । नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमि कम्पने । केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ ॥ देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंग गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे । शान्ति कर्म नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षते ॥

पापग्रहमुखहवने क्लेशशान्तिः—क्रूरग्रह मुखेचैव सञ्जाते हवनेशुभे । शान्ति विधाय

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गां दद्यात् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् ॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैः रचितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना । फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना ; जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना ।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३ ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठयष्टमीरहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्रतक गिनें					बीजवपने राहुचक्रम् राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
३	८	९	८	नक्षत्र	८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ॥

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)—द्यपादस्थे यदि संजायते रजः ।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है ; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. गु. शुक्रवार शुभ हैं ।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्तः—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना । अन्य पशु पुन. पु. पूर्वा ३, ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है । गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १९ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है । वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो । महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल सूर्यनक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया । मंगल हानि करे घर आया)

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुखं	संख्या
शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लतावृक्षाद्यारोपणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३. रो. ह. पुष्य अश्वि. श. मृ. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वार हों, शुक्ल पक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है ॥ तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्मनक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ४।९।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ है ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या ; भ. कृ. आर्द्रा आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेष्वपि

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
९ १	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४। एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे । शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११वें पाप ग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ७वें शुक्र, १२।६।८वें लग्नेश हो । अन्यच्च—यात्रा-यामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा । दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर.	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं. श.	चं.बृ.	गुरु.	सू. शु.	सू.शु.	भौम	मं.	बु.श.	वारा	ज्ये.	पूभा.	रोहि.	उफा.

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । [illegible] दोषभाक ॥२॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोग[illegible]	[illegible]	[illegible]	संख्या
शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	फलम्

पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्य शुक्रवारे यवानपि । मापान्भुक्त्वा शनिवारे शूले गच्छेत्स दीपभाक् ॥२॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

कालज्ञानम्

शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैर्ऋत्ये
भौमे	पश्चिमे
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे
सम्मुखे नेष्ट	

योगिनीवासचक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैर्ऋ०	पश्चिम	वाय०	उत्तरे	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाँयें की शुभ, युद्ध यात्रा में बाँयें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये। गर्गगुरु अङ्गिरा मुहूर्त—गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषाकालः सप्तपञ्चा (५७) रुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयोभवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-घट्यात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	प०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घटयात्मक चद्रवास जिस दिशा का चंद्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिये।

कुम्भ और मीन के चंद्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचंद्रे हि सम्मुखे ॥ इति ॥ सम्मुखे चन्द्र प्रशंसा-करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि-दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः ॥

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाङ्कादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को और दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत वा रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बाँध किसी के घर या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिये।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पाँच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तेल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करे।

दिनेचतुर्घटिका मुहूर्तम्

सूर्य	चन्द्र	मगल	बुध.	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्

घटि	सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.
७॥	अ.	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.
११।	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.
१५	रो.	ला.	शु.	च.	का.	उ.	अ.
१८।।	का.	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	च.
२२॥	ला.	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.
२६।	उ.	अ.	रो.	ला.	शु.	ज.	का
३०	शु.	च.	का.	उ.	अ.	रो.	ल.

सूचना—यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु-मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र २ अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजलपूर्णघट यात्रा पश्चाद्रिक्त घट यात्रा समय देखने में शुभ है। अशुभ शकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जार युद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्तं आवश्यके यात्रामुहूर्तचक्रम्

पौ०	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रामुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूल सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त—मृ. रे. अनु. रो. उ. ३ ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु; ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु; १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः; वि. कृ. पू. ३ भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः, सू. मं. वारौ; १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशया
मे.	कं.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मिथुन	सिंह	ध.	कुंभ	घातचन्द्र
र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	श.	शु.	मं.	वृष	शु.	घातवार
म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ष.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष	चन्द्रघात
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वै.	ज्येष्ठा	आ.	श्रावण	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु	प.	धृ.	प्री.	सु.	अं	वृष	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	३	८	९	८	१०	
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयत्प्राज्ञस्त्वन्यकर्मसु शोभनम् ॥"

वाम दक्षिण निर्देश—

अग्रेचक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरट (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धु दर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाश
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभ
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यृक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इतोऽन्यद्भेषु निंद्याः ॥

पल्लीपाते कर्त्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है मदिरा के योग अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं; पीन सरदी धांस फल होनी। छींकि पीठि की कुशल उचारे; बाइं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊँची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी ॥ अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। बामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तुः शुभावहाः ॥ एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक ॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम् ॥

हर प्रकार की पुस्तकें—मिलने का पता—
मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरट (गिरगट) के चढ़ने का जाने।
सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, पोस्ट बक्स नं० ७५, बनारस।

अंग स्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रू मध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रू युग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोष्ठवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्र समीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्र पक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	उरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	बाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामिप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्वबुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राज भँग करे
तारे टूटे	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४चूलोद	राज नाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमीकेपशुहों	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राज नाश
दिन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोण तारा	प्रजा नाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंदपड़े	देशक्षय	बनपशु गांवबसे	मनु.शून्य हो
श्वेत मंडल	भय हो	कृष्णमंडल	राज्य नाश	घर उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्रमंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबीकबूतर-	गृहस्वा:नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिनाऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब-	रोग भय
स्त्री बध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक बध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देखपड़े	राज नाश
देवध्वंश	राज नाश	सर्वग्रास	सब वस्तुमंहगी	भूमि कम्प	दुर्भिक्ष
अहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिकवक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३दिनकापक्ष	प्रजा नाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

वाराः	सू.	चं.	म.	बु.	गु.	शु.	श.
फलम्	तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुभोग
पातन	पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०

तैलाभ्यङ्ग वर्ज्यानि

तदाप्याह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ठ्यष्टम्योश्च विष्टयां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु॥

विशेष—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वात-रोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काक स्पर्श धन नाश, मरण तथा कलह करता है, कमर, कन्धे पर भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोष कारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे- ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरस्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृतच्छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

अथ काकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत्। लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। निश्शेषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम्॥

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोष निवृत्यर्थ दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

मुष्टिचक्र

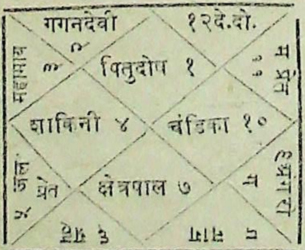

अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई कोई एक अंक मुख से कहलावे या लिखवावे। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्धि होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचारः

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना), चतुर्थप्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जा कर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खें, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्नः—राजा, विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना। महल, पर्वत, सिंह, अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, वेदध्वनि श्रवण, रक्त पीत, पुष्प दर्शन, दर्पण, प्राप्ति, दही चावल भोजन, जुआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियाँ की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश वा तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर हो कर सुख हो। श्वेत वस्त्रवाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, नर या नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊं, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है. गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना, सूर्यमण्डल का दीखना, अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुब्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्या लाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र पुष्प' से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों, तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़ कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दूकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाये बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिए कि हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो [illegible] साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्नः—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना, अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना, रुई कपास तेल लोहा मिलना, इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दातों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाहगीत मंगल सुनना अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना, बन्दर, सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चाण्डालों के साथ मिलना, अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े, महलध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र, इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक होता है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का तीन मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मणभोजनादि करवाना चाहिये। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुनिर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे। दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्म लग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे चरे चरे, स्थिरे-द्विस्स्वभावे-दीर्घायुः। द्विःस्वभाव-द्विस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे-स्थिरे चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११,१,४,७,१०,५,६ इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है, ३।४में पापग्रह हो, पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु [illegible] हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिए ... ग्राहक भी बनेंगे, यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि ... है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के ... पापग्रह हो, परन्तु मैं भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु ... ३—लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यायु, शत्रु हो तो अल्पायु।

प्रश्न—जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौकार्यगौ युतौ। मिथस्यौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सिद्धिदौ ॥१॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः।

कार्य सिद्ध होगा या नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने। अशुभ वार में दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है। यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होती है। विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहना।

क्रय विक्रय प्रश्न—प्रश्नलग्न का स्वामी क्रेता (खरीदने वाला), ग्यारहवें घर का स्वामी विक्रेता (बेचनेवाला) और लग्न क्रयाणक (खरीदने योग्य वस्तु) है, ऐसा जानो। यदि लग्न बली हो अर्थात् उसको स्वामी या शुभ ग्रह देखें या शुभ ग्रह उसमें पड़े हों अथवा केन्द्र में शुभ ग्रहों का योग हो तो वस्तु के खरीदने वाले को लाभ रहेगा। यदि ग्यारहवां भाव पूर्ववत् बली हो तो बेचने वाले को लाभ जानो। कितना लाभ होगा ? इसके जानने के लिये लाभेश का बल विचारो; यदि वह अपने घर में रहते तो दुगुना, शत्रु के घर में हो तो सवाया, सम घर का हो तो ड्योढ़ा और मित्र का हो तो चतुर्थांश लाभ होगा; इसी प्रकार खरीदने वाले को भी जानना चाहिये। प्रश्न का उत्तर देने में योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिये ॥

क्या यह बात सत्य है?—प्रश्न काल के तात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़कर वर्तमानतिथि से गुणा दो, फिर उसे ४ से भाग देना शेष १।३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचे तो झूठी जानो ॥

स्त्री पुरुष में प्रथम किसकी मृत्यु होगी ?

स्त्री पुरुष के नाम की मात्रा को ४ से गुणा कर, जो अक्षर होवें उनको दुगुना कर जोड़ देवे फिर ३ का भाग देवे यदि २ शेष रहे तो प्रथम स्त्री की मृत्यु और १ या ० बाकी रहे तो प्रथम पुरुष की मृत्यु जानना। किन्तु मात्रा जोड़ने में भूल न करें ॥

प्रवासी प्रश्न—प्रश्नकर्ता के उच्चारण किये हुए अक्षरों को (वा पक्ष का नाम लेवे तो फलाक्षरों को) ६ से गुणा करके उसमें १ जोड़ दे फिर सात का भाग देने से एक से आदि लेकर जो अङ्क बचे उसे फल कहे। एक शेष रहे तो प्रवासी आना चाहता है। २ शेष रहे तो मार्ग के अर्द्ध भाग में है। ३ बचे तो ग्राम के निकट आ गया है। ४ बचे तो घर में लाभ सहित आ गया है। ५ बचे तो रोगी है। ६ बचे तो पीड़ित है। ७ बचे तो आने का यत्न करता है। धनेश वक्री न हो तो प्रवासी कल्याणपूर्वक है।

देशान्तर से पत्र आवेगा कि नहीं?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उसके द्वितीय तृतीय स्थान में शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले। प्रश्न लग्न में बुध चंद्र हों और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं ?

साहूकार (जिस से नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दें, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले। २ शेष रहे तो न मिले। तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले ॥

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इसकी केवल गत घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ नहीं होवे ॥

पुत्र लाभ होगा कि नहीं ? तात्कालिक तिथि की संख्या को ४ गुणा करके दो से भाग देना जो लब्धि आवे उसको तीन गुणा करके ४से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें। १शेष बचे तो विलम्ब से सन्तान पुत्र लाभहोगा चिरंजीविता के लिये पार्थिव-शिवपूजन करना चाहिए। २ शेष रहे तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंशपुराण का नवाह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवा लक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे। ३ शेष बचे तो शीघ्र लाभ होगा, किसी गरीब की कन्या को विवाह दें या उसके विवाह में गुप्तदान से मदद करें। ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा। ४ (०) शेष बचे तो सन्तान सुख शीघ्र होगा ॥

विवाह होगा कि नहीं ?—यदि लग्न से २।३।६।७ ... इन स्थानों में बलवान् ... बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो यद्वा लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जावेगा।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्

तृतीय नवम द्वादश षष्ठ स्थान में प्रश्नलग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष, चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष, सूर्य के होने से देवी दोष, अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रफल का दोष कहे, शनि के होने से अपने गोत्र की देवी (सती) का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थान में हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जल देवी का दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं। दोषसूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो बलवान् हो तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोषसूचक ग्रह भी नीच शत्रुक्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होता है। बलवान् पापग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं, यदि शुभ ग्रह केन्द्रस्थान में हो तो पूर्ववत देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़े और ८ का भाग देवे शेष ३।७ बचें तो देवता की, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना। उदयाद् घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति, क (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) र्काः (१२) नात्र जीवति ॥२॥

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

❀ अथ सर्वसाधारणोपयोगी प्रश्नः ❀

मित्र मिलाप प्र. १			मुकदमा प्र. २			यात्रा प्र. ३		
७	२	१	४	२	१	५	४	३
३	६	५	३	९	८	१	६	९
४	९	८	६	७	५	२	८	७
पशु लेने का प्र. ४			**लाभालाभ का प्र. ५**			**नौकरी का प्र. ६**		
२	१	३	७	४	५	१	५	८
४	५	६	६	८	९	७	३	६
७	९	८	२	३	१	९	४	२
विद्या परीक्षा प्र. ७			**परदेशी प्र. ८**			**शत्रुनाश प्र. ९**		
७	८	५	९	७	४	६	८	९
४	३	२	३	२	८	२	१	३
९	१	६	१	६	५	४	५	७

प्रश्नकर्ता फूल फल दक्षिणा आदि से पंचांग की पूजा करके जिस विषय का प्रश्न करना चाहे उसी विषय के चक्र के नम्बरों में से किसी एक घर पर ईश्वरस्मरण करता हुआ अंगुली रक्खे, फिर उसी विषय के फलचक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवे, यथार्थ फल मिलेगा। स्मरण रहे कि प्रश्न एक दिन में एक ही बार करना चाहिये, बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल न मिलेगा।

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र कदापि मुक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र तुमसे मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्दमा देर से होगा।
२ मुकद्दमे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुन विचार के गमन करो लाभ होगा।
७ यात्रा पीड़ाकारक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु अब खरीदना भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहना भी नहीं है।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम।

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से सवाया लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे यह ध्यान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षाफल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते में ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से भय मिटे।
८ सुलह हो जायेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

गुप्त चिन्ता का प्र० १०			कर्ज लेना देना प्र० ११			खेती करूँ या नहीं प्र० १२		
७	८	२	१	३	२	१	८	३
९	६	१	८	९	६	६	४	७
३	४	५	५	४	७	५	२	९
रोगी का प्र० १३			**गर्भ में क्या है प्र० १४**			**चोरी गई का प्र० १५**		
९	६	२	७	६	१	८	७	३
७	५	८	४	२	८	४	२	६
३	४	१	३	५	९	७	५	१
पुत्र गोद लेना प्र० १६			**अनाज खरीद का प्र० १७**			**विवाह शादी प्र० १८**		
३	५	१	८	७	५	५	४	३
४	१	८	९	४	३	२	१	९
२	६	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	६	७
रोजगार का प्र० १९								
६	७	९						
२	४	८						
१	५	३						

गुप्त चिन्ता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम की चिन्ता करना वृथा है।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट में चाह पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता हटाओ है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)
१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेनी देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हर्ज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

खेती करूं या नहीं फल (१२)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१३)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शान्ति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की औषधि बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी हैं।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल (१४)
१ इस गर्भ की सुआशा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ जोड़ी कन्या जन्मेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

चोरी गई का फल (१५)
१ वस्तु थोड़ी मिलेगी, चोर घर ही है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोरने तेरी वस्तु और को देदी।
७ माल आधा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर छोड़ोगे तो थोड़ा माल मिलेगा।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)
१ गोद लेने से नाम रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का कर्ज करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ बच्ची मिलेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बेमुरव्वत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ सुखदाई नहीं है।

अनाज खरीद फल (१७)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ साझी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सस्ते होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना मत।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

विवाह शादी का फल (१८)
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा पर स्त्री अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री गुणवाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (१९)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा।
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ जल मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रह की दशा है अभी चुप रहो।
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोर किस दिशा में है ?

तिथि शुक्ल प्रतिपदा से, वार सूर्य से, गिने सो और मिलाया लग्न का अंक जोड़ ४ से भाग देवे। शून्य शेष रहे तो पूर्व, एक बचे तो दक्षिण, २ बचे तो पश्चिम, ३ बचे तो उत्तर, दिशा कहे। हार जीत के प्रश्न करते समय पूछने वाला स्वयं अपना स्तन कर्ण सिर हाथ मुख नाक कमर स्पर्श करे तो जीत कहे और अंगस्पर्श करे तो हार होती है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ महर्षिपराशरप्रोक्तविंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६.				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७				राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९				बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रो.ह. श्रवण				मृ. चि. ध.				आ. स्वा. श.				पुन.वि. पूभा.				पु.ऽनु.उ.भा.				श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पूफा.पूषा.भ.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्र	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	च	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
चं.	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९	शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०	र	०	१०	६	च	०	७	०	म	१	२	०
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२	च	१	५	०	मं	०	४	२७	र	३	०	०
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०	मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९	रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६	च	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६	बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
शु	१		००	र	०	६	०	च	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशायाज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			सङ्कटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेशग्रहाः
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य वि. श.			अश्ले.ऽनु.पूभा.			म.म.ज्ये.उभा			कृ.पूफा मू.रे.			रो.उफ .पूषा			मृ ह. उषा.			जन्मनक्षत्र
मं	०	१०	पि	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	न्तर्दशामासादि
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	म.	२	२०	शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	नेष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि	९	१०	सं.	१३	१०	म.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि	७	०	सं.	१०	२६	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्र.	१०	२०	
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं	८	०	म	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	सं	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	मं	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घटयादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अङ्कों में प्रवेश नक्षत्र की घटयादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणें भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त [illegible]

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभः	हानिः	कष्ट	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुख	धनला.	पीड़ाः
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाशः	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणाः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गति	शत्रुना.	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय.	राज्यला.	धनला.	विरोः
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलहः	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा०	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सुखला	धनलाभ	शत्रुभीः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला.	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्र पी.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहुः	शिरोर्ति.	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभ	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा.	लाभः	कष्टम्

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❀ अथ सर्वसाधारणोपयोगी प्रश्नः ❀

मित्र मिलाप प्र. १

७	२	१
३	६	५
४	९	८

मुकदमा प्र. २

४	२	१
३	९	८
६	७	५

यात्रा प्र. ३

५	४	३
१	६	९
२	८	७

पशु लेने का प्र. ४

२	१	३
४	५	६
७	९	८

लाभालाभ का प्र. ५

७	४	५
६	८	९
२	३	१

नौकरी का प्र. ६

१	५	८
७	३	६
९	४	२

विद्या परीक्षा प्र. ७

७	८	५
४	३	२
९	१	६

परदेशी प्र. ८

९	७	४
३	२	८
१	६	५

शत्रुनाश प्र. ९

६	८	९
२	१	३
४	५	७

प्रश्नकर्ता फूल कुछ दक्षिणा आदि से पंचांग की पूजा करके जिस विषय का प्रश्न करना चाहे उसी विषय के चक्र के नवघरों में से किसी एक घर पर ईश्वरस्मरण करता हुआ अंगुली रखे, फिर उसी विषय के फलचक्र में उसी संख्या के सामने फल देख लेवे, यथार्थ फल मिलेगा। स्मरण रहे कि प्रश्न एक दिन में एक ही बार करना चाहिये, बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल न मिलेगा।

मित्र मिलाप फल (१)
१ मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२ मित्र विश्वासघाती है।
३ मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४ मित्र धोखा देगा।
५ मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६ मित्र सद्भाव युक्त है।
७ मित्र अच्छा है शीघ्र मिलेगा।
८ मित्र मतलबी है।
९ मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

मुकद्दमे का फल (२)
१ मुकद्मा देर से होगा।
२ मुकद्मे में जीत होगी।
३ हाकिम ठीक न्याय नहीं करेगा।
४ कुछ कुछ जीत होगी।
५ विशेष खर्च करके जीत होगी
६ कष्ट अधिक होगा।
७ तुम्हारी हार होगी।
८ सुलह हो जायेगी।
९ पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

यात्रा का फल (३)
१ गमन मत करो, लाभ नहीं।
२ देशाटन में हानि लाभ बराबर है।
३ भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४ शुभ दिन में जाओ लाभ होगा।
५ देशाटन में कोई चमत्कार है।
६ शकुनविचारके गमनकरोलाभ होगा
७ यात्रा दीर्घकालिक होगी।
८ यात्रा में आराम मिलेगा।
९ यात्रा सफल ही पर खर्च विशेष होगा

पशु लेने का फल (४)
१ पशु से पूरा लाभ होगा।
२ पशु से हानि लाभ सम।
३ पशु अब खरीदो भला नहीं।
४ तेरा विचार ठीक नहीं है।
५ फायदा रहेगा तो नहीं।
६ आज कल पशु लेना देना बुरा है।
७ पशु संग्रह मत करो पछताओगे।
८ तेरा विचार विलम्ब से फलेगा।
९ लेना देना ठीक नहीं हानि लाभ सम

लाभालाभ का फल (५)
१ इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२ इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३ यह काम घाटे का है।
४ चोरी या नुकसान का भय है।
५ साझी या व्यापारी दगा करेगा।
६ माल से ज़्यादा लाभ होगा।
७ माल कुछ देर से लाभ देगा।
८ खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९ माल में गहरा नफा मिलेगा।

नौकरी का फल (६)
१ नौकरी जरूर मिलेगी।
२ देर से मिलेगी, धीरज धरो।
३ काम नहीं बनेगा, सचेत रहो।
४ खर्च करने से कार्य बनेगा।
५ यहां कुछ नहीं और फिकर करो।
६ शत्रु रुकावट करेंगे गठ दान दो।
७ किसी की सहायता से काम बनेगा
८ इस विचार में अनेक विघ्न होंगे।
९ काम सिद्ध न होगा।

विद्या परीक्षाकाफल (७)
१ अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२ विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३ मनोकामना पूरी होवेगी।
४ विद्या सामान्य सफलता देवेगी।
५ विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६ उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७ अच्छे दरजे में पास होवेगा।
८ विद्या से विशेष लाभ न हो।
९ विद्या लाभकारी न होगी।

परदेशी प्रश्न फल (८)
१ परदेशी शीघ्र ही आवेगा।
२ बीमारी से लाचार है।
३ मार्ग में चला आ रहा है।
४ दूर देशान्तरों में विचरता है।
५ रास्ते से ठगा गया है।
६ अभी मन में लौटने का नहीं है।
७ वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८ खर्च में तंग है कैसे आवे।
९ परदेशी पराधीन हो गया।

शत्रुनाश प्रश्न फल (९)
१ शत्रु दुष्ट है दमन न होगा।
२ शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३ शत्रु द्वारा विशेष हानि होवे।
४ मित्र की सहायता से जय हो।
५ शत्रु निर्बल हो गया डरो मत।
६ विश्वास न करो उससे भय है।
७ राज्य की सहायता से सब मिटे।
८ सुलह हो जायेगी।
९ शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

गुप्त चिंता का प्र० १०

७	८	२
९	६	१
३	४	५

कर्ज लेना देना प्र० ११

१	३	२
८	९	६
५	४	७

खेती करें या नहीं प्र० १२

१	८	३
६	४	७
५	२	९

रोगी का प्र० १३

९	६	२
७	५	८
३	४	१

गर्भ में क्या है प्र० १४

७	६	१
४	२	८
३	५	९

चोरी गई का प्र० १५

८	७	३
४	२	६
९	५	१

पुत्र गोद लेना प्र० १६

३	५	९
४	१	८
२	६	७

अनाज खरीद का प्र० १७

८	७	५
९	४	३
२	१	६

विवाह शादी प्र० १८

५	४	३
२	१	६
८	९	७

रोजगार का प्र० १९

६	७	९
२	४	८
१	५	३

गुप्त चिन्ता का फल (१०)
१ मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२ काम बनने में कुछ देर है।
३ काम का नतीजा खराब होगा।
४ किसी का भरोसा न करो।
५ चिन्ता न करो काम बनेगा।
६ मन की मन ही में रहेगी।
७ तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है। ८ देरी से काम बनेगा।
९ चिन्ता सच्ची है किसी की मदद लो।

कर्ज लेने देने का फल (११)
१ यहां से कर्ज लेना देना अच्छा है।
२ जैसा प्रेम अब है आगे नहीं रहे।
३ लेने देने का नतीजा खराब रहेगा।
४ अन्त में मुश्किल होगी।
५ दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६ इस जगह हानि लाभ सम है।
७ लेने देने में कोई हरज नहीं।
८ अन्त समय अदालत में जाना होगा।
९ नफा नुकसान बराबर रहेगा।

खेती करे या नहीं फल (१२)
१ खेती में लाभ रहेगा।
२ वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३ खेती को कीड़े का भय है।
४ मनोकामना सिद्ध होगी।
५ जितनी मेहनत उतना लाभ।
६ खेती करो पर सावधानी से।
७ खेती में ओले का भय है।
८ बाढ़ के कारण कुछ हानि होगी।
९ खेती में हानि रहेगी, मत करो।

रोगी का प्रश्न फल (१३)
१ यह रोग अधिक दिन तक रहेगा।
२ ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३ यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४ चिन्ता न करो आराम होगा।
५ रोगी की आबोहवा बदली करो।
६ रोगी को पथ्य से रक्खो।
७ चिन्ता न करो, ९ दिन भारी है।
८ आराम हो जावेगा, पर खर्च अधिक है।
९ होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

गर्भ में क्या है फल (१४)
१ इस गर्भ की सुआशा नहीं।
२ पुत्री का जन्म होगा।
३ शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४ लड़की होगी पर आयु कम।
५ गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६ पुत्र का जन्म होगा।
७ दीर्घायु पुत्र होगा।
८ जोड़ी कन्या जन्मेगी।
९ लड़का लड़की जोड़े होंगे।

चोरी गई का फल (१५)
१ वस्तु शीघ्र मिलेगी, चोर घर ही है।
२ खर्च करने पर माल मिलेगा।
३ पता पूरा लगे पर माल न मिलेगा।
४ चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५ किसी की मदद से माल मिलेगा।
६ चोरने तेरी वस्तु और को देदी।
७ माल आधा नष्ट हो गया।
८ माल नहीं मिलेगा आशा छोड़ो।
९ चोर छोटीजाति काहै माल मिलेगा।

पुत्र गोद लेने का फल (१६)
१ गोद लेने से नाम रहेगा।
२ यह लड़का वफादार नहीं।
३ लड़का खर्च करायेगा।
४ लड़का अच्छा नहीं है।
५ अच्छी मिलेगी।
६ सावधानी से गोद लेना।
७ बेमुरव्वत निकलेगा।
८ घर में अनबन रहेगी।
९ सुखदाई नहीं है।

अनाज खरीद फल (१७)
१ अनाज में भारी लाभ होगा।
२ नफा टोटा समान रहेगा।
३ घाटा रहेगा।
४ अन्न के खराब होने का भय है।
५ साझी व्यापार न करें।
६ देर से बिकेगा।
७ अनाज में सनाये होंगे।
८ बेचना ठीक है, लेना नहीं।
९ प्रश्न फल अशुभ है।

विवाह शादी का फल (१८)
१ विवाह देरी से होगा।
२ विवाह होगा परजोड़ी अच्छी नहीं।
३ विवाह न होगा।
४ विवाह जरूर होगा।
५ विवाह में रुकावटें होंगी।
६ किसी की खुशामद करो।
७ खर्च करो, काम बनेगा।
८ थोड़ा विलम्ब से होगा।
९ स्त्री सुख वाली मिलेगी।

रोजगार प्रश्न फल (१९)
१ रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२ विशेषपरिश्रमकरनेसेरोजगारहोगा
३ किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४ जलमिट्टी.कोयला से लाभ होगा।
५ अब इस व्यापार में हानि होगी।
६ दुश्मन नुकसान करेंगे सावधान।
७ रोजगार ठीक होने में देर है।
८ खोटे ग्रहकी दशा है अभी चुप रहो।
९ जो विचारा है वह पूर्ण नहीं होगा।

चोर किस दिशा में है ?

तिथि शुक्ल प्रतिपदा से, वार सूर्य से, गिने नौ और मिलाया लग्न का अंक जोड़ ४ से भाग देवे। शून्य शेष रहे तो पूर्व, एक बचे तो दक्षिण, २ बचे तो पश्चिम, ३ बचे तो उत्तर, दिशा कहे। हार जीत के प्रश्न करते समय पूछने वाला स्वयं अपना स्तन कर्ण सिर हाथ मुख नाक कमर स्पर्श करे तो जीत कहे और अंगस्पर्श करे तो हार होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशा चान्तर्दशाज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६.				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७				राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रो.ह. श्रवण				मृ. चि. ध.				आ. स्वा. श.				पुन.वि. पूभा.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तर म्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा	दि	ग्रह	व	मा	दि	ग्र	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२	वृ	२	१	१८
चं.	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	वृ	२	४	२४	श	२	६	१२
मं	०	४	६	रा	१	६	०	वृ	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६
रा	०	१०	२४	वृ	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६
वृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	र	०	९	१८
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	र	०	१०	२४	चं	१	४	०
के	०		४६	शु	१	८	०	र	०	४	६	चं	१	६	०	मं	०	११	६
शु	१		००	र	०	६	०	चं	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४

शनिदशा वर्ष १९				बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
पु.अनु.उ.भा.				श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अ.				पूफा.पूषा.भ.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
के	१	१	९	शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
शु	३	२	०	र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
र	०	११	१२	चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
चं	१	७	०	मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	वृ	२	८	०
मं	१	१	९	रा	२	६	१८	वृ	०	११	६	श	३	२	०
रा	२	१०	६	वृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
वृ	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशायाज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व. १			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			सङ्कटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेशग्रहाः
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य वि. श.			अश्ले.अनु.पूभा.			म.म.ज्ये.उभा			कृ.पूफा मू.रे.			रो.उफ.पूषा			मृ ह. उषा.			जन्मनक्षत्र
मं	०	१०	पि	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	त्वर्दशामासादि
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	नष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि	७	०	सं.	१०	२६	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्र.	१०	२०	
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं	८	०	मं	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	सं	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	मं	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अङ्कों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष, फिर शेषांक को १२ से गुणें भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभः	हानिः	कष्ट	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुख	धनला.	पीड़ाः
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभः	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणाः	धननाशः	जयः	व्यसनं	दुर्गति	शत्रुना.	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय.	राज्यला.	धनला.	विरोः
बुधः	सौख्यम्	धनलाभः	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलहः	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा०	धनप्राप्तिः	कीर्तिला.	सुखला	धनलाभ	शत्रुभीः	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला.	व्ययः
शनिः	वातार्तिः	पीड़ा	धनलाभः	दुःखम्	पुत्रपी.	जयः	स्त्रीकष्टम्	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहुः	शिरोर्ति.	राजभी.	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाशः	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभ	व्याधिः
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा.	लाभः	कष्टम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ वर्षप्रवेश सारणीयम्

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२५	४१	५६	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४६	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

वर्षफलसाधनप्रकार:—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनतु युगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार से गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक है उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० से का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर के वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्टसूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसीदिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्नसारिणी से लग्न साधन करके वर्ष-कुण्डली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेशका सामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से किया हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारिणी से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकार:—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकीचक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्रके पूर्व की मध्य रेखा पर वर्ष-प्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ६ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्म राशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्म-स्थान से होते हैं; परंच राहु केतु को विपरीत जानना। फल— यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चद्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप शनैश्चर से भौम के वेधसे शरीर पीड़ा होती है; शुभ ग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहे॥

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मीन राशयः		
सू	शु	श	शु	बृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दि.	ल. प.
बृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	बृ	चं	च रा.	ल प.

अथ वर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ६, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११. शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१० बु० ३।६, गु० ६।१२।४, शु० २।७।१२ श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (चं०, बु०, शु०, श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० मं० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिनके वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्रशत्रुज्ञानम्— जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१० वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णय दृष्टिज्ञानम्—९।५ वें ४५ कला, ३।११ वें ४० कला, ११वें १० कला ४।१० वें १५, और १७ वें पूर्ण कला(६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५. दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्र राशि का स्वामी इन पांचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता तो उन में से जो अधिक बलवान हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह, बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठ हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

मुद्दा दशा चक्र विधिः

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्दादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	गुरु	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

योगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अथ लग्नपत्रात् सूक्ष्मलग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्ट सूर्य बनाओ। फिर सूर्य की राशि, अंश प्रमाण लग्नसारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्पकोष्ठक के राशि अंश लेना; राशि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना तदनन्तर इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठक और अल्प कोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्म स्पष्ट लग्न होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ लग्न सारणीयम् ॥

पलभा ७।१२

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५६	५	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१५	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१५	२३	
वृष	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	१६	१६	२६६
२	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	५०	०	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	[illegible]	[illegible]	२२	२२	२२	३४७
३	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३९	५०	१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	[illegible]	[illegible]	४८	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३५०
५	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	[illegible]	[illegible]	३९	३९	३९	४०	३५०
६	२८	४०	५२	[illegible]	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३७	४९	१	१३	२५	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४७	[illegible]	
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३५६
७	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	२	१३	२४	३४	
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	२९६
९	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५८	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	२४२
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२०६
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	

॥ दशमलग्न सारणीयम् ॥ (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
०	३	[illegible]	[illegible]	५२	१	१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४८	८	१८	२८	[illegible]	[illegible]	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	[illegible]	७	१७	२७	३७	४७	
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५१	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५२	३	१४	२४	३४	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	३२३
२	४५	५६	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१९	३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	[illegible]	
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	३२३
३	८	१९	३१	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
४	१२	२३	३४	४४	५५	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	९	१९	२८	३८	४७	५६	५	
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
५	५५	४	१४	२३	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	
तुला	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	२७८
६	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	२९९
७	२७	३६	४६	५५	५	१४	२४	३३	४३	५२	२	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५३	३	१४	
धनु	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
८	४५	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	३२३
९	८	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
१०	१२	२२	३३	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	९	१९	२८	३८	४७	५६	५	
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
११	५५	४	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।२०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्न-सारणी में कोष्ठक देखो तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घट्यादि ६।५ मिलाया तो १७।५३ हुए यह इष्ट युक्त किया हुआ लग्नसारणी का कोष्ठक हुआ इस इष्टकोष्ठक से अल्पकोष्ठक सारणी में देखो तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि के ५ अंश लिए इसके नीचे सूर्य की कला २० विकला ४० को युक्त किया तो ३।५।२०।४० हुआ तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक (१७।५१) का अन्तर किया तो पल २ हुआ इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) का कोष्ठक १८।२ (११) २०।१०।२५) के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्धि ० अंश आया शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुये इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इनको ६० से गुणा किया तो ६०० हुए इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्धि ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुये राश्यादि ३।५।२०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।११।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ। अथ दशमलग्नसाधनम्—सूर्योदयात् घट्यादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होगा

६०	
१२०	
११०	
१०	
६०	
६००	
६०५	

(यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना)। इसी दशमभावष्ट का जन्म-कालीन इष्ट मानकर इस दशम-लग्नसारणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी-कभी दशमभाव में नवम एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशियुक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि करने से सप्तमभाव होता है।

भावसाधनम्—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे अर्थात् प्रथमबार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने द्वितीय भाव की आरम्भसन्धि होगी फिर उसी आरम्भसंधिमें षष्ठांशयुक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांशयुक्त करने से चतुर्थ भाव की आरंभसन्धि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थ भाव की आरम्भ सन्धि से लग्न की विराम सन्धि तक १ से ५ पर्यन्त केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धि सहित ६ भाव होजावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भ सन्धि में एक राशियुक्त करने से पंचम भाव होगा इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धि सहित ६ भाव होजावेंगे। इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन उपर्युक्त सन्धि सहित छः ही भावों में ६–६ राशियुक्त करने से सन्धि सहित छःभाव होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Krishnakant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री गणेशाम्बागुरुभ्यो नमः

खचरगतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यन् विविधवचनजालाल्लोकयन् शास्त्रसिद्धान्। भरत-भुविसमस्तायाञ्च पञ्चापदेशे, करकञ्जमुहूर्तालीमहं संलिखामि ॥

सं० २०१३ मध्ये विवाहादिमुहूर्ताः ।

अथ समय शुद्धिः—ज्येष्ठ शुक्ल ६ (सौरमान से आषाढ़ प्र.४) रविवार को शुक्र अस्त होकर आषाढ़ कृष्ण ४ बुधवार (सौर मान से आषाढ़ प्र. १४) को उदय होगा। तथा शुक्र दुबारा फाल्गुण कृष्ण १० (सौरमान से फाल्गुण प्र. १३) रविवार को अस्त हो कर वर्षान्त तक उदित नहीं होगा। गुरु श्रावण शुक्ल १४ (सौरमान से भाद्रपद प्र. ५) सोमवार को अस्त होकर भाद्रपद शुक्ल ११ (सौरमान से भाद्रपद प्र.३१) शनिवार को उदित होगा।

ग्रहलाघवकार ने जो शुक्रोदयास्त के दिन लिखे हैं वे स्थूल रूप से मध्यम मान के हैं। सूक्ष्मस्पष्ट-मान के तो श्री केतकराचार्य्यकृत ज्योतिर्गणित से निकलते हैं, सो हमने वही स्पष्ट करके लिखे हैं। आकाशीय वातावरण ठीक हो तो प्रत्यक्ष दिखा भी सकते हैं।

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन वृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष विशेष होता है, जो अस्त की भाँति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है।

शुद्धानि सपरिहाराणि च विवाह मुहूर्तानि— सर्व देशों के लिए

वै. प्र. ७ (चैत्र शु.९ गु.)मघा ।ऽ॥ऽ चौ. ।ऽऽ। ल. ११, गणितेन क्रान्तिसाम्याभाव:
वै. प्र. ९ (चै. शु. ११ श.)उ.फा.ऽसू. ॥॥ऽरो. ॥॥ ल.११,१२, उभयत्र चं.दा.कुम्भ:घ.५५या
वै. प्र. १० (चै. शु. १२ र.) उ.फा. ऽ सू. ॥॥॥॥ ल. अन्य गोधुलिः ।
वै. प्र. १० (चै. शु. १२ र.) हस्ते ॥॥ऽ॥ ल. १२ चं. शु. दा. ।
वै. प्र. १२ (चै. शु. १४ मं.) स्वा. ॥॥ऽसू. ऽअ. ऽऽ॥ ल. ११
वै. प्र. १६ (वै. कृ. ३ श.) मू. ॥॥ऽ शु. ऽचौ. ।ऽ॥ ल. १२ (५५।३७उ.)
वै. प्र. १७ (वै. कृ. ४ र.) मू. ॥॥ऽ शु. ऽचौ. (३३।० या.) ।ऽ॥ गोधूलिः ११, १२
वै. प्र. १९ (वै. कृ. ६ मं.) उ. पा. ऽ चं. ऽ।ऽ शु. ॥॥। ल. १२ पादतो वेधाभाव: शुक्रस्य
वै. प्र. २४ (वै. कृ. ११ र.) उ. भा. ।ऽ॥॥ऽ॥ ल. ११
वै. प्र. २५ (वै. कृ. १२ चं.) उ. भा. ।ऽ॥॥ऽ॥ दि. ल. ६ चं. दा.
ज्ये. प्र. ४ (वै. शु. ८ गु.) मघा ॥॥ऽ भौ. ॥ऽ॥ व्या. ९ घटीदोष: (३५ उ.४४ या.) दि.ल.६
ज्ये. प्र. ६ (वै. शु. १० श.) उ. फा. ।ऽ॥॥ऽ॥ गोधूलिः १२, मीने चं. पूज्यः
ज्ये. प्र. ७ (वै. शु. ११ र.) हस्त ॥॥ऽ चौ. ऽ॥। ल. १२ चं. दा. ।
ज्ये. प्र. ९ (वै. शु. १३ मं.) स्वा. ऽगु. ऽ॥। ऽरो. (घ. २५।०उ.)ऽ॥। अन्य गोधुलि(सिंहे गु.)
ज्ये. प्र. १३ (ज्ये. कृ. २ श.) मू. ।ऽ ॥ऽ अ. (घ. ३६ या.) ॥॥ गोधूलिः सूर्यास्तात्प्राक
ज्ये. प्र. १४ (ज्ये. कृ. ३ र.) मू. ।ऽ॥॥॥॥ (भं. १५ घ. उ.) दि. ल. ३, चं. दा.
ज्ये. प्र. १५ (ज्ये. कृ. ४ चं.) उ. पा. ॥॥ऽ नृ. ।ऽ॥ गोधूलिः सोग्राङ्गः
ज्ये. प्र. २२ (ज्ये. कृ. १० चं.) रे. ॥॥ऽ अ. ऽऽ॥ अन्य गोधुलिः सोग्राङ्गः
ज्ये. प्र. ३१ (ज्ये. शु. ५ बु.) मघा ।ऽऽ गु. ॥ऽ अ. ॥॥ ल. अन्य गोधुलिः १ मेषे गु. दा.
आषा. प्र. १७(आषा. कृ.७श.) उ.भा. ऽबृ.मं. ॥॥ऽ चौ. ।ऽ॥ लग्न अन्यगोधूलिः सूर्यास्तात्प्राक्
श्रा. प्र. १८ (श्रा. कृ. ८ र.) रेव. ॥॥॥ऽऽ।ऽ दि. ल. ६ चं. दा. (गोधू. अतिगं ६ घटी दोष:)
श्रा. प्र. २७ (श्रा. शु. ३ मं.) मघा ॥ऽ गु. ॥॥॥ ल. (घ. ४८।३१ उ.)

श्रा. प्र. २८ (श्रा. शु. ४ बु.) मघा ॥ऽ गु. ॥॥॥ दि. ल. ६ द्वादशस्थ चन्द्रदोष:
श्रा. प्र. २९ (श्रा. शु. ५ गु.) उ. फा. ॥॥ऽ मं.ऽरो. ॥॥ ल. १

— देशाचार से केवल पञ्जाब के लिये —

श्रा. प्र. ४ (श्रा. शु. १२ गुरु.) मू. ऽसू. ॥ऽ शु. ॥॥ ल. ३ चं. दा.
श्रा. प्र. ५ (श्रा. शु. १३ शु.) मू. ऽ सू. ॥ऽ शु. ऽ नृ. (घ. २१ उ.) ॥॥ अन्य गोधूलि १
श्रा. प्र. ७ (श्रा.शु.१५ रवि.) उ.पा.॥ऽ शु.।ऽ चौ.(घ.२८उ.)।ऽ॥ल.१, पादवेधदृष्ट्या वेधाभाव
श्रा प्र. १२ (श्राव. कृ. ४ शु.) उ. भा. ॥॥॥ऽ॥ ल. ३
श्रा. प्र. १३ (श्राव.कृ. ५ श.) उ.भा. ॥॥ऽअ. ।ऽ।ऽ (दग्धा ७।६उ.) दि.ल. ६, चन्द्र. ७ पूज्यः
श्रा. प्र. १३ (श्रा. कृ. ५ श.) रेव. ॥॥ऽ अ. ।ऽ।ऽ (दग्धा ७।६ उ.) दि. ल. ६, चं. ७, पूज्यः
श्रा. प्र. २५ (श्रा. शु. ३ गु.) उ. फा. ॥॥ऽ मं. ऽनृ. ॥॥ ल. अन्यगोधूलिः
आ. प्र. २५ (आश्वि. शुक्ल. ६ बु.) मू. ॥॥॥॥॥ ल. अन्य गोधूलिः १
आ. प्र. २७ (आ. शु. ८ शु.) उ. पा. ॥॥॥ऽ॥ ल. गोधुलिः १

— त्रिगर्त्तादि पर्वतीय प्रान्तों के लिये —

काति. प्र. ६ (कार्ति. कृ. ३ चं.) रोहि. ।ऽ॥ऽ श. रा. ।ऽऽ॥ ल. ३, ६
कार्ति. प्र. ७ (कार्त्ति. कृ. ४ मं.) रोहि. ।ऽ॥ऽ श. रा. ऽ चौ. ऽऽ॥ दि. ल. १०
कार्ति. प्र. ७ (कार्त्ति. कृ. ४ मं.) मृग. ॥॥ऽ चौ. ऽऽ॥ ल. ६ (घ. ५४।६ उ.)
कार्ति. प्र. १२ (कार्त्ति. कृ. ९ र.) मघा ॥॥ऽ अ. ।ऽ॥ ल. अन्य गोधूलिः
कार्ति. प्र. २१ (कार्त्ति. शु. ४ मं.) मूल ॥॥ऽ अ. ॥॥ ल. ६

— सर्व देशों के लिये —

मार्ग. प्र. ४ (कार्त्ति. शु. १५ र.) रोहि. ॥॥ऽ श. रा. ऽअ. ऽ॥। ल. ६
मार्ग. प्र. ५ (मार्ग. कृ. १ चं.) रोहि. ॥॥ऽ श. रा. ॥ऽ॥ दि. ल. १०
मार्ग. प्र. ५ (मार्ग. कृ. १ चं.) मृग. ॥॥ऽ नृ. ऽ॥। ल. ६ (नृ. व. ५२ उ.)
मार्ग. प्र. ६ (मार्ग. कृ. २ मं.) मृग. ॥॥ऽ नृ. ऽ॥। गोधूलिः सोग्राङ्गः
मार्ग. प्र. १० (मार्ग. कृ. ७ श.) मघा ॥॥ऽ रो. (घ. ४७ या.) ।ऽ॥ ल. ४, ७
मार्ग. प्र. १३ (मार्ग. कृ. १० मं.) हस्त ॥॥ऽ अ. (घ. ४४ या.) ऽऽ॥ ल. अन्य गोधू. ४, ७
मार्ग. प्र. १४ (मार्ग. कृ. ११ बु.) हस्त ॥॥॥ऽऽ॥ दि. ल. १० (घ. १०।५० या.)
मार्ग. प्र. २१ (मार्ग. शु. ३ बु.) उ. पा. (मृ. पं. ३६ घ. या.) ॥॥ऽ अ. ॥॥ ल. ७,
माघ प्र. ६ (माघ कृ. २ शु.) मघा ॥॥ऽ नृ. ॥॥ ल. गोधूलिः ९ (घ. ५५।३ उ.) श. दा.
माघ प्र. ८ (माघ कृ. ५ र.) उ. फा. ॥ऽ गु. ॥ऽ चौ. (घ. ३३ या.) ऽ॥। ल. गोधूलिः
माघ प्र. ९ (माघ कृ. ६ चं.) हस्त ऽ चं. ॥॥॥॥ ल. गोधूलिः,
माघ प्र. १० (माघ कृ. ७ मं.) स्वा. ॥॥ऽ मं. ॥ऽ॥ ल. ९ (घ. ५४।६ या.) श. १२ पूज्यः
माघ प्र. ११ (माघ कृ. ८ बु.) स्वा. ॥॥ऽ मं. ॥ऽ॥ ल. अन्यगोधूलिः,
माघ प्र. २३ (माघ शु. ४ चं.) उ. भा. ॥॥ऽ गु. ऽ नृ. ऽऽ॥ ल. अन्य गोधूलिः,
माघ प्र. २४ (माघ शु. ५ मं.) रेव. ॥ऽ गु. ॥॥। ल. अन्य गोधू. पादतो वेधाभाव:
फा. प्र. ५ (फाल्गु. कृ. २ श.) उ. फा. (भ. ५४।५१ उ.) ॥ऽ गु. ॥ऽ नृ. ऽ॥। ल. ९, श.दा.
फा. प्र. ६ (फाल्गु. कृ. ३ र.) हस्त ॥॥॥ऽ।ऽ ल. १०
फा. प्र. ७ (फाल्गु. कृ. ४ चं.) हस्त ॥॥॥ऽ।ऽ दि. ल. १२, चं. गु. दा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आ. प्र. २७ (आ. शु. ३ मं.) मघा ।।ऽ गु. ।।।।।। ल.
फा. प्र. ६ (फाल्गु. कृ. ३ र.) हस्त ।।।।ऽ।ऽ ल. १०
फा. प्र. ७ (फाल्गु. कृ. ४ च.) हस्त ।।।।।।ऽ।ऽ दि. ल. १२, चं. गु. दा.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

— आर्ष (कात्यायन) मत के विवाह मुहूर्त्त —

ज्ये. प्र. २३ (ज्ये. कृ. ११ मं.) अश्वि. ।।।।।।ऽ।। दि. ल. ३, ७ तुलायां चं. दा.
आ. प्र. १६ (आषा. कृ. ६ चं.) अश्वि. ऽ शु. ।।।ऽ रो. ।ऽ।। ल. अन्यगोधूलि:
आ. प्र. ८ (श्राव. कृ. १ चं.) श्रव. ।।।ऽ गु. ऽ बु. सू. ।।ऽ।। ल. १ शु. दा., पादतो वेधाभाव:
आ. प्र. ६ (श्राव. कृ. २ मं.) धनि. ऽ श. ।।।ऽ रो. (३३ घ. उ.) ऽ।।। ल. १, ३
आ. प्र. १४ (श्राव. कृ. ६ र.) अश्वि. (भ. ३६।५० या.) ऽ शु. ।।।ऽ नृ. ।ऽ।। ल. ३
आ. प्र. १५ (श्राव. कृ. ७ चं.) अश्वि. ऽ शु. ।।।ऽ नृ. ।ऽ।। दि. ल. ७, चं. दा.
आ. प्र. २८ (अश्वि. शु. ६ श.) श्रव. ।।।।ऽ रो. ।।।। ल. गोधू., १
आ. प्र. २६ (आश्वि. शु. १० र.) श्रव. ।।।।।।।।। ल. ७ घ. ३।१२ या.
का. प्र. ४ (कात्ति. कृ. १ श.) अश्वि. ।ऽ।ऽ शु. ऽ सू. ।।ऽ।। दि. ल. ६, श. दा.
का. प्र. १० (कात्ति. शु. ७ शु.) श्रव. ।ऽ।।।।ऽ।। ल. अन्य गोधूलि: ६
का. प्र. ११ (कात्ति. शु. ८ श.) धनि. (भ. २६।८ या.) ।।।।ऽ चौ. ऽऽ।। ल. ६
मार्ग. प्र. २२ (मार्ग. शु. ४ गु.) श्रव. ।।।।।।ऽ।। ल. ७
मार्ग. प्र. २३ (मार्ग. शु. ५ शु.) श्रव. ।।।।।।ऽ।। ल. अन्य गोधूलि: ४, चं. दा.
मार्ग. प्र. २३ (मार्ग. शु. ५ शु.) धनि. ।।।।ऽ नृ. ऽ।।। ल. ७
मार्ग. प्र. २४ (मार्ग. शु. ६ श.) धनि. ।।।।ऽ नृ. ऽ।।। ल. अन्य गोधूलि:
मार्ग. प्र. २६ (मार्ग. शु. ११ गु.) अश्वि. ऽ मं. ।।।।।।।। दि. ल. १० (घ. ७ उ.)
माघ प्र. १० (माघ कृ. ७ मं.) चित्रा (भ. ७।४७ या.) ऽबु. ।।।ऽ रो. ऽऽ।। ल. अन्य गोधूलि.

अशुद्धानि विवाह मुहूर्तानि

चै. शु. ४ श. रोहि. केतुयुति:
चै. शु. ५ र. मृग. ।।।ऽ रा. ऽअ. ऽऽ।ऽ दग्धादोष:४४।३६ उ. पूर्वं लग्नाभाव:
चै. शु. १० शु. मघा ।ऽ। भौमवेध: लग्नाभावश्च
चै. शु. १३ च. हस्ते ।।।।ऽ मृ. २२।० उ. ऽ।।। मृत्युपञ्चकात्पूर्वलग्नाभाव:
चै. शु. १५ बु. स्वा. ।।।ऽ सू.ऽअ. (घ. २५।० या.) ऽऽ।। लग्नाभाव:
वै. कृ. १ गु. अनु. राहुयुति:
वै. कृ. २ शु. अनु. राहुयुति.
वै. कृ. ७ बु. उ. पा. ऽ चं. ऽ।ऽ शु. ।।।।। लग्नाभाव:
वै. कृ. १२ चं. रेव. ।।।।।ऽ।।। लग्नाभाव: ३८।५२ उ. कृष्णानङ्गचतुर्दिनम्
वै. शु. १ शु. रोहि. केतुयुति:
वै. शु. २ श. रोहि. केतुयुति:
वै. शु. २ श. मृग. ।।।।ऽ मृत्युपञ्चकम्
वै. शु. ३ र. मृग. ।।।।ऽ अ. ऽ।।। लग्नाभाव:, मासान्त:
वै. शु. ६ गु. मघा ।।।ऽ भौ. । लग्नाभाव:
वै. शु. १५ गु. अनु. चन्द्रग्रहणम, राहुयुति: शनियुतिश्च
ज्ये. कृ. ५ मं. उ. पा. ।।।।।।ऽऽ क्रान्तिसाम्यम्
ज्ये. कृ. ८ श. उ. भा. ।।।।ऽ मृत्युपञ्चकम्
ज्ये. कृ. ६ र. उ. भा. ।।।।ऽ मृत्युपञ्चकम्
ज्ये. कृ. ६ र. रेव. मृत्युपञ्चकम्
ज्ये. शु. ६ गु. मघा शुक्रवृद्धत्वदोष:
आषा. कृ. ८ र. उ. भा. ऽ बु. मं. ।।।ऽ चौ. ।ऽ।ऽ लग्नाभाव:, दग्धादोषश्च
आषा. कृ. ६ चं. रेव. ।।।।।ऽऽ।। लग्नाभाव:
आषा. शु. ६ शु. उ.फा. ।।।ऽ मं. ।।।।। परिघार्धनक्षत्रान्तश्च
आषा. शु. ६ शु. ह. लग्नाभाव:
आषा. शु. ७ श. ह. मृत्युपञ्चकम्
आषा. शु. ८ र. स्वा. लग्नाभाव: मासान्त: पर्वकाल:
आषा. शु. ६ चं. स्वा. संक्रान्तिदिनम्
आषा. शु. १० मं. अनु. } राहुयुति: क्रान्तिसाम्यञ्च
आषा. शु. ११ बु. अनु. }
श्रा. कृ. ६ र.रेव. ऽ चं.मं. ।।।।ऽ।।। (द.७।२१या.)ततो भद्रा
श्रा. कृ. ६ बु. रो. (भ. ५६।३१ या.) } केतुयुति:
श्रा. कृ. ११ गु. रो. }
श्रा. कृ. ११ गु. मृग. } शुक्रयुतिश्चन्द्रवेधश्च
श्रा. कृ. १२ शु. मृग. }
श्रा. शु. ४ शु. हस्ते सिंह सिंहांशकस्थोगुरु:
आश्वि. शु. ३ रवी अनु. भद्रादोष: शनि युतिश्च
आश्वि. शु. ४ चं. अनु. शनिराहुयुति:
आश्वि. शु. ५ मं. मू. ।।।।ऽ नृ. ऽऽ।। लग्नाभाव:
आश्वि. शु. ७ गु. उ. पा. लग्नाभाव:
आश्वि. शु. १३ बु. उ. भा. (व्या. ६ नाडी) संक्रान्तिदिनम्
आश्वि. शु. १४ गु. उ. भा. मृत्युपञ्चकम्
आश्वि. शु. १४ गु. रेव. मृत्युपञ्चकम्
आश्वि. शु. १५ शु.रेव. (भ.१०।४३या.)पश्चाद्गुरो: पादवेध:
कार्ति. कृ. ५ बु. मृग. ।।।।।ऽऽ।। लग्नाभाव:
कार्ति. कृ. १२ मं. उ. फा. (वै. २७।४७ उ.) शुक्रयुति:,
कार्ति. शु. २ रवी. अनु. शनिराहुयुति:
कार्ति. शु. ६ गु. उ. पा. ।ऽ भुजङ्गपात:
का. शु. ७ शु. उ. पा. ।ऽ भुजङ्गपात:
का. शु. १० मं. उ. भा. भद्रादोष:
का. शु. ११ बु. उ. भा. (भ. १३।५३ या.) मृत्युपञ्चकम्
का. शु. ११ बु. रेव. मृत्युपञ्चकम्
मार्ग. कृ. ८ र. मघा वैधृतिदोष:
मार्ग. कृ. ६ चं. उ. फा. (मृत्यु पं. ४६ या.) ऽ बु. ।ऽगु.।ऽ मं. ऽ अ. ।ऽ।ऽ रेखाल्पत्वम्
मार्ग. कृ. १० मं. उ. फा. भद्रादोष:
मार्ग.. कृ. १५ गु. स्वा. कृष्णानङ्ग चतुर्दिनं शुक्रयुतिश्च
मार्ग. शु. १ चं. मू. } भुजङ्गपात:, ग्रहणसान्निध्यञ्च
मार्ग. शु. २ मं. मू. }
मार्ग. शु. ४ गु.उ.षा.(भ.२८।३४या.)भद्रोपरिलग्नाभावश्च
मार्ग. शु. ६ मं. उ. भा. भौमयुति:
मार्ग. शु. १० बु. रेव. (व्य. १७।१५ या.) ।ऽ।ऽ गु. ।ऽ रो. २७घ.या.ऽऽ।ऽ ५३।३४ या. रेखाल्पत्वं लग्नाभावश्च
माघ कृ. ६ गु. अनु. } ग्रहणभम्,
माघ कृ. १० शु. अनु. }
माघ कृ. ११ श. मू. ।।।ऽ चं. ।ऽ नृ. ऽऽ।ऽ रेखाल्पत्वम्
माघ कृ. १२ र. मू. (घ. ३४।६ उ. क्षीणचन्द्र:) ।।।ऽ चं. ।ऽ नृ. ऽऽ।ऽ रेखाल्पत्वम्
माघ शु. ३ उ. र. भा. भद्रादोष:
माघ शु. ४ चं. रेव. ।।।ऽ गु. ।ऽ नृ. ।।।। गुरुपादवेध:
माघ शु. ८ शु. रो. लग्नाभाव:
माघ शु. ६ श.रो. ऽमं. ।।।।ऽ रो. घ. १२ या. ऽ।ऽ। दि.ल. १२ गोधूलि २७।४८ या.गणितेन क्रान्ति साम्याभाव:
माघ शु. ६ श. मृग. वैधृतिदोष:
माघ शु. १० र.मृग. वै.वि. (भ. ३२।५१उ.)मृत्युपञ्चकञ्च
माघ शु. १५ गु.मघा ।।।ऽ शु. ऽ सू. ऽ अ. ऽऽ।। रेखाल्पत्वम्
फाल्गु. कृ. १ शु. मघा ।।।ऽ बु. ऽ सू. ऽ अ. ७ घ.या. ऽऽ।। लग्नाभावो बुधवेधश्च
फा. कृ. ३ र. उ. फा. भद्रादोष:
फा. कृ. ५ मं. स्वा. } रविवेध:,(गणितेन क्रान्तिसाम्याभाव:
फा. कृ. ६ बु. स्वा. }
फा. कृ. ७ गु. अनु. शुक्र वृद्धत्वारम्भ: ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कात्यायन मतेन—अशुद्धानि विवाह मुहूर्तानि

च. शु. १३ चं. चि. मृत्युपञ्चकम्
चै.शु. १४ मं.चि.(मृ.पं. २४ या., भ.३२ या.)ततोलम्बाभाव:
वै. कृ. ७ बु. श्र. }
वै. कृ. ८ गु. श्र. } भौमयुति:, मृत्युपञ्चकं, महापातश्च
वै. कृ.८गु.ध.(मृ.पं.४१घ.या.) ।।।ऽगु.ऽगु.ऽश्र.ऽऽ।। रेखाल्पत्वम्
वै. कृ. ९ शु. ध. ।।।ऽ गु. ऽगु. ऽश्र. ऽऽ।। रेखाल्पत्वम्
वै. शु. १२ चं. चि. (व्य. १२।४२ उ.) पूर्वं लग्नाभाव:
ज्ये. कृ. ५ मं. श्र. }
ज्ये. कृ. ६ बु. श्र. } क्रान्तिसाम्यम्
ज्ये. कृ. ६ बु. ध. क्रान्तिसाम्यम्
ज्ये. कृ. ६ गु. ध. भौमयुति:
ज्ये. कृ. १० चं. अश्वि. ।।।।ऽ श्र. ।ऽ।। लग्नाभाव:
आषा. कृ. १० मं. अश्वि. (भ. ६।२४ उ.) पूर्वं लग्नाभाव:
आषा. शु. ७ श. चि. भद्रा मृत्यु पञ्चके }
आषा. शु. ८ र.चि. (मृ. पं. ५ घ. या.) } भौमवेधश्चापि
श्राव. कृ. २ मं. श्र. ।।।ऽगु. ऽ बु. सू. ।।ऽ।। लग्नाभाव:

कन्यायां नक्षत्रान्त:

श्र. कृ. ३ बु.ध. ऽश. ।।।।ऽरो.ऽ।। लग्नाभाव:तुलायांनक्षत्रान्त:
श्रा. शु. ५ शु. चि. गुरुसिंहांशक:
आश्वि. शु. १० र. ध. ।ऽ भुजङ्गपात:
आश्वि. शु. ११ चं. ध. भद्रादोष:
आश्वि. शु. १५ शु. अश्वि. ।ऽ।ऽ शु.ऽसू. ऽ श्र.।ऽ।। रेखाल्पत्वम्
का. शु. ८ श. श्र. भद्रादोष:
का. शु. ८ र. ध. क्रान्तिसाम्यम्
का. शु. १२ गु. अश्वि. संक्रान्ति पर्वकाल:
का. शु १३ शु. अश्वि. व्यतीपात:
मार्ग. कृ. ११ बु. चि. भौमवेध:
मार्ग. कृ. १२ गु. चि. लग्नाभाव:
मार्ग. शु. १२ शु. अश्वि. मृत्युपञ्चकम्
माघ कृ. ६ चं. चि. भद्रादोष:
माघ शु. ५ मं. अश्वि. भौमयुति:
माघ शु. ६ बु. अश्वि. महापात:
फा. कृ. ४ चं.चि.भुजङ्गपातये महापातश्च परदिने लग्नाभाव:

नोट—१. यदि साहों में विवाह लग्न दिन में प्रात: का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुँच जाना योग्य है। क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ।।

२. विवाहादिमुहूर्त्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्ट सूर्य के भुक्तांश पर ही किया जाना शास्त्र-सम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और वही जम्बू, पटियाला आदिके प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है। किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्त्त चिन्तामणि, मुहूर्त्त मार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने 'पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये प्रविष्टों पर से बाण विचार करना चाहिए' ऐसा नहीं लिखा।

३. यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५-७ दिन के भीतर विवाहमुहूर्त्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयां पेड़े माष-हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये।

उपनयन मुहूर्त:

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में जन्मनेवाले बालक प्राय: स्वजात्युक्त गुण ९० फी सदी वीर्यगत प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं। अन्य यज्ञोपवीतादि वैदिक संस्कारों से उनमें उस सत्यशक्ति का क्रमश: विकास होता है, यदि वह संस्कार वर्णोचित आयु और शुभ समय में किये जावें।

वै. कृ. ५ चं. पू. षा. ल. ३ भौम ८ पूज्य:
वै. शु. ११ र. ह. ल. ३ (घ. ७।९ या.) भौम ८ दोष:
वै. शु. १२ चं. चि. ल. ३ भौम ८ दोष:
ज्ये. कृ. ३ र. मू. ल. ३,
माघ कृ. २ शु. श्ले. ल. १०, बुध शुक्रौ १२ पूज्यौ।
माघ कृ. ५ र. उ. फा. भौमवेधानन्तरं चन्द्राद्यभोग:।ल.११
माघ शु. ४ चं.उ. भा. (रिक्ताभद्राच ६।२२ या.) अभिजिति

नोट—अत्यावश्यकता में श्रद्धापूर्वक चन्द्रबल देखकर सत्तीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी समयानुसार मंत्रदीक्षा जनेऊ लिया जा सकता है।

गेहारम्भ मुहूर्ता:

वै. शु. १५ बु. स्वा. ल. २, ३
वै. शु. १० श. उ. फा. अभिजिति।
वै. शु. १२ चं. चि. ल. २
का. शु. १२ गु. रे. ल. ९ अभिजितच।
मार्ग. कृ. १ चं. रो. अभिजिति।
माघ कृ. [illegible] रो. अभि

गेहप्रवेशमुहूर्ता:

वै. कृ. १० श. शत. ल. २ (जीर्णे)
वै. शु. ७ बु. पुष्ये ल. २ (जीर्ण गृहे)
वै. शु. १० शनि उ. फा. अभिजित।
वै. शु. १२ चं. चित्रा ल. २
मार्ग. ,, ६ शनि धनिष्ठा अभिजिति (जीर्णे)
माघ ,, ९ शनि रो. (रिक्ता ८।७ या.) अभिजिति

देव प्रतिष्ठामुहूर्ता:

चै. शु. ५ र. मृगे अभिजिति
,, ,, १२ र. उ. फा. ल. ३ (घ. ९।४४ उ.) अभि.
,, ,, १५ बु. स्वा. ल. २
वै. ,, ३ र. मृगे ल. ३ अभिजितिच
,, ,, ७ बुध पुष्ये ल. ३
पौ. शु. १५बु.पुन. पादतो भृगोर्वेधाभाव: ल. ११,१२
माघ कृष्ण ५ रवि उ. फा. ल. ११,१२
माघ शु. ४ चं. उ.भा. ल. १२ (घ. ६।२२उ.) अभिजिति च

द्विरागमनमुहूर्ता:

चै.शु.८बुध पुष्ये(अष्टमी मध्यमा	मार्ग कृ. १ चं. रो.
,, ,, १३ चं. हस्ते	,, ,, ५ गु. पुन.
,, ,, १५ बु. स्वा.	,, ,, ११ बु. हस्ते
वै. कृ. २ शु. अनु.	,, ,, १२ गु. चि.
,, ,, ७ बु. उ.षा.	मार्ग. शु. ५ शु. श्र.
,,कृ.८गु.श्रव.(अष्टमी मध्यमा)	,, ,, ११ गु. रे.
,, ,, १२ चं. उ. भा.	,, ,, १२ शु. अश्वि.

फाल्गु. कृ. ६ बु. स्वा. (षष्ठी मध्यमा)

सूचना—यदि विवाह दिन से १६ दिनके अन्दर द्विरागमन हो जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं।

विशेष—यदि दीपावली को दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर में आवे तो उसमें भी कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे। ऐसे समय पति गृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्व सुख प्राप्त होता है।

"सिंहस्थगुरुनिषेधनिर्णय:"

श्रीदेवीपुराणे—सिंहसंस्थे गुरौ यत्नात्सर्वारम्भान्विवर्जयेत्। कालनिर्णये—शान्तिकं पौष्टिकं यात्रां प्रतिष्ठोद्वाहपूर्वकम्। न कुर्यात्सर्वमाङ्गल्यं सिंहस्थे च बृहस्पतौ ।। इत्यादि वाक्यों के आधार पर यद्यपि सिंह के वृहस्पति आने पर विवाहयज्ञोपवीतादि शुभकृत्यों का निषेध है। तथापि धर्मप्राण सत्पुरुषों को संकटत्रयी अर्थात् (१) आग्रह संकट

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

क्योंकि उस दिन पहले सायंकाल तक शान्तिकृत और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ।

माग. कृ. १ चं. रो. अभिजिति । माघ शु. [illegible] श. रो. श्रेष्ठ.

पर विवाहयज्ञोपवीतादि शुभकृत्यों का निषेध है । तथापि धर्मप्राण सत्पुरुषों को संकटत्रयी अर्थात् (१) आग्रह संकट

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(वरलाभान्तर उनके विशेष जोर देने पर), (२) धर्मसंकट (कन्या के दान कालातिक्रम वा किसी प्रकार यशहानि के भय से) प्राणसंकट, (कन्या के संरक्षक पिता आदि के असाध्य रोगग्रसित होने पर मृत्युभय से व दुर्भिक्ष देशविप्लव भय) के होने पर परिहार वाक्यों के आधार से सिंहस्थ के सिंहांश को त्यागकर कन्या के विवाहादि शुभकृत्य हो सकते हैं । तद्यथाह शौनकः– वरलोभातिकालाभ्यां दुर्भिक्षाद् देश विप्लवात् । विवाहः शुभदो नित्यं सिंहस्थेऽपिबृहस्पतौ ॥ यहां महर्षि शौनक के वचन में कन्या के लिए जो अतिकाल शब्द लिखा है उसका भाव यही है कि यदि कन्या रजोधर्म वाली हो चुकी हो तो उसके लिए सिंहस्थ का दोष नहीं है ।

राजमार्तण्ड में लिखा है–सिंहराशौ तु सिंहांशे यदा भवति वाक्पतिः । सर्वदेशेष्वयं त्याज्यो दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ अन्यच्च––सिंहे गुरौ सिंहलवे विवाहो नेष्ट इति मुहूर्तचिन्तामणौ ।

सर्वः सिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे । अतः उपरोक्त संकटत्रयी में से कोई एक संकटभय होने पर आवश्यकता में सिंहस्थ गुरु का सिंहांश त्यागकर विवाहादि कृत्य करने में कोई दोष नहीं है । हां ! सर्व सिंहराशिस्थ गुरुकाल में सप्ताह यज्ञ पुरश्चरण आदि सकाम नहीं किए जा सकते, केवल नैमित्तिक ये कार्य हो सकते हैं । यदि रोगभय आपत्ति आदि संकट आ पड़ें तो उनकी निवृत्ति के लिए गुरु शान्तिपूर्वक ये सब कये जा सकते हैं । यदि भयंकर रोगग्रस्त पुरुष श्रीभगवत्प्रीत्यर्थ ये कार्य करवाना चाहे तो वह कर सकता है, अन्यथा नहीं । विशेष जप सिंह कल्पद्रुम "निर्णय सिन्धु" आदि में स्पष्ट है । इस वर्ष सिंह राशि के गुरु का सिंहांशक श्रा. शु. ४ भृगुवार से प्रारम्भ होकर भाद्रपद कृ. ४ शनिवार तक रहेगा । सिंहांशक में रहते ही गुरु अस्त भी हो जायेगा इसमें विवाहादि शुभकृत्य बन्द रहेंगे ।

इस वर्ष विवाह मुहूर्त पत्नों के पृष्ठों में नहीं लिख सके एतदर्थ क्षमाप्रार्थी हूँ । भविष्य में मास पत्नों में भी पूर्ववत् लिखेंगे ।

कात्यायनोक्त नक्षत्र और वेद के चार विभाग

गत वर्षों में अकाट्य प्रमाणों एवं काशी की पण्डित सभा व भारत के प्रधान पण्डितों की सम्मतियों द्वारा सिद्ध कर चुका हूं कि कात्यायनोक्त चित्रादि चार नक्षत्रों में भी विवाह करना शास्त्रसम्मत है, जिस के उत्तर में कोई भी पञ्चाङ्गकर्ता कात्यायन समकक्षीय आर्ष बलवत्प्रमाण उपस्थित नहीं कर सके । वैसे वृथा ही अपनी शान रखने के लिये कुत्सित कटाक्षपूर्ण लेख लिखते रहे हैं । जिस को पढ़ने से कोई भी तटस्थ व्यक्ति किसी आदरणीय विद्वान् का लेख न कह कर केवल प्रलाप ही कहेगा, और उन प्रलापों के बारम्बार उत्तर देने की सभ्यसमाज में कदापि आवश्यकता प्रतीत नहीं होती । परन्तु फिर भी मैंने उन आक्षेपों का सभ्यतापूर्ण शब्दों में निराकरण किया, वह फिर भी पिष्टपेषण करने तथा इधर उधर की बातें लिखते नहीं सकुचाते । कुल्लू आदि से मेरे पास कई पत्र आये जिनमें लिखा है कि इधर कात्यायनोक्त चित्रादि नक्षत्रों में विवाह करके अनेकों वर कन्याएँ पूर्ण सुखी हैं । एक महाशय ने गतवर्ष के पञ्चाङ्ग में "वेद एक था या चार" शीर्षक देकर बे शिर पैर की बातें लिखी हैं, जिन्हें पढ़ कर विद्वान् लोग हँस रहे हैं, यदि लेखक महोदय शुक्लयजु संहिता के वेददीपाख्य भाष्य की प्रारम्भिक "तत्रादौ ब्रह्म परम्परया प्राप्तं वेदं वेदव्यासो मन्दमतीन्मनुष्यान्विचिन्त्य तत्कृपया चतुर्धा व्यस्य ऋग्यजुः सामाथर्वाख्यां श्चतुरो वेदान् पैलवैशम्पायन जैमिनिसुमन्तुभ्य उपदिदेश ते च स्वशिष्येभ्यः" इत्यादि पंक्तियों को ही देख लेते, तो उनका भ्रम कब का दूर हो गया होता ।

महोदयो ! अब मैं भविष्य में इन नक्षत्रों के विषय में निस्सार प्रलापों का कोई उत्तर न लिख कर मौन रहना ही श्रेयस्कर समझता हूं । क्योंकि––दर्दु रा यत्र भाषन्ते तत्र मौनं हि शोभनम् ।

(पञ्चाङ्गकर्ता)

पन्यास श्री विकाश विजयजी द्वारा प्राप्त जैन पर्व निर्णय

वीरसंवत २४८२-८३ आत्म सं० ६०-६१ शाका १८७८ वि० सं० २०१३ ई० सन् १९५६-५७

श्री बुद्धि विजय (बुटेराय) जी का स्वर्गदिन और श्रीमद् विजयानन्द सूरि (आत्माराम) जी का जन्म दिन	चै. सु. १	गुरुवार चैत्र प्र.	ता. १२ अप्रेल १९५६
श्रीसिद्धचक्र आंबिल ओली जी शुरू	चै. सु. ७	मंगलवारबैशाख	ता. १७ " "
,, वर्धमान (महावीर) जन्म दिन	चै. सु. १३	सोमवार ,,	ता. २३ ,, ,,
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली सं. चैत्रीपूनम सिद्धाचल मेला	चै. सु. १५	बुधवार ,,	ता. २५ ,, ,,
,, ऋषभदेववर्षीतप पारणा अक्षयतृतीया	बै. सु. ३	रविवार	ता. १३ मई १९५६
हस्तीनापुर तीर्थ मेला	बै. सु. १३	मंगलवार	ता. २२ मई ,,
श्रीमद्विजयानंदसूरि (आत्मा) स्वर्गदिन	आत्मसं० ज्ये. सु. ८	शुक्रवार	ता. १६ जून १९५६
चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	आ. सु. ७	शनिवार	ता. १४ जुला. १९५६
चौमासी चौदश	आ. सु. १४	रविवार	ता. १५ जुलाई ,,
चौमासी अट्ठाइ संपूर्ण	आ. सु. १५	रविवार	ता. २२ ,, ,,
श्री नेमनाथभगवान का जन्म दिन	श्र. सु. ५	शुक्रवार	ता. १० अग. १९५६
,, पर्यूषण पर्व अट्ठाइ प्रारंभ	म. व. ११	शनिवार	ता. १ सितंबर ,,
,, कल्पसूत्र गृहस्थापन रात्रि जागरण	म. व. १४	सोमवार	ता. ३ ,, ,,
,, कल्पसूत्र वाचना प्रारंभ	म. व. ३०	मंगलवार	,, ४ ,, ,,
,, वीर जन्म उत्सव	भा.सु. १	बुधवार	,, ५ ,, ,,
,, संवत्सरी पर्व	भ. सु. ४	शनिवार	,, ८ ,, ,,
,, जगद्गुरु विजय हरि सूरि स्वर्ग दिन	भ. सु. ११	शनिवार	,, १५ ,, ,,
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली प्रारंभ दिन	आ. सु. ७	गुरुवार	ता. ११ अक्टूबर १९५६
,, सिद्धचक्र आंबिल ओली संपूर्ण	आ. सु. १५	शुक्रवार	,, १९ ,, ,,
,, वर्धमान (महावीर) निर्वाण दीपावली	का. व. ३०	शुक्रवार	ता. २ नवम्बर १९५६
,, गौतमस्वामीकेवलज्ञानवीरसं. २४८३ शुरू	का. सु. १	शनिवार	,, ३ ,, ,,
,, भाईदूज श्रीमद्वि. वल्लभसूरि ज. दिन	का. सु. २	रविवार	,, ४ ,, ,,
,, ज्ञान सौभाग्य पंचमी	का. सु. ५	बुधवार	,, ७ ,, ,,
चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	का. सु. ७	शनिवार	,, १० ,, ,,
चौमासी चौदश	का. सु. १४	शनिवार	,, १७ ,, ,,
चौमासी अट्ठाइ संपूर्ण कार्तिक पूनम श्रीसिद्धांचल हस्तिनापुर शौरीपुर मे.	का. सु. १५	रविवार	,, १८ ,, ,,
,, जगद्गुरु विजय हरि सूरि जन्मदिन	मा. व. ७	शनिवार	,, २४ ,, ,,
,, मौन एकादशी (१५०) कल्याणकदिन	मा. सु. ११	गुरुवार	ता. १३ दिस. १९५६
,, पौष दसमी श्री पार्श्वनाथ जन्म दिन	पो. व. १०	बुधवार	,, २६ ,, ,,
,, मेरु त्रयोदशी श्रीऋषभदेव मोक्ष दिन	माघ व. १३	सोमवार	ता. २८ जनवरी १९५७
,, चौमासी अट्ठाइ प्रारंभ	फा. सु. ७	शुक्रवार	ता. ८ मार्च १९५७
,, चौमासी चौदश	फा. सु. १४	शुक्रवार	ता. १५ मार्च ,,
,, चौमासी अट्ठाइ संपूर्ण	फा. सु. १५	शनिवार	ता. १६ मार्च ,,
श्रीऋषभदेव जन्मदीक्षादिन वर्षीतप शुरु	चै. व. ८	शनिवार	ता. २३ मार्च ,,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे यहाँ से प्रकाशित—

श्रेष्ठ व्याकरण-साहित्य

व्याकरण के दिग्गज विद्वान महामहोपाध्याय पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेदी तथा महामहोपाध्याय प्रिंसिपल पं० परमेश्वरानंद शर्मा द्वारा संशोधित—

वैयाकरण सिद्धान्त-कौमुदी

श्रीमद्वासुदेव दीक्षित प्रणीत बालमनोरमा तथा श्रीज्ञानेन्द्र सरस्वती विरचित तत्वबोधिनी—दो सरल सुविस्तृत प्राचीन संस्कृत टीकाओं सहित। सिद्धान्तकौमुदी जैसे कठिन ग्रन्थ को समझने के लिए यह दोनों व्याख्या नितान्त आवश्यक हैं। इन दोनों टीकाओं के सहारे छात्र इस दुरूह ग्रन्थ को अनायास ही स्वयं लगा सकते हैं। इस लिए छात्रवर्ग से हमारा सप्रेम अनुरोध है कि अगर परीक्षा में उत्तीर्ण होना चाहते हैं तो उपयुक्त बालमनोरमातत्वबोधिनी दोनों टीकाओं वाले संस्करण को ही उपयोग में लावें। प्रथमखण्ड (कारकान्तभाग) ६२० पृष्ठों का मूल्य ४)। द्वितीय खण्ड (समास प्रभृति तद्धितप्रकरणान्त) ६१८ पृष्ठों का मूल्य ४) पूर्वार्द्ध दोनों खण्डों में समाप्त है। उत्तरार्द्ध का तृतीय खण्ड (भ्वादि प्रभृति लकारार्थ प्रकरणान्त) ६१८ पृष्ठों का मूल्य ४) चौथा खण्ड ४)

लघुसिद्धान्त कौमुदी

टीकाकार—पं० श्री विश्वनाथ शास्त्री 'प्रभाकर' प्रिंसिपल, सरस्वती संस्कृत कालिज खन्ना। (१) ह्रस्वदीर्घप्लुत् भेदों के चक्र (२) आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों के दो चित्र (३) प्रयोगों का सन्धिविच्छेद (४) प्रयोगों की सिद्धि का प्रकार (५) सूत्रविषयक सुभाषितों का उल्लेख (६) अकर्मक और सकर्मक धातुओं का निर्णय (७) कर्ता और कर्म आदि का उक्त और अनुक्त का विचार (८) कोष्ठक में प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष का विचार (९) चित्र में परस्मैपद और आत्मनेपद की व्यवस्था (१०) चक्र में धातुओं के अनुबन्ध की इत्संज्ञा का फल (११) धातुओं के मूल में न दिये गये रूपों के विशेष उच्चारण और उनकी सिद्धि (१२) इनके अतिरिक्त परिशिष्ट में (१३) लघुलिंगानुशासन (१४) व्याकरण, सूत्र, वार्तिक, भाष्य और व्याख्यान के सोदाहरण लक्षण दिये गये हैं। (१५) व्याकरण के चार अनुबन्ध, पांच सन्धियों का विवरण (१६) लेखोपयोगी नियम और चिन्ह (१७) अशुद्धि संशोधन (१८) उपसर्ग साथ लग जाने से धातुओं का अर्थ भेद (१९) लघुकौमदी में आए हुए समस्त प्रयोगों का संग्रह तथा उनका भाषा में अर्थ (२०) अव्यय, धातुपाठ के हिन्दी भाषा में अर्थ (२१) इस आवृत्ति में हिन्दी भाषा में टीका भी दे दी है। काशी, बिहार तथा पंजाब की परीक्षाओं के प्रश्नपत्र भी साथ हैं। उपयुक्त विशेषताओं से ही आप अनुभव करेंगे कि पुस्तक छात्रों के लिये कितनी उपयोगी हो सकती है। मोटा अक्षर। ग्लेज कागज। छठा संस्करण। मूल्य केवल १॥)

लघुसिद्धान्तकौमुदी

सुप्रसिद्ध टीकाकार व्याकरणाचार्य श्री पं० श्रीधरानन्दजी शास्त्री विरचित अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिंदी टीका सहित। सब रूपसिद्धि इस में दी हैं। अनुवाद इतना सरल है कि बिना गुरुके ही छात्र समझ सकते हैं! संपूर्ण पुस्तक १००० पृष्ठों में समाप्त हुई है। मू० ७)

संस्कृत व्याकरणसार

ले० प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम० ए०

इस पुस्तक की सहायता से इण्टरमीडियट और बी० ए० के विद्यार्थी हिन्दी भाषा द्वारा संस्कृत भाषा का व्यवहारिक और स्थायी ज्ञान अनायास प्राप्त कर लेते हैं। प्रोफेसर साहब ने अपने व्यापक अनुभव से पुस्तक में ऐसे प्रयोगात्मक अभ्यास जोड़ दिये हैं जिन से विद्यार्थियों को प्रवाह पूर्ण अनुवाद करने की शक्ति भी मिल जाती है और व्याकरण के जटिल नियम भी उनके मस्तिष्क में जम कर बैठ जाते हैं।

पुस्तक की रचना सभी यूनिवर्सिटियों के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को सामने रख कर की गई है परन्तु पंजाब यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों का विशेष ध्यान रखा गया है। इसी लिए पंजाब यूनिवर्सिटी की पाठ्यविधि देने के साथ साथ उसके कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न भी जोड़ दिये गये हैं। पौने पांच सौ पृष्ठ, मजबूत जिल्द मू० केवल ६)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता,

नैपाली खपरा (पो० बा० ७५) बनारस। ७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १५८६) दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारा व्याकरण-साहित्य

सुगम-संस्कृत व्याकरण

लेखक—प्रो० आनन्दस्वरूप गुप्ता, एम० ए०

यह पुस्तक स्कूलों तथा कालिजों दोनों प्रकार के छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर लिखी गई है। इस में उत्तर-प्रदेशीय शिक्षा बोर्ड द्वारा हाई-स्कूल तथा इण्टरमीडिएट परीक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्य क्रम का पूर्णरूप से अनुसरण किया गया है। उपर्युक्त पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित सभी शब्दरूप तथा धातुरूप एवं आवश्यक बातें इस पुस्तक में दी हुई हैं। मूल्य २।।)

सोम-संस्कृत व्याकरण

मिडिल श्रेणी की पाठ्य प्रणाली के अनुसार अनुभवी अध्यापकों द्वारा लिखी गई यह पुस्तक विद्यार्थियों के लिए परमोपयोगी मानी गई है। संस्कृत व्याकरण में प्रवेश करने वाले भी इससे लाभ उठा सकते हैं। मू० १।)

व्याकरण सौरभ

मैट्रिक तथा प्राज्ञ की पाठ्य-प्रणाली के अनुसार श्री प्रकाशचन्द्र शास्त्री द्वारा लिखी गई यह पुस्तक इतनी सुगम है कि विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण के आवश्यक तत्त्वों को अनायास ही समझ लेते हैं। मूल्य २)

संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण

श्रीमती ऊषा भटनागर बी० ए० और श्री गणपतराय बी० ए० द्वारा लिखित इस पुस्तक में व्याकरण सम्बन्धी सभी प्रारंभिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला गया है और इस विषय को बड़े सरल ढंग से समझाया गया है। व्याकरण प्रारंभ करने वालों के लिए उपयोगी है। मूल्य १)

संस्कृत व्याकरण का मानचित्र

Sanskrit Grammar at a Glance

प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, तर्क शिरोमणि

का

अद्भुत आविष्कार

इस में वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत व्याकरण प्रस्तुत किया गया है। एक बड़े आकार में संस्कृत का मानचित्र है जिस में संस्कृत शब्दों का विहङ्गम दृष्टि से विभाग और श्रेणीकरण दिया है। इसमें सुबन्त और तिङन्त रूप संक्षिप्त रूप से स्मृति-सङ्केतों के साथ दिये गये हैं। भाषा विज्ञान के ध्वनि सिद्धान्त के आधार पर सन्धि को बहुत सरल रूप में केवल १२ नियमों में दिया है। व्याकरण के अन्य सभी प्रकरण, कारक, समास कृदन्त, तद्धित लिंग आदि का अत्यन्त आवश्यक अंश बहुत सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य केवल १।)

आचार्य नरेन्द्र देव, डा० देशमुख और डा० सूर्यकान्त आदि विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा की है।

छन्दोऽलङ्कार मंजरी

सनातनधर्म कालेज अंबाला छावनी के संस्कृत-हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० संसार चन्द्र ने इस पुस्तक में प्रारंभिक विद्यार्थियों की सुविधा के लिए हिन्दी के प्रमुख छन्दों और अलङ्कारों का सुबोध वर्णन किया है। मू० २)

संस्कृत रत्नावली

श्री मुकुन्दशास्त्री खिस्ते साहित्याचार्य तथा श्री चन्द्रकान्त शास्त्री बी० ए० द्वारा सम्पादित उत्तर प्रदेशीय हाईस्कूल परीक्षा के लिए अनिवार्य संस्कृत पुस्तक बहुत रोचक है। मू० १।।)

अभिनव संस्कृत परिचयः

प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम० ए० एम० ओ० एल० ने नवछात्रों को संस्कृत का परिचय देने के लिए गद्य, पद्य और नाटक के सरल तथा मनोरम उद्धरण संकलित किए हैं। कठिन शब्दों के अर्थ साथ ही साथ दे दिये गये हैं तथा अन्त में संक्षिप्त संस्कृत व्याकरण जोड़ दिया गया है। पुस्तक प्रभाकर परीक्षा में पाठ्य ग्रंथ के रूप में पढ़ाई जाती है। मूल्य २)

एक अनुभवी प्रोफेसर की देन

'प्रेमी' जी और उनका रक्षाबंधन	२।)
'स्वप्नभंग' की समीक्षा	२।)
'प्रसाद' और 'राज्यश्री'	१।=)
'निर्मला'—एक समीक्षा	।।।-)
'ब्रजमाधुरीसार'—व्याख्या	२।।=)
संक्षिप्त कवि परिचय—२० प्रमुख कवि	।।।≡)
स्मृति की रेखाएँ—प्रश्नोत्तर के रूप में	१≡)
'पथिक'—एक समीक्षा	१।।-)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा, (पो० बा० ७५) बनारस। ७८ चाँदनी चौक, (पो० बा० १२८६) दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनुवाद चन्द्रिका

लेखक—पं चक्रधर 'हंस' नौटियाल, एम०ए० एल०टी० शास्त्री

यह पुस्तक हाई स्कूल तथा इण्टरमीडियेट कक्षाओं के छात्रों को सरल तथा वैज्ञानिक ढंग से संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सिखाने के उद्देश्य से लिखी गई है। इसमें बहुत ही सरल पद्धति द्वारा अनुवाद के मूलभूत नियमों का विवेचन किया गया है। व्याकरण तथा अनुवाद दोनों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध होने से इस पुस्तक में व्याकरण के नियमों का भी रोचक वर्णन है। आवश्यक शब्द-रूप तथा धातु रूप भी साथ में दिये हुये हैं जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। प्रत्येक पाठ के साथ अनुवादोपयोगी शब्दावली दी हुई है। संस्कृत भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद करने के लिए संस्कृत साहित्य के बहुत ही उत्तम तथा उपयुक्त अंशों का संकलन किया गया है जिन के अनुशीलन से विद्यार्थियों को शुद्ध तथा आकृष्ट शैली में संस्कृत लिखने का अभ्यास हो सकता है। पुस्तक के अन्त में यू०पी० तथा पंजाब की परीक्षाओं के अनुवाद सम्बन्धी प्रश्नपत्र भी दिये है,और अन्त में उपयोगी टिप्पणियां जोड़ कर पुस्तक को विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपादेय बना दिया गया है। आशा है कि विद्यार्थी इससे अवश्य ही लाभ उठायेंगे। नवां संस्करण, मूल्य २।)

आदर्श प्रस्ताव-रत्नमाला

संपादक—पं० विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर

इस पुस्तक में लगभग १०० निबन्ध (प्रस्ताव) भिन्न भिन्न लेखकों के संग्रहीत हैं, जो धार्मिक, सामाजिक, विषयों को लेकर सरल, सुबोध और प्राञ्जल भाषा में लिखे गये हैं। यद्यपि संस्कृत निबन्धों की दो चार पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं किन्तु जिस प्रकार के अपेक्षित लेखों का संकलन इस पुस्तक में हुआ है वैसा अन्यत्र देखने में नहीं आता, जो आज के युग में अत्यन्त आवश्यक है। अतः इसकी प्रति प्रत्येक संस्कृत प्रेमी छात्र को अपने पास अवश्य रखनी चाहिए। उत्तम कागज स्वच्छ छपाई के साथ लगभग ४२० पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य ४) रु० मात्र रखा गया है।

※

सहस्रों अध्यापकों और लाखों विद्यार्थियों द्वारा अभिनंदित पुस्तकें

※

अनुवादकला

श्री चारुदेवशास्त्री एम०ए० एम०ओ०एल० अध्यक्ष संस्कृत विभाग, श्री दयानन्द कालेज, अम्बाला द्वारा प्रणीत अनुवाद-कला अथवा वाग्व्यवहारादर्श में अनुवाद-कला को सरल और सुगम बनाने का पूरा प्रयत्न किया गया है—जो अध्यापकों एवं शिक्षार्थियों—दोनों के लिए परम उपयोगी और व्यवहारिक है। विशारद, मध्यमा, शास्त्री आदि उच्च परीक्षाओं के लिए कोई बढ़िया अनुवाद की पुस्तक नहीं थी। यह पुस्तक इन्हीं परीक्षार्थियों के लिए लिखी गई है। ऐसी उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन से अनुवाद कला की एक बड़ी कमी की पूर्ति हो गई है। मूल्य केवल २।।) है।

बालनिबन्धादर्श

सम्पादक—पं० विश्वनाथ शास्त्री प्रभाकर। लेखक ने प्रथमा परीक्षोपयोगी लेखों से युक्त इस पुस्तक का सम्पादन कर परीक्षार्थी सुकुमारमति बालकों के लिए बड़ी उदारता दिखाई है। निबन्ध किस प्रकार लिखना चाहिए, निबन्ध लिखने के समय किन-किन बातों की अपेक्षा होती है आदि विषयों की भूमिका लिख कर सोने में सुगन्ध भर दी है। मूल्य १।।)

संस्कृतानुवाद-निबन्धादर्शः

लेखक—श्रीपूर्णानन्द आचार्य। यह हाईस्कूल तथा इण्टर के छात्रों के लिए लिखी गई है। इसमें अनुवाद सीखने के वैज्ञानिक तथा सरल तरीके बताये गये हैं और निबन्धोपयोगी बातों के साथ २ परीक्षा में आनेवाले प्रश्नों के ऊपर सरल शब्दों में निबन्ध लिख कर दिखाये गये हैं जो छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इस पुस्तक के प्रकाशनसे शिक्षा-जगत की एक कमी पूरी हो गई है। मूल्य १।।) मात्र

अनुवाद कौमुदी

प्रो० दुर्गादत्त पंत शास्त्री और प्रो० प्रकाशचंद शास्त्री ने इस उपादेय पुस्तक में संस्कृत से अनुवाद करने का सरल ढंग समझाया है। व्याकरण के गूढ रहस्य भी स्पष्ट किये गये हैं। मूल्य १।।)

मोतीलाल बनारसी दास, प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा, (पो० बा० ७५) बनारस

७८ चाँदनी चौक, (पो० बा० १५८६) दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेघदूत

(संजीवनी तथा गवेषणात्मक हिन्दी की टीकाओं से सुशोभित)

टीकाकर और संपादक प्रो० संसारचन्द्र एम० ए०, अध्यक्ष संस्कृत हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कालेज अम्बाला तथा प्रो०मोहनदेव शास्त्री बी०ए०

मेघदूत पर अनेक टीकाएं प्रकाशित हुई हैं परन्तु यह टीका अद्वितीय और छात्रों के लिए परमोपयोगी है। मेघदूत का ऐसा शाब्दिक और प्रवाह पूर्ण एवं सरल अनुवाद अब तक नहीं हुआ। मूल पाठ के साथ-साथ मल्लिनाथ की टीका भी दी गई है और पाठभेद एवं व्याख्या भेद के निर्देश कर दिए गये हैं जिससे अध्ययन एक पुस्तक से ही तुलनात्मक हो जाता है। पादन पाश्चात्य शैली से किया गया है और मेघदूत काव्य तथा कालिदास से सम्बन्धित सभी बातों पर प्रकाश डाला गया है, यहां तक कि कालिदास सम्बन्धी आधुनिक अनुसन्धान भी उपस्थित किये गये हैं, और मेघदूत के भौगोलिक स्थलों की भी चर्चा हो गई है। विद्वानों ने पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है और इसे विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी बताया है। पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों खण्ड एक ही जिल्द में, मूल्य केवल ५)

* छात्रों के लिए सफलता दायक ग्रन्थ *

भोजप्रबन्ध

बल्लालदेव कृत संस्कृत व्याख्या, हिन्दी तथा अंगरेजी अनुवाद, कोष आदि प्रो० जगदीशलाल शास्त्री एम. ए. कृत। मूल्य ३।।।)

हितोपदेश (मित्रलाभ)

टीकाकार–पं० विश्वनाथ झा व्याकरणाचार्य। यह पुस्तक उन कोमल-बुद्धि बालकों के लिए लिखी गई है जिन्हें प्रथमा परीक्षा देनी है। इसमें प्रत्येक पद की सरल शब्दों में व्याख्या, कठिन पदों का समास, विग्रह कोष आदि दिखाये गये हैं। प्रत्येक अनुच्छेद तथा प्रत्येक श्लोक का अन्वय एवं व्याख्या अलग-अलग दिये हैं जिससे परीक्षार्थी अनायास ही इसे तैयार कर सकते हैं। प्रथमापरीक्षार्थियों से हमारा अनुरोध है कि वे इसकी एक प्रति अवश्य मंगाकर लाभ उठावें। मूल्य १।) मात्र।

रघुवंश

मल्लिनाथ कृत संजीवनी, श्री पं० धारादत्त कृतछात्रोपयोगी संस्कृत व्याख्या, हिन्दी अनुवाद, अन्वय, वाक्य समासादि तथा कथासार सहित। छात्रों के लिए अतीव उपयोगी है। सफेद कागज पर छपा है। एक-एक सर्ग अलग भी मिलता है। प्रत्येक सर्ग का मूल्य ।।=) १ और २ सर्ग १।) १ से ३ सर्ग तक २) २, ३ और ४ सर्ग २) १ से ५ सर्ग तक ३)

एकादशोपनिषद्

उदासीनवर्य श्रीस्वामी अमरदासजी कृत सरल संस्कृत मिताक्षरा व्याख्या सहित। यह व्याख्या शांकरभाष्य को समझने के लिए बहुत उपयोगी है। इसलिए इसके अनेकों संस्करण आज तक बिक चुके हैं। अब नया संस्करण बड़ी सजधज के साथ नये टाईप बढ़िया कागज पर छप रहा है। इस बार साथ में शाङ्करभाष्य भी दे दिया है ताकि शाङ्कर भाष्य पढ़ने वालों के लिए आसानी हो जावे। मूल्य समयानुसार सस्ता ही रख रहे हैं। प्रतीक्षा करें।

साहित्यदर्पण-प्रश्नोत्तरी

साहित्यदर्पण के जितने भी प्रश्न परीक्षा-में पूछे जा सकते हैं वे सब इस में उत्तर सहित दिये गए हैं। साहित्यिक छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। पहला संस्करण तो हाथों हाथ ही बिक गया है। अब नया संस्करण छपा है। मूल्य १)

तर्कसंग्रहः–

अन्नं भट्टविरचित। पं० ज्वालाप्रसाद कृत छात्रोपयोगी अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दी अनुवाद सहित। मूल्य ।–)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा (पो० बा० ७५) बनारस — ७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १५८६) दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रोफेसर धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० एम० ओ० एल०
तर्क-शिरोमणि, अध्यक्ष संस्कृत विभाग मेरठ कालेज, कन्वीनर
संस्कृत बोर्ड आफ स्टडीज आगरा युनिवर्सिटी की
जीवन व्यापी साधना का प्रसाद

भारतीय दर्शन शास्त्र (न्याय वैशेषिक)

मूल्य २॥), बढ़िया संस्करण ३)

यह ग्रन्थ ऐसे अनुभवी विद्वान द्वारा लिखा गया है जिन्होंने अपना जन्म भारतीय दर्शन के अध्ययन में लगा दिया है और जो पाश्चात्य दर्शन शास्त्र में भी निष्णात हैं। २१ वर्ष से अधिक समय तक एम० ए० श्रेणी के छात्रों को भारतीय दर्शन का अध्ययन कराने वाले प्रौढ़ दार्शनिक द्वारा लिखा गया यह ग्रन्थ अपने ढंग का अनूठा है। हिन्दी भाषा में तो यह अपने ढंग की पहिली रचना है।

सारे वैदिक दार्शनिक सम्प्रदायों के विवरण के साथ २ इसमें बौद्ध दर्शन के साहित्य और सिद्धान्तों का प्रामाणिक विवेचन विशेष रूप से किया गया है। दार्शनिक विवेचन संक्षिप्त होने पर भी आलोचनात्मक है। न्याय वैशेषक शास्त्र जो भारतीय दर्शन का द्वार है, इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है उसका संक्षिप्त परन्तु पूर्ण इतिहास और सिद्धान्तों का विशद तथा आलोचनात्मक विवेचन इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। भारतीय दर्शन शास्त्र में प्रवेश चाहने वाले पाठकों के लिए यह ग्रंथ बहुत लाभदायक और उपयोगी है। ग्रंथ पर अभी-अभी श्री हरजीमल डालमिया पुरस्कार मिला है।

न्याय-सिद्धान्तमुक्तावली -प्रश्नोत्तरी

विद्वान लेखक ने इस प्रश्नोत्तरी को लिखकर मुक्तावली को मानो वास्तव में छात्रों के लिए 'मुक्तावली' बना दिया है। छात्रोपयोगी हर एक प्रश्न जो परीक्षा में पूछे जा सकते हैं सब उत्तर सहित सुबोध और सरल भाषा में दिये हैं। मूल्य १)

❀ हमारे यहाँ से प्रकाशित दार्शनिक साहित्य ❀

न्याय सिद्धान्त मुक्तावली

(हिन्दी अनुवाद और व्याख्या)

दार्शनिक आलोचना और विवेचना सहित

[प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, तर्कशिरोमणि कृत]

न्याय सिद्धान्त मुक्तावली को भारतीय दर्शन के किसी भी सम्प्रदाय की दुरुह जटिल और पारिभाषिक भाषा और सिद्धान्तों में प्रवेश पाने के लिए द्वार समझा जाता है परन्तु दर्शन शास्त्र की प्रथम प्राइमर होने पर भी यह ग्रन्थ नव्य न्याय की जटिल शब्दावली और प्रक्रिया से युक्त होने के कारण पर्याप्त कठिन है। इसका प्रथम भाग यों तो प्रत्यक्ष खण्ड कहलाता है परन्तु उसमें प्रत्यक्ष प्रमाण के निरूपण के साथ २ प्रारम्भ की प्रस्तावना में न्यायवैशेषिक का लगभग सारा ही विषय संक्षिप्त रूप से आजाता है। इस प्रकार न्याय सिद्धान्त मुक्तावली के प्रथम खण्ड को भारतीय दर्शन का द्वार समझना चाहिये। प्राचीन पद्धति से पढ़ने वाले छात्र विशेषकर प्रारम्भ में दर्शन शास्त्र जैसे विषय का भी अध्ययन रटकर ही करते पाये जाते हैं, परन्तु इस व्याख्या में दार्शनिक तत्वों को इस प्रकार सुलझा कर समझाया गया है कि जिससे पढ़ने वालों के अन्दर दार्शनिक बुद्धि का विकास हो।

मूल्य केवल ४) रु०। कपड़े की जिल्द ५॥)

आर्यविद्यासुधाकरः

प्राचीनार्वाचीनार्यजनसंपादितानां विविधविद्यानीतिधर्मादिविचाराणां विज्ञानस्य प्रकाशकः सुरतपत्तननिवासिना महाराष्ट्राभिजनेन चिमणा भट्ट सूनुना भट्टयज्ञेश्वरशर्मणा विरचितः। सचायं महामहोपाध्याय श्री पं शिवदत्तकृत टिप्पणीभिः नूतनटिप्पणीभिश्च काशिराजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयस्याध्यक्षपदमधितिष्ठता डाक्टर श्री मङ्गलदेव शास्त्री एम० ए० डी० फिल० (आक्सफोर्ड) इत्यनेन सपरिश्रम संशोध्य सम्पादितः तृतीय संस्करणम्। १०)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा (पो० बा० ७५) बनारस ● ७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १५८६) दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साबुन उद्योग की अतिउत्तम पुस्तक

सोप मेकर्ज गाइड [साबुन इंडस्ट्री]

[रचयिता—सुरेशचन्द्र सहगल]

ऐसी लाभदायक, उत्तम और सच्ची पुस्तक दूसरी कोई नहीं छपी, इस पुस्तक में साबुन बनाने के सब भेद बिना किसी संकोच के खोल दिए गए हैं कोई बात छिपा कर नहीं रक्खी यह बात देखकर बड़े २ साबुन बनाने वाले कारखानों में हलचल मच गई है। क्योंकि उनके समस्त भेद प्रकट कर दिए गए हैं जिनको वह सहस्रों रुपया लेकर भी नहीं बताते थे। जिसने पुस्तक खरीद ली वह धनवान बन गया और सैकड़ों रुपये के व्यय से बच गया, यदि आप साबुन का कारखाना खोलना चाहते हैं तो पहले इस पुस्तक को खरीदें। साबुन में हर प्रकार की खुशबू का हाल लिखा गया है इस पुस्तक में हर प्रकार के देशी तथा अंग्रेजी साबुन बनाने के अति सुगम और नवीन-नवीन योग लिखे गये हैं जिनसे आप कुछ घन्टों में हर प्रकार का अतिउत्तम चिकना, सस्ता और चमकदार, साबुन बना सकते हैं। जैसे अमृतसरी फूल साबुन, हन्डा साबुन, सनलाइट, टर्किश बाथ सोप, नीम का साबुन इत्यादि। आज ही कार्ड लिख कर पुस्तक मंगवा लें। वरना पुस्तक समाप्त होने पर दूसरा संस्करण देर से मिलेगा, यदि पुस्तक का मूल्य सौ रु० भी रखा जाता तो भी कम था। अर्थात् ६) रखा है। डा० व्यय ।।।≈)

कपड़े का उत्पादन करके देश का उत्थान कीजिये

वीविंग गाइड (कपास से कपड़ा)

[लेखक—एस० एन० चोपड़ा]

इस पुस्तक के तीन भाग हैं। पहले भाग में कपड़े बुनने वाले रेशों से लेकर कपड़े की बुनाई तक सारा हाल बड़े संक्षेप से वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त कपड़ा बुनाई के काम में आने वाले कल पुर्जे उदाहरणतया ताना, पर्शान, खड्डी, रन्छ, कंघी, शटल इत्यादि चित्र सहित भली भांति वर्णन किया गया है। दूसरे भाग में कपड़े की बनावट तथा कपड़े के डिज़ाइन आदि के विषय में बताया गया है। पुस्तक का तीसरा भाग कपड़ा और सूत गणित के सम्बन्ध में है। कपड़े के कारखानों और मिलों में काम करने वालों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त लाभप्रद है। उन विद्यार्थियों के लिए जो कि कपड़े की बुनाई का काम सीख रहे हैं उनके लिए तो यह पुस्तक एक अमोल-रत्न है। मूल्य ४) चार रुपया डाक खर्च ।।।≈)

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने तथा वी०पी० द्वारा मंगाने का पता:

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली—६

मेस्मेरिज़्म विद्या के चमत्कार सचित्र

हिप्नोटिज़्म और मेस्मेरिज़्म

[लेखक—अमोलचन्द्र शुक्ला]

हिप्नाटिज़्म एक ऐसा विज्ञान है जो कि वर्तमान युग में पाश्चात्य देशों में असाधारण रूप से विकसित हो रहा है। आज का वैज्ञानिक यह स्पष्टरूप से समझ रहा है कि हिप्नोटिज़्म भी मनुष्य के जीवन को ऊँचा उठाने में उतना ही उपयोगी सिद्ध हो सकता है. जितनी कि विद्युतप्रकाश जैसी भौतिक शक्तियां। इसलिए वे लोग नये-नये मार्गों का अनुसन्धान करने और हिप्नोटिज़्म की व्यापक उपयोगिता के लिये दिन-रात प्रयत्नशील हैं।

इस पुस्तक में हिप्नोटिज़्म और मेस्मेरिज़्म विद्या के बारे में पूर्णरूप से आदि से अन्त तक प्रकाश डाला गया है। डा० मेस्मर ने लिखा है कि मेस्मेरिज़्म द्वारा सैकड़ों बीमारियों का इलाज, प्रेमिका को वश में करना, खोई हुई चीजों का पता लगाना, पशु-पक्षियों व मनुष्यों को वश में करना, अपने इष्टदेवों के दर्शन करना, भूत-प्रेत की छाया दूर करना, परीक्षार्थी का पास या फेल होने का पता लगाना, नौकरी व रोजगार का पता लगाना आदि काम किये जा सकते हैं तथा साथ ही अनेकों आश्चर्यजनक खेलों का वर्णन भी किया गया है। पुस्तक मंगाकर हिप्नोटिज़्म व मेस्मेरिज़्म की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करें। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई पृष्ठ संख्या ३५५ सजिल्द मूल्य केवल ६) छः रुपया डाक व्यय १) पृथक।

शाक-भाजी [तरकारी] की खेती

(लेखक—राजेश गुप्त I. Sc.)

यह पुस्तक देहाती पुस्तक भंडार की एक मशहूर पुस्तक है। जो कि देहाती भाइयों की निगाहों में बड़े सम्मान से देखी जा रही है। सब्जियों की खेती के विषय में हिन्दी भाषा में सर्वोत्तम पुस्तक है जिसमें देशी तथा विदेशी दोनों प्रकार की तरकारियों को बोना जमीन की जांच करना, बीमारी और उसकी चिकित्सा, खाद से ज्यादा फसल तैयार करने के ढंग, बिना मौसम की खेती करने के सार्टिफिकट नियम, तथा बहुत सी मालूमात लिख दी गई हैं। आप कोई भी सब्जी बोना चाहें उसके लिए पूरी बात इस पुस्तक में पढ़ें फिर आप खेती करें या माली को समझा दें। आप सर्वदा सफल होंगे और आलू, अदरक, अरबी, अजवाइन, बाकला बन्दगोभी, बैंगन, भिण्डी, तोरी, प्याज, पालक, पोदीना, धनियां, पेठा, टमाटर, तरबूज, फूलगोभी, टिंडा, चुकन्दर, खरबूजा, जीरा, सिंघाड़ा, सौंफ, सेम, सरदा, शलगम, शकरकन्द, करेला, घीया, कद्दू आदि सब चीजों की काश्त कर सकते हैं। मूल्य ३।।) साढ़े तीन रुपया डाक खर्च ।।।≈) अलग।

नोट—फलों की खेती ३।।) आधुनिक कृषिविज्ञान ६) छप कर तैयार हैं।

देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, देहली—६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दर्जी मास्टर दोस्त (दर्जियां)

[ले०—मास्टर बद्रीप्रसाद]

जिसको पढ़कर थोड़ी लिखी पढ़ी कम समझ स्त्रियाँ व पुरुष भी घर ही में हर प्रकार का कपड़ा काटना और सीना सीख जाते हैं तथा जिससे एक साधारण मनुष्य भी पूरा टेलर मास्टर बन सकता है। यदि आप चाहते हैं कि आपके तथा बच्चों के कपड़े घर ही में उम्दा सिल जायें तो एक पुस्तक मंगाकर रखें, इस नये संस्करण में नई फैशनबुक भी जोड़ दी गई है। लड़कियों को दहेज में देने के लिये अमूल्य वस्तु है। मूल्य २॥) डाक खर्च ॥=) अलग।

छः रुपये में मैट्रिक पास

प्रैक्टिकल इंगलिश टीचर (लेखक—राजेश्वर कुमार गुप्त एम० एस० सी० डी लिट्)

दुनियां के एक कोने से दूसरे कोने तक अंग्रेजी बोली जाती है संसार के छोटे बड़े व्यापारों में, मिलों और कारखानों में और साइन्स के नवीन आविष्कारों में विश्वव्यापी अंग्रेजी भाषा का बोल-बाला है। आप अगर अंग्रेजी नहीं जानते हैं तो आप दुनियाँ से अलग पड़े रहेंगे। इसलिए-अंग्रेजी सीखिये। अंग्रेजी सीखना बहुत ही सरल है। अंग्रेजी परिवार में जिस प्रकार बच्चे अपनी माताओं से अंग्रेजी सीख लेते हैं आप भी उस ईश्वरीय देन के मुताबिक केवल एक घन्टा प्रतिदिन हमारी इस पुस्तक को पढ़कर तीन माह में याद कर सकते हैं। और अंग्रेजी मैट्रिक की योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। हिन्दी जानने वाले लड़के-लड़कियाँ इस पुस्तक की मदद से केवल अंग्रेजी में मैट्रिक का इम्तिहान पास कर सकते हैं। ४५२ पृष्ठ, मूल्य छः ६) रुपया डाक खर्च सहित।

स्त्री-शिक्षा अथवा चतुर गृहणी

[ले०—श्रीमती साधना सैन]

स्त्रियों के लिए इससे उपयोगी पुस्तक आज तक हिन्दी संसार में कहीं नहीं छपी। यह पुस्तक प्रत्येक नारी के बाल्यकाल से मरण-पर्यन्त तक की सच्ची जीवन-सहचरी है। इसमें आरम्भ की शिक्षा, अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन बनाने की विधि, शिल्प विद्या सीना-पिरोना, गर्भरक्षा, धात्री-शिक्षा, स्त्री-रोगों की चिकित्सा, बालकों का पोषण और धर्मोपदेश एवं अनेक प्रकार की रीति-नीति और व्रत-त्यौहारों का वर्णन है; साथ ही साथ यह बताया गया है कि पत्नी का पति के प्रति और पति का पत्नी के प्रति क्या कर्तव्य है? इनकी गृहस्थी कैसे सुखमयी बन सकती है। माता-पिता की ओर से लड़की को अमूल्य शिक्षायें दी गई हैं। नव-विवाहित पति-पत्नी के लिए यह पुस्तक पथ-प्रदर्शक का काम देगी। मूल्य २॥) ढाई रु० डाक खर्च ॥=) अलग।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली-६.

देहाती अनुभूत योगसंग्रह

प्रथम भाग—४५० (साढ़े चार सौ) से ऊपर पृष्ठ, और लगभग ६०० छः सौ पूरे अनुभूत और प्रसिद्ध वैद्यों हकीमों तथा संन्यासियों के गुप्त योग। मूल्य ६) छै रु० डाक व्य. १)

द्वितीय भाग—लगभग ३०० पृष्ठों का है। इनमें और देश भर के सफल चिकित्सकों संन्यासियों द्वारा प्रदत्त विशेषाति-विशेष योग हैं। मूल्य ५) पाँच रुपये डाक व्यय १) पृथक। ये वही अनमोल पुस्तकें हैं, जिनमें लेखक ने सहस्रों रुपये व्यय करके नगर-नगर गाँव-गाँव और पर्वत की गुफाओं में वर्षों तक भ्रमण करके वैद्यों हकीमों तथा संन्यासियों के गुप्तयोग प्राप्त करके देश की निर्धन जनता के कल्याणार्थ पुस्तक रूप में भेंट कर दिये हैं। इन पुस्तकों का एक-एक योग सैकड़ों वैद्यों, डाक्टरों तथा हकीमों द्वारा पचासों बार परीक्षित हो चुका है और वे लोग इसकी पूरी पूरी प्रशंसा कर रहे हैं। इसीलिए दिन प्रति-दिन इन पुस्तकों की माँग बढ़ती जा रही है। पुस्तकें ऐसी भाषा में लिखी गई हैं, जिन्हें साधारण से साधारण आदमी भी समझ कर आसानी से दवाएँ बना ले। विशेषता यह है कि अधिकांश दवाएं केवल थोड़े से पैसों में ही तैयार होने वाली हैं और अंग्रेजी दवाओं से भी कई गुना अधिक लाभ पहुँचाती हैं। संन्यासियों के भी सैकड़ों गुप्त योग हैं, जो कुछ घन्टों में ही रोग को मिटा कर आपको चमत्कृत कर देंगे। ये पुस्तकें पास रखने वाला साधारण व्यक्ति भी किसी अच्छे वैद्य से कम नहीं, और जिस वैद्य के पास ये अमूल्य पुस्तकें नहीं, उसका चिकित्सा-ज्ञान निश्चय ही अधूरा है।

संन्यासियों की गुप्त बूटियां

(देहाती जड़ी-बूटियाँ सम्पूर्ण दोनों भाग सचित्र)

भारत के विभिन्न प्रान्तों में उगने वाली अपूर्व बूटियों का हमने कितने परिश्रम से ज्ञान संग्रह किया है। किस प्रांत में कौन-कौन बूटियाँ कहाँ-कहाँ पाई जाती हैं, उनके प्रान्तीय तथा वैद्यक नाम क्या हैं और किन-किन रोगों पर वे चमत्कारी लाभ दिखाती हैं, आदि ऐसी बातें लिखी गई हैं, जो जनता के लिए अनमोल भेंट सिद्ध होंगी"। उदाहरणतया—उन्माद रोगी नींद लाने वाली बूटी, घाव और कुचले अंग को ठीक करने वाली बूटी, हाथ में लेकर बिच्छू पकड़ लो और वह डंक न मारे, लड़की के बजाय शर्तिया लड़का पैदा करने वाली बूटी, अंधों को नेत्र की ज्योति देने वाली क्षय व तिल्ली नाशक बूटियाँ, सन्तानदाता बूटी, गर्भपात, प्रदर स्वप्नदोष रोकने की बूटी, सूखा रोग की तावीज बूटी, पेटदर्द को ५ मिनट में शान्त करने वाली बूटी, ऐसी बूटी जिसे चिलम में रखकर पीने से बवासीर मिट जाए आदि-आदि आश्चर्यजनक बूटियों के विशद वर्णन पढ़कर आप दंग रह जायेंगे और समय २ पर गाँवों और खेतों आदि से लेकर ही अनुभूत लाभ उठा सकेंगे। पृष्ठ सं० ४६४ रेखा चित्र लगभग दो सौ, हाफटोन चित्र १४ मूल्य ७) डाक खर्च १) पृथक।

मिलने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली—६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जीवन का सुख दुख बताने वाला ग्रन्थ

ज्योतिष विज्ञान

यह अमूल्य ग्रन्थ ज्योतिष विद्या के माननीय पण्डित विशुद्धानन्द जी गौड़ ज्योतिषाचार्य से अतुल धन व्यय व बड़े परिश्रम से तैयार कराया है। यह ज्योतिष की वैज्ञानिक पुस्तक है।

इस पुस्तक द्वारा जन्म जन्मान्तर के हाल कहना, जन्म कुण्डली जानना और उसका हाल कहना मौत व जिन्दगी बताना, गुप्त प्रश्नों अथवा मूक प्रश्न का ठीक-ठाक उत्तर देना, वर्ष फल बनाना, माल की तेजी मंदी तथा भविष्य का फल कहना सब के मुहूर्त और शकुन बताना, विवाह शोधना, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना, सूर्य चन्द्रमा आदि ग्रहों का स्पष्ट करना, हस्तरेखा ज्ञान गणित और फलित आदि ज्योतिष के तमाम गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया गया है। विद्वानों के तथा सरल साधारण जनता के ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान अपूर्व संग्रह है जिसको पढ़कर थोड़ा हिंदी पढ़ा मनुष्य भी ज्योतिष का पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मूल्य ६) छः रुपया डाक व्यय ॥=) पृथक।

हथेली देखकर तकदीर का हाल जानना

हस्त सामुद्रिक ज्योतिष

(अथवा हाथ और ग्रह)

अपने हाथों पर विश्वास करो। हमारी पुस्तक की मदद से आपका हाथ इन बातों का उत्तर देगा।

(१) आपकी आयु लगभग कितनी होगी ?
(२) आप रोग से कब मुक्त होंगे ?
(३) आपकी मृत्यु कब और कैसे होगी ?
(४) आपका जीवन सुखमय रहेगा या दुःखमय ?
(५) क्या आपके जीवन में कोई भयंकर घटना घटेगी।
(६) आपके सन्तान होगी या नहीं और होगी तो कितने लड़के और लड़कियाँ ?
(७) आपकी मृत्यु आपकी धर्मपत्नी से पहले होगी या पीछे ?
(८) आप निर्धन बनेंगे या सधन रहेंगे ?

इत्यादि जीवन की रहस्यमयी बातों पर हस्तरेखा द्वारा प्रकाश डाला गया है। सजिल्द पुस्तक पृष्ठ संख्या ६४० । इसका मूल्य केवल ६)रु० डाक व्यय १) अलग।

तेजी मन्दी बताने वाली पुस्तक

व्यापार रत्न

ले०—प० रतीराम शर्मा शास्त्री

इस पुस्तक को पास रखने से हर एक मनुष्य तेजी मन्दी सट्टा २ निकाल सकता है। सब भविष्य की तमाम बातों का राशि तथा ग्रह द्वारा पता लग जाता है। मूल्य केवल २) दो रुपया।

विवाह-पद्धति

(लेखक-पं० रामस्वरूप)

इस पुस्तक में पूजा प्रकार से लेकर बधू को श्वसुर गृह पहुँचाने तक की पूरी-पूरी विधि नियमित दी गई है। कन्या का नामकरण, चतुर्थी कर्म, कन्यादान के समय बोले जाने वाले मंगल श्लोक वर तथा कन्या को सुन्दर उपदेश, पुष्पांजलियाँ द्वितीय विवाह विधि, विवाह मण्डप चित्र इत्यादि और बहुत सी बातें दी हैं। मूल्य १॥) डाक खर्च ॥)

कर्मकाण्ड की अन्य पुस्तकें

ज्योतिष सर्व संग्रह	२)
विवाह पद्धति	१।)
हवन पद्धति १।), मूल शान्ति	१।)
पंचनारायण १।), एकादशी सपिण्डी	१॥)
पंचक शान्ति १।), यज्ञोपवीत पद्धति	१॥)

तेजी मंदी का चांस बताने वाली पुस्तक

व्यापार चमत्कार

यदि आप तेजी मंदी के पाटिये पर खड़ा होने का शौक करते हैं और तेजी मंदी चांस जान कर फायदा उठाना चाहते हैं तो हमसे व्यापार चमत्कार नामक पुस्तक मँगाकर मालामाल बनिये। इसका हिसाब खाली नहीं जाता। साथ २ पुस्तक में रुई, सूत, वस्त्र शेयर, ऊन, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा आदि धातुओं तथा गुड़ खांड खसखस इलायची, कालीमिर्च मूँगफली, किराना, जवाहरात, घृत, तेल सरसों, बाजरा, असली गेहूं, चावल, खली बिनौला, रंग आदि हरएक वस्तु की तेजी मन्दी के बहुत से अचूक सुनहरी चांसों के योग, ग्रह, तिथि, नक्षत्र द्वारा शोध कर आसान हिंदी भाषा में दिल खोल कर लिखे गये हैं जिन लोगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बताते थे, वह सब तेजी मन्दी के गुप्त भेद लिख दिये हैं। यदि आप धन कमा कर लखपतीश बनना चाहें तो इसे मंगा कर देखने में देरी न करें, घाटे से आये व्यापारी भी इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे। मूल्य केवल पांच रुपये डाक खर्च ॥=)।

(१) मुफ्त—हर आर्डर के साथ नये वर्ष की जंत्री और सूचीपत्र मुफ्त दिये जावेंगे। (२) नोट—ऊपर लिखी समस्त पुस्तकों का डाक खर्च खरीदार को देना होगा।

(३) नोट—हिन्दी की ५००० पुस्तकों का १५० पृष्ठों का बड़ा सूचीपत्र चार आने के टिकट [डाक खर्च के लिये] भेज कर मुफ्त मंगाइये।

वी० पी० द्वारा मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली—६.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मैजिक प्रोफेसर बन जाओ

जादूगरी शिक्षा (सम्पादक—हुकुमचन्द गुप्ता)

जादू के खेलों पर ऐसी लाजवाब और अनमोल पुस्तक दुनियाभर की किसी भाषा में नहीं मिलेगी, जिसमें भिन्न २ प्रकार के सैकड़ों आश्चर्यजनक हैरत में डालने वाले खेल लिखे गये हैं; जिनको तमाशा करने वाले बड़े मैजिक प्रोफेसर गोगियापाशा वगैरा और हिन्दुस्तान के मदारी लोग बड़ी बड़ी कम्पनियों बाजारों और गली, कूचों में दिखाकर रईसों महाराजाओं और अन्य लोगों को हैरत में डाल देते हैं और खेल जानने वाले हजारों रुपये लेकर भी खेल का रहस्य नहीं बताते। हमारी इस पुस्तक में लेडी का सर काटकर फिर जिन्दा करना, आदमी की जबान काटकर फिर जोड़ना, बगैर आग के खाना बनाना और तारा के अनेकों अद्भुत खेल मदारी के खेल लगभग १०० चित्रों सहित लिखे गये हैं आप भी इस पुस्तक को पढ़कर पूरे मैजिक प्रोफेसर बनकर लाखों रुपया कमा सकते हैं। मूल्य केवल ५) रु० पाँच रुपया डाक व्यय ॥=)

मंगाने का पता–देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार देहली ६.

इस घोर कलयुग में ईश्वर का नाम लेने से ही मुक्ति होगी

बड़ा भक्ति सागर (सम्पादकः–मोहनलाल शास्त्री)

प्रस्तुत पुस्तक में मनुष्य को अपना समुचित हित साधन और ईश्वर आराधना करना तथा स्वर्ग और परमार्थ दोनों की सिद्धि में सफलता प्राप्त करके अपना द्विजोचित कर्तव्य का पालन करना भी बतलाया गया है। इस पुस्तक में ईश्वर प्रार्थना हनुमान चालीसा, आरतियां, सूर्यपुराण, वेदों के मन्त्र, भगवत विनय, स्तोत्र, शिव चालीसा, दुर्गा चालिसा, राम चालीसा, बजरंग बाण, कीर्तन हरिहर स्तोत्र प्रातःकाल संध्या समय भोजन तथा सोते समय की प्रार्थना नित्य कर्म पद्धति दिनचर्या गीता का अठारहों अध्याय महात्म्य सहित आदि बहुत सी बातें लिखी गई हैं यह पुस्तक स्त्री पुरुष व विद्यार्थियों सभी के लिए उपयोगी है मू० केवल ३) रु० तीन रुपया, डाक व्यय बारह आना

नोट—लोक परलोक सुधार मूल्य १।) रु० भी छपकर तैयार है।

मंगाने का पता–देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार देहली ६.

बिना सिनेमा देखे ही फिल्मी गानों का मजा लूटिए

फिल्मी सङ्गीत बहार
फिल्मी महफिल

अर्थात् सचित्र सिनेमा संगीत कला (संग्रहकर्ता विक्रमाजीत)

● इस पुस्तक में पांच सौ से अधिक फिल्म कम्पनियों जैसे प्रभात, न्यूथियेटर्स, रणजीत, प्रकाश, मुम्बई टाकीज आदि के बनाए हुए और मशहूर २ ऐक्टर, ऐक्ट्रेसों जैसे अशोक कुमार, सुरैया कुक्कू, काननबाला, मास्टर सहगल, नादिरा, नरगिस, निम्मी वगैरह के गाए हुए चुनीदा लगभग ६०० गानों का संग्रह आपको मिलेगा जिसको एक बार पढ़ने सुनने से ही दिल तड़प उठता है। हमारे छपे हुए फिल्मी हारमोनियम गाइड की मदद से हारमोनियम पर इन गानों को बजाने से तो बड़ा आनन्द आता है साथ ही पुस्तक के अन्दर बड़े ही खूब सूरत ऐक्ट्रसों के आठ फोटो भी दिए गए हैं। २८८ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य २॥) डाक खर्च सहित।

नोट हमारे यहां और भी बढ़िया २ गाने की पुस्तकें मिलती है

पता–देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी, बाजार, देहली ६

सदा के लिए गरीब बैल की गर्दन से जुआ उतार फेंकिये

खेती और ट्रैक्टर

लेखक—कृष्णानन्द शर्मा (M.M.M.E.S.)

हमारी इस पुस्तक में हर प्रकार के घटिया और बढ़िया तेलों से चलने वाले हर एक नए मोडल के ट्रैक्टरों को स्टार्ट करना, तथा उनके इन्जनों से अन्य दूसरे काम लेना, उनके कल पुर्जों से वाकिफ होना, होने वाली खराबियों को पहिचानना तथा उनको ठीक करना सारी बातें विस्तार पूर्वक चित्रों सहित समझाई गई हैं। जिस बंजर तथा ऊंची नीची जमीन को हमने बेकार समझ कर छोड़ रखा था उस जमीन में ट्रैक्टरों द्वारा प्रति वर्ष लाखों का अनाज पैदा होने लगा। साथ २ खेती के विषय में जमीन की जुताई, अच्छे बीज की पहचान, फसलों की काश्त आदि सब कुछ लिखा है। ४० बैलों की जोड़ी भी इतना काम नहीं कर सकती जितना कि एक ट्रैक्टर जमीन को ठीक करता है। विशेष बात यह कि ट्रैक्टर जब काम करता है तभी खाने को मांगता है और बैल खड़े खड़े भी खाता है।

कीमत ६) छै रुपया डाक व्यय १) रुपया

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली ६।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तिलस्मी जासूसी उपन्यास

- भूचाल पृष्ठ ४१२ ३॥)
- बाँगड़ा पृष्ठ ४०८ ३॥)
- कामरूप पृष्ठ ३२० ३॥)
- लोहदुर्ग पृष्ठ ३४८ ३॥)
- बर्मा की रानी पृष्ठ २८० ३)
- बहराम के कारनामे ३)
- कंचनगढ़ सम्पूर्ण ३)
- गढ़ दीपक २)
- खूनी डाक्टर २)
- तिलस्मी गढ़ १॥)
- तिलस्म का तोड़ १॥)
- कमल कुमारी १॥)
- त्रिशूल १॥)
- बहराम की खोज १॥)
- तिलस्मी गुप्त खजाना १॥)
- हीरे की खान १॥)
- प्रेत का पंजा १॥)
- विश्वासघात २)
- भयंकर षडयन्त्र १)
- बहराम व खून के चार कतरे ॥।)
- बहराम की भयानक आँखें ॥।)
- बहराम के डाके ॥।)
- बहराम पर ब्लैक के हमले ॥।)
- कंचनगढ़ पहला भाग ॥।)
- " दूसरा " ॥।)
- " तीसरा " ॥।)
- कंचन गढ़ चौथा भाग ॥।)
- होटल में पाँच खून ॥।)

- अनमोल हीरा ॥।)
- नर्गिस का खून ॥।)
- खूनी सरदार ॥।)
- खूनी हसीना ॥।)
- खूनी नकाब ॥।)
- खूनी दुश्मन ॥।)
- डाकू मुबारिक बी० ए० ॥।)
- बहराम व शरलक होम्ज ॥।)
- बहराम व आरसीन लोपन ॥।)
- बहराम का कैदी ॥।)
- तिलस्मी बहराम ॥।)
- तिलस्मी टोपी ॥।)
- " लिफाफा ॥।)
- " भूत ॥।)
- " दोशीजा ॥।)
- नगीना ३)
- एटम बम १॥)

ब्लैक सीरीज के उपन्यास

- शैतान की खोपड़ी १)
- खूनी पंजा १)
- जलता निशान १)
- डबल मुक्का १)
- नीलम की खोज १)
- बर्लिन मेल १)
- सौदागर की बेटी १)
- फूल में काँटा १)
- ब्राजील का हीरा १)

सागरबालूपुरी के सामाजिक उपन्यास

- एक सपेरा २॥)
- बेगुनाह ४॥)
- मुजरिम २॥)
- आखरी काँटा १॥)
- सिन्दूरी बेला २)
- मधुकरी १॥)
- सुनहरी रात २॥)
- लपटें २॥)

सम्पूर्ण कहानियाँ

- लाल अंगूठी चारों भाग ॥।)
- तिलस्मी फकीर " " ॥।)
- लाल बादशाह " " ॥।)
- तिलस्मी बाग " " ॥।)
- गुलताना और चार कहानियाँ ॥।)
- मनोहर कहानियाँ ॥।)
- तिलस्मी पुतली चारों भाग ॥।)
- जादू का कुँआ " " ॥।)
- तिलस्मी छतरी " " ॥।)
- रानी का स्वप्न " " ॥।)
- आसमानी भूत " " ॥।)
- जादू की डिबिया " " ॥।)
- जादूगर का मकान " " ॥।)
- शीशे का महल " " ॥।)
- रसीली कहानियाँ " " ॥।)

उपरोक्त लिखे १०) दस रुपये के उपन्यास एक साथ मँगाने पर डाक खर्च फ्री।
लाइब्रेरियों और पुस्तकालयों तथा पुस्तक विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन।

केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेज कर ५००० पाँच हजार पुस्तकों का २५० पृष्ठ वाला बड़ा सूचीपत्र का मुफ्त मँगायें।

वी० पी० द्वारा मँगाने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली ६

मशीनरी का काम सीखिये

खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड

जिसमें खराद के पुर्जों के नाम व चित्रों सहित व चूड़ियां काटने का हिसाब व पैमाईश के सही तरीके, पीतल व दूसरी धातुओं की ढलाई में मिलने वाली चीजें, और मिलिंग मशीन का काम तथा बहुत से लाभकारी तरीके बतलाए गए हैं। जो इंजीनियरों, फिटरों के लिए लाभदायक हैं। पुस्तक को एक बार पढ़कर हर एक व्यक्ति खरादका काम करना शुरू कर सकता है। पृष्ठ संख्या २५० चित्र संख्या ७१ है। दोहरा कवर सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३) तीन रु० डाक व्यय ॥।=) अलग।

प्रेक्टीकल आरमेचर वाइंडिंग ले०—नरेन्द्रनाथ B.S.C.

इस पुस्तक में हर प्रकार के पंखों, मोटरों और जेनरेटरों की मरम्मत और उनके आरमेचर नये सिरे से दोबारा लपेटने के तरीके लिखे गए है मूल्य केवल ६) छः रुपए, डाक व्यय १) अलग। उर्दू में भी छपकर तैयार है।

वी.पी. मंगाने का पता—देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, देहली ६.

अध्यापक की सहायता बिना ही घर बैठे संस्कृत सीखिये।

हिन्दी-संस्कृत शिक्षा (लेखक—मन्तराम 'सन्त')

इस पुस्तक की मदद से कोई भी हिन्दी जानने वाला बिना किसी पण्डित की सहायता से घर बैठे संस्कृत भाषा का इतना ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उसकी योग्यता संस्कृत में बातचीत करने तथा पत्र लिखने तक की हो जाती है। इस पुस्तक में लेखक ने बड़ी ही सरल और वैज्ञानिक विधि से संस्कृत सिखाने की सफल चेष्टा की है। हमारा दावा है कि आप एक बार इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ जावें तो निश्चय आप संस्कृत लिख तथा आसानी से बोल सकेंगे। कई गुरुकुलों तथा पाठशालाओं में यही पुस्तक संस्कृत पढ़ाने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। मूल्य २) दो रुपया डाक खर्च ॥।) पृथक्।

मँगाने का पता—देहाती पुस्तक भंडार, चावड़ी बाजार, देहली ६.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जीवन स्वावलम्बी बनाने वाली सर्वश्रेष्ठ—
इण्डस्ट्रियल पुस्तकें

रंगसाज़ी २॥) प्लास्टिक गाइड २॥) बूट पालिश २॥) अप्टुडेट इंक मास्टर (स्याही बनाना) २॥) कन्फेक्शनरी २॥) हेयर आयल (खुशबूदार तेल) २॥) बेकरी बहार (बिस्कुट, डबल रोटी केक) २॥) अचार चटनी मुरब्बा १।) पेन्ट्री का काम ४) चित्रकारी अथवा मुसव्वरी ४) परफ्यूमरी मास्टर २॥) वार्निश मास्टर (वार्निश साज़ी) २॥) आतिशबाज़ी का व्यापार २॥) हलवाई मास्टर २॥) तम्बाकू का कारोबार (तम्बाकू की दुकान) २॥) पान की दुकान २॥) छपाई पारचाजात (केलिको प्रिंटिंग) २॥) कुकरी बुक ४) व्यापार बढ़ाने की तरकीबें २॥) मोमबत्ती का व्यापार २॥) डेरी फार्म का व्यापार २॥) फिनायल साज़ी का व्यापार २॥) मुंह देखने के शीशे बनाना (आईना साज़ी) २॥) धूप अगरबत्ती २॥) फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना २॥) वीविंग केल्कुलेशन २) सूती ऊनी कपड़ों की रंगाई छपाई और धुलाई ३॥) कपड़े की बनावट और उसके डिजाइन ३॥) सत्य व्यापार लक्ष्मी भण्डार ४॥) लांड्री टीचर (धुलाई शिक्षा) २॥) हर-फनमौला १॥) साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग २॥) शर्बत विज्ञान २॥) बुक बाइन्डिंग ३) दर्ज़ी-मास्टर २॥) व्यापार दस्तकारी २॥) पाक विज्ञान ३) फिल्म ऐक्टिंग गाइड ५) शर्बत विज्ञान २॥) रसोई शिक्षा १।) गन्ने का रेडी रैकनर ४) विश्वकर्मा दर्पण ८) अचार चटनी मुरब्बा १।) आयना जेवर साज़ी २॥) नाखून पालिश विज्ञान १।) जोड़ने का सीमेंट १।) नूतन तार शिक्षा २॥) डेरी फार्म ४) स्वर्ण कार विद्या १॥।) मिडवाईफरी (दाईगिरी शिक्षा) ३॥) ऊषा कटाई शिक्षा ३) ऊषा दस्ती की कढ़ाई ३) आधुनिक बुनाई विज्ञान ६॥) हस्तसामुद्रिक ज्योतिष ६) प्रैक्टिकल इंगलिश टीचर ५) परम सुखमयी जीवन ३) टेलर मास्टर २॥)।

अपना मकान सस्ती लागत में तैयार कराइये
ओवरसियर और बिल्डिङ्ग के ठेकेदार बनकर लाखों रुपया कमाइये
लॉकॉस्ट हाउसिंग टैक्निक

[ले०—एच आर० मिचल]

इसमें आपको मकानों, कोठियों तथा बंगलों के ४६ अप्टूडेट नक्शे डिजाइन आधुनिक ढंग के मिलेंगे साथ-साथ वर्तमान समय में जो लागत आती है, उसका बिलकुल सही हिसाब भी दिया गया है। प्रत्येक इंजीनियर आर्कीटेक्ट तथा वह सज्जन जो अपने प्लाट का डिजाइन (नक्शा) स्वयं तैयार करना चाहते हैं। उनके पास इस पुस्तक का होना अति आवश्यक है। श्री मोहन लाल सक्सेना तथा श्री महावीर त्यागी ने इस पुस्तक को अच्छा बताया है। छपाई तथा कागज अति सुन्दर होने पर भी सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ५) पाँच रुपया।

मिलने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली—६

फिल्मी हारमोनियम गाइड (अप्टुडेट)

[लेखक—रामअवतार 'वीर' संगीताचार्य]

वर्तमान समय में सज्जनगण जितना हारमोनियम-वाद्यको पसन्द करते हैं उतना अन्य किसी वाद्य को नहीं और खास तौर से फिल्मी गानों का हारमोनियम पर बजाना बहुत ही पसन्द करते हैं। इसलिए लेखक ने इसके अन्दर अधिकतर फिल्मी गानों का सरगम निकालने का तरीका बतलाया है। इसके अलावा तबला, बैंजो, सितार और बाँसुरी शिक्षा का विषय देकर पुस्तक को सर्वश्रेष्ठ बना दिया है इस पुस्तक को पढ़कर आप हारमोनियम बजाना और मरम्मत करना तथा तबला आदि बाजों के पूरे अनुभवी और ज्ञाता हो सकते हैं। मूल्य केवल २।) दो रुपया चार आने, डाक व्यय ॥=) पृथक।

किसान विकास माला सिरीज

भारतवर्ष कृषि-विधान देश है। यहां की प्रजा ८० प्रतिशत किसान है। इतना होने पर भी भारत अन्न के मामले में आत्मनिर्भर न होकर दूर देशों की ओर देखता है। यह सब क्यों?

उत्तम खेती मध्यम बान। अधम चाकरी भीख निदान ॥

इस प्रकार की लोकोक्ति हमारे यहाँ प्रसिद्ध है। परन्तु उस पर कभी ध्यान नहीं देते और अधम कार्य (नौकरी) में निरन्तर प्रवृत्त होते जाते हैं इसी पुस्तक को पूरा करने के लिये हमने निम्न पुस्तकों का प्रकाशन कराया है।

जिनमें जुताई, जमीन की तैयारी, खाद सिंचाई, मिट्टी की पहिचान आदि हर प्रकार के खेती से सम्बन्ध रखने वाली समस्त बातें विस्तार पूर्वक लिखी गई हैं।

आलू की खेती ॥।) टमाटर की खेती ॥) गोभी की खेती ॥) जीरा, धनिया, अजवाइन ॥।) तरकारियों की खेती १॥) अच्छे बीज ॥।) अच्छी खाद २॥) कपास की खेती १) गन्ने की खेती ॥।) फूल-फुलवारी २॥) धान की खेती १॥) संतरे की बागवानी २॥) आम की बागवानी ३) आधुनिक कृषि विज्ञान ६) तम्बाकू की खेती ॥।)

दस्तूती, कढ़ाई तथा कशीदाकारी कला में प्रवीण होने के लिये

ऊषा कशीदाकारी ३) आ० दस्ती कढ़ाई शिक्षा ३) आदर्श कशीदाकारी ३) सुन्दर कशीदाकारी १।) शान्ता कशीदाकारी १।) नरगिस कशीदाकारी १।) सुशीला क्रास स्टिच वर्क ३) रानी कशीदाकारी ३॥) रानी शिल्प कला ४) मिलाजुला काम १) इंगलिश फूल १।) बेल बूटे १) जनरल कशीदाकारी २) सरला भारतीय कशीदाकारी ५) शीशे का काम ॥।) मोतियों का काम (फ्रेंच नोट्स) ॥) बैक स्टिच और बन स्टिच १।) लेडी डेजी क्रास और लोप स्टिच ॥।) कुरेशिया का काम ॥) मोनोग्राम्ज ॥।) कटवर्क ॥) जाली का काम ॥ मशीन का वर्क १)

वी० पी० द्वारा पुस्तकें मिलने का पता—

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली—६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सुसुप्त हृदयों को आनन्दतिरेक करने वाले

सामाजिक उपन्यास

हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ सम्पादक श्री सागर बालूपुरी की ओजस्वी लेखनी द्वारा प्रसूतित समस्यामूलक उपन्यासों की एक अमूल्य भेंट।

बेगुनाह—वर्तमान, सामाजिक क्रान्ति का एक जीता-जागता चित्रण है। चार निराश्य प्रेमियों की आत्म-कथा, किन्तु बाद में चारों प्रेमी किसी प्रकार शान्ति पूर्ण ढङ्ग पुरातनी समाज का परिवाहन न करके अपनी-अपनी प्रेमिकाओं से पुनः विवाह कर लेते हैं। इसे आप जितनी बार पढ़ेंगे उतनी ही बातें मालूम होंगी। पृष्ठ संख्या ३७५, मूल्य ४॥)

एक सपेरा—देश में भिखमंगापन क्यों? इसे हम दूर कैसे कर सकते हैं। एक युवती जो निराशी होकर अपनी अस्मत बेचती है, उससे ऊब कर वह आत्महत्या करना चाहती है कि एक युवक मिल जाता है। दोनों अपने प्रेम के साथ ही देश से भिखमंगापन को दूर करने में सफल होते हैं, पर किस तरह, इसे पढ़ कर देखिए। मूल्य २॥) सजिल्द तिरङ्गा आवरण

आखिरी काँटा—मजदूर की बेटी से यदि मालिक का प्रेम हो जाय, तो अनुचित क्या? भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल उदाहरण। दो प्रेमियों की सरस प्रेम कहानी, उनकी सफलता। मूल्य २॥) ढाई रुपया।

सिन्दूरी बेला—बेला गाँव की गोरी। किन्तु अपने प्रेमी के सहयोग तथा स्वाध्याय से उसी प्रकार सुशोभित होकर गाँव की नारियों में जागरण की गति भरती है। प्रेमी-प्रेमिका का आदर्श सस्ते रोमान्स ही नहीं देश के प्रति सबकी भावना उन्मुख है। मूल्य २।) सवा दो रु०

मधुकरी—नारी-चरित्र की विचित्रभावों का जीता जागता चित्र-सा देखना हो, तो यह उपन्यास अवश्य पढ़ें, मधुकरी कथानक नायिका है, वह कितनी प्रगल्भ एवं सुसज्जित है। मू० १॥)

लपटें—हिन्दूकोड बिल पर नई खोज। मनुस्मृति और उपनिषद काल के आधार पर रचित यह उपन्यास यह सिद्ध करता है कि कोड की प्रथा को शास्त्रों ने भी मान्यता दी है, यह नई चीज नहीं है। मूल्य २) दो रुपया।

मुजरिम—अंडमान से भागा हुआ कैदी की क्रान्तिकारी कथा। अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए क्रान्तिकारी अंडमान से भाग कर कैसे आया, आकर उसने देश में कौन-कौन से काम किए, इसे मुजरिम में पाकर आप विस्मित हो उठेंगे। मूल्य २॥) ढाई रु० तिरङ्गा कवर।

आँख मिचौनी—लखनऊ के नवाबी खानदान का सजीव चित्रण। गोवा सत्याग्रह में आबिद और उसकी प्रेमिका जरीना का भाग लेना। अन्त में देश प्रेम के साथ अपने प्रेम में दोनों ने किस प्रकार से सफलता प्राप्त की, आँख-मिचौनी खेल कर देखिए। मूल्य २॥)

मिलने का पता—**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली-६**

इलैक्ट्रिकल सुपरवाइजरी के विद्यार्थियों के लिये उपयोगी पुस्तक

इलैक्ट्रिक गाइड (तीसरा संशोधित संस्करण)

लेखक—प्रोफेसर नरेन्द्रनाथ

प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारों द्वारा स्वीकृत इलैक्ट्रिक सुपर वाइजर सिलेबस के अनुसार लिखी गई इस पुस्तक में इलैक्ट्रिक मोटर्ज, मीटर्ज, इलैक्ट्रिक सर्किट्स ए. सी. व डी. सी. मशीनें, बैटरीज, स्विचबोर्ड, आरमेचर वाइंडिंग का सविस्तार वर्णन के साथ-साथ इलैक्ट्रिक सुपरवाइजरी परीक्षा पंजाब के प्रश्न पत्र, लाइसेंस, सिलेबस, परीक्षा प्रणाली, बिजली प्राप्त करने के नियम, इण्डियन इलैक्ट्रिसिटी रूल्स १९३७ ट्रांसफार्मर आदि के सभी नियमों का रोचक वर्णन है। पृष्ठ सं० लगभग ७०० चित्र सं० १६१ मूल्य ६) डाक व्यय १)

मोटर कार की बैट्री तथा उसकी वायरिंग का ज्ञान कराने वाली पुस्तक।

मोटर मैकैनिक टीचर (तीसरा संशोधित संस्करण)

(कृष्णानन्द शर्मा एम. एम. एम. ई.एस.)

भूमिका लेखक—बी. एस. शर्मा बी. सी. ई. आई. ए. एम. आई. ई.

क्या हडसन, क्या फोर्ड, क्या शेवरलेट सभी आधुनिक मोटरकारों के इंजनों के पूरे विवरण के साथ-साथ बिजली तथा वायरिंग का भी पूरा वर्णन इस पुस्तिका में है। बड़े से बड़े इन्जीनियर भी वर्कशापों में काम सीखने वाले ड्राइवरों तथा उम्मीदवारों, इन्जीनियरों, मोटर मैकैनिकों, मैकेनिक का काम सीखने वाले विद्यार्थियों को इसे ही खरीदने की सलाह देते हैं क्योंकि मोटरकारों की पूरी जानकारी के बारे में सीधी सरल भाषा में लिखी इससे सुन्दर पुस्तक अभी तक नहीं छपी। पृष्ठ सं० ३३६ चित्र सं० १०५ मूल्य ६) डाक व्यय १)

आयल इञ्जन के मिस्त्री बन कर ३००) माहवार कमाइये

आयल इंजन गाइड [दूसरा रिवाइज्ड एडिशन]

ले०—प्रोफैसर नरेन्द्रनाथ

प्रस्तुत पुस्तक में हर प्रकार के आयल इंजन को जानना उन पर काम करना, उनका पूरा विवरण तथा उनकी प्रत्येक खराबी को जानना और उनको ठीक करना आदि का सरल वर्णन है। साथ ही साथ हर प्रकार की फिटिंग करना तथा इन्जन की हॉर्स पावर निकालने का भी तरीका बताया गया है यह पुस्तक हर इंजन ड्राइवर मैकेनिक तथा इंजीनियर के लिये बड़े काम की है। पृष्ठ सं० ४०८ चित्र ९२, मूल्य ६) डाक व्यय १)

पता—**देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली-६**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

छोटी पूँजी से विशाल औषधालय खोलो

- देहाती अनुभूतयोगसंग्रह नं.१ ७)
- ,, ,, ,, ,, नं.२ ५)
- संन्यासियों की गुप्त बूटीयाँ ७)
- दूध के गुण तथा उपयोग २)
- आक के ,, ,, ,, २॥)
- फिटकरी ,, ,, ,, २॥)
- नीम ,, ,, ,, १॥)
- रीठा ,, ,, ,, ॥≈)
- धतूरा ,, ,, ,, १≈)
- बबूल ,, ,, ,, ॥≈)
- प्याज ,, ,, ,, ॥)
- घृत ,, ,, ,, ॥≈)
- पीपल ,, ,, ,, ॥)
- अरंड ,, ,, ,, १॥)
- बादाम ,, ,, ,, ॥)
- बरगद ,, ,, ,, ॥≈)
- धनिया ,, ,, ,, ॥)
- मेंहदी ,, ,, ,, ॥)
- पैसे-पैसे के चुटकले ४॥)
- तुलसी के गुण २)
- पियाबाँसा के गुण व उपयोग १॥)
- नींबू के गुण तथा उपयोग १)
- नमक के गुण तथा उपयोग ॥)
- सत्यानासी कटेली (स्वर्णक्षीरी) ॥)
- गडूंबा (इन्द्रायण) ,, ॥≈)
- आम ,, ,, १॥)
- मिर्च ,, ,, ॥≈)
- सौंफ ,, ,, १॥)
- गाजर ,, ,, ॥≈)
- टोटका चिकित्सा ॥)
- औषधियों का भण्डार १०)
- दही के गुण तथा उपयोग २॥)
- हल्दी ,, ,, ॥≈)
- गुलाब (पुष्प) ,, १)
- घी क्वार (गुवार पट्ठा) २॥)
- मूली ,, ,, ॥)
- संतरा ,, ,, १॥)
- सिरस ,, ,, १≈)
- लहसन ,, ,, ॥≈)
- तम्बाकू ,, ,, १॥)
- त्रिफला ,, ,, ॥)
- फलों द्वारा इलाज २)
- देहाती प्राकृतिक चिकित्सा ५)
- संन्यासी चिकित्सा शास्त्र ५)
- घर का वैद्य बड़ा ६)
- बृहद् बूटी प्रचार २॥)
- घर का वैद्य छोटा ॥)
- बाल रोग चिकित्सा १॥)
- स्त्री ,, ,, १॥)
- पुरुष गुप्त रोग चिकित्सा १॥)
- नाड़ी ज्ञान तरंगिनी २)
- शहद के गुण तथा उपयोग ३)
- कद्दू के गुण तथा उपयोग ॥)
- मट्ठा छाछ ,, ,, १)
- सरल चिकित्सा अरुणोदय ३)
- यौवन की बहार ४)
- जीवन का आनन्द दोनों भाग ४॥)
- अनार के गुण तथा उपयोग ॥)
- ढाक ,, ,, ,, १)
- अंगूर ,, ,, ,, १)

मुफ्त—पाँच हजार पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र पोस्टेज के वास्ते ।) का टिकट भेज कर मुफ्त मँगाइये

पता : देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, देहली ६

समाज शिक्षा केन्द्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों पुस्तकालयों गवर्नमेंट टैक्निकल इंस्टीट्यूशनों, बेसिक ट्रेनिंग सेण्टरों तथा अधिकांश सरकारी संस्थाओं में खरीदा जाने वाला

टैक्नीकल इण्डस्ट्रियल तथा कृषि सम्बन्धी साहित्य

टैक्नीकल साहित्य

- १. इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग बुक १०)
- २. इलैक्ट्रिक गाइड ६)
- ३. इलैक्ट्रिक वायरिंग ४)
- ४. इलैक्ट्रिक [illegible] २॥)
- ५. इलैक्ट्रिसिटी रूल्स १)
- ६. इ० सुपरवाइजर परीक्षा पेपर्स ३)
- ७. सुपरवाइजर वायरमैन प्रश्नोत्तर २॥)
- ८. इलैक्ट्रिक परीक्षा पेपर्स दोनों भाग ६)
- ९. आयल व गैस इंजन गाइड १०)
- १०. आयल इंजन गाइड ६)
- ११. क्रूड आयल इंजन गाइड ७॥)
- १२. वायरलैस रेडियो गाइड ६)
- १३. रेडियो सर्विसिंग (रेडियो मैकेनिक) ६)
- १४. घरेलू बिजली रेडियो मास्टर २॥)
- १५. मोटर कार वायरिंग ४॥)
- १६. टांका लगाने का ज्ञान २॥)
- १७. छोटे डायनुमो इलैक्ट्रिक मोटर ३॥)
- १८. प्रैक्टिकल आरमेचर वाइंडिंग ६)
- १९. खराद शिक्षा अथवा टर्नर गाइड ३)
- २०. वर्कशाप गाइड फिटर ट्रेनिंग ३)
- २१. खराद तथा वर्कशाप ज्ञान ६)
- २२. इलैक्ट्रिक वाइंडिंग ६)
- २३. स्टीम ब्वायलर्स और इन्जन्स ६)
- २४. स्टीम इन्जीनियर्स १०)
- २५. आईस प्लांट (बर्फ मशीन) ४॥)
- २६. प्रैक्टिकल घड़ी साजी ४॥)
- २७. साईकिल रिपेयरिंग २॥)
- २८. हारमोनियम रिपेयरिंग २॥)
- २९. ग्रामोफोन रिपेयरिंग २॥)
- ३०. सिलाई मशीन रिपेयरिंग २॥)
- ३१. इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग ४॥)
- ३२. फाउण्ड्री प्रैक्टिस ढलाई का काम ६)
- ३३. इलैक्ट्रोप्लेटिंग ४॥)
- ३४. [illegible] गाइड ४)
- ३५. प्रैक्टिकल फोटोग्राफी शिक्षा २॥)
- ३६. ट्यूबवैल गाइड ३॥)
- ३७. A शॉर्ट कट [illegible] (हिन्दी) ४)
- ३७. B ,, ,, ,, इंगलिश ४)
- ३८. A [illegible] (हिन्दी) २॥)
- ३८. B ,, ,, ,, इंगलिश २॥)
- ३९. मोटर कार इन्स्ट्रक्टर १०)
- ४०. मोटर ड्राइविंग ४॥)
- ४१. मोटर साइकिल गाइड ४॥)
- ४२. मोटर मैकेनिक टीचर ६)
- ४३. ट्रैक्टर और मैकेनिक (ट्रैक्टर गाइड) ६)
- ४४. सुपरहिट ट्रान्जिस्टर आफ रेडियो २॥)
- ४५. मोटर ग्रामर ३॥)
- ४६. ट्रैक्टर ग्रामर ३॥)
- ४७. बिना बिजली का रेडियो ३॥)
- ४८. बच्चों का रेडियो ३॥)
- ४९. बच्चों का टेलीफोन ॥)
- ५०. बच्चों के [illegible] खेल ३॥)
- ५१. लोकल रेडियो सैट ३॥)
- ५२. रेडियो का साधारण ज्ञान [illegible]
- ५३. एम्प्लीफायर लाउडस्पीकर १)
- ५४. बच्चों का वायरलैस ३॥)
- ५५. लोकोमोटिव गाइड (रेलवे) १०)
- ५६. बिल्डिंग कन्सट्रक्शन (गृहनिर्माणकला) १०)
- ५७. सोप मेकर्स गाइड ६)
- ५८. मेटल पालिश २॥)
- ५९. फरनीचर बुक १०)
- ६०. पम्पिंग गाइड
- ६१. जनरल मैकेनिकल गाइड
- ६२. ब्लैक स्मिथ लुहार
- ६३. स्टीम टरबाईन
- ६४. वर्कशाप प्रैक्टिस

इण्डस्ट्रियल साहित्य

- १. रंग साजी २॥)
- २. प्लास्टिक गाइड २॥)
- ३. बूट पालिश २॥)
- ४. [illegible] रंग मास्टर (स्याही बनाना) २॥)
- ५. [illegible] २॥)
- ६. हेयर आयल (सुगन्धित तेल) २॥)
- ७. बेकरीदार (बिस्कुट, डबल रोटी, केक) २॥)
- ८. [illegible] ३॥)
- ९. [illegible] का काम ४)
- १०. [illegible] ४)
- ११. [illegible] मास्टर २॥)
- १२. पालिश मास्टर (वार्निश साजी) २॥)
- १३. [illegible] का व्यापार २॥)
- १४. हलवाई मास्टर २॥)
- १५. तंबाकू का कारोबार (तंबाकू की दुकान) २॥)
- १६. पान की दुकान २॥)
- १७. [illegible] २॥)
- १८. [illegible] बुक ४)
- १९. व्यापार बढ़ाने की तरकीबें [illegible]
- २०. मोमबत्ती का व्यापार [illegible]
- २१. डेरी फार्म का व्यापार २॥)
- २२. [illegible] २॥)
- २३. शीशे बनाना (आईनासाजी) २॥)
- २४. धूप अगरबत्ती हवन सामग्री बनाना २॥)
- २५. फेस क्रीम तथा फेस पाउडर बनाना २॥)
- २६. स्लेट और स्लेट लैड पेंसिल बनाना २॥)
- २७. रबड़ की मोहरें बनाना २॥)
- २८. टूथ पेस्ट टूथ पाउडर बनाओ २॥)
- २९. गाइड आफ इन्डस्ट्रीज ६)
- ३०. सिलाई कटाई गाइड ३॥)
- ३१. सफल व्यापार नफे का भण्डार ४॥)
- ३२. साँची ठप्पा (छपाई शिक्षा) २॥)
- ३३. हरफन मौला १॥)
- ३४. साबुन शिक्षा तथा साबुन उद्योग २॥)
- ३५. शर्बत विज्ञान २॥)
- ३६. बुक बाइंडिंग ३)
- ३७. दर्जी मास्टर २॥)
- ३८. व्यापार दस्तकारी २॥)
- ३९. नवीन बृहद् पाक विज्ञान ३)
- ४०. [illegible] ३)
- ४१. घरों ऊनी कपड़ों की रंगाई धुलाई २॥)
- ४२. कपड़े की बनावट और डिजाईन ३॥)
- ४३. पोल्ट्री फार्मिंग ४)
- ४४. कॉमर्शियल पोल्ट्री ४)
- ४५. पोल्ट्री [illegible] ४)

किसान विकास माला सीरीज

रामेश्वर अशान्त लिखित १५ पुस्तकें

- १. आलू की खेती ॥)
- २. टमाटर की खेती ॥)
- ३. गोभी की खेती ॥)
- ४. जीरा, धनिया, अजवाइन ॥)
- ५. तरकारियों की खेती १॥)
- ६. उन्नत बीज ॥)
- ७. [illegible] खाद २॥)
- ८. कपास की खेती १)
- ९. गन्ने की खेती ॥)
- १०. फूल-फुलवारी २॥)
- ११. धान की खेती १॥)
- १२. संतरे की बागवानी २॥)
- १३. आम की बागवानी ३)
- १४. आधुनिक कृषि विज्ञान ६)
- १५. तम्बाकू की खेती ॥)
- १६. खेती बाड़ी (किसान गाइड) १॥)
- १७. फलों की खेती ३॥)
- १८. बरसाती साग भाजी की खेती ३॥)
- १९. खेती और ट्रैक्टर हिन्दी ६)

(१) केवल चार आने के टिकट पोस्टेज के वास्ते भेजकर ५००० पुस्तकों का २४० पृष्ठ का बड़ा सूची पत्र मुफ्त मंगाइये।
(२) पुस्तकालयों तथा पुस्तक विक्रेताओं को उचित कमीशन। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

पता—देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ६.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विश्व साहित्य की

दो अलौकिक विभूतियां

ऋग्वेद संहिता

स्वर्गीय डा० लक्ष्मणस्वरूप एम. ए. डी. फिल.
की प्रतिभा संपन्न अनुपम देन

ऋग्वेद संहिता पर वेंकटमाधव का भाष्य सायण के भाष्य से भी प्राचीन है परन्तु इस भाष्य की ताड़-पत्र पर लिखी हुई एक ही प्रति उपलब्ध हुई थी। प्रस्तुत ग्रन्थ में संहिता के साथ वेंकटमाधव का वही भाष्य प्रथमबार प्रकाशित हुआ है। साथ ही साथ सायण स्कंद आदि समस्त उपलब्ध भाष्यों के वे अर्थ जो वेंकटमाधव से भिन्न अर्थ देते हैं टिप्पणियों में दे दिये गये हैं। सम्पूर्ण ग्रंथ ६ खण्डों में समाप्त होगा। चार खण्ड छप चुके हैं, चौथे खण्ड तक सात मण्डल पूर्ण हुये हैं। मू० प्रत्येक खंड का २०)

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री, विद्वद्वर्य
डा० श्री सम्पूर्णानन्द की अद्वितीय कृति

व्रात्यकाण्ड

(भाष्य तथा भाषानुवाद सहित)

यह अथर्ववेद का पन्द्रहवाँ काण्ड है। वेदों के भाष्यकर्ता श्रीसायण-माधव ने भी इस काण्ड का भाष्य नहीं किया, जिससे इन मन्त्रों का आशय आज तक अज्ञात-सा ही पड़ा रहा। इस कमी को दूर करने के लिए विद्वान लेखक ने चिरकाल तक अध्ययन एवं मनन कर इस काण्ड पर संस्कृत में भाष्य की रचना की। साथ ही साथ साधारण जनता के उपयोग के लिए हिन्दी-भाषा में भी अनुवाद कर राष्ट्रभाषा की अनुपम सेवा की है। वेदार्थ के जिज्ञासु इसके लिए सदा कृतज्ञ रहेंगे। इसका विशुद्ध संस्करण सर्वप्रथम प्रकाशित किया गया है। बढ़िया कागज एवं सुन्दर छपाई मूल्य ६)

—मोतीलाल बनारसीदास,—
नैपाली खपरा, बनारस ७८ चाँदनी चौक दिल्ली

कर्मठगुरुः

यह द्विजातिमात्र के लिए नित्य क्रिया एवं कर्मकाण्ड का अद्वितीय ग्रन्थ रत्न है। इसके आधार पर साधारण पठित जन भी विद्वान के आगे बैठ कर सर्वप्रकार के कर्म निःसंकोच करा सकता है। इसकी अद्भुत शैली देखने योग्य है। जप, मन्त्र पुरश्चरणादि के अनेक विधान और सिद्धिप्रद तांत्रिक प्रयोग भी दिये गये हैं। सिद्धपुत्रेष्टि विधि और कई अनुभवसिद्ध बातें लिखी गई हैं। कर्मकाण्ड-विषयक ऐसा ग्रन्थ आज तक कहीं नहीं छपा। विशेष क्या गागर में सागर भरा हुआ है। मूल्य ४)

+ स्तवमाऽप्रोम +

इस अभूतपूर्व स्तोत्र के पाठ करने से भक्तों की सम्पूर्ण विपत्तियाँ दूर होकर सर्व शुभ कामनाएँ पूर्ण होती हैं। निष्काम पाठ करने से अति उत्तम फल की सद्यः प्राप्ति होता है। प्रभु कृपा से यह स्तोत्र १६ वर्ष की अल्पायु में ही एक बालक द्वारा श्लोकबद्ध निर्माण हुआ था। मूल्य ।)

राश्यभिधान कल्पलता—बच्चों के नये २ सुन्दर शुद्ध शास्त्रोक्त नाम रखने की अभूतपूर्व पुस्तक का परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण मूल्य ३।।)

नामबन्धस्पन्द म्—मूल्य ।।=) यह अनुपम पुस्तक ज्योतिषशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान श्री पं० हंसराज ज्योतिषाचार्य द्वारा लिखित और मुद्रित है, इस ग्रन्थ में ग्रन्थकर्ता ने जन्मकुण्डली पर से उसका नाम तथा उसके माता पिता स्त्री आदि के नाम निकालने का विचित्र प्रकार लिखकर ज्योतिषियों पर महान उपकार किया है पुस्तक देखने योग्य है।

सर्वविधपुस्तक प्राप्ति-स्थान—
मोतीलाल बनारसीदास, नेपाली खपरा, बनारस।

जीवन से निराश रोगियों यदि आप अपने रोग को असाध्य समझ कर जीवन से निराश हो चुके हों तो योगी सेवाश्रम में पधारें या पत्र व्यवहार करें। योगीराज श्रीमनोहरलाल जी तथा श्रीशिवनाथ जी योगी की कृपा से प्रतिमास सहस्रों रोगी स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। इस औषधालय का लाभ गरीब रोगियों पर खर्च होता है।

पता—सेवायोगी आश्रम धर्मार्थ औषधालय, मु० पो:—बराड़ा,
जि० अम्बाला— पूर्वी पंजाब)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष,

आचार्य पं० चन्द्रबली पाण्डेय की अनुपम कृतियाँ

शूद्रक

'मृच्छकटिक' का लेखक, मस्त हाथियों को ललकारने वाला

— राजा और कवि —

संस्कृत के अद्भुत और विख्यात नाटक 'मृच्छकटिक' को पढ़ने वालों की संख्या करोड़ों में होगी। परन्तु उसके गूढ़ मर्म को समझने वाले थोड़े ही मिलेंगे। इस बात से तो श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् और राजनीतिज्ञ भी अपरिचित हैं कि 'मृच्छकटिक' का लेखक कौन है। संस्कृत, प्राकृत और तमिल साहित्य का गम्भीर अध्ययन एवं दक्षिण भारत का पर्यटन करने के बाद आचार्य पाण्डेय जी ने शूद्रक का पूरा पता बता दिया है—'मृच्छकटिक' के एक पात्र के रूप में उसे हँसते बोलते और अत्याचारी राज्य का तख्ता उलटते हुए दिखा दिया है। संसार की किसी भी भाषा के साहित्य में शूद्रक का ऐसा प्रामाणिक वर्णन अब तक प्रकाशित नहीं हुआ।

आचार्य पाण्डेय के इस ग्रन्थ से 'मृच्छकटिक' पर भी एक अभिनव प्रकाश पड़ता है, नाटक के सब चरित्र और सभी मार्मिक स्थल स्पष्ट हो जाते हैं, राजनीति के गूढ़ रहस्य खुल जाते हैं, मालूम हो जाता है कि 'मृच्छकटिक' में क्या है! ग्रन्थ अन्वेषण में रुचि रखने वालों के लिए जितना उपयोगी है, 'मृच्छकटिक' का अध्ययन करने-कराने वालों के लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

पुराने सिक्के से प्राप्त 'शूद्रक' के प्रभावशाली और भावना व्यञ्जक चित्र से सज्जित, पक्की जिल्द, मनोहर छपाई। मूल्य केवल ४॥)

संस्कृत साहित्य के अनमोल रत्नों पर अनोखा प्रकाश

कालिदास

कालिदास को कविकुलगुरु माना गया है और उन पर अनेकों ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं परन्तु आचार्य पाण्डेय जी को कालिदास संबंधी विशाल सामग्री सन्तुष्ट नहीं कर सकी फलत: उन्होंने स्वयं लेखनी उठाई है और सवा छः सौ पृष्ठ का यह ग्रन्थ उपस्थित किया है।

ग्रन्थ में कालिदास की खोज पूर्ण जीवनी प्रस्तुत करने के बाद कवि के ग्रन्थ-कुमारसंभव, मेघदूत, रघुवंश, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञान शाकुन्तल, कुन्तलेश्वर दौत्य और ऋतुसंहार की प्रसिद्ध मीमांसा की गई है। फिर चार अध्यायों में कवि की सर्वांगीण प्रतिभा का विवेचन हुआ है और उनके पात्रों—कण्व, दुष्यन्त, शकुन्तला, अनसूया, प्रियवंदा गौतमी, सर्वदमन, मेनका, धीवर, मारीच आदि—पर प्रकाश डाला गया है। अन्त के तीन परिच्छेदों में कवि की प्रमुख विशेषताओं पर लिखा गया है। इस प्रकार कालिदास के सम्बन्ध में एक अभूतपूर्व अध्ययन प्रस्तुत हुआ है।

प्रस्तुत ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इससे कालिदास और और उनकी रचनाओं को समझने की निर्मल दृष्टि मिलती है और ज्ञात होता है कि कविकुलगुरु ने वाणी का विलास ही नहीं दिया है बल्कि मनुष्य को जीवन का वास्तविक मार्ग भी दिखाया है। इसी लिए उनके साहित्य में अप्सरा भी गृहिणी और माता बन गई है।

ग्रन्थ से कालिदास कालीन सभ्यता, संस्कृति और राजनीति पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। ग्रन्थ का अध्ययन न करने वाले कालिदास को उनके शुद्धरूप में नहीं समझ सकते। मू० ७॥)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा, (पो० बा० ७५) बनारस। ७८ चाँदनी चौक, (पो० बा० १२८६) दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महामहोपाध्याय पं० मथुराप्रसाद दीक्षित विरचित

भारतविजयनाटक—हिन्दी टीका सहित सचित्र तृतीय संस्करण २॥)
पृथ्वीराजरासो—प्रथम समय हिन्दी टीका सहित १)
पाणिनीय सिद्धान्तकौमुदी—मूलमात्र ३॥
शंकरविजय नाटक—संस्कृत में नवीन रचना १)
केलीकुतूहल—संस्कृत २
सरस्वती नाटिका—पं० सदाशिव दीक्षित विरचित ॥)
भक्त सुदर्शन नाटक—हिन्दी टीका सहित सचि
पाली-प्राकृत व्याकरण—पंडित जी ने बड़ी सरल शैली से पाली और प्राकृत दोनों भाषाओं का व्याकरण सूत्ररूप में लिखा है और हिन्दी में उदाहरण समेत सब समझा दिया है छात्रों को दोनों भाषाओं का सहज में ही ज्ञान हो जायेगा। १॥)

श्री हरिशंकरशर्मा प्रणीत छात्रोपयोगी पुस्तकें

मनोरमारत्नविवेक—चतुर्थ संस्करण १॥)
फक्किकाप्रसन विवृत्ति—वैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्याः १॥)
शिशुतोषिणी— „ „ सूत्रार्थ ॥।
शब्देन्दुसुधा—प्रश्नोत्तरी १॥) परिभाषेन्दुदीपिका—प्रश्नोत्तरी ॥।)
भूषणसारचन्द्रिका— „ ॥।) महाभाष्य कुञ्चिका— „ १॥)
मुक्तावली विवृत्ति—प्रश्नोत्तरी अनुमानखण्डान्ता ॥। बहुबोधिनी॥=)
किरातार्जुनीय—(१—३ सर्ग) बालबोधनी सं० टीका सहित ।—)
रघुवंश—(१—५ सर्ग) चूर्णिका सं० व्याख्या सहित ।=)
मेघदूत-पूर्वमेघ—शिशुरञ्जनी सं० टीका सहित ।)
तर्क संग्रह—शिशुहिता सं० व्याख्या सहित ≡)
श्रुतबोध—सटीक ≡) मंजूषारत्न—प्रश्नोत्तरी ॥।)

महामहोपाध्याय श्रीजयदेवमिश्र कृत

व्युत्पत्तिवाद—गदाधरभट्टाचार्य विरचित तथा म० म० श्रीजयदेव मिश्र कृत व्याख्या सहित तृतीय संस्करण २)
परिभाषेन्दुशेखर—विजयाख्य व्याख्या सहित ४॥)
शास्त्रार्थरत्नावली—म० म० श्रीजयदेवशर्मा विरचित १॥)

हमारी सोल एजेंसी की पुस्तकें

मोतीलाल बनारसीदास
नैपाली खपरा बनारस
७७ चाँदनी-चौक दिल्ली

अच्युत ग्रन्थमाला काशी के प्रकाशन

भगवन्नामकौमुदी—श्रीलक्ष्मीधर रचित, अनन्तदेव कृत संस्कृत टीका ॥।)
शुल्वसूत्र—(कात्यायनश्रौतसूत्र का परिशिष्ट अंश) म० म० पं० विद्याधर गौड़ विरचित सरल संस्कृत वृत्ति सहित ॥=)
कात्यायन श्रौतसूत्र—पं० विद्याधर गौड़ कृत सरलसंस्कृत वृत्ति सहित ८)
प्रत्यक्तत्वचिन्तामणि सदानन्दव्यासकृत स्वोपज्ञ सं० व्याख्यासहित दो भाग ५)
भक्तिरसामृतसिन्धु श्रीरूपगोस्वामीप्रणीत श्रीजयगोस्वामीकृत सं० टीका १४)
तिथ्यर्क—तिथियों के निर्णय पर अपूर्व ग्रन्थ श्रीदिवाकर विरचित २
परमार्थसार—सटीक श्रीपतञ्जलि कृत ॥)
प्रेमपत्तन—भक्तवर श्रीरसिकोत्तमकृत तथा अद्भुत प्रणीत टीका सहित १।
शतपथब्राह्मण—माध्यन्दिन-सम्पूर्ण मूलमात्र-अनुक्रमणिका सहित ११)
काशीकेदारमाहात्म्य—ब्रह्मवैवर्तपुराणान्तर्गत-हिन्दी टीका सहित ३)
सिद्धान्तबिन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचित भाषानुवाद सहित २)
प्रकरणपञ्चक—श्रीशंकराचार्य के आत्मबोध, प्रौढानुभूति, तत्त्वोपदेश आदि पांच ग्रन्थ हिन्दी अनुवाद सहित ।।)
ब्रह्मसूत्र—शंकरभाष्य-रत्नप्रभा भाषानुवाद केवल दूसरा तीसरा भाग मिलता है १३॥)
विवरणप्रमेयसंग्रह—श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित तथा हिन्दी भाषानुवाद सहित ६)
वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली—श्रीसदाशिवेन्द्र सरस्वती विरचित भा. टी ॥।)
बृहदारण्यकवार्तिकसार—दो भागों में। श्रीविद्यारण्यमुनि विरचित-अच्युतमुनि तथा म०म० हरिहरकृपालु विरचित हिन्दी अनुवाद सहित १२)
परीक्षार्थियों की सुविधा के लिये केवल प्रमेय परीक्षान्त भाग पृथक ३)
अच्युतलेखमाला—महात्माओं तथा विद्वानों के सुन्दर लेख हिन्दी में २)
भगवद्गीता—श्रीशंकरानन्द विरचित शंकरानंदी संस्कृत टीका सहित तथा श्रीभोलेबाबाकृत हिन्दी अनुवाद सहित नया संस्करण ८
षट्सन्दर्भतत्वसन्दर्भ—वेदभूषणी तथा राधामोहनी २ संस्कृत व्याख्या सहित १॥)
ब्रह्मसूत्र की भूमिका—केवल हिन्दी में—म० म० पं० गोपीनाथजी कविराज कृत ॥)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अच्युत ग्रन्थमाला के ग्रन्थ

कात्यायनश्रौतसूत्र की भूमिका केवल—पं० विद्याधर कृत ॥)
योगवासिष्ठ—पांच भागों में सम्पूर्ण-सरल हिन्दी अनुवाद सहित ४८)
पृथक भी मिलते हैं द्वितीय १०) तृतीय १०) चतुर्थ १०) पंचम ८)
भागवतएकादशस्कन्ध—प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद ६॥)
नैष्कर्म्यसिद्धि—श्रीसुरेश्वराचार्य विरचित हिन्दी अनुवाद सहित १॥)
शिवस्तुति—श्रीगोकुलनाथ विरचित संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद सहित ॥=)
सिद्धान्तलेशसंग्रह—हिन्दी अनुवाद सहित (छप रहा है)

॥ नाड़ी दर्शन ॥

भारतीय चिकित्सा परिषद, उत्तर प्रदेश के सम्मानित सदस्य, आयुर्वेदाचार्य पं० ताराशंकर जी मिश्र द्वारा लिखित नाडी परीक्षा पर परमोपयोगी पुस्तक। नाड़ी परीक्षा के प्रत्येक विषय को सरल रूप में समझाया गया है। आवश्यकतानुसार कई चित्र भी दिए गये हैं। वैद्यवर श्री गोवर्धन शर्मा छांगाणी ने लेखक के परिश्रम की बड़ी प्रशंसा की है। मूल्य २॥)

मोतीलाल बनारसीदास,

नैपाली खपरा, बनारस ❀ ७८ चाँदनी चौक, दिल्ली

कशमीर के सोने चाँदी वाले पर्वतों से प्राप्त की हुई

शुद्ध शिलाजीत

जीवन पर्यन्त रोगों को हटाने वाली कशमीरी शुद्ध शिलाजीत प्रमेह, क्षय, कफ, खांसी, जीर्णज्वर, गठिया, मृगी श्वास, क्षीणता और शरीर की कमजोरी को हटाकर खून को बढ़ाती है। स्मरण शक्ति को बढ़ाती है। भाव जानेः—

पांचतोले १।-) दसतोले ३) बीसतोले ५॥) चालीसतोले १०। अस्सीतोले ०) डाकखर्च अलग होगा। इसके अतिरिक्तः—केसर असली, शहद, बादाम अखरोट, गुलबनफशा, अनारदाना भी भेजा जाता है। हमारा पता नोट करें:—

चौधराज बन्सीलाल केसर, शिलाजीतवाले मु०पो० ऊधमपुर (जम्मू कशमीरस्टेट)

वेदान्त का अनुपम ग्रन्थ

श्री पंचदशी भाषा टीका

पीताम्बरी व्याख्या सहित

जो पहले नहीं मिलती थी

अब तैयार है

भूमिका लेखक :

श्रीजगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर
श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज

पृष्ठ संख्या लगभग ८०० मू० ८), डाकखर्च १॥)

सनातन षोडश संस्कार विधि भा० टी०

पं. भीमसैन अनुसारेण पं. जगन्नाथ शर्मा द्वारा सम्पादित

छप कर तैयार है

पृष्ठ संख्या लगभग ३२० मू० ३) डाकखर्च अलग

व्यापारी भाई भी मंगाकर लाभ उठायें

गोयल एण्ड को० (म) बुकसेलर

दरीबाकलां देहली—६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

हमारे प्रमुख हिन्दी प्रकाशन

नाटक

रुपया तुम्हें खा गया

राष्ट्रभाषा के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार, कवि और नाटककार श्री भगवतीचरण वर्मा की नवीनतम रचना। कलाकार की लेखनी ने इस तथ्य को बड़े मार्मिक रूप में उपस्थित किया है कि मनुष्य रुपये को नहीं खाता, रुपया मनुष्य को खा जाता है। मूल्य २॥)

गोआ अभिषेक

१५ अगस्त के दिन गोआ में सामूहिक सत्याग्रह करने वाले वीरों के उपनेता, हिन्दी के ओजस्वी नाटककार श्री देवदत्त 'अटल' द्वारा लिखित पुर्तगालियों के दिलदहलाने वाले अत्याचारों और भारतीय एवं गोआनी वीरों के अमर बलिदानों के जीते जागते दृश्यों से परिपूर्ण नाटक। गोआ की समस्या का वास्तविक रूप और उसका सीधा समाधान। प्रत्येक भारतीय के लिए पठनीय। मू० २॥)

सत्य और कल्पना

तरुण नाटककार डा० मोहन 'राकेश' द्वारा लिखित व्यङ्ग विनोदपूर्ण ६ एकांकी प्रहसन। मू० २)

नये एकांकी

डा० उदयनारायण तिवारी और श्री वाचस्पति पाठक द्वारा संकलित अनेक नाटककारों के एकांकी नाटकों का अभूतपूर्व संग्रह। मू० ३)

दृश्य कुसुमाकर

प्रो० रघुनन्दन शास्त्री की मंजी हुई लेखनी से उपस्थित संस्कृत नाटकों के रसपूर्ण दृश्य। मू० १॥)

हृदान

लेखक श्री अमरनाथ। मू० १॥)

उपन्यास

प्यासे बादल

अन्तर्प्रान्तीय ख्याति की उपन्यास लेखिका श्रीमती रजनी पनिकर का नया उपन्यास। सिनेमा के चलचित्र जैसी प्रवाहपूर्ण कहानी। मू० ४)

आदमी और जिन्दगी

सिद्धहस्त उपन्यास लेखक मासिक 'माया' के भूतपूर्व सम्पादक श्री राजेश्वर प्रसादसिंह का नया सामाजिक उपन्यास। आज की बातें और वह रस जिसकी सब को चाह है। मूल्य ४)

अभिनय

राजेश्वर बाबू के यौवनकाल की रचना। स्वप्नों से भरपूर उपन्यास। मू० ३)

देखा-सुना

श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय का साहित्यिक समाज में हलचल पैदा कर देने वाला मौलिक उपन्यास। मूल्य ३)

कहानी

पुरस्कार और अन्य कहानियाँ

कुशल कहानी लेखक श्री वाचस्पति पाठक द्वारा संकलित लोकप्रिय कहानी लेखकों की श्रेष्ठतम कहानियों का आधुनिकतम संग्रह। मूल्य २॥=)

गल्प मंजरी

ख्यातनामा कहानी लेखक श्री सुदर्शन द्वारा संकलित मनोरम संग्रह। मू० ३)

प्रतिनिधि कहानियाँ

कहानीकार श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी द्वारा संकलित प्रतिनिधि संग्रह। मू० ३॥=

प्रतिनिधि कहानियाँ

प्रो० के रीकुमार द्वारा संकलित अद्भुत संग्रह। मू० ४)

कथाकुञ्ज

प्रो० जगन्नाथ जी अग्रवाल तथा उपन्यासकार श्रीउपेन्द्रनाथ 'अश्क' द्वारा संकलित। मू० २॥=)

वीर-गाथा

साहसी-संसार

दैनिक 'नवभारत टाइम्स' दिल्ली के प्रधान सम्पादक श्री अक्षयकुमार जैन की सारगर्भी लेखनी से लिखी गई संसार के १८ साहसी वीरों और वीराङ्गनाओं की मर्मस्पर्शी जीवन गाथायें। मू० २।)

भ्रमण और साहस की कहानियाँ

ओजस्वी कवि श्री व्रजकिशोर 'नारायण' की देन। मू० २॥)

शब्द-चित्र

माटी की मूरतें

सफल शब्द चित्रकार श्री रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा प्रस्तुत देहाती जीवन की मुंह बोलती मूरतें। मू० २)

वैशाली की रात

सिद्धहस्त लेखिका श्रीमती सत्यवती मल्लिक द्वारा प्रस्तुत नागरिक जीवन के मार्मिक शब्द चित्र। मू० १॥)

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा (पो० बा० ७५) बनारस

७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १५८६) दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

साहित्यिक--इतिहास

हिन्दी साहित्य की रूप-रेखा

विश्रुत विद्वान डा० हरदेव बाहरी एम० ए०, पी० एच० डी०, डी०लिट०, द्वारा प्रस्तुत सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, गागर में सागर । मू० २।)

समीक्षा

हिन्दी काव्य शैली का विकास

डा० हरदेव बाहरी द्वारा हिन्दीकाव्य शैलियों का तलस्पर्शीविवेचन । मू० ४)

पंत और उनका गुंजन

प्रो० केसरी कुमार द्वारा श्री सुमित्रा नन्दन पन्त की कविता पर नया प्रकाश । मू० ३=)

प्रसाद और उनके नाटक

प्रो० केसरी कुमार द्वारा श्री जयशंकर प्रसाद के नाटकों की समीक्षा । मू० २॥)

हिन्दी के कहानीकार

प्रो० केसरीकुमार द्वारा हिन्दी की कहानी और उसके लेखकों का सिंहावलोकन । मू० २॥)

साहित्य और समीक्षा

प्रो० केसरीकुमार द्वारा लिखित गंभीर निबंध । मू० ३)

हरिऔध और उनका काव्य

महाकवि 'हरिऔध' के 'प्रियप्रवास' का मार्मिक विवेचन । मू० २॥)

ब्रजभाषा की विभूतियाँ

प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा द्वारा ब्रजकाव्य माधुरी का रसपूर्ण विवेचन । मू० ३॥।)

हिन्दी कवियों का मूल्यांकन

प्रो० देवेन्द्रनाथ शर्मा द्वारा विद्यापति से लगाकर हरिश्चन्द्र तक की ज्ञातव्य सामग्री सरलतम रूप में । मू० ३॥।)

हास्यके सिद्धान्त और मानसमें हास्य

प्रो० जगदीश पाण्डेय की अद्वितीय कृति । मूल्य ३॥।)

रूप और शैली

विद्यार्थियों के लिए परमोपयोगी ! मू० २॥=)

सांस्कृतिक-इतिहास

विश्व सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास

इतिहास के ख्यातनामा विद्वान डा० विधेश्वरीप्रसाद सिंह द्वारा लिखित प्रामाणिक रोचक और ज्ञानवर्धक ग्रन्थ । मूल्य ७॥)

भारतीय संस्कृति का इतिहास

भारतीय इतिहास के माने हुए पंडित डा० वासुदेवशरण अग्रवाल के निर्देशन में उनके सुपुत्र श्री स्कंदकुमार एम. ए. द्वारा लिखित वैदिक काल से लगाकर मुगल काल तक का सरस एवं सरल सिंहावलोकन । नई सामग्री और नया दृष्टिकोण । मूल्य ३)

अर्थशास्त्र

आधुनिक भारत का निर्माण

प्रो० विमला प्रसाद एम. ए. ४)

विक्रयकला

प्रो० एस. पी. श्रीवास्तव एम. ए. ४॥=)

उद्योग-नियंत्रण

डी. एच. राबर्टसन २॥)

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

श्री सूर्यनारायणसिंह २॥।)

आर्थिक व्यवस्था

प्रो० रामस्वरूपनारायणसिंह २।)

राजनीति

ब्रिटेन की शासन पद्धति

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी २॥=)

ब्रिटेन का वैधानिक इतिहास

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी २॥=)

भारत में स्थानीय शासन

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी ४)

दर्शन

भारतीय तर्क बोध

प्रो० अनिरुद्ध १)

पाश्चात्य आगमन तर्क शास्त्र

प्रो० मजीद ४)

पाश्चात्य निगमन तर्क शास्त्र

प्रो० अनिरुद्ध ४)

तत्वमीमांसा की रूप रेखा

प्रो० अनिरुद्ध ३।)

मनोविज्ञान

सामान्य मनोविज्ञान

प्रो० मजीद ४।)

बालमनोविज्ञान की रूप-रेखा

३॥।

विविध

सफलजीवन-व्यवहारिक ज्ञान

ले० प्रो० रामचन्द्र शर्मा एम ए. ३)

मानस शब्द सागर

संकलनकार श्री बद्रीदास अग्रवाल

बड़ा साइज पृष्ठ संख्या ७६२ पक्की कपड़े की जिल्द मू० २०) मानस का एक एक शब्द जहाँ आया है दिया गया है ।

हिन्दी मुहावरे और कहावतें

प्रो० रामायणशरण एम० ए० बी०एल०

चुभती हुई कहावतों और मार्मिक मुहावरों का संकलन तथा प्रयोग । थोड़े दिनों में ही तीन संस्करण हो चुके हैं । मूल्य १)

मोतीलाल बनारसी दास, प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा, (पो० बा० ७५) बनारस

७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १५८६) दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

Our English Books

1. **Ancient India** by Dr R. C. Majumdar. It is a book on Ancient Indian History & Culture of a more advanced type which would not only serve the needs of general readers but may also be based as a preliminary handbook by more earnest students who require a thorough grasp of the essential facts and features before taking up specialised study in any branch of the subject. It also fulfils the requirements of the growing number of candidates for Competitive examinations in which Ancient Indian History & Culture is a prescribed subject in a single handy book. Demy, pages, 574 and 24 plates. 1952. Rs. 20/-

2. **Age of Nandas and Mauryas** edited by K. A. Nilkantha Sastri in collaboration with other scholars of repute for the Bharatiya Itihas Parishad. It contains 11 chapters; India in the age of the Nandas, Alexander's Campaigns in India, India in early Greek and Latin Literature, Early Foreign Coins in India, Chandragupta and Bindusara, Maurya Polity, Ashoka and his successors, South India and Ceylon, Industry, Trade and Commerce Religion, Language and Literature, Mauryan Art, Bibliography and Index. Demy, pages XII, 43x, 30 plates, 2 maps and cloth binding, 1952 Rs. 20/-

3. **Vakataka Gupta Age** (Circa 200-550 A. D.) Edited by R. C. Majumdar, M. A., PH. D., F. R. A. S. B. and A. S. Altekar, M. A., LL. B., D. LITT. in collaboration with other scholars of repute. Published under the auspices of Bharatiya Itihas Parishad. Rs. 15/

4. **Indian Palæography** by Dr Raj Bali Pandey M. A. Part I with Tables. Super Royal XII, Tables Cloth 20/- Longfelt desideratum in the field of Indian Paleography.

5. **Indian Theatre Past and Present** (Presentation of Sanskrit Plays) by Dr C. B. Gupta. It gives a connected account of the presentation of dramas in India from the earliest times to the present day. 1954. Rs. 10/-

6. **Rigveda Samhita** (With a Pre-Sayana commentary of Venakatamadhava) Printed for the first time from a single Palm-leaf Mss, with a critical apparatus by Dr. Lakshman Sarup M. A. (Punjab): D Phil. Officier d' Academie (France) To be completed in 6 Big Vols. I to IV are published Printed beautifully at Allahabad Law Journal Press with full cloth binding and gold letters Price each Volume Rs. 50/-

7. **Rigveda Pratishakhya** translated into English by Dr. Mangala Deva Sastri. Rs. 20/-

8. **Pre-Mauryan History of Bihar** by D S Trivedi. For over a thousand years the history of Bihar or ancient Magadha is the history of India and in Bihar alone exist the invaluable materials for the study of ancient Indian history and culture in its various aspects which perhaps can be had nowhere else; with map and plates. Rs. 10/-

9. **State and Government in Ancient India** by D. A. S. Altekar. The most upto date, authoritative and comprehensive work on the subject. Rs. 15/-

10. **Position of Women in Hindu Civilisation** by Dr. A. S. Altekar; new revised editon in the press.

11. **Status of Women in Ancient India** by Prof. Indra 2d. Ed. Rs. 10/-

12. **The Songs of Vidy pati** (Edited with introduction and English translation) by Dr. Subhadra Jha, M. A. Rs. 10/-

13. **The Decline of the Kingdom of Magadha** Cir 455-1000 A. D.) by Prof. B. P. Sinha, M. A., Foreword by Dr. Barnett. Rs. 20/

14. **Studies in Hindu Political thought and its metaphysical Foundation** by Dr. V. P. Varma, M. A. Rs. 15/-

15. **Studies in Ancient Indian Law and Justice** by Prof. Radhakishna Chaudhary. 1953. Rs. 4/8/-

16. **Hindu Samskaras** or a Socio-religious study of the Hindu Sacraments. The book provides a key to the understanding of Hindu Life from its inception to the end by Dr. R. B. Pandey M. A. Rs. 25/-

17. **Vikramaditya of Ujjayini** (The founder of the Vikrama era) by Dr. R. B. Pandey, M. A. Rs. 15/-

18. **India as Known to Panini** a study of the Cultural data in Astadhyayi of Panini by Dr. V. S. Agrawala. The work brings together and interprets the geographical, social, economic, literary, religious and political data found in Panini Astadhyayi with three full size maps. Rs. 50/

19. **Studies in Jaina Philosophy** by Dr. Nath Mall Tatia M. A. with a Foreword by Mm. Gopinath Kaviraj, M. A. Rs. 16/-

20. **Jaina Philosophy of Non-Absolutism** by Dr. S. Mookerji. Rs. 15/-

21. Ghanasyama's Anandasundari (a Sattaka, or Drama in Prakrit) with the Sanskrit Commentary of Bhattanatha Critically edited for the first time with various readings, Introduction, notes etc., by Prof. A. N. Upadhye, M. A., D. Litt., Rs. 5/-

Motilal Banarasi Dass,

Naipali Khapara (p . 75) Banaras. — 78 Chandni Chowck (P. B. 1586) Delhi.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रसतरंगिणी [हिन्दी टीका सहित]

आयुर्वेद में रस शास्त्र को कितनी महत्ता है यह बात किसी से छिपी नहीं है। यही नहीं रसशास्त्र में धातुविद्या का भी विशद वर्णन पाया जाता है। परन्तु रसचिकित्सा में व्यवहार में आने वाले खनिज द्रव्यों का शोधन मारण आदि किस विधि के अनुसार किया जाना चाहिए जिससे वह अत्यन्त गुणदायक हो सके यह एक बड़ी भारी कठिनाई वैद्य समाज के आगे थी। इसी कठिनाई को अनुभव करते हुए लाहौर के प्रसिद्ध तथा सिद्धहस्त कविराज श्रीनरेन्द्रनाथ जी मित्र के आदेशानुसार उनके सुयोग्य शिष्य प्राणाचार्य श्रीसदानन्द जी ने उक्त पुस्तक मूल श्लोकों में तैयार की थी। इसकी विशेषता यह है कि इसमें केवल वही तरीके दिये गये हैं जो उनके अनुभव में आ चुके थे। ग्रन्थ की उपादेयता का इसी से पता चलता है कि प्रायः सभी आयुर्वेद विद्यालयों में यह पुस्तक पाठ्यक्रम में नियत है। इस संस्करण में मूल पुस्तक तथा आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्तजी शास्त्री कृत संस्कृत टीका तथा रसविशेषज्ञ श्री धर्मानन्द जी कृत सरल तथा विस्तृत रसविज्ञान नामक हिन्दी अनुवाद साथ दिया गया है। अब इस संस्करण से साधारण से साधारण व्यक्ति भी लाभ उठा सकता है।

लगभग आठ सौ पृष्ठों का ग्रन्थ चौबीस अध्यायों में विभक्त है। अध्यायों में स्वर्ण, रजत, ताम्र, वंग, लौह, सीस, पारद, गन्धक अभ्रक, हिंगुल, क्षार और नवसादर आदि का इतना व्यापक और विस्तृत वर्णन दिया गया है कि उनकी सूची देने में ही, दो कालमों में विभक्त २७ पृष्ठ लग गये हैं। पारद की शुद्धि, मूर्च्छना, मारण और स्वरूप तथा भेद आदि का वर्णन तीन बड़े अध्यायों में पूरी गहराई में उतर कर हुआ है। रसशाला, परिभाषा मूषा यन्त्रों आदि का वर्णन भी इसी प्रकार विस्तार के साथ दिया गया है। एक शब्द में रसशास्त्र से सम्बन्ध रखने वाली कोई भी बात मर्मज्ञ लेखक की पैनी दृष्टि से नहीं छूटी। ग्रन्थ का पांचवां संस्करण अभी प्रकाशित हुआ है जो इस तथ्य का प्रबल प्रमाण है कि चिकित्सा संसार ने 'रसतरंगिणी' को रसशास्त्र का अनुपम प्रामाणिक तथा अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ मान लिया है। पक्की कपड़े की जिल्द सहित, सफेद बढ़िया कागज मूल्य १०)

रस और वनस्पति विज्ञान पर अमर आलोक

हमारा चिकित्सा साहित्य

भावप्रकाशनिघण्टु

पं० विश्वनाथ द्विवेदी आयुर्वेदाचार्य, साहित्यालङ्कार, प्रिंसीपल ललितहरि आयुर्वेद कालिज कृत "ललितार्थकरी" अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी टीका सहित।

इसमें हर एक बूटी (वनस्पति) के पुष्प, फल, त्वक्, सार, पत्र (पत्रपृष्ठ, पत्रोदर) तना काष्ठ आदि का पूर्ण वर्णन है। वनस्पति कब फलती है, उसे किस भूमि में किस ऋतु में, किस काल में संग्रह करना चाहिए, औषधि का कौनसा भाग प्रयुक्त होता है और मात्रा इत्यादि सब बातें स्पष्टतया लिखी हैं। वनस्पति के पर्याय समझाये गये हैं और औषधियों के व्यापार पर भी प्रकाश डाला गया है। वंशलोचन, एलवा, मुसब्बर आदि कई एक वस्तुओं के निर्माण का इतिहास तथा वर्णन दिया है। हर एक वनस्पति के नाम भिन्न-भिन्न भाषाओं में दिये हैं। जहाँ आयुर्वेदोक्त औषधियों के गुण हिन्दी टीका में लिखे हैं, वहाँ पाश्चात्य वनस्पति वेत्ताओं के भी विचार दिये हैं। यूनानी हकीमों के विचार भी यथा स्थान हैं जिससे अनेक एलोपैथिक औषधियों के मुकाबले में भारतीय औषधियों के गुण और शक्ति का पता भी लग जावेगा। एलोपैथिक तथा यूनानी हकीमों के सहयोग से रहने से बहुत सी एलोपैथिक तथा यूनानी औषधियाँ प्रायः वैद्य लोग बरतने लगे हैं परन्तु उसका वर्णन निघण्टुओं में नहीं है। अतः उन्हें भी परिशिष्ट में दे दिया गया है। एक बहुत बड़ी विशेषता इसमें यह है कि प्रायः प्रत्येक औषधि की प्रतिनिधि औषधि भी दी गई है तथा बताया गया है कि औषधि का अधिक सेवन किस अंग को हानिकारक है और उसके दर्प नाशन के लिए क्या देना चाहिए। अतः यह सर्वगुण सम्पन्न हिन्दी अनुवाद हुआ है। कोई भी बात जो निघंटु में समझाने लायक है इसमें छूटा नहीं है। यू० पी० इण्डियन मेडिसिन बोर्ड ने जो आलू बुखारा, हरमल ओलिव आयल आदि अन्य चीजें भी परीक्षा में निर्धारित की हुई हैं उन सबका वर्णन भी इस संस्करण में दिया है। छात्रों के लिए यह नितान्त उपयोगी पुस्तक हो गई है। अनुरोध है कि पं० विश्वनाथ जी का नाम देखकर पुस्तक खरीदें। पक्की कपड़े की जिल्द, परिवर्धित संस्करण मू० केवल ७) रु०।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा (पो० बा० ७५) बनारस • ७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १५८६) दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आयुर्वेद के गौरव-ग्रंथ

श्री गोविन्ददास विचरित—कविराज नरेन्द्रनाथ मित्र द्वारा संशोधित
और परिवर्धित—सरल हिन्दी अनुवाद सहित—

भैषज्य रत्नावली

संशोधित—परिवर्धित छठा संस्करण—बड़े साइज के आठ सौ पृष्ठ—
ग्लेज कागज—बढ़िया छपाई— मूल्य १०॥)

आयुर्वेद के दिग्गज विद्वान और पीयूषपाणि चिकित्सक कविराज नरेन्द्रनाथजी मित्र द्वारा संशोधित, परिवर्धित और गम्भीर विद्वान श्री जयदेवजी विद्यालंकार द्वारा सरल हिन्दी में किये गये अनुवाद सहित 'भैषज्यरत्नावली' का पहला संस्करण हमने आज से बीस वर्ष पहले प्रकाशित किया था। गोविन्ददासजी ने अपने जीवन भर के अनुभव से सिद्ध योगों को इस रत्नहार में गूंथ दिया था, इसलिये चिकित्सा-जगत् में इस का आदर पहले ही हो गया था परन्तु ग्रन्थ की रचना सौ वर्ष पहले हुई थी। समय ने मनुष्यों के रहन-सहन आदि में आकाश-पाताल का अन्तर कर दिया था जिससे ग्रन्थ में दी गई औषधियों की मात्रायें अनुपयुक्त हो गई थीं। प्रवीण चिकित्सक तो इस त्रुटि को सम्भाल लेते थे परन्तु नवीन और अभ्यास करने वाले चूक जाते थे। कविराजजी ने अपने विशाल अनुभव के बल पर काल और पात्र के अनुसार मात्रायें ठीक कर दीं तथा अपने अनेक सिद्ध योग सम्मिलित करके रत्नहार में कई लड़यां बढ़ा दीं। विद्यालङ्कारजी के सुबोध अनुवाद ने ग्रन्थ को सर्वसाधारण के लिए भी परमोपयोगी बना दिया। यही कारण है कि जब हमारी 'भैषज्यरत्नावली' प्रकाशित हुई तब चिकित्सा-जगत आनन्द मग्न हो गया। इतने बड़े ग्रंथ के संस्करण, भारी संख्या में छापने के बाद भी, हाथों-हाथ समाप्त होने लगे। चिकित्सा के मर्मज्ञ आयुर्वेदाचार्य पं० हरिदत्तजी ने इसी बीच में अपने विशेषवचन जोड़कर ग्रंथ की शोभा और भी बढ़ा दी थी।

प्रसन्नता की बात है कि हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का इतना आदरमान देख-कर कुछ प्रकाशक मित्र भी उत्साहित हुए और यत्र-तत्र 'भैषज्यरत्नावलियां' दीख पड़ीं। परन्तु दुख की बात है कि उनके टीकाकारों ने कुछ ऐसी भूलें कर दी हैं जिनसे रोगियों का अनिष्ट हो सकता है और चिकित्सकों को अपयश मिल सकता है। इन लोगों की भूलों को हमारे इस छठे संस्करण में यत्र-तत्र बताया गया है और उनके जो ठीक अनुभव सिद्ध अर्थ थे वह अर्थ दे दिये हैं।

हमारी 'भैषज्यरत्नावली' का परिवर्धित छठा संस्करण उपस्थित है। अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय काशी के प्रधानाचार्य, परम प्रवीण और सहस्रों रोगियों को आरोग्य प्रदान करने वाले पं० लालचन्द्रजी वैद्य ने इस संस्करण में पथ्यापथ्य, त्रयोदश लीलाओं की चिकित्सा के सम्बन्ध में राष्ट्रपति के चिकित्सक परमसमाननीय श्री सत्यनारायण जी शास्त्री के अनुभव आदि और बढ़ा दिए हैं। साथ ही साथ कालाजार, निमोनिया, एस्प्रीन, एक्स-रे, थर्मामीटर और मेडिकल सर्टिफिकेट आदि के वर्णन देकर ग्रन्थ को सर्वविधि से सर्वांगपूर्ण एवं अद्युतनाय (अप-टू-डेट) कर दिया है। इस संस्करण में जितने अनुभव सिद्ध योग दिये हैं वह अन्य किसी में नहीं।

ऐसी सर्वांग सुन्दर, परमोपयोगी और सर्वांग सम्पूर्ण 'भैषज्यरत्नावली' आपको अन्यत्र नहीं मिल सकती। आज की आर्थिक अवस्था को देखते हुए हमने इस बृहत्काय पुस्तक का मूल्य भी सबसे सस्ता केवल १०॥) लागत मात्र रख दिया है।

चरक संहिता

हिन्दी अनुवाद सहित

सुप्रसिद्ध टीकाकार आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेवजी विद्यालंकार कृत तंत्रार्थ दीपिका नामक विवेचनात्मक तथा सरल हिन्दी अनुवाद सहित। चरक जैसे कठिन ग्रन्थ को समझने के लिये उक्त वैद्यजी का यह अनुवाद इतना लोकोपयोगी सिद्ध हुआ है कि ऐसा हिन्दी अनुवाद आज तक कहीं भी किसी भाषा में नहीं छपा। यही कारण है कि इतने थोड़े समय में यह इसका पांचवां संस्करण छपा है। कागज की कठिनाई के कारण यह बहुत थोड़ा छपा है जो पुस्तक की माँग को देखते हुवे आशा है शीघ्र ही समाप्त हो जावेगा। इसलिये शीघ्रता करें ताकि फिर अगले संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े। दो बढ़िया पक्की कपड़े की जिल्दों में बड़े साइज के १२०० पृष्ठ में छपा है। मू० केवल लागत मात्र सबसे सस्ता सम्पूर्ण ग्रन्थ का २५) रु०। पृथक् २ भाग भी मिलते हैं हर एक भाग का मूल्य १२॥)

मोतीलाल बनारसीदास,-प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता

७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १५८६) दिल्ली।

नेपाली खपरा (पो० बा० ७५) ...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

★ आचार्यवर यादव जी त्रिकम जी की प्रतिभा का प्रसाद ★

रसामृत

रसशास्त्र में हलचल मचा देने वाला एकदम नवीन ग्रन्थ

आयुर्वेद शास्त्र के धुरन्धर विद्वान् वैद्य श्रीयादवजी त्रिकमजी आचार्य महाराज की उद्भट लेखनी से लिखा हुआ रसशास्त्र का बेजोड़ ग्रन्थ। हाल में ही बम्बई के सुविख्यात निर्णयसागर प्रेस में छपकर प्रकाशित हुआ है। ग्लेज कागज—कपड़े की जिल्द सहित—मूल्य ४)

यह रसामृत ग्रन्थ विद्यार्थियों को सरल से सरल तरीके से रसशास्त्र के पाठ्यग्रन्थ के रूप में तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि रसयोग आदि के निर्माण में उपयुक्त मार्गदर्शक हो इस दृष्टि से लिखा गया है। रस ग्रन्थों में एक एक द्रव्य की अनेक शोधन और मारण विधियाँ लिखी गई हैं। उनमें से जो विधियां प्रायः सर्वसम्मत, वैद्यों में प्रचलित, सुकर तथा आचार्य जी की स्वयं अनुभूत हैं उनको ही इस ग्रन्थ में स्थान दिया गया है। वैद्यों के नित्य प्रयोग में आने वाले ६६ रस योग भी दे दिए हैं और उद्भिज की शोधनविधि भी बता दी है।

प्रत्येक द्रव्य का वर्णन करते समय उस द्रव्य के प्रधान संस्कृत नाम, उत्तर भारत की प्रधान भाषा—हिन्दी, बंगाली, मराठी और गुजराती के नाम, यूनानी वैद्यक में प्रचलित अरबी-फारसी नाम तथा अंग्रेजी नाम दिये हैं। पीछे उस द्रव्य का संक्षिप्त परिचय, गुण, सामान्य और विशेष शोधनविधि लिखी है। इस प्रकार इस ग्रन्थ को पाठ्य ग्रन्थ तथा सर्वथा उपयुक्त बनाने का यथाशक्य प्रयत्न किया गया है।

सुश्रुतसंहिता

सरल हिन्दी अनुवाद सहित सम्पूर्ण

सुश्रुत संहिता का हिन्दी अनुवाद आजकल कोई भी नहीं मिलता। इस कमी को पूरा करने के लिए कबिराज श्री अत्रिदेवजी गुप्त विद्यालंकार ने सरल हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण पुस्तक का किया है। सुविख्यात डा० घाणेकरजी ने इसकी भूमिका लिखी है। बढ़िया छपाई गलेज कागज पक्की कपड़े की जिल्द सहित सम्पूर्ण मू० २०)।

★

चरक संहिता

दो संस्कृत टीकाओं सहित

श्री चक्रपाणिदत्त कृत आयुर्वेद-दीपिका तथा जज्जट कृत निरन्तर-पद—दो प्राचीन संस्कृत व्याख्या-सहित बहुत बढ़िया बम्बई निर्णय-सागरी टाईप में छपा है। आयुर्वेदाचार्य श्री प० हरिदत्तजी शास्त्री कृत अनेकों उपयोगी टिप्पणियों सहित। सम्पूर्ण दो पक्की कपड़े की जिल्दों में मू० १५)

द्रव्य-गुण-विज्ञान

आजकल आयुर्वेद के पठन-पाठन के लिए विषय प्रधान पाठ्यप्रणाली का प्रचलन हो रहा है परन्तु पाठ्य-क्रम के अनुसार सब विषयों पर पुस्तकें न मिलने से बड़ी असुविधा होती है। आयुर्वेद-जगत के महान् स्तम्भ आचार्य यादवजी त्रिकमजी महाराज ने इस कमी को पूरा करने के लिए अपनी समर्थ लेखनी उठाई है और छात्रों की आवश्यकता एवं ग्रहण शक्ति को सामने रखकर द्रव्यगुण पर यह ग्रन्थ उपस्थित कर दिया है।

आचार्यवर ने द्रव्यगुण विज्ञान को दो बड़े भागों में विभक्त किया है—यह पहला भाग अर्थात् पूर्वार्ध है। इसमें द्रव्य, गुण, रस, विपाक और वीर्यप्रभाव विज्ञानीय नामक पांच अध्याय हैं जिनमें द्रव्य गुण विज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों का साधिकार साथ ही साथ सरल, प्रांजल तथा प्रवाहपूर्ण हिन्दी भाषा में विशद् विवेचन किया गया है। द्रव्यगुण के आधारभूत सिद्धान्तों के सम्बन्ध में आयुर्वेदिक ग्रन्थों में जितनी भी सामग्री है, वह सब की सब इस पूर्वार्ध में एकत्रित हो गई है। ग्रन्थों के वचन पादटिप्पणी में रख दिए गए हैं। प्राचीन और आधुनिक विचारधाराओं का अन्तर और सामंजस्य समझाने के लिए काशी विश्वविद्यालय के आयुर्वेदिक कालेज के प्रिंसिपल डा० बालकृष्ण अमर जी पाठक का लिखा हुआ "आयुर्वेद तथा आधुनिक द्रव्यगुण विज्ञान पर तुलनात्मक विचार" शीर्षक निबन्ध भी संयुक्त किया गया है। निर्णयसागर प्रेस बम्बई की सुन्दर छपाई, मूल्य केवल ३॥)।

मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता

नैपाली खपरा (पो० बा० ७५) बनारस ● ७८ चाँदनी चौक (पो० बा० १२८६) दिल्ली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection